हिन्दी में प्रत्यय-विचार

[हिन्दी आबद्ध रूपों का वर्णनात्मक अध्ययन]

मुरारी लाल उप्रैतिः
एम० ए०, एम० लिट०, पी-एच० डी०,
प्राध्यापक भाषा-विज्ञान,
क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ,
आगरा विश्वविद्यालय,
आगरा

विनोद पुस्तक मन्दिर
हॉस्पिटल रोड, आगरा

श्रद्धेय गुरुवर

डॉ० विश्वनाथ प्रसाद जी

की

सेवा में

शब्दार्थयोरसम्भेदे व्यवहारे पृथक्क्रिया ।
यतः शब्दार्थयोस्तत्त्वमेकं तत् समवस्थितम् ॥

प्राक्कथन

भाषा का जैसा विस्तृत और गहन अध्ययन सस्कृत मे हुआ है। वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। योरोप मे अठाहरवी शताब्दी के प्रारम्भ से भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की प्रगति देखी जाती है, और तब से अब तक जो उन्नति हुई है उसके मूल मे सस्कृत के अध्ययन को पथप्रदर्शक के रूप मे स्वीकार किया जाता रहा है। इस प्रकार भाषा-विज्ञान मे भारत की गुरुता स्पष्ट ध्वनित होती है। परन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि हम उसे समझ नही पा रहे है। इसका एकमात्र कारण यही है कि हमारे पास भाषा के विश्लेषण एव सश्लेषण की वह प्रक्रिया और प्रविधि नही जो कभी रही थी, वह प्राचीनता के आवरण मे अथवा परिस्थितियो की विषमताओ मे लुप्त हो गई।

योरोपीय विद्वानो ने भाषा-विश्लेषण की इस आवृत्त प्रविधि को अनावृत्त करने मे भारी परिश्रम किया है और आगे कर रहे है। अत ये हमारी श्रद्धा के पात्र है। सन् १७८६ ई० मे योरोप के प्रथम सस्कृत अध्येता सर विलियम जोन्स ने घोषणा की कि सस्कृत का ग्रीक तथा लैटिन से पर्याप्त गठनात्मक साम्य है और इन तीनो का विकास किसी एक मूल उत्स से है। फलस्वरूप उन्नीसवी शताब्दी मे संस्कृत के समानान्तर ग्रीक, लैटिन आदि योरोपीय भाषाओ पर तुलनात्मक और ऐतिहासिक दृष्टि रखते हुए तुलनात्मक एव ऐतिहासिक अध्ययन उन्नत हुआ और इसी से प्रेरित होकर ससार की भाषाओ को परिवारो और उपपरिवारो मे नियोजित किया गया। इस प्रकार तुलनात्मक तथा ऐतिहासिक भाषाविज्ञान का स्वरूप पश्चिम ने स्थिर किया।

१८८६ ई० तक पश्चिम वाग्ध्वनियो के वैज्ञानिक अध्ययन से अपरिचित था परन्तु शिक्षा-ग्रन्थ, प्रतिशाख्यो, भाष्यो आदि के अध्ययन से उसने 'फोनेटिक्स', 'फोनोलौजी', 'फोनेटिक रीडर्स' का सूत्रपात किया। परिणाम स्वरूप अँग्रेज़ी, फ्रेंच, जर्मन, रूसी, पुर्तगाली, आदि योरोपीय, इबो, जुलू, हौसा, होटेन्टर, शोना, नोहो आदि अफ्रीकी, जापानी, तिब्बती, चीनी आदि, ऐशियाई तथा अनेक अन्य भाषाओ और बोलियो का अध्ययन और विश्लेषण सरल हुआ। यही नही, वाग्ध्वनियो के सम्यक् प्रशिक्षण द्वारा किसी भी भाषा अथवा बोली को आत्मसात् करने मे सफलता मिली। इस प्रकार सामाजिक सम्प्रेषण एकीकरण की ओर उन्मुख हुआ। भारत अनेक भाषाओ और बोलियो का मघ है, उसे आज अपने इस पूर्व रूप को पहचानने की अत्यन्त

आवश्यकता है। हिन्दी के सदर्भ मे तो इस प्रकार के अध्ययन-अध्यापन की महत् आवश्यकता है। वैसे तो, भारत की प्रत्येक भाषा के वाक्-प्रशिक्षण का प्रावधान होना चाहिए।

इधर पिछले पाँच दशको मे भाषा के गठनात्मक या वर्णनात्मक अध्ययन का प्रभूत मात्रा मे विकास हुआ है और वर्णनात्मक भाषाविज्ञान को निश्चयात्मक एव ठोस आधार प्राप्त हुए हैं। आजकल यह अध्ययन द्रुत गति से आगे बढता हुआ अत्यधिक उपादेय सिद्ध हो रहा है। जिस प्रकार सस्कृत भाषा के तुलनात्मक एव ऐतिहासिक अध्ययन के लिए सस्कृत उत्तरदायी है, उसी प्रकार गठनात्मक अध्ययन की भी। इसके मूल मे पाणिनि की अष्टाध्यायी, जिसका रचना काल ब्लूमफील्ड ने ई० पू० ३५० तथा ई० पू० २५० के बीच माना है, मार्ग निर्दिष्ट करती हुई दिखाई देती है, और वही आगे विभिन्न प्रकार के आगामी अध्ययनो को प्रेरित करती हुई दृढता प्रदान करती प्रतीत होती है। पाणिनि ने भाषा के वर्णनात्मक अध्ययन की चरम उपलब्धियो का साक्षात्कार करके सस्कृत के यथार्थ व्यावहारिक स्वरूप को आधार मानकर उसे अर्द्ध गणितीय प्रतीको द्वारा चरम सक्षिप्ति के साथ सूत्रो मे विश्लेषित किया था। यह काम जो योरोप और अमेरिका मे अब हो रहा है वह भारत मे अब से तेईस सौ या उससे अधिक वर्ष पूर्व हो चुका था। पाश्चात्य 'फोनिम', 'मौरफीम', 'रूट', 'स्टैम', 'फ्री एड बाउड फॉर्म', 'ग्लॉसीम', 'सिनटेग्मा', 'टैक्सीम' इत्यादि पारिभाषिकी मे पाणिनि की अध्ययन-विधि का आभास मिलता है। परन्तु बडे दुख के साथ कहना पडता है कि ससार के इस महान वैयाकरण के अध्ययन की विधि एव विषय की तारतम्यता आज हमे स्पष्ट नही है। पश्चिम ने समझने की चेष्टा की है। परिणामस्वरूप इस क्षेत्र मे भी उसका योगदान अत्यन्त महवत्पूर्ण और नूतन दृष्टि वाला प्रतीत होता है। इधर भारत का आज वैसा अध्ययन सामने नही आ रहा जो पहले था। उसमे स्वस्थ अध्ययन, चितन, मनन, विश्लेषण तथा अभिव्यक्ति की त्रुटि मिलती है। यही स्थिति पश्चिमी की भी कही जा सकती है परन्तु वह आज इसी दिशा मे दत्तचित्त है। उसके इस प्रयास मे ऐसे तथ्य सामने आ रहे है जिन्हे एकदम अस्वीकार नही किया जा सकता। पश्चिमी विद्वान् पाणिनि को सदैव आदर्श मानकर आगे बढ रहे है। इस प्रसग मे पश्चिम के चार प्रधान 'स्कूलो' का नाम लिया जा सकता है। इनका प्रादुर्भाव बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ से समझना चाहिए। नीचे इन पर विहगम दृष्टि से विचार किया जाता है :—

(१) **लंदन तथा फ्रेंच स्कूल**—यह भाषा के ध्वनिवैज्ञानिक अध्ययन के साथ-साथ भाषा के साकालिक अध्ययन को प्राथमिकता देता है। इसके अनुसार साकालिक (सिन्क्रौनिक) अध्ययन के उपरान्त ही भाषा का

कालक्रमिक (डाइक्रौनिक) अध्ययन वैज्ञानिक कोटि को पहुँच सकता है। ध्वनि वैज्ञानिक अध्ययन मे ध्वनियो के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर यह अधिक बल देता है। इस प्रकार इसकी 'फोनिम' विषयक मान्यता अमेरिकन स्कूल की मान्यता से पूर्णत मेल नही खाती। अमेरिकन स्कूल 'फोनिम' मे व्यावहारिक उपादेयता स्वीकार करता है। एफ० द सोसुर, डैनियल जोन्स तथा जे० आर० फर्थ इस स्कूल के स्तम्भ माने जाते है।

(२) **प्राग स्कूल**—इसका प्रादुर्भाव १६२० से, हुआ। एन० एस० ट्रूबेजकॉइ तथा रोमन जैकोब्सन इसके प्रधान सस्थापक थे। रूसी तथा फ्रेंच विद्वानो का भी इस स्कूल पर पर्याप्त प्रभाव रहा है। इसने भाषा की सार्थक ध्वनि इकाइयो की प्राप्ति पर बल दिया और साथ ही ध्वनि-व्यवस्था के ऐतिहासिक विकास पर भी।

(३) **कोपनहेगन स्कूल**—इसका प्रादुर्भाव १६३० ई० से हुआ। एल० जेल्म-स्लेव इसके उन्नायक माने जाते है। इन्होने भाषिक इकाई तथा अर्थ के अध्ययन पर बल दिया। इस प्रकार 'ग्लॉसमैटिक्स' नाम से भाषा के गठन पर प्रकाश डाला। 'ग्लॉसमैटिक्स' 'ग्लॉसिम' से व्युत्पन्न है। 'ग्लॉसिम' से तात्पर्य है, भाषा की कोई भी सार्थक इकाई। वह रूप की भी हो सकती है, और रचना, वाक्यात्मक अन्वित तथा शून्य की भी।

(४) **येल अथवा अमेरिकन स्कूल**—इसका प्रादुर्भाव ऐडवार्ड सैपीर से समझना चाहिए और बाद मे ल्योनार्ड ब्लूमफील्ड ने इसे गुरुता प्रदान की। इस समय अमेरिका मे विभिन्न स्कूल देखे जाते है। वे न्यूनाधिक रूप से ब्लूमफील्ड के ही अनुगामी है। के० एल० पाइक, बर्नार्ड ब्लॉख, चार्ल्स एफ० हॉकेट, ज़ेलिग एस० हैरिस, नोम चोम्स्की, आर्चीबाल्ड ए० हिल, यूजिन ए० नाइडा, एच० ए० ग्लीसन, रोबर्ट ए० हॉल प्रभृत्ति विद्वानो ने भाषा के गठनात्मक अध्ययन मे विशेष योगदान दिया है, और आगे दे रहे है। इनके अनुसार पहले रूप की प्रधानता है, अर्थ की प्रधानता तो नगण्य-सी है। इनका अर्थ से केवल काम चलाने-भर का प्रयोजन है। ज्यो ही व्याकरण का कार्य सिद्ध हुआ वहाँ उन्हे अर्थ की सूक्ष्मताओं मे जाने की आवश्यकता नही। इनकी दृष्टि मे यह कार्य कोश विज्ञान के अन्तर्गत आता है, जिसमे पहले अर्थ की प्रधानता है फिर रूप की।

इस प्रकार ये विभिन्न स्कूल अपने-अपने कार्य मे लीन है। इनकी पारस्परिक विभिन्नताओ के बावजूद भी एक ऐसा सामान्य रूप हमारे सामने आता है जो सभी

मे निहित है। वह है, भाषा के अध्ययन मे गठन सबधी आधारभूत एकता। गठन की यह एकता व्यवहार द्वारा स्थिर है, ऐसा सभी का विश्वास है। व्यवहार के निश्चय के साथ इनके विश्लेषण की विधि गठन की चरम इकाई से प्रारम्भ होती है और अन्त मे मर्यादित अर्थ या व्याकरणिक अर्थ पर समाप्त होती है। अर्थ की बारीकी मे जाना इनका विषय नही है। यदि कही ऐसा व्याकरणिक सबध है जो उसके खास अर्थ तक पहुँचे बिना हल नही हो सकता तो उसे स्वीकार किया जाता है। वहाँ तक उतना ही चाहिए जितने की आवश्यकता है। कोरे तर्क को लेकर ये भाषा की परीक्षा नही करते। व्यवहार ही सब कुछ है और व्यवहार मे तर्क उतना ही अपेक्षित है जितने से काम चल जाय, इसके आगे वह कुतर्क हो जाता है, ऐसी इनकी आस्था है। पाणिनि की व्याकरणिक वर्ग-सज्ञप्तियो तथा अभिधानो से भी यही विदित होता है। यह बात दूसरी है कि इन स्कूलो की पहुँच कुछ न कुछ भिन्नता लिए हुए है परन्तु लक्षित लक्ष्य और आस्था सबकी एक-सी है तथा एक ही धरातल पर सब मिल जाते है। इस प्रकार भारतीय तथा पाश्चात्य विचारो एव परिस्थितियो से सामजस्य स्थापित करते हुए मैने हिन्दी का यह अध्ययन सम्पन्न किया है और उसे अत्यन्त सरलता से स्पष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया है।

आधुनिक हिन्दी के गठनात्मक अध्ययन की अत्यन्त आवश्यकता है। भाषा-विज्ञान का विद्यार्थी होने के नाते इस क्षेत्र ने शुरू से मेरा आह्वान किया है। भाषा-विज्ञान मे पी-एच० डी० का विचार उठते ही व्याकरण के अनेक विषय मेरे समक्ष उपस्थित हुए। इन सब मे 'प्रत्यय-विचार' बडा रोचक और व्यावहारिक प्रतीत हुआ। हिन्दी प्रत्ययो का अध्ययन तो दूर, अभी तक उनका पूर्ण सकलन भी नही हो सका है। दूसरे, प्रत्ययो का अध्ययन उतना सरल नही जिसे यो ही टाल दिया जाय। वस्तुत यह विषय हिन्दी मे बडा ही विवादास्पद और जटिल है, इसमे ठोस अध्ययन और सम्यक् विवेक की आवश्यकता है। इन परिस्थितियो मे मैने इस विषय को अपनाया। पूज्यपाद आचार्य एव सचालक डॉ० विश्वनाथ प्रसाद जी ने भी इस ओर मुझे प्रेरित किया तथा विषय की प्रशसा की। उनका निर्देशन पाकर मे इस अध्ययन को प्रस्तुत करने मे समर्थ हुआ हूँ, मैं उनका चिर-ऋणी हूँ। इस अध्ययन को प्रस्तुत करने मे मान्यवर डॉ० अशोक रामचन्द्र केलकर जी का भी विशेष आभार स्वीकार करता हूँ जो बडे मनोयोग से इस अध्ययन को वैज्ञानिक ढग से प्रस्तुत करने मे मुझे अग्रसर करते रहे।

'हिन्दी मे प्रत्यय-विचार' नामक यह अनुसधान हिन्दी मे प्रथम प्रकार का विवरणात्मक एव मौलिक अध्ययन है। इसमे पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा को दूर रखा गया है। हिन्दी के प्राय. सभी प्रत्ययो को प्राप्त किया गया है तथा उनका सम्यक निरूपण इस

प्रबंध मे प्रस्तुत किया गया है, साथ ही, हिन्दी मे प्रत्यय सबधी फैले अनेक भ्रमो का भी परिहार किया गया है। प्रत्यय की परिभाषा सस्कृत की परिभाषा के अनुसार स्वीकार नही की गई है उसके अन्तर्गत पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय, विभक्ति एव पश्चाश्रितो का अन्तर्भाव हो जाता है। इस प्रकार हिन्दी का प्रत्यय-विचार एक नवीन तथा वैज्ञानिक ढंग से हिन्दी-जगत के समक्ष उपस्थित किया जाता है।

स्पष्ट है कि ऐसा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य केवल मुझ से तब तक सपन्न नही हो सकता था जब तक प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मुझे भाषा-विज्ञान के विभिन्न विद्वानो की प्रेरणा, गुरुजनो का आशीर्वाद तथा सहयोगियो की शुभ कामनाएँ नहीं मिलती। मै बडी विनम्रता पूर्वक इन सभी को धन्यवाद देता हूँ। सन् १९५६ ई० से क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ, आगरा, मेरा कर्मक्षेत्र रहा है, मैं इस सस्था का विशेष आभारी हूँ। यहाँ मुझे केवल उपयुक्त अध्ययन की व्यवस्थाएँ ही नही प्राप्त हुई, अपितु इस अध्ययन की अधीत सामग्री भी प्रचुर मात्रा मे प्राप्त कर सका। इसके अतिरिक्त मे उन सभी विद्वानो का आभारी हूँ जिनके ग्रन्थो से मैंने इस अध्ययन को पुष्ट एव सपन्न किया। आगरा विश्वविद्यालय ने क० मुं० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ की सर्वोत्तम शोध घोषित करके मुझे स्वर्णपदक प्रदान करते हुए मेरा उत्साह बढाया है। इस हेतु मै इस सस्था का भी अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

संभव है, मेरे सारे प्रयत्नो तथा अध्यवसाय के बावजूद विचारो या भाषा मे कही त्रुटि रह गई हो, किन्तु मुझे विश्वास है कि विद्वज्जन उदारतापूर्वक मेरे इस प्रयास की इन भूलो को क्षमा करेंगे तथा अपने बहुमूल्य सुझावो द्वारा मुझे लाभान्वित करेंगे। मेरी सफलता इसी मे होगी कि मेरी यह वस्तु मेरी मात्र न रहकर सर्वसुलभ और सर्वग्राह्य हो जाय।

आगरा, मई १९६४

—मुरारीलाल उप्रैतिः

संक्षिप्त रूप

अ०	अरबी
अक०	अकर्मक
अनु०	अनुकरण
अँ०	अँग्रेज़ी
आ० भा० आ० भा०	आधुनिक भारतीय आर्यभाषा
एक व०	एक वचन
क्रि०	क्रिया
क्रि० वि०	क्रियाविशेषण
तत्स०	तत्सम
तद्०	तद्भव
तु०	तुर्की
दे०	देखिए
देश०	देशज
धा०	धातु
पप्र०	परप्रत्यय
पू०	पूर्वकालिक
पूप्र०	पूर्वप्रत्यय
प्रा० भा० आ० भा०	प्राचीन भारतीय आर्यभाषा
प्रे०	प्रेरणार्थक
फा०	फारसी
बहु व०	बहु वचन
मा० भा० आ० भा०	माध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा

वा०	वाचक
वि०	विशेषण
विभ०	विभक्ति
व्यु० वि०	व्युत्पादक विभक्ति
व्यं०	व्यंजन
सक०	सकर्मक
सर्व०	सर्वनाम
सं०	संज्ञा
स्व०	स्वर
हिं०	हिन्दी

संकेत-चिह्न

विभाजक सकेत । अश या विभाग के पश्चात् लगाने से पूर्वरूप, तथा उसके पश्चात् लगाने से पररूप का द्योतक ।

ध्वनिप्रक्रियात्मक दृष्टि से प्रतिबधित सपरिवर्तक का द्योतक ।

रूपात्मक दृष्टि से प्रतिबधित सपरिवर्तक का द्योतक ।

युक्त सक्रमण-सूचक । स्वनिमो को मिलाकर लिखा जाना युक्त सक्रमण का सूचक है ।

मुक्त सक्रमण सूचक । प्रतिलेखन मे स्वनिमो के बीच खाली जगह भी इस सकेत की द्योतक है ।

अर्थापन या अन्य तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त सकेत ।

हलन्त ।

व्युत्पन्न या सिद्ध रूप तथा ध्वनिविकार का द्योतक सकेत ।

स्वनिमो के नीचे सध्यक्षर अथवा एक्य स्वनिम का द्योतक ।

स्वनिमात्मक प्रतिलेखन का द्योतक । रूपतालिका के अन्तर्गत आने वाले स्वनिमात्मक प्रतिलेखन मे यह सकेत नही लगाया है । वहाँ पर भी इस सकेत की अवस्थिति मानी जाय ।

रूपात्मक प्रतिलेखन का द्योतक ।

ध्वन्यात्मक प्रतिलेखन का द्योतक ।

प्रकृति अथवा आधार-भूत रूप के सपरिवर्तक का द्योतक ।

विभक्ति-सूचक सकेत ।

परप्रत्यय और विभक्ति का विभाजक सकेत ।

अक्षर मे व्यजन के योग का सूचक ।

अक्षर मे व्यजन की योग रहित अवस्था का सूचक ।

ऐतिहासिक पूर्व रूप से पररूप का द्योतक ।

विकल्प सूचक

विशिष्ट पारिभाषिक शब्द

यहाँ कुछ पारिभाषिक शब्दो को अँग्रेजी पर्यायो सहित प्रस्तुत किया जाता है। यद्यपि पादटिप्पणी मे सप्रसग उन्हे प्रस्तुत किया गया है, फिर भी, विषय की सुगमता के लिए यहाँ ये अपेक्षित समझे जाते है। इनके अतिरिक्त इस अध्ययन मे अपनाए गए शेष शब्द या तो स्वतः स्पष्ट है या अतिपरिचित से है, अत उन्हे यहाँ देने की आवश्यकता नही समझी गई।

अजन्ताक्षर	open syllable
अन्त	endıng
आधार	base form
आन्तरिक मुक्त सक्रमण	ınternal open transıtıon
आबद्ध रूप / प्रत्यय रूप	bound form
क्रम	order
गठनात्मक	structural
गठन	structure
चिह्नक	marker
ध्वनिप्रक्रियात्मक विकार	phonological modification
ध्वनिविकार	phonetıc modıfication
ध्वनिविज्ञानी	phonetıcian
निपात	expletıve
पदिम	morpheme
परप्रत्यय	suffıx
परसर्ग	post posıtion
पश्चाश्रयी	enclitıc
पूर्वप्रत्यय	prefix
प्रत्यय	affix
प्रत्यय-विचार	affixatıon
बाह्यमुक्त सक्रमण	external open transıtıon

मध्यप्रत्यय	infix
मुक्त सक्रमण	open transition
युक्त सक्रमण	close transition
रूपतालिका	paradigm
रूपविज्ञानी	morphologist
रूपात्मक विकार	morphological modification
वक्ता	informant
विवरणात्मक / वर्णनात्मक	descriptive
व्याकरणिक प्रत्यय	grammatical affix
व्युत्पत्ति	derivation
व्युत्पदक प्रत्यय	derivational affix
व्युत्पादक विभक्ति	derivational inflection
स्वनिम	phoneme
स्वनिमात्मक प्रतिलेखन	phonemic transcription
स्वरत्रिकोण	vowel triangle
सक्रमण	transition / juncture
सध्यक्षर	diphthong
सपरिवर्तक	alternant / allomorph
सस्वन	allophone
हलताक्षर	closed syllable

विषय-सूची

२. विभक्ति-विचार २०९

३. पश्चाश्रयी-विचार

विषय-प्रवेश

०.

विषय-प्रवेश

प्रस्तुत अनुसंधान हिन्दी व्याकरण के प्रत्यय-पक्ष को प्रस्तुत करता है। यह अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टि से सवलित नही अपितु विवरणात्मक दृष्टि पर अवलम्बित है। यह दृष्टि भारतीय तथा अधुनातम भाषा वैज्ञानिक सिद्धान्तो के अध्ययन से प्राप्त हुई है। इसमे पूर्वाग्रह या पूर्वधारणा को किसी भी प्रकार का प्रश्रय अथवा व्यायाम नही मिला है। जो बाते इस अध्ययन मे सामने आई है उनकी व्यवस्था करना बाद का कार्य रहा है। पहले के निर्मित साँचे मे उन्हे फिट करना इस अध्ययन की प्रवृत्ति नही है। इस प्रकार हिन्दी का प्रत्यय-विवेचन हिन्दी के रास्ते से है, न कि सस्कृत के रास्ते से। हाँ, जहाँ पर हिन्दी की प्रस्तुत व्यवस्था का सस्कृत की व्यवस्था से मेल पाया गया है उसे सहज ही स्वीकार किया है। यह स्वीकृति विशेषकर पारिभाषिक शब्दावली के सम्बन्ध में समझनी चाहिए। मै ऐसा कहकर सस्कृत भाषा के विस्तृत, सूक्ष्म एव पराकाष्ठा पर पहुँचे हुए अध्ययन की अवहेलना नही कर रहा, अपितु भाषा विश्लेषण के धुर-मूल-सिद्धान्त की रक्षा के प्रति यह विनम्र अनुरोध मात्र है।

०. १. अध्ययन का लक्ष्य

प्रस्तुत अध्ययन का लक्ष्य क्या है, इस विषय मे कुछ कहना एक अत्यत गम्भीर समस्या है। यदि यह कहा जाय कि हिन्दी भारतीय गणतत्र की राजभाषा तथा भारतीय जन-समाज के पारस्परिक व्यवहारो मे सक्षम सामान्य भाषा के रूप मे स्वीकृत है और उसका बहुविधि अध्ययन करना प्रत्येक भारतीय नागरिक का परम कर्त्तव्य है, तो इस अध्ययन मे हिन्दी के प्रति मोह तथा उसको उपयोगी बनाने के प्रयास की अभिरुचि होने की संभावना है। यदि यह कहा जाय कि हिन्दी-व्याकरण का अध्ययन जितना विस्तृत, एव गहन होना चाहिए उतना अभी नही हो पाया है तो इस कथन मे मेरी अहंमन्यता ठहराई जा सकती है। यदि यह कहा जाय कि हिन्दी भाषा का अध्ययन सस्कृत तथा अन्य भाषाओ की परम्परागत मान्यताओ अथवा पूर्वाग्रहों मे ग्रसित है तो इस कथन के प्रति आक्रोश अथवा नूतन-दृष्टि-दोष लगना

सम्भव है। यदि यह कहा जाय कि हिन्दी भाषा का प्रत्यय सम्बन्धी विवेचन वैज्ञानिक ढग से व्यवस्थित नही है तो इस सम्बन्ध मे मैं अल्पज्ञ तथा मन्द बुद्धि वाला कहा जा सकता हूँ क्योकि आज देश-भर मे हिन्दी व्याकरण के वैज्ञानिक अध्ययन की ओर सक्रिय एव सुन्दर प्रयास हो रहे है। इस प्रकार इन परिस्थितियो मे उपयोगिता, अभिरुचि, आवश्यकता इत्यादि सम्बन्धी लक्ष्य निर्दिष्ट करना मेरे लिए दुस्तर कार्य है। परन्तु लक्ष्य को निर्दिष्ट किए बिना यह प्रसङ्ग एक प्रकार से अधूरा ही समझा जायगा। अत लक्ष्य का निर्देशन एक महत्वपूर्ण बात है। वास्तव मे प्रत्येक प्रकार के अनुसन्धान का लक्ष्य ज्ञान-पिपासा को शान्त करना होता है, इससे बढकर और कोई लक्ष्य नही हुआ करता, यही उसका चरम लक्ष्य होता है। इस चरम लक्ष्य के क्रोड मे सभी प्रकार की आवश्यकताएँ उपयोगिताएँ पाई जा सकती है। प्रस्तुत अनुसन्धान का एक मात्र यही लक्ष्य है। यह बात, कि आज उसकी उपादेयता, आवश्यकता आदि है तो यह बडे सौभाग्य की बात है, परन्तु ये बाते गौण है। मेरा लक्ष्य तो प्रस्तुत विषय का अध्ययन तथा, मनन और चिन्तन है और तत्पश्चात् उसे विधिवत् रुप से प्रस्तुत करना है। मैं सदैव इस प्रयास मे रहा हूँ कि उसमे सम्यक् विवेक और सम्यक् स्पष्टीकरण को प्रश्रय मिले। इस विषय को अनुसन्धान का विषय इसलिए निर्वाचित किया गया कि मैं इस दिशा मे स्वय को अधिक गतिवान् पाता हूँ। इस स्थिति मे जो कुछ कर सका हूँ वह हिन्दी तथा हिन्दी के विद्वानो के लिए एक अकिंचन भेट है।

०. २. विषय-विस्तार एवं सीमाएँ

प्रस्तुत निबन्ध हिन्दी भाषा के प्रत्ययो तक ही सीमित है। जहाँ तक पहुँच हुई है, सस्कृत के तत्सम प्रत्ययो को छोडकर, हिन्दी के प्राय. सभी प्रत्ययो को खोजने को चेष्टा की गई है तथा उनका विधिवत् अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इस अध्ययन का कदापि यह दावा नही कि हिन्दी मे जितने भी प्रत्यय प्रयुक्त होते है उन सभी को पूर्णतः प्राप्त कर लिया गया है। यह सम्भव है कि कुछ प्राप्त नही हो सकें हो, क्योकि आज हिन्दी का प्रचार एव प्रसार द्रुत गति से हो रहा है। इस दशा मे पूर्णता का दावा कैसे सम्भव हो सकता है! पूर्णता तो प्रत्येक दशा मे असम्भव है, फिर भी इसके लिए प्रयास अवश्य है।

सस्कृत तत्सम प्रत्ययो को छोडने का एकमात्र कारण यही है कि इनका सम्यक् विवेचन सस्कृत ग्रन्थो मे उपलब्ध है। इस कारण इनके विवरणों की आवश्यकता अनुभूत नही हुई। हाँ, कुछ सस्कृत प्रत्ययो का व्यवहार हिन्दी तद्भव तथा विदेशी शब्दो के साथ होता है, इस प्रकार उनकी प्रवृति मे कुछ व्यापकता आई है। ऐसे प्रत्ययो को इस निबन्ध मे स्वीकार किया गया है। कुछ ऐसे भी संस्कृत शब्द हैं जो हिन्दी मे आते-आते अपनी अर्थवान् स्वतन्त्र सत्ता को खो बैठे है (§ १. १. ४,

§ १. २. ६) और प्रत्यय-मात्र रह गए है। इनका व्यवहार केवल संस्कृत तत्सम शब्दों मे होता है। ऐसे शब्दो को तत्सम शब्द मानकर छोड दिया गया है।[1]

सस्कृत की परम्परा के अनुसार हिन्दी मे प्रत्यय का अर्थ उन आबद्ध अशो से लिया जाता है जो धातु अथवा मूल रूप के पश्चात् लगकर दूसरे धातु-रूप अथवा प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते है। प्रस्तुत अध्ययन मे प्रत्यय से हमारा यह अभिप्राय कदापि नही है। प्रत्यय से हमारा मतलब यह है कि हिन्दी मे जितने भी आबद्ध अश—जिनकी स्वतन्त्र अर्थवान् सत्ता नही, जिनका स्वतन्त्र रूप मे प्रयोग नही होता, जिनकी सार्थकता केवल अर्थवान रूपो के साथ ही परिलक्षित होती है तथा चाहे वे अर्थवान् रूप के पूर्व या पश्चात् प्रयुक्त हो—प्रयुक्त होते हैं, प्रत्यय है। इस प्रकार हमारे अध्ययन के अन्तर्गत पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय, विभक्तियाँ तथा पश्चाश्रयी आते है। प्रत्ययो की परिभाषा तथा उनके वर्गीकरण पर आगे विचार किया जायगा (§ ०. ६ २)। यहाँ हमारे इस कथन का अभिप्राय केवल इतना ही है कि हमारी प्रत्यय विषयक मान्यता क्या है।

प्रत्यय-सम्बन्धी यह अध्ययन विवरणात्मक है तथा विवरणात्मक पद्धति पर इसे प्रस्तुत किया गया है। ऐतिहासिक अध्ययन इस अनुसन्धान का विषय नही है।

हिन्दी से तात्पर्य

हिन्दी शब्द का अर्थ व्यापक दृष्टि से भारत मे बोली जाने वाली किसी भी भाषा—चाहे वह बँगला हो अथवा सिंधी अथवा तमिल—के लिए लिया जा सकता है; किन्तु इस प्रसग मे 'हिन्दी' से तात्पर्य उस भाषा के लिए है जिसके प्रसार भूमि की सीमाएँ पश्चिम मे जैसलमेर, उत्तर पश्चिम मे अबाला, उत्तर मे शिमला से लेकर नैपाल के पूर्वी छोर तक के पहाडी प्रदेश का दक्षिणी भाग, पूर्व मे भागलपुर, दक्षिण-पूर्व मे रायपुर तथा दक्षिण-पश्चिम मे खंडवा तक पहुँचती है[1] तथा जो वर्तमान साहित्यिक भाषा के रूप मे, मनीषी सस्थाओ मे, शिष्ट बोलचाल मे, शिक्षण-सस्थाओ में, भारतीय गणतत्र विधान की राज्य-भाषा के रूप मे, पत्र-पत्रिकाओ की भाषा के रूप मे प्रबुद्ध वर्ग द्वारा प्रयुक्त होती है। दूसरे शब्दो मे इसे परिनिष्ठित, प्रामाणिक अथवा आदर्श हिन्दी कहा जा सकता है। हिन्दी के इस स्वरूप को प्रो० डैनियल जोन्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त एव प्रकल्पित[2] मानचित्र के अनुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है:—

---

१. धीरेन्द्र वर्मा—हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग, १९५३, पृष्ठ ५९।

२. Ida C. Ward—The phonetics of English, Cambridge, 1956., §7. तथा Daniel Jones—An outline of English Phonetics, Cambridge, 1956., §§ 61-62 (RP).

शंकु का आधार 'हिन्दी भाषी प्रदेश'[1] को प्रस्तुत करता है तथा इस भू-भाग के अन्तर्गत आने वाले विभिन्न स्थानो के द्योतक आधार बिन्दुओ और शीर्ष बिन्दु से सम्बद्ध रेखाएँ विभिन्न स्थानो मे बोली जाने वाली विभिन्न बोलियो को सूचित करती है। शीर्षक 'अ' उस स्थिति को द्योतित करता है जहाँ पर स्थानीय बोलीगत लक्षण लुप्त हो जाते है। उदाहरणार्थ 'रा अ' रेखा 'रा' आधार से लेकर 'अ' शीर्षक तक राजस्थानी के समस्त विभिन्न स्वरूपो को प्रस्तुत करती है तथा 'अ' शीर्षक पर पहुंच कर सभी स्थानीय लक्षण लुप्त हो जाते है। इसी प्रकार 'अ प', 'अ ब्र' 'अ अ' इत्यादि।

यदि शंकु के आरपार शीर्षक तथा आधार के बीच किसी भी बिन्दु के धरातल को स्वीकार किया जाय, उदाहरणार्थ '२', तो उसमे विभिन्न स्थानीय बोलियो के बीच बोलीगत लक्षण आधार-भूत बोलियो के लक्षणो से अपेक्षाकृत कम प्रतीत होंगे। शीर्षक की ओर और अभिमुख होते हुए यदि किसी बिन्दु, उदाहरणार्थ '३' पर, किसी और धरातल को स्वीकार किया जाय तो स्थानीय विभेद '२' की अपेक्षा तिरोहित होते होगे, जो विभेद प्रतीत होगे उन्हे अव्यावहारिक मानकर त्याज्य किया जा सकता है और आदर्श रूप की स्थापना दृढतर होती है। अन्त मे, 'अ' पर हिन्दी के उस स्वरूप की स्थापना होनी है जहाँ पर स्थानीय विभेद लुप्त हो जाते है और उनमे पारस्परिक साम्य और पारस्परिक सुबोधता स्थिर होती है। वस्तुत किसी भाषा का प्रामाणिक अथवा परिनिष्ठित रूप प्राप्तव्य-स्वरूप हुआ करता है, उसकी कोई क्षेत्रीय सीमा नही होती। हाँ, उसका क्षेत्रीय आधार अवश्य होता है जिस पर उसकी स्थापना होती है। प्रस्तुत प्रसग मे हिन्दी से हमारा यही तात्पर्य है।

०.४ सामग्री-संकलन

प्रस्तुत प्रबन्ध की सामग्री सकलन मे मैने स्वयं को हिन्दी के वक्ता[2] के रूप

---

१ डॉ० धीरेन्द्र वर्मा द्वारा प्रस्तुत मानचित्र के अनुसार प्रस्तुत। हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग, १९५३।

२ यदि इसे गर्वोक्ति न कहा जाय तो मै हिन्दी की उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्ति हूँ तथा मेरा उच्चारण सामान्यत हिन्दी का उच्चारण कहा जा सकता है, क्योकि मैं हिन्दी भाषा-भाषी प्रदेश का रहने वाला हूँ और मेरा सम्बन्ध इस प्रदेश के शिक्षित वर्ग तथा शिक्षण सस्थाओ से रहा है। यह सब होते हुए भी मेरा यह दावा कदापि नही कि मैं पूर्ण हूँ, पूर्णता की प्राप्ति तो प्रत्येक दशा में असभव है, फिर भी इसके लिए प्रयास अवश्य है।

अ
प्रमाणिक हिन्दी
३
२
1
लहँदी
सतलज नदी
शिमला
गढ़वाली
मसूरी
नैनीताल
ब्रह्मपुत्र
पश्चिमी
पंजाबी
सिंध नदी
बीकानेर
बरेली
पूर्वी नैपाली
मथुरा
आगरा
गंगा
सिंधी
जोधपुर
धौलपुर
ग्वालियर
जमुना
कनौजी
लखनऊ
कानपुर
गोरखपुर
दरभंगा
जालौन
बाँदा
इलाहाबाद
पुरी
पटना
उदयपुर
बनारस
गया
इन्दौर
भोपाल
जबलपुर
राँची
कलकत्ता
नर्मदा
गुजराती
ताप्ती
उड़िया
सूरत
रायपुर
मराठी
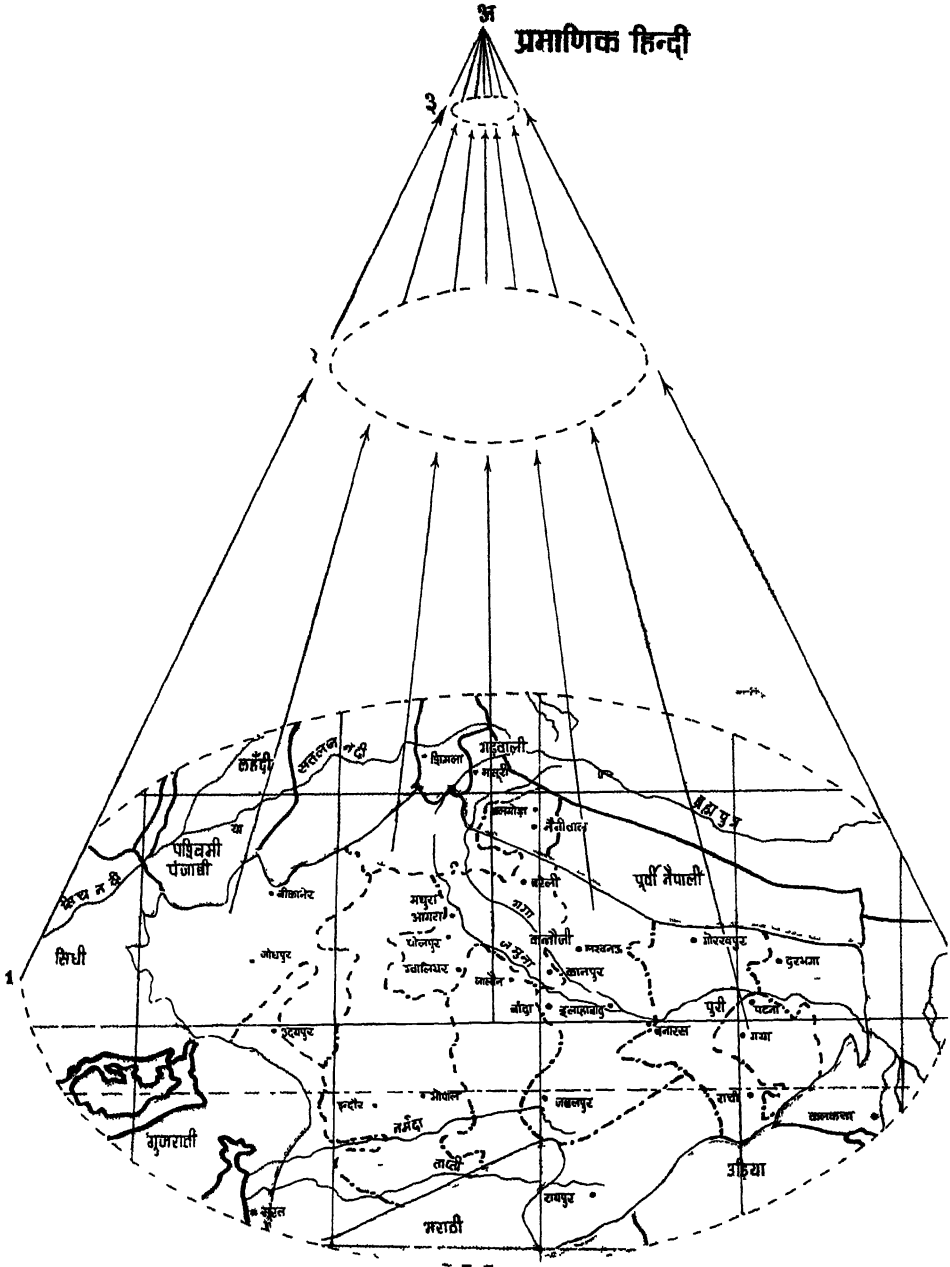
मे स्वीकार किया है। साथ ही, मैं आगरे के साहित्यकारो, क० मु० हिन्दी तथा भाषा-विज्ञान विद्यापीठ के शिक्षक वर्ग तथा हिन्दी साहित्य तथा भाषा-विज्ञान मे विभिन्न क्षेत्रो के अनुसधान करने वाले अनुसधित्सुओ एव मित्रो के सपर्क मे बराबर रहा हूँ। इस सपर्क से यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है कि मै अपने हिन्दी-उच्चारण को मिलाता तथा जॉच करता रहा हूँ। इस सहयोग के अतिरिक्त हिन्दी शब्द-कोशो, व्याकरणो, साहित्यिक पुस्तको, पत्र-पत्रिकाओ आदि से सामग्री प्राप्त की है, परन्तु साधन रूप मे, ध्यान सदैव भाषा के उच्चरित रूप पर ही रहा है। यह सामग्री कार्डो पर **स्वनिमात्मक प्रतिलेखन** द्वारा विश्लेषण सहित प्रस्तुत की गई है और इस अध्ययन को प्रस्तुत करने मे समर्थ हुआ हूँ। कार्डों की सख्या २००० के लगभग है तथा उनमे समाहित शब्दो की सख्या १५००० से ऊपर है। इस अध्ययन मे, उदाहरण रूप मे, सभी शब्द नही दे पाया हूँ, उदाहरणो के अन्तर्गत कुछ ही शब्दो को दे सका हूँ जो हिन्दी मे उपलब्ध प्रत्ययो को लक्षित करते है। इस प्रकार यह अध्ययन सम्पन्न हुआ है।

० ५. ध्वनि-प्रक्रियात्मक पृष्ठभूमि

प्रत्यय-विचार के स्तर पर हिन्दी मे उपलब्ध **स्वनिम**[1] इस प्रकार है—

०. ५. १. स्वर

०. ५. १. १ मूलस्वर

/ अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ ऑ /

स्वरत्रिकोण[2] मे इनकी स्थिति इस प्रकार है—
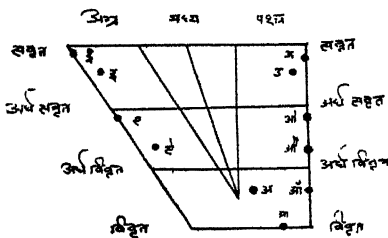
१. 'Phoneme', Leonard Bloomfield—Language, London, 1955, § 5 4.

२. स्वरत्रिकोण (Vowel triangle) यद्यपि ज्यामितिक दृष्टि से त्रिकोण नही है परन्तु ध्वनि-विद् इसे त्रिकोण ही कहते है। दूसरी बात यह है कि यह मान-चित्र तो विवरण की सुविधा के लिए है, जीभ की सही स्थितियो का निर्देश तो अण्डवृत द्वारा किया जा सकता है परन्तु ऐसा करने मे व्यावहारिक कठिनाई है

सूचना १—/ ऑ / स्वर का व्यवहार अँग्रेजी शब्दो मे होता है। यथाः— / डॉक्टर /, / बॉक्स /, / कॉनफ्रेस / इत्यादि।

० ५. १ २ **संध्यक्षर**[1]

/ अइ, अउ /

स्वर-त्रिकोण मे इनकी स्थिति इस प्रकार है:—
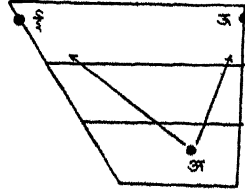
सूचना २—ये दोनो सध्यक्षर आरोही हैं।

०. ५. २. **व्यंजन**

/ क् क़् ख् ग् घ् ट् ठ् ड् ढ् त् थ् द् ध् प् फ् ब् भ् /

/ च् छ् ज् झ् /

/ न् न्ह् म् म्ह् ण् /

/ ल् ल्ह् /

/ र् रह् /

/ ड़् ढ़् /

/ ह् ख़् ग़् श् स् ज़् फ़् /

/ य् व् /

स्थान तथा प्रयत्न के अनुसार इनका वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है:—

और स्वरो का ठीक-ठीक व्यौरा उपस्थित नही किया जा सकता। यह त्रिकोण उसी अण्डवृत्त का सुविधाजनक रूप है। प्रो० डेनियल जोन्स ने इसकी माप का व्यौरा उपस्थिति किया है। Daniel Jones—An Out line of English Phonetics, 1956 पृष्ठ 37, पाद टिप्पणी 9.

१. 'Diphthong', Daniel Jones—An outline of English Phonetics, Cambridge, 1956. § 219–224.

प्रयत्न	स्थान								
	द्वयोष्ठ्य	दंत्योष्ठ्य	दंत्य	वर्त्स्य	मूर्धन्य	तालव्य	कोमल-तालव्य	अलिजिह्व	कंठ्य
स्पर्शी									
अल्पप्राण अघोष	प्		त्		ट्		क्	क़्	
,, सघोष	ब्		द्		ड्		ग्		
महाप्राण अघोष	फ्		थ्		ठ्		ख्		
,, सघोष	भ्		ध्		ढ्		घ्		
स्पर्श-संघर्षी									
अल्पप्राण अघोष						च्			
,, सघोष						ज्			
महाप्राण अघोष						छ्			
,, सघोष						झ्			
नासिक्य									
अल्पप्राण सघोष	म्			न्	ण्				
महाप्राण सघोष	म्ह्			न्ह्					
पार्श्विक									
अल्पप्राण सघोष				ल्					
महाप्राण सघोष				ल्ह्					
लघ्वाघात									
अल्पप्राण सघोष				र्					
महाप्राण सघोष				रह्					
उत्क्षिप्त									
अल्पप्राण सघोष				ड़्					
महाप्राण सघोष				ढ़्					
संघर्षी									
अल्पप्राण अघोष				स्		श्			
,, सघोष				ज़्				ग़्	
महाप्राण अघोष		फ़्						ख़्	
,, सघोष									ह्
अर्द्ध स्वर									
अल्पप्राण सघोष	व्					य्			

०. ५. ३. अनुस्वार तथा अनुनासिकता

सूचना ३—ये स्वर-सम्बद्ध स्वनिम है क्योकि हिन्दी मे इनका व्यवहार स्वरो के साथ होता है। उदाहरणार्थ /वंश/ तथा/ छाँटना/ शब्दो मे ये स्वनिम/अ/ तथा /आ/ के साथ उच्चरित होते हैं। खडीय[१] स्वनिमो की अपेक्षा इन्हे उपरिखडीय[२] स्वनिमो के नाम से अभिहित किया जाता है। हिन्दी मे अनुस्वार के परवर्ती स्वनिमो के अनुसार कई संस्वन[३]-भेद हो जाते है। ये इस प्रकार है—पवर्गीय स्वनिमो के पूर्व ओष्ठ्यीकृत, जैसे, [पम्प], [कुम्भ], [चम्पा], तवर्गीय तथा चवर्गीय स्वनिमो के पूर्व दन्तीकृत, जैसे; [सन्त], [कन्धा], [चन्दा], [पन्च], [पन्जा], [कन्ज], टवर्गीय स्वनिमो के पूर्व मूर्धन्यीकृत, जैसे, [पण्डित], [कण्ठ], [टण्डन], [टण्टा], कवर्गीय स्वनिमो के पूर्व कोमल तालव्यीकृत, जैसे, [कङ्गाल], [पङ्खा], [मङ्गल]। /य र ल व श स ह/ के पूर्व यह विशुद्ध रूप मे सुनाई पडता है, जैसे, [सयम], [अश], [सराधन], [सलग्न], [सहार], [सस्कृत], [हस], [सवत]।

०. ५ ४. संक्रमण[४]

शब्द-स्तर पर संक्रमण हिन्दी मे सार्थक है। उदाहरणार्थ /खाली/ तथा /खा ली/ शब्दो की तुलना करते है तो उच्चार के दोनो स्वरूपो मे उच्चारण-भेद विद्यमान है। यह उच्चारण-भेद दो स्वनिमो के सक्रमण पर आधारित है। प्रथम उच्चारण मे /आ/ तथा /ल/ के बीच **युक्त संक्रमण**[५] है तथा दूसरे उच्चार मे इनके बीच **मुक्त संक्रमण**[६] है। प्रतिलेखन द्वारा उच्चार के इन दोनो स्वरूपो को इस प्रकार प्रस्तुत करते है—/खा‿ली/, /खा+ली/। सक्रमण जनित उच्चारण की इस भिन्नता के कारण ही दोनो

---

१. 'Segmental phoneme', Bernard Bloch & Trager—Outline of Linguistic analysis, Linguistic Society of America, 1942., § 3.4.

२. 'Prosodic' or 'Suprasegmental Phoneme' वही।

३. 'Allophone', Daniel Jones—An Outline of English phonetics, Cambridge, 1956., § 76 तथा Bernard Bloch & Trager—Outline of Linguistic analysis Linguistic Suciety of America, 1942., § 3. 3.

४. 'Transition', Leonard Bloomfield—Language, London, 1956., §7.9 तथा 'Juncture', Bernard Bloch & Trager Outline of Linguistic analysis, 1942., § 2 14 (3), § 3 7 (1)

५. 'Close transition', 'Close Juncture', वही।

६. 'Open transition', 'Open Juncture', वही।

उच्चारो के अर्थ भिन्न-भिन्न हो जाते है। एक का अर्थ है 'रिक्त' तथा दूसरे का अर्थ है 'खाने की क्रिया की समाप्ति'। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है। स्वनिमो के बीच रिक्त स्थान मुक्त सक्रमण का सूचक है तथा स्वनिमो को मिलाकर लिखा जाना युक्त सक्रमण का सूचक है।

पीली	'पीले रग की'
पी ली	'पीने की क्रिया की समाप्ति'
पीलिया	'रोग विशेष'
पी लिया	'पीने की क्रिया की समाप्ति'
करके	'पूर्वकालिक क्रिया'
कर के	'टैक्स से सबधित'
नलकी	'छोटी नली'
नल की	'नल से सम्बन्धित'
सिरका	'द्रव पदार्थ'
सिर का	'सिर से सम्बन्धित'
सिरकी	'छप्पर अथवा पल्लड आदि के लिए उपयोगी, सरकडे उत्पन्न पतली सीक।
सिर की	'सिर से सम्बन्धित'
खुलासा	'साराश'
खुला सा	'खुला जैसा'

०. ५. ५. स्वनिमात्मक प्रतिलेखन[1] संबंधी नियम

हिन्दी की लिखावट सामान्यत उच्चारण के अनुरूप कही जा सकती है, परन्तु ऐसे अनेक स्थल है जहाँ पर उच्चारण और लिखावट मे पर्याप्त अन्तर प्रतीत होता है। उदाहरणार्थ, हिन्दी मे सध्यक्षरो को मूल स्वरो द्वारा लिखा जाता है, जैसे; 'तलैया'। इसी प्रकार हम अनुस्वार और चद्र-बिन्दु का भेद ही नही करने जबकि हिन्दी मे दोनो की स्वतन्त्र सार्थकता है। हिन्दी की टाइप मशीनो मे तो इसका भेद ही नही रखा गया है। इस प्रकार हिन्दी की लिखावट मे अनेक स्थल ऐसे है जहाँ पर वे उच्चारण के अनुरूप प्रतीत नही होते। इस स्थिति मे स्वनिमात्मक प्रतिलेखन के नियमो की व्यवस्था करने की आवश्यकता अपेक्षित है। इस व्यवस्था के बिना भाषाश्रयी प्रस्तुत विश्लेषण वैज्ञानिक कोटि को प्राप्त नही करता। प्रतिलेखन के नियम इस प्रकार हैं —

१ 'Phonemic transciption', Bernard Bloch & Trager- -Outline of Linguistic analysis, 1942' § 3 7 तथा Daniel Jones—An Outline of English Phonetics, Cambridge 1956 § 200

(१) व्यंजन स्वनिम हलंतवत् भी है और हलत रहित भी। परन्तु प्रतिलेखन मे ऐसा कोई भेद नही किया गया है। हलतवत् वहाँ माना जाय जहाँ वे हलताक्षर अथवा सवृताक्षर (§ ० ५ ६) बनाते है। उदाहरणार्थ /अनबन/ मे मध्यवर्ती तथा अन्तिम /न/ हलतवत् है क्योकि ये सवृताक्षर निर्मित करते है। शेष स्थितियो मे व्यजन-स्वनिम हलत रहित समझे जाँय। उदाहरणार्थ /सबल, काम/ मे /स, ब, क/ स्वनिम हलत रहित अथवा स्वर सहित है, और स्वर का उच्चारण व्यंजन के पश्चात् है।

(२) /आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, ऑ/ मूल स्वरो के दूसरे प्रतीक/ ा ि, ी, ु, ू, े, ै, ो, ौ, ॉ/ हैं। इनका प्रयोग व्यजनो के साथ होता है और उच्चारण व्यजनो के पश्चात होता है। परन्तु इन प्रतीको की लेखन-विधि इस प्रकार है :—

१ /ा, ी, ो, ौ, ॉ/ व्यजनो के आगे मिलाए गए है—जैसे, / कामदार, लडकी चोर, खौलना, कॉलिज/ इत्यादि।

२ /ि/ व्यजन के पूर्व मिलाया गया है, जैसे; / डलिया, चिडिया / इत्यादि।

३. / े, ै, / व्यजनो के ऊपर मिलाए गए है, जैसे, /मेला, थैला/ इत्यादि।

४. / ु, ू/ व्यजनो के नीचे मिलाए गए है, जैसे, /दुखाना, कूटना/ इत्यादि। परन्तु /र/ के साथ इनकी लेखन-विधि क्रमश इस प्रकार है —/रु, रू/। जैसे, रुपया, रूठना / इत्यादि।

(३) /अइ अउ/ सध्यक्षरो का प्रथम अंश उसके पूर्ववर्ती व्यजन के साथ /अ/ की भाति मिला हुआ समझना चाहिए तथा दूसरा अश उसके आगे अंकित किया गया है और सध्यक्षर की अवस्थिति सूचित करने के लिए नीचे ‿ सकेत का प्रयोग किया गया है। जैसे, /तलइया, कउआ/ इत्यादि।

(४) स्वर प्रतीको के अतिरिक्त व्यजन प्रतीक भी है। इनको व्यंजनो के पूर्व लिखा गया है उदाहरणो सहित ये इस प्रकार है —

व्यंजन	व्यजन प्रतीक	उदाहरण
क्	क	वक्त, अक्ल
क्	क	मक्खन, पक्का
ख्	ख	ख्याल
ख़	ख़	जख़्म, सख़्त
ग्	ग	ग्यारह
ग़्	ग़	नग़्मा

च्	च	कच्चा, मच्छर
ज्	ज	ज्वारी, ज्वाला
ज़्	ज़	नज़्म, सनातनिज़्म
ण्	ण	पुण्य, अग्रगण्य
न्	न	न्याय, जन्म
त्	त,-	पत्थर, पत्ता
ध्	ध	ध्यान, अध्ययन
प्	प	खप्त, चप्पल
ब्	ब	शब्द, कब्ज़ियत
म्	म	म्यान
म्	म	अभ्यास
ल्	ल	मुल्क, शुल्क
व्	व	व्यापार, द्वारा
श्	श	मुश्किल, कश्ट
स्	स	स्याही, स्वप्न

(४. १) / र / के ˋ , , , ˄ / प्रतीक है, / ˋ / को व्यजनो के ऊपर प्रयोग किया गया है और उच्चारण व्यजन के पूर्व होता है, जैसे; / शर्म / । / , / का प्रयोग व्यजन के नीचे किया गया है, जैसे; / प्राण / तथा इसका उच्चारण व्यंजन के पश्चात् होता है । / ˄ / का प्रयोग मूर्धन्य स्वनिमो के नीचे किया गया है, जैसे; / ड्राम / और उच्चारण व्यजन के पश्चात् होता है । / द / के नीचे / व / स्वनिम का / ० / प्रतीक / द / के पश्चात् उच्चरित होता है । इसके अतिरिक्त / क्ष, त्र, ज्ञ, श्र / प्रतीक क्रमश. / क्श्, त्र्, ग्य्, श्र् / सयुक्त व्यजनो के द्योतक है, जैसे; / क्षीर, पवित्र, ज्ञान, मिश्र / ।

(५) अनुस्वार / ं / तथा अनुनासिकता / ँ / का उच्चारण स्वर सम्बद्ध अवस्था मे होता है । ये स्वनिम स्वर तथा स्वर प्रतीको के साथ अकित किए गए है । जैसे, / कस, आग्ल, ऊँट, लडकों, में, मैं, हूँ, कोदों, दोनों / इत्यादि ।

(६) प्रतिलेखन मे सक्रमण सूचक / + / संकेत का व्यवहार नही किया गया है । स्वानिमो के बीच का रिक्त स्थान + सकेत अथवा मुक्त सक्रमण का द्योतक है तथा स्वनिमो को मिला कर लिखा जाना ‿ सकेत अथवा युक्त सक्रमण का द्योतक है । उदाहरणार्थ / लडके का / , / घर का सा / मे बीच का स्थान मुक्त सक्रमण सूचक है और / आदमी / , / औरत / मे प्रत्येक स्वनिम को मिलाकर लिखा

जाना युक्त सक्रमण का सूचक है। इसके अतिरिक्त यौगिक शब्दो मे स्थित मुक्त सक्रमण को सूचित करने के लिए न तो कोई रिक्त स्थान ही छोडा गया है और न + सकेत का प्रयोग ही किया गया है। इस स्थिति मे स्वनिमो को मिलाकर रखा गया है। जैसे, / अन्न जल अन्नजल / , / थर थर थरथर / इत्यादि।

०. ५. ६. अक्षर[1]-विधान

हिन्दी मे अक्षर-विधान करने वाले या तो अकेले स्वर है या स्वर-सयुक्त व्यजन। इन दोनो स्थितियो मे स्वर ही अक्षर-विधान के केन्द्रक हैं, प्रत्येक अक्षर मे किसी न किसी स्वर की सत्ता अवश्य रहती है। जिन अक्षरो मे केवल स्वर ही होते है, उनके साथ व्यजन नही रहते, उन्हे **स्वराक्षर** कहा जाता है। जिन अक्षरो मे स्वर के साथ व्यजन भी रहते है उन्हे **स्वर-सपृक्त-व्यंजनाक्षर** कहा जाता है। स्वर-सपृक्त-व्यजनाक्षरो मे व्यजनो का मेल तीन प्रकार का है—(१) स्वर के पूर्व व्यंजन अथवा सयुक्त व्यजनो का मेल, (२) स्वर के पश्चात् व्यजन या सयुक्त व्यजनो का मेल तथा (३) स्वर के पूर्व एव पश्चात् व्यजन अथवा सयुक्त व्यजनो का मेल। इस प्रकार स्वर-सपृक्त-व्यजनाक्षरो के तीन भेद हो जाते है। इन भेदो के अतिरिक्त अक्षरों का सामान्य भेद यह भी है कि जिन अक्षरो मे स्वर के पश्चात् व्यजन या सयुक्त व्यंजन होते हैं उन्हे **संवृत्ताक्षर**[2] अथवा **हलंताक्षर** कहा जाता है और जिन अक्षरो मे स्वर के पश्चात् व्यजन या सयुक्त व्यजन नही होते उन्हे **विवृत्ताक्षर**[3] अथवा **अजान्ताक्षर** कहा जाता है।

इस विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी के अक्षर-विधान की चार प्रक्रियाएँ है और इन्ही प्रक्रियाओ के अनुसार हिन्दी अक्षरो के चार भेद हो जाते है। इस प्रकार हिन्दी का अक्षर-विधान चाहे एकाक्षरिक शब्दो मे हो अथवा एक से अधिक अक्षर वाले शब्दो मे, इस सूत्र मे आलेखित किया जाता है। व्य० तथा स्व० क्रमश. व्यजन तथा स्वर के प्रतीक है। X तथा × सकेत क्रमश. व्यजन सहित तथा व्यजन रहित अवस्था के द्योतक है :—

व्य० X स्व० X व्य०
× ×

---

१. 'Syllable', Daniel Jones—An out line of English Phonetics, Cambridge, 1956, §§ 211-213.

२. 'Closed Syllable', Mario A. Pei and Frank Gaynor—A Dictionary of Linguistics, Newyork, 1954.

३. 'Open Syllable' वही।

नीचे इस सूत्र को उपसूत्रो मे विभाजित करते हुए हिन्दी-अक्षर-विधान की चारो प्रक्रियाओ को उदाहरणो सहित स्पष्ट किया जाता है:—

१ व्य० X स्व० X व्य०

इस उपसूत्र के अन्तर्गत सध्यक्षरो के अतिरिक्त सभी मूल स्वर स्वत अक्षर निर्माण करते है। इस विधान मे व्यजन या सयुक्त व्यजन नही होते। जैसे, / आओ, आइए, भाई, चलाऊ / शब्दो के / आ, ओ, ए, ई, ओ / अक्षर द्रष्टव्य है। यथा —

व्य०	X	स्व०	X	व्य	अक्षर
	X	आ	X		आ
	X	ओ	×		औ
	X	ए	X		ए
	X	ई	X		ई
	X	ओ	X		ओ

२ व्य० X स्व० X व्य०

इस उपसूत्र के अन्तर्गत वे अक्षर आते है जिनमे स्वर के पूर्व एव पश्चात् व्यजन अथवा सयुक्त व्यजन होते है। जैसे, / कल, काल, प्यास, शर्म / एकाक्षरिक शब्द तथा एक से अधिक आक्षरिक शब्दो जैसे, / सनातनिस्ट, ज्यादती, स्यानपन, घुँघराला / के / निस्ट, ज्याद, स्थान, घुँघ / अक्षर इस सूत्र के अन्तर्गत द्रष्टव्य है। यथा —

व्य०	X	स्व०	X	व्यं	अक्षर
क	X	अ	X	ल	कल
क	X	आ	X	ल	काल
श	X	अ	X	र्म	शर्म
प्य	X	आ	X	स	प्यास
न	X	इ	X	स्ट	निस्ट
ज्य	X	आ	X	द	ज्याद
स्य	X	आ	X	न	स्यान
घ	X	उँ	X	घ	घुँघ

३. व्य० X स्व० X व्य

इस उपसूत्र के अन्तर्गत वे अक्षर आते है जिनमे स्वर के पूर्व व्यंजन या संयुक्त व्यंजन होते है परन्तु स्वर के पश्चात् व्यजन अथवा सयुक्त व्यजन नही होते। उदाहरणार्थ / लौ, क्यों / इत्यादि एकाक्षरिक शब्द तथा एक से अधिक अक्षर वाले

शब्द, जैसे, / अँगडाई, रवइया, कउआ, व्यौरेवार / के / डा, वइ, कउ, व्यौ / इस सूत्र के अन्तर्गत द्रष्टव्य हैं। यथा —

व्य०	X	स्व०	X	व्य०	अक्षर
ल	X	ओ	X		लो
क्य	X	ओं	X		क्यों
ड	X	आ	X		डा
व	X	अइ	X		वइ
क	X	अउ	X		कउ
व्य	X	औ	X		व्यौ

४. व्य० X स्व० X व्य०

इस उपसूत्र के अन्तर्गत वे अक्षर आते है जिनमे स्वर के पश्चात् व्यजन या सयुक्त व्यजन होते है परन्तु उसके पूर्व व्यजन या मयुक्त व्यंजन नही होते। उदाहरणार्थ / आम, ईख, अक्ल / इत्यादि एकाक्षरिक शब्द तथा एक से अधिक अक्षर वाले शब्दो जैसे, / अटकल, अगवानी, इत्तला, अडबड / के / अट, अग, इत्त, अड / इस सूत्र के अन्तर्गत द्रष्टव्य है। यथा —

व्य०	X	स्व०	X	व्य०	अक्षर
	X	आ	X	म	आम
	X	ई	X	ख	ईख
	X	अ	X	क्ल	अक्ल
	X	अ	X	ट	अट
	X	अ	X	ग	अग
	X	इ	X	त्त	इत्त
	X	अ	X	ड	अड

०.५.७. अक्षर-निर्धारण

यौगिक शब्द-रचना मे हिन्दी का अक्षर-विधान बदल जाता है। उदाहरणार्थ हिन्दी मे / पुश्त / एकाक्षरिक शब्द है। इसमे / श / तथा / त / के बीच अक्षर-विभाजन का प्रश्न नही उठता परन्तु जब / ऐनी / परप्रत्यय लगकर / पुश्तैनी / शब्द व्युत्पन्न होता है तब / श / तथा / त / के बीच अक्षर-विभाजन होता है। इस स्थिति मे / श / तथा / त / क्रमशः अपने पूर्ववर्ती एव परवर्ती स्वर से मिलकर अक्षर बनाते है, जैसे, / पुश-तै-नी /। इसी प्रकार / फोक / एकाक्षरिक शब्द है, जब इसमे / अट / प्रत्यय लगता है तो द्वयाक्षरिक / फोकट / शब्द व्युत्पन्न होता है

तथा अक्षर-विभाजन / फो-कट / है और / फोक / की अपेक्षा अक्षर-वृद्धि द्रष्टव्य है। परन्तु जब / फोकट मे / ई / परप्रत्यय जुडता है तो / फोकटी / शब्द व्युत्पन्न होता है। यद्यपि इसमे / फोकट / की अपेक्षा अक्षर-वृद्धि नही है परन्तु अक्षर विधान बदल गया है, जैसे, / फोक-टी /। इस प्रकार / -अट / का ॰/-अ / स्वर लुप्त हो गया और अवशिष्ट अश / ई / मे मिलकर अक्षर बनाता है। अत उक्त उदाहरणो से विदित होता है कि शब्दो का अक्षर-निर्धारण एक महत्वपूर्ण समस्या है। नीचे अक्षर-निर्धारण के सामान्य सिद्धान्तो को प्रदर्शित किया जाता है। इससे पूर्व शब्द की सीमा निश्चित कर देना आवश्यक है क्योकि शब्दो का अक्षर-विभाजन ही इस प्रसग का लक्ष्य है। वाक्य मे शब्दो की सस्थिति दो मौनो के बीच रहती है। दूसरे ढग से हम इस प्रकार कह सकते है कि वाक्यान्तर्गत शब्द दो मुक्त सक्रमणो के बीच विद्यमान रहता है। नीचे के वाक्यो मे यह बात स्पष्ट होगी।

/ + कौन ? + /

/ + यही + तो + मैं + जानना + चाहता + हूँ + कि + मैं + कौन + हूँ /

इन वाक्यो मे प्रत्येक शब्द की सीमा मुक्त सक्रमण द्वारा निश्चित है। यही शब्द सीमा है तथा इस सीमा मे स्थिति शब्द ही हमारे इस प्रासगिक अध्ययन का विषय है। यहाँ यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वाक्य मे ऐसे शब्द भी होते हैं जिनके बीच मे मुक्त सक्रमण विद्यमान रहता है, जैसे, / अन + बन /, / जिन्द + गी / / राष्ट्र + पिता / इत्यादि। परन्तु इस प्रकार के अश शब्द-स्तर पर उन सघटकीय अथवा शब्दाशीय इकाइयो को द्योतित करते है जिनके योग से यौगिक शब्द व्युत्पन्न होता है। अत इस प्रकार का मुक्त सक्रमण **आन्तरिक[१] मुक्त संक्रमण** समझना चाहिए तथा शब्द के बाहर **बाह्य[२] मुक्त संक्रमण**। यौगिक शब्द भी हमारे अध्ययन से सबधित है।

(१) जो शब्द एकाक्षरिक होते है उनके अक्षर-विभाजन का प्रश्न ही नही उठता क्योकि उनकी सीमा वाक्य मे मुक्त सक्रमण द्वारा निर्दिष्ट होती है, जैसे, / + कौन + /, / + तो + /, / + मे + /, / + कि + / इत्यादि।

(२) अनेकाक्षरिक शब्दो के अक्षर-निर्धारण सम्बन्धी नियम इस प्रकार है.—

---

१. 'Internal Open Juncture', Bernard Bloch & Trager—Outline of Linguistic analysis, 1942, § 3 7, (1)

२. 'External open Juncture', वही।

१. प्रत्येक स्वर अकेला अक्षर हो सकता है परन्तु व्यंजन कभी अक्षर नही हो सकते। (§ ०. ५ ६)

२. प्रत्येक मूल स्वर अक्षर के आदि, मध्य अथवा अन्त में स्थान प्राप्त कर सकता है, जैसे; / आदमी, बच्पन, कुल्हाडी / शब्दो के क्रमश / आद, बच, कु / अक्षर द्रष्टव्य है। / आद / मे / आ / स्वर की आदि स्थिति है, / बच / मे / अ / की मध्य स्थिति है तथा / कु / मे / उ / की अन्तिम स्थिति है। यह नियम संध्यक्षरो के के सम्बन्ध मे लागू नही होता, सध्यक्षर अक्षर की आदि अथवा अन्तिम स्थित मे आता है, मध्य मे नही। जैसे; / अइयारी, रवइया, तलइया / शब्दो मे / अइ, वइ, लइ, / अक्षर द्रष्टव्य है। / अइ / अक्षर मे / अइ / सध्यक्षर की आदि स्थिति है और / वइ तथा / लइ / में / अइ / की अन्तिम स्थिति है।

३. यदि किसी शब्द मे एक से अधिक **स्वर-संयोग**[1] हो तो अक्षर-विभाजन एक दूसरे के पश्चात् होगा। उदाहरणार्थ / कई, आओ, नउआ, लाइए, आइए, बेईमान / शब्दो का अक्षर-विभाजन इस प्रकार है —/ क-ई / , / आ-ओ / , / नउ-आ / , / ला इ-ए / , / आ-इ-ए / , / बे-ई-मान / ।

४ जब व्यजन या **संयुक्त[2] व्यंजन** शब्द के आदि मे आते है तो वे अपने परवर्ती स्वर से सम्बद्ध होकर अक्षर बनाते है। उदाहरणार्थ / जाना, किसी, रोटी,

---

१. यहाँ स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि सध्यक्षर दो स्वरो का सयोग नही हैं अपितु दो स्वराशो का एकीकरण है। संध्यक्षर श्रुति-ध्वनि है जिसका उच्चारण हृदय के एक स्पन्द मे होता है तथा जबडा केवल एक बार हिलता है। सामान्यत: यह होता है कि कोई शब्द जितने अक्षर वाला होता है उतनी ही बार नीचे का जबडा हिलता है। स्वर-सयोगो मे स्वरो की सामान्यत अलग-अलग सत्ता प्रतीत होती है परन्तु सध्यक्षरो मे नही। स्वर-सयोग मे स्वरो के बीच उच्चारण का उतार-चढाव रहता है परन्तु सध्यक्षर मे यह बात नही, उसमे भाषणावयव एक स्थान के दूसरे स्थान की ओर सीधे मार्ग से जाते है, बीच मे कही गिराव के पश्चात् चढाव या चढाव के पश्चात् गिराव नही होता। यदि गिराव है तो गिराव की, यदि चढाव है तो चढाव की गति अन्त तक एक रूप मे रहेगी।

२. / न्ह, म्ह, ल्ह, रह / व्यजन सयुक्त व्यजन नही है, अपितु / ख, घ / आदि की भाँति की इकाइयाँ है। दूसरे इनमे सयुक्त व्यजनो की भाँति पूर्वापर क्रम नही है, ध्वनि वैज्ञानिक दृष्टि से प्रत्येक का उच्चारण एक साथ होता है।

ब्यौरा, ज्यादातर, त्यागी, ग्रथकार / शब्दो में क्रमश / ज, क, र, ब्य, ज्य, त्य, ग्र / आदि व्यजन है । ये व्यजन अपने-अपने परवर्त्ती स्वरो—/ आ, इ, ओ, औ, आ, आ, अ / से सम्बद्ध होकर / जा, कि, रो, ब्यौ, ज्या, त्या, ग्रथ / अक्षर बनाते है ।

५. जब व्यजन या सयुक्त व्यजन शब्द के अन्त मे आते है तो वे अपने पूर्ववर्त्ती स्वर के सम्बद्ध होकर अक्षर बनाते है । उदाहरणार्थ / जगत, लगान, कागजात, बेवक्त, बदशक्ल, महेन्द्र / शब्दो मे क्रमश / त, न, त, क्त, क्ल, न्द्र / अन्तिम व्यजन है तथा ये अपने-अपने पूर्ववर्त्ती स्वरो, / अ, आ आ, अ, अ, ए / से सम्बद्ध होकर / गत, गान, जात, वक्त, शक्ल, हेन्द्र / अक्षर बनाते है ।

६ यदि कोई व्यजन दो स्वरो के बीच शब्द मे आता है तो सामान्यत. परवर्ती स्वर से सम्बद्ध होकर अक्षर बनाता है । उदाहरणार्थ / सबेरा, बनाई, नरेश, नयन / शब्दो मे क्रमश /ब, न, र, य/ व्यजन द्रष्टव्य है । / ब / की स्थिति / अ / तथा / ए / के बीच है, / न / की स्थिति / अ / तथा / आ / के बीच, / र / की स्थिति / अ / तथा / ए / के बीच, और /य/ की स्थिति /अ/ तथा /अ/ के बीच । इस स्थिति मे स्वर-मध्यग व्यजन परवर्ती स्वर मे सबद्ध होता है और इन शब्दो मे अक्षर-विभाजन क्रमश इस प्रकार होगा:—/ स-बे-रा / , / ब-ना-ई / , / न-रेश / , /न-यन/ इस नियम का पालन वहाँ नही होता जहाँ व्यजन तथा उसके परवर्ती स्वर के बीच मुक्त सक्रमण या शब्द-सीमा होगी । इस दशा मे मुक्त सक्रमण के पूर्व का व्यजन अपने पूर्ववर्ती स्वर से सबद्ध होकर अक्षर बनाएगा । उदाहरणार्थ / दरअसल, अनऊबे, घरआँगन / शब्दो मे क्रमश / र, न, र / व्यजन द्रष्टव्य है । इनकी स्थितियाँ मुक्त सक्रमण के पूर्व हैं, जैसे, / दर + असल / , / अन | ऊबे / , / घर | आँगन / । इस प्रकार ये अपने पूर्ववर्ती / अ / स्वर से सम्बद्ध होकर क्रमश / दर, अन, घर / अक्षर निर्मित करेगे ।

७ यदि दो स्वरो के बीच शब्द मे दो व्यजन आते है तो सामान्य नियम यह है कि पहला व्यजन पूर्ववर्ती स्वर से तथा दूसरा व्यजन परवर्ती स्वर से सम्बद्ध होगा । यह नियम वहाँ भी कार्य करता है जहाँ दो व्यंजनो के बीच मुक्त संक्रमण अथवा शब्द-सीमा विद्यमान होती है । उदाहरणार्थ / मक्खन, शरमिन्दा, निश्काम, अनबन, अनहित, मारपीट / शब्दो मे / क्ख, रम, श्क, नब, नह, रप / व्यजन क्रमश: / अ / तथा / अ / , / अ / तथा / इ / , / इ / तथा / आ / , / अ / तथा / अ / , / अ / तथा / इ / , / आ / तथा / ई / के बीच विद्यमान है । इस स्थिति मे प्रथम व्यजन / क, र, श, न, न, र / अपने-अपने पूर्ववर्ती स्वर / अ, अ, इ, अ, अ, आ / से सबद्ध होकर / मक, शर, निश, अन, अन, आर / अक्षर निर्मित करेगे तथा द्वितीय व्यजन अपने-अपने परवर्ती स्वर के साथ सम्बद्ध होकर अक्षर निर्माण करेगे । इस

नियम का पालन वहाँ नही होता जहाँ शब्द-सीमा या मुक्त सक्रमरण सयुक्त व्यजनो के पूर्व होता है। उदाहरणार्थ / कुख्याति, यथास्थान, घरद्वार / शब्दो मे मुक्त सक्रमरण इस प्रकार है :— / कु+ख्याति / , / यथा+स्थान / , / घर+द्वार /। इस दशा मे / ख्य, स्थ, द्व / सयुक्त व्यजन अपने-अपने परवर्ती स्वर से संबद्ध होकर / ख्या, स्थान, द्वार / अक्षर बनाते है।

८. यदि दो स्वरो के बीच शब्द मे तीन व्यजन आते है तो सामान्यत: प्रथम व्यजन अपने पूर्ववर्ती स्वर से तथा शेष व्यजन परवर्ती स्वर से सबद्ध होते हैं। उदाहरणार्थ / कल्ल्याण, निश्क्रिय, निश्प्राण / शब्दो मे / ल्ल्य, श्क्र, श्प्र / त्रिव्यजन-सयोग क्रमश: / अ / तथा / आ / , / इ / तथा / इ / , / इ / तथा / आ / के बीच मे है। इस स्थिति मे प्रथम व्यजन / ल, श, श / अपने-अपने पूर्ववर्ती स्वर / अ, इ, इ / से सबद्ध होगे तथा शेष व्यजन परवर्ती स्वर / आ, इ, आ / से संबद्ध होगे। इस प्रकार इन शब्दो का अक्षर विभाजन इस प्रकार होगा :—/ कल-ल्याण / , / निश-क्रिय / , / निश-प्राण /। परन्तु यदि शब्द-सीमा या मुक्त सक्रमरण दो व्यजनों के पश्चात् होगा तो अक्षर-विभाजन दो व्यजनो के पश्चात् होगा। उदाहरणार्थ / जिल्दगर, मर्दगी, अन्नजल / शब्दो मे अक्षर-विभाजन इस प्रकार होगा :—/ जिल्द+गर / , / मर्द+गी / , / अन्न+जल /। तीन व्यजनो के पश्चात् यदि शब्द सीमा या मुक्त सक्रमण हैं तो अक्षर-विभाजन तीन व्यजनो के पश्चात् होगा। सस्कृत-तत्सम शब्दो मे यह बात मिलती है, जैसे, / राश्ट्र+पिता /।

९. स्वरमध्यग तीन से अधिक व्यजन हिन्दी मे नही मिलते।

०. ६. प्रकृति-प्रत्यय संबंधी सैद्धान्तिक विचार

भाषा की चरम इकाई वाक्य है। वाक्य ही भाषा के अध्ययन का आधार होता है। वाक्य ध्वनियो का समूह होता है। इन ध्वनियो का दो दृष्टियो से अध्ययन होता है—ध्वनि-वैज्ञानिक दृष्टि से तथा रूप-वैज्ञानिक दृष्टि से। ध्वनि-वैज्ञानिक अध्ययन भाषा के अध्ययन की प्रथम सथा है तथा इस अध्ययन मे अर्थ पर हमारा विशेष ध्यान नही जाता। हाँ, स्वनिमो की स्थापना मे अर्थ पर इतना ध्यान अवश्य रहता है कि अमुक ध्वनि विचाराधीन-भाषा मे व्यावहारिक है अथवा अव्यावहारिक। उदाहरणार्थ [पक्का], [क्या] तथा [क्वारा] ध्वनि समूहो मे [क, क, क][1] / क /

---

१. [क, क, क] ध्वनियाँ क्रमश. स्फोट रहित, तालव्यीकृत, ओष्ठयीकृत ध्वनियो की द्योतक है।

स्वनिर्म के अन्तर्गत आती हैं। क्योकि [पक्का] का वही अर्थ है जो [पक्का] अथवा [पक्का] का, [क्या] का वही अर्थ है जो [क्या] अथवा [क्या] का। इसी प्रकार [क्वारा] का वही अर्थ है जो [क्वारा] अथवा [क्वारा] का। इतना अवश्य है कि उच्चारण मे कुछ अस्वाभाविकता प्रतीत होती है परन्तु इन विभेदो के द्वारा अर्थ मे कोई परिवर्तन नही होता, प्रत्येक दशा मे अर्थ समान रहता है। इस प्रकार ये विभेद अव्यावहारिक है, परन्तु [पक्का] और [मक्का] ध्वनि समूहो मे [प] तथा [म] दो अलग स्वनिम है क्योकि [पक्का], [मक्का] से अर्थ मे भिन्न है। इस दशा मे [प] तथा [म] ध्वनिया व्यावहारोपयोगी है। इस प्रकार स्वनिमो की स्थापना में अर्थ से केवल इतना ही प्रयोजन है कि अमुक ध्वनि सार्थक है अथवा निरर्थक। किसी स्वनिम के विशेष अर्थ का बोध यहाँ नही है। उदाहरणार्थ / क / का कोई अर्थ नही। रूप-विज्ञान मे अर्थ-बोध पर विशेष ध्यान रहता है। उदाहरणार्थ [लडका, लडकपन, हिम्मत, हिम्मतवर] ध्वनि समूह विभिन्न अर्थो का द्योतन करते है। यह अर्थ-बोध प्रत्येक ध्वनि-समूह की निकटस्थ जानकारी से प्राप्त होना है। [लडका · लडकपन हिम्मतः हिम्मतवर] जैसे अनुपात निश्चित करना बुद्धिमता नही कही जा सकती। इस प्रकार वाक्यान्तर्गत ध्वनि-समूहो का अध्ययन अर्थ निरपेक्ष तथा अर्थ सापेक्ष अवस्था मे करते है।

प्रस्तुत प्रसग मे हमारा अध्ययन ध्वनि-समूहो के अर्थ-बोध पर अवलम्बित है। यहाँ अर्थ सम्बन्धी दृष्टिकोण को स्पष्ट कर देना आवश्यक है। अर्थ का अध्ययन एक अत्यन्त गम्भीर समस्या है, उसे किस प्रकार सीमित किया जाय, इसके लिए हमारी पहुँच होना असम्भव है। इसका कारण यह है कि हम किसी भी ध्वनि-समूह के अर्थ को पूर्णत और भली-भाँति तब तक नही जान सकते जब तक उसके समस्त प्रयोगो और परिस्थितियो को न समझा जाय। अर्थ-बोध की प्राप्ति तब और कठिन हो जाती है जब एक वक्ता की दृष्टि मे किसी ध्वनि-समूह का अर्थ दूसरे वक्ता के अर्थ-बोध से अधिक अशो या कम अशो मे भिन्न होता है। इस प्रकार किसी भी ध्वनि समूह के अर्थबोध का परिज्ञान इतना व्यापक और सूक्ष्म है कि उसे समझना अत्यन्त दुस्तर कार्य है। वस्तुत यह एक असम्भव कार्य है क्योकि यह तभी हो सकता है जब समस्त विश्व अध्येता के भीतर समाहित हो जाय और वह त्रिकालज्ञ हो सके। परन्तु भाषा सम्बन्धी अध्ययनो मे एक सामान्य व्यावहारिक दृष्टि से काम लिया जाता है, इस प्रकार व्याकरणिक अध्ययन सम्पन्न होता है। प्रस्तुत अध्ययन में ध्वनि-समूहो के उस सामान्य मूलभूत अर्थ की जानकारी प्राप्त करते है जो प्रायः सभी

परिस्थितियो एव प्रयोगो मे विद्यमान पाया जा सकता है, उदाहरणार्थ / लडका घर गया / , / होंगे कोई पचास घर / , / मेरे घर मे बीमार है / वाक्यो मे / घर / शब्द द्रष्टव्य है । विचार करने पर तीनो वाक्यो मे / घर / के सूक्ष्म अर्थ-भेद मिलते है । प्रथम वाक्य मे / घर / से अभिप्राय 'स्थान विशेष' से है, दूसरे मे 'आबादी' से तथा तीसरे मे 'पत्नी' से है । इस प्रकार एक शब्द के अनेक सूक्ष्म अर्थ होते है । परन्तु ये सूक्ष्म भेद होते हुए भी / घर / का सामान्य अर्थ 'रहने-सहने के स्थान' से लिया जाता है । इस प्रकार ध्वनि-ससूहो के अर्थो से अभिप्राय केवल उपयोज्य अथवा व्यावहारिक अर्थों से है जिनके द्वारा ध्वनियो का अर्थ सम्बन्धी अध्ययन प्रस्तुत होता है ।

जब किसी ध्वनि-समूह मे व्यवहार अथवा व्याकरणिक प्रयोग के अनुसार अर्थ बोध कराने की क्षमता पाई जाती है तब उसे शब्द[1] कहा जाता है । शब्द की ध्वनि-वैज्ञानिक परिभाषा[2] से यहाँ हमारा प्रयोजन नही है । जिसे **ध्वनि-विज्ञानी** एक ध्वन्यात्मक शब्द स्वीकार करता है उसमे **रूपविज्ञानी** कई शब्द पा सकता है । इसके विपरीत जिन्हे ध्वनि-विज्ञानी अनेक शब्द मानता है उन्हे रूपविचार का अध्येता एक शब्द स्वीकार कर सकता है । उदाहरणार्थ [राम ने रावण को मारा] उच्चार ध्वनि-विज्ञानी के लिए एक शब्द है क्योंकि इसका उच्चारण एक साथ होता है तथा उसकी दृष्टि केवल ध्वनियो के अनुक्रम पर होती है, अर्थ पर नही । परन्तु रूपविज्ञानी के लिए इसमे अनेक शब्द है । यथा [राम ने], [रावण को], [मारा], [राम], [ने], [रावण], [को], [मारा], [मार], [आ] । शब्दो की यह प्रतीति अर्थबोध अथवा व्याकरण पर अवलम्बित है । इसके विपरीत उक्त उच्चार मे [र, आ, म, न, ए, र, आ, व, अ, ण, क, ओ, म, आ, र, आ] ध्वनियाँ है जो ध्वनि-वैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा प्राप्त हुई है तथा ध्वनि-विज्ञानी इन्हे अलग-अलग शब्द कहता है । रूप-विज्ञानी के लिए तथाकथित ध्वन्यात्मक शब्द एक शब्द भी हो सकता है और उस एक शब्द के अन्तर्गत कई शब्द भी । [राम ने रावण को मारा] एक शब्द इसलिए है कि इसके द्वारा एक विचार का बोध होता है । इस समग्र विचार बोध के अन्तर्गत [राम ने], [रावण को], [मारा], [राम], [ने], [रावण], [को], मार], [आ] अर्थ बोधक शब्द इसलिए है कि इस प्रकार व्याकरणिक विश्लेषण द्वारा प्राप्त इन रूपो से किसी

---

१. A word is the result of the association of a given meaning with a given combination of sounds capable of a given grammatical use.—A. Meillet. दे० J. Marouzeau—Lexique de la Terminologie Linguistique, Paris 1951.

२. 'Phonetic word', J Vendryes—Language, 1952 पृष्ठ 57.

न किसी प्रकार का विखडित अर्थबोध अवश्य होता है । इस प्रकार शब्द से अभिप्राय अर्थबोध करने वाले ध्वनि-समूहो से है ।

शब्द की परिभाषा समझ लेने के पश्चात् हम प्रकृति-प्रत्यय सम्बन्धी विवेचन मे समर्थ हो जाते है । जब हम शब्दो का विश्लेषण करते है तो उनके अन्तर्गत दो तत्वो की सस्थिति परिलक्षित होती है— **प्रकृति-तत्व** तथा **प्रत्यय-तत्व** । प्रकृति-तत्व भाषा के वे आधार भूत अग है जिनसे भिन्न-भिन्न अर्थों – अभिधेय वस्तुओ भावो अथवा व्यापारो—का बोध होता है । जिस तत्व मे वस्तु अथवा भावो के व्यक्त करने की क्षमता नही तथा जिनकी सार्थकता प्रकृति-तत्वो के पूर्व या पश्चात् लगकर ही परिलक्षित होती है उसे प्रत्यय-तत्व कहते है । उदाहरणार्थ / पचायत / शब्द मे / पच / प्रकृति-तत्व है जिसके पश्चात् / -आयत / प्रत्यय तत्व है । / पच / प्रकृति तत्व इसलिए है कि इसके द्वारा 'पच' के सत्व का बोध होता है । / -आयत / प्रत्यय-तत्व इसलिए है कि इसमे वस्तु अथवा भाव-सम्बन्धी अर्थ गर्भित नही है तथा इसकी सार्थकता प्रकृति के पश्चात् ही प्रतीत होती है, प्रकृति की भाँति उसका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नही । इस प्रकार यह तत्व भावबोधक शब्द / पचायत / का निर्माण करता है । इसी प्रकार /पचायतों ने यह काम किया/ वाक्य मे /पचायतों/ शब्द है जिसमे /पंचायत/ से सत्व का बोध होता है तथा / -ओं / तत्व के द्वारा वाक्य मे अन्तर्गत /पचायत / के तिर्यक कारक बहुवचन स्त्रीलिंग का बोध होता है । जिस प्रकार / पचायत / शब्द की स्वतन्त्र सार्थकता है उस प्रकार की सार्थकता / ओं / की नही । उक्त वाक्य में ही / पचायतों ने / एक शब्द है । इसमे / पचायतों / प्रकृति है तथा / ने / प्रत्यय । / पचायतों / प्रकृति से तत्व का बोध होता है तथा / ने / के द्वारा / पंचायतों / तथा / किया / क्रिया के बीच कर्तृपरक सम्बन्ध व्यक्त होता है । / ने / की वैसे कोई स्वतन्त्र सार्थकता नही उसकी सार्थकता तो केवल / पचायतों / कर्त्ता के साथ ही विदित होती है । इस प्रकार इन उदाहरणो से यह स्पष्ट है कि प्रकृति-तत्व भाषा के आधार-भूत अग हैं उनकी स्वतन्त्र सत्ता वाक्य मे देखी जा सकती है परन्तु प्रत्यय प्रकृति पर आश्रित रहने वाले अश है और आश्रितो का कोई अपना स्वतन्त्र अस्तित्व नही होता ।

०. ६. १. हिन्दी प्रकृति-तत्व

ऊपर स्पष्ट किया गया है कि प्रकृति-तत्व भाषा के आधारभूत अंग है । इन

आधार-भूत अगो मे **धातु**[१] **प्रातिपदिक**[२] तथा **पदो**[३] का अन्तर्भाव हो जाता है। क्रियार्थक आधारभूत तत्व को धातु कहते है तथा सत्व प्रधान आधार-भूत तत्व को प्रातिपदिक कहते है। धातु तथा प्रातिपदिक नाम वाक्य मे व्यवहृत होने के पूर्व की अवस्थाओ के है तथा अपनी इस विशेषता के अनुसार ये सदैव आबद्ध रूप मे रहते है। उदाहरणार्थ / लिखवा- / धातु है। इससे क्रियार्थक बोध होता है। यह रूप किसी और सम्बन्ध की अपेक्षा करता है। इसी प्रकार / लड़क- / सत्व-बोधक प्रातिपदिक है तथा यह भी किसी और सम्बन्ध की अपेक्षा करता है। जब धातु तथा प्रातिपदिको को वाक्य मे प्रयोगार्ह शक्ति मिलती है तब ये पद कहे जाते है। दूसरे ढग से यो कहा जा सकता है कि शब्द की विभक्ति (§०. ७ विभक्ति) रहित अवस्था का का नाम धातु अथवा प्रातिपदिक है तथा विभक्ति सहित अवस्था का नाम पद है। इन आधारभूत अगो के पूर्व अथवा पश्चात् प्रत्ययो का व्यवहार होता है। प्रत्ययो के यौगिक विधान की दृष्टि से प्रकृति तत्वो को तीन वर्गो मे रखा जाता है—(१) **मूल प्रकृति**, (२) **व्युत्पन्न प्रकृति**, (३) **पद प्रकृति**।

मूल-प्रकृति से तात्पर्य उन चरम रूपो से है जिनका अर्थ की दृष्टि से आगे विभाजन सम्भव नही। ये वस्तुत भाषा की अविभाज्य इकाइयाँ है। उदाहरणार्थ / तेल, बोतल, राम, घर / इत्यादि सत्व बोधक इकाइयाँ है। इसी प्रकार / चल, कर, खा / इत्यादि क्रियार्थक इकाइयाँ हैं। इनका आगे विभाजन सम्भव नही है।

---

१. 'क्रियाभावो धातु'—कातन्त्रव्याकरणम् ३।१।९, 'क्रियार्थो धातु'—शाकटायनव्याकरणम् १।१।२२ तथा हेमचन्द्रशब्दानुशासनम् ३।३।३

२. 'अर्थवदधातुरप्रत्यय प्रातिपदिकम्। कृत्तद्धित समासाश्च'—पाणिनिव्याकरणम् १।२।४५-४६। हमारी प्रत्यय विषयक मान्यता सस्कृत प्रत्यय विषयक मान्यता से व्यापक अर्थ मे है, उसके अन्तर्गत पूर्वप्रत्यय, परप्रत्यय, विभक्ति तथा पश्चाश्रयी भी शामिल है। यह सब होते हुए भी पाणिनि का सूत्र हमारी मान्यता मे विलकुल उपयुक्त पडता है। पाणिनि जिन्हे कृदन्त तद्धित कहते है उन्हे हम व्युत्पादक प्रत्ययो के योग से व्युत्पन्न प्रातिपदिक कहते है।

३. 'सुप्तिडन्त पदम्'—पाणिनि व्याकरणम् १।४।१४। सस्कृत मे प्रयोगार्ह शब्द को पद कहते है। ये पद 'सुप्' और 'तिड्' प्रत्ययो से सिद्ध होते है ये प्रत्यय संस्कृत मे विभक्तियाँ है। हिन्दी मे भी यही स्थिति है। अत. हिन्दी-पद के सम्बन्ध में उक्त पाणिनीय परिभाषा मान्य है।

यदि इनका विभाजन किया जायगा तो अर्थ की सत्ता नष्ट हो जायगी। उदाहरणार्थ / बो-तल / अथवा / ब-ओ-त-अ-ल / जैसे विभाजन प्रस्तुत प्रसंग से कोई सम्बन्ध नही रखते तथा इन विभाजित अशो का कोई अर्थ नही होता। हाँ, ध्वनि-विज्ञानी के लिये इस प्रकार के विभाजन महत्वपूर्ण है परन्तु यहाँ पर इनकी कोई महत्ता नही। इन मूल प्रकृति तत्वो के अन्तर्गत **मूल धातु** तथा **मूल प्रातिपदिक** आते है। मूल धातु से अभिप्राय क्रियार्थक उन चरम रूपो से है जो दूसरे रूपो से व्युत्पन्न नही कहे जा सकते। उदाहरणार्थ / चल, कर, खा / इत्यादि रूप मूल धातुएँ है जो किसी भी दूसरे रूप से व्युत्पन्न नही ठहराई जा सकती। मूल प्रातिपदिको से अभिप्राय उन सत्व प्रधान चरम रूपो से है जो दूसरे रूपो मे व्युत्पन्न नही होते। जैसे, / मकान /, / दौलत / इत्यादि।

व्युत्पन्न प्रकृति[1] से तात्पर्य उन रूपो से है जो मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति से व्युत्पन्न होते है। उदाहरणार्थ / पच / मूल प्रकृति है। इसी से / पचायत / रूप व्युत्पन्न हुआ। इस प्रकार यह भावबोधक व्युत्पन्न प्रकृति है। / अनबन / मे मूल प्रकृति / बन / है। इसी से / अनबन / अभाव-बोधक प्रकृति व्युत्पन्न हुई। / रोजगार / व्युत्पन्न प्रकृति है जो मूल प्रकृति / रोज / से व्युत्पन्न है। इस प्रकार यह भाव-बोधक व्युत्पन्न प्रकृति है। इसी से / बेरोजगार / प्रकृति व्युत्पन्न होती है। इस प्रकार अभावात्मक विशेषता सूचक व्युत्पन्न प्रकृति बनती है। फिर इसी से / बेरोजगारी / रूप व्युत्पन्न हुआ। इस प्रकार यह भावबोधक व्युत्पन्न प्रकृति है। इसी प्रकार / मिल / मूल प्रकृति से व्युत्पन्न / मिलन / व्युत्पन्न प्रकृति है। फिर इससे / मिलनसार / प्रकृति व्युत्पन्न होती है। फिर इससे / मिलनसारी / प्रकृति व्युत्पन्न होती है। इस प्रकार व्युत्पन्न प्रकृतियो के अन्तर्गत **व्युत्पन्न धातु** तथा **व्युत्पन्न प्रातिपादिक** आते है। व्युत्पन्न धातुओ के अन्तर्गत **नामधातु, सकर्मक धातु, प्रेरणार्थक धातुएँ** आती हैं। व्युत्पन्न प्रातिपदिको मे अन्तर्गत सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिक आते है। ये प्रातिपदिक मूल धातु अथवा मूल प्रातिपदिक या व्युत्पन्न धातु अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिको से व्युत्पन्न होते है।

---

१ इन व्युत्पन्न प्रकृतियो के अन्तर्गत समास भी आते है और जटिल शब्द भी। प्रस्तुत विवेचन मे समासो से हमारा कोई सबंध नही, हमारे विषय के बाहर की बात है। हमारा सबध तो जटिल रूपो से है जिसमे प्रकृति-प्रत्यय का सबंध मिलता है।

पद प्रकृति से तात्पर्य वाक्य में शब्दो के प्रयोगार्ह रूपो[1] से है
धातु अथवा मूल प्रातिपदिक या व्युत्पन्न धातु अथवा व्युत्पन्न प्रातिपदिको से सिद्ध होते है तथा इनसे पद सबधी अनेक प्रकार के अर्थ अभिव्यक्त होते है। उदाहरणार्थ / लडका चला / वाक्य मे / लडका / सज्ञापद तथा / चला / क्रियापद है। ये पद क्रमश मूल प्रातिपदिक / लडक- / तथा मूल धातु / चल- / से सिद्ध है। / लडका / पद से प्रत्यक्ष कारक एक वचन पुल्लिग का बोध होता है। / चला / क्रिया पद मे कर्तृवाच्य, निश्चय, भूतकाल, अन्य पुरुष, पुल्लिग, एक वचन का बोध होता है। इसी प्रकार / पचायतो ने फैसला करवाया / वाक्य मे / पचायतो / , / फैसला / , / करवाया / पद है जो क्रमश व्युत्पन्न प्रातिपदिक / पचायत / , मूल प्रातिपदिक / फैसल- / तथा व्युत्पन्न धातु / करवा- / से सिद्ध है। / पचायतो / संज्ञा-पद से तिर्यक कारक, बहुवचन, पुल्लिग का बोध होता है। / फैसला / सज्ञापद से तिर्यक कारक, एक वचन, पुल्लिग का बोध होता है। / करवाया / क्रिया पद से कर्तृवाच्य, निश्चय, भूतकाल, अन्य पुरुष, पुल्लिग एकवचन का बोध होता है। इस प्रकार पद-प्रकृति के अन्तर्गत आने वाले सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा क्रिया विशेषण पद है।

०. ६. २. हिन्दी प्रत्यय-तत्व

शब्द के जिस अंश मे स्वतत्र अस्तित्व-द्योतक कोई अर्थ गर्भित नही होता और वाक्य मे स्वतत्रतापूर्वक प्रयुक्त होने की क्षमता जिसमे नही होती तथा जो प्रकृति—मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति अथवा पद-प्रकृति—के आश्रय से उसके पूर्व अथवा पश्चात् आकर अर्थवान् होता है, उसे **प्रत्यय** कहते है (§ ०. ६)। प्रत्यय की इस परिभाषा के अनुसार प्रत्ययो के प्रधानत दो भेद हिन्दी मे प्राप्त है—(१) **व्युत्पादक प्रत्यय**, (२) **व्याकरणिक प्रत्यय**। व्युत्पादक प्रत्यय वे है जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पश्चात् लगकर दूसरे प्रकार की धातु अथवा प्रातिपदिक व्युत्पन्न करते है। उदाहरणार्थ / रँग / धातु मे जब / –वा / प्रत्यय का योग होता है तो / रँगवा / प्रेरणार्थक धातु व्युत्पन्न होती है। इसी प्रकार / रोज / प्रातिपदिक मे जब / गार / प्रत्यय का योग होता है जो / रोजगार / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। फिर इसी मे / बे– / प्रत्यय का योग होता है तो / बेरोजगार / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। इसमे भी जब / -ई / प्रत्यय का योग होता है तो / बेरोजगारी / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होना है। ये व्युत्पादक प्रत्यय दो प्रकार के हैं

१. बाबूराम सक्सेना, सामान्य भाषाविज्ञान, पृष्ठ ८९-९०।

(१) **पूर्व प्रत्यय**[१] तथा (२) **परप्रत्यय**[२]। पूर्व प्रत्ययो का योग धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व होना है, जैसे / कुचाल / प्रातिपदिक मे / कु- / प्रत्यय का योग / चाल / प्रातिपदिक के पूर्व हुआ है। / अटल / प्रातिपदिक मे / अ- / का योग / टल / धातु के पूर्व हुआ है। परप्रत्ययो का योग धातु अथवा प्रातिपदिको के पश्चात् होता है, जैसे / चलन / प्रातिपदिक मे / -अन / प्रत्यय का योग / चल / धातु के पश्चात् हुआ है। इसी प्रकार / लोकायत / प्रातिपदिक मे / -आयत / प्रत्यय का योग / लोक / प्रातिपदिक के पश्चात् हुआ है। इस प्रकार व्युत्पादक प्रत्ययो के योग से अनेक अर्थक धातु एव प्रातिपदिक व्युत्पन्न होने है।

२- व्याकरणिक प्रत्ययो से तात्पर्य उन प्रत्ययो से है जो वाक्यान्तर्गत व्याकरणिक रूपो की सिद्धि करते है। इनके दो प्रधान भेद है—(१) **विभक्ति** तथा (२) **पश्चाश्रयी**।[३] विभक्ति प्रत्यय वे है जो धातु अथवा प्रातिपदिक के पश्चात् लगकर उसे वाक्य मे व्यवहार योग्य पद की सज्ञा प्रदान करते है। उदाहरणार्थ / बालकों ने किताब पढी / वाक्य मे / बालकों / तथा / पढी / क्रमशः संज्ञा तथा क्रिया पद है तथा ये पद / बालक / प्रातिपदिक तथा / पढ / धातु से सिद्ध है। / बालक / में लगने वाली / -ओं / विभक्ति तिर्यक कारक, बहुवचन पुल्लिग की द्योतक है। इस प्रकार / बालकों / सज्ञा पद सिद्ध होता है। / पढ / धातु के पश्चात् लगने वाली / -ई / विभक्ति अन्य पुरुष, एकवचन, स्त्रीलिंग भूतकाल इत्यादि को द्योतक है। इसी प्रकार / पुलिस ने जहरीली गैस छोडी / वाक्य मे / जहरील- / विशेषण प्रातिपदिक है, इसमे जब / -ई / विभक्ति का योग होता है तो स्त्रीलिंग एकवचन विशेषण पद / जहरीली / सिद्ध होता है। / पुलिस / सज्ञा प्रातिपदिक मे जब / -० / विभक्ति का योग होता है तो तिर्यक कारक एक वचन स्त्रीलिग / पुलिस / पद की सिद्धि होती है। / छोड / धातु मे जब / -ई / विभक्ति का योग होता है तो कर्तृवाच्य, निश्चय, भूतकाल, अन्य पुरुष, एक वचन, स्त्रीलिग / छोडी / क्रिया-पद की सिद्धि होती है। इस प्रकार विभक्तियो के योग से सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषण पद सिद्ध होते है।

---

१ 'Prefix', Hans Marchand, The categories and types of English word-fromation, wiesbaden. 1960., § 3.1.1.

२ 'Suffix', वही § 4 1 1 , § 4.1 2.

३. सभी प्रत्यय प्रकृति तत्वो के आश्रय से आश्रित कहे जा सकते है पश्चाश्रितो से अभिप्राय विशेष अर्थ मे है। दे०—'Enc'itic', Mario A. Pei., Dictionary of Linguistics, Newyork, 1954.

पश्चाश्रित प्रत्यय वे है जो वाक्य मे पदो के पश्चात् प्रयुक्त होते है तथा वे ऐसे आबद्ध अश है जो वाक्य मे पदो के बीच किसी न किसी प्रकार का व्याकरणिक सम्बन्ध अथवा जिस पद के पश्चात् प्रयुक्त होते है उनके सम्बन्ध मे किसी न किसी प्रकार की व्याकरणिक रूढि को व्यक्त करते है। उदाहरणार्थ, लडके ने यह काम किया / वाक्य मे / ने, पश्चाश्रित प्रत्यय है। यह / लडके सज्ञापद तथा / किया / क्रिया-पद के बीच कर्तृपरक सम्बन्ध सूचित करता है। इसी प्रकार / लडके की शादी हो गई / वाक्य मे / की / पश्चाश्रयी / लडके / तथा / शादी / के बीच भेद्य-भेदक सम्बन्ध व्यक्त करता है। इस प्रकार पश्चाश्रितो के द्वारा अनेक प्रकार के सबध व्यक्त होते है। / आप ही कहिए / वाक्य मे / ही / पश्चाश्रयी है जिसके द्वारा / आप / पद के अवधारण का बोध होता है। इसी प्रकार / चलो उठो भी / वाक्य मे / भी / पश्चाश्रयी है इसके द्वारा क्रिया के आग्रह की अभिव्यक्ति होती है। / लडका तो मर गया / वाक्य मे / तो / पश्चाश्रयी है जिसके द्वारा / लडका / पद के सम्बन्ध मे निश्चय होता है। इस प्रकार की ये व्याकरणिक विधियाँ अथवा रूढियाँ इन पश्चाश्रितो से व्यक्त होती है, वैसे स्वतत्र रूप मे इनकी सार्थकता नही है। सम्बन्ध-स्थापना तथा रूढि-स्थापना की दृष्टि से पश्चाश्रितो के दो भेद हो जाते है—(१) **परसर्ग**[१] तथा (२) **निपात**[२]। परसर्ग वे प्रत्यय है जो वाक्य के किसी पद के पश्चात् प्रयुक्त होकर वाक्य के किसी अन्य पद से व्याकरणिक सम्बन्ध स्थापित करते है। निपात वाक्य मे निक्षिप्त होने वाले वे अश है जो किसी प्रकार की वाक्यात्मक विधि अथवा व्याकरणिक रूढि को अभिव्यक्त करते है। उक्त उदाहरणो से इनकी प्रवृति स्पष्ट की जा चुकी है। जिस प्रकार अन्य प्रकार के प्रत्ययो मे स्वतन्त्र रूप से कोई अर्थ गर्भित नही होता तथा उनकी स्थिति प्रकृति तत्वो के आश्रय से है उसी प्रकार की प्रवृति इन पश्चाश्रितो की है, इनका स्वतन्त्र अर्थ के रूप मे व्यवहार नही होता। हिन्दी के कुछ विद्वान[३] परसर्गो के अन्तर्गत / राम के साथ /, / मेरे पास /, / नदी पार /, / पीठ पीछे /, / उसके वास्ते /, / मेरे लिए /, / भूख के मारे / इत्यादि रचनाओ मे / साथ, पास, पार, पीछे, वास्ते, लिए, मारे / जैसे शब्दो को

---

१. 'Postposition', Mario A. Pei—A Dictionary of Linguistics, New york, 1954

२. 'Expletive', वही। सस्कृत मे निपातो के अन्तर्गत अव्ययो को माना है परन्तु यहाँ हमने इस रूप मे ग्रहण नही किया है।

३. A Basic grammar of Modern Hindi, Govt of India 1958, § 305-308.

परसर्ग मानने है परन्तु हमारी प्रत्यय सम्बन्धी मान्यता के अनुसार इस प्रकार के शब्द परसर्गों के अन्तर्गत नही आते क्योकि इनमे स्वतन्त्र रूप से अर्थ गर्भित रहता है। निपातो के अन्तर्गत / तो, भर, भी, ही / इत्यादि अश आते है। हिन्दी की व्याकरणो मे इन्हे क्रियाविशेषण के अन्तर्गत अव्यय कहकर चर्चित किया गया है परन्तु ये ऐसे अंश है जिन्हे निश्चिय पूर्वक अव्यय नही कहा जा सकता क्योंकि इनका व्यवहार तभी सार्थक होता है जब ये वाक्य के किसी के पद के पश्चात् आते है। उदाहरणार्थ / ही / का कोई स्वतन्त्र अर्थ नही, इसकी सार्थकता अन्य प्रत्ययो की भाँति तभी है जब यह किसी पद के पश्चात् आता है। दूसरी बात निपातो के सम्बन्ध मे यह है कि यदि वाक्यो मे प्रयुक्त इन तत्वो को निकाल दिया जाय तो वाक्य की रचना मे कोई अन्तर नही आता। उदाहरणार्थ / लडका तो मर गया / वाक्य मे से / तो / को निकाल दिया जाय तो वाक्य का गठन उसी प्रकार का रहेगा तथा उसके न रहने से वाक्य के अर्थ मे विशेष परिवर्तन नही होगा परन्तु जब यह निक्षिप्त रहेगा तो इसके द्वारा व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक विधि अथवा रूढि का पोषण अवश्य होगा। प्रस्तुत उदाहरण मे / तो / के द्वारा 'निश्चय' 'विधि' अथवा 'रूढि' का बोध होना है।

इस विवेचन के अनुसार प्रत्ययो का वर्गीकरण तथा प्रत्यय-विधान इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है:—
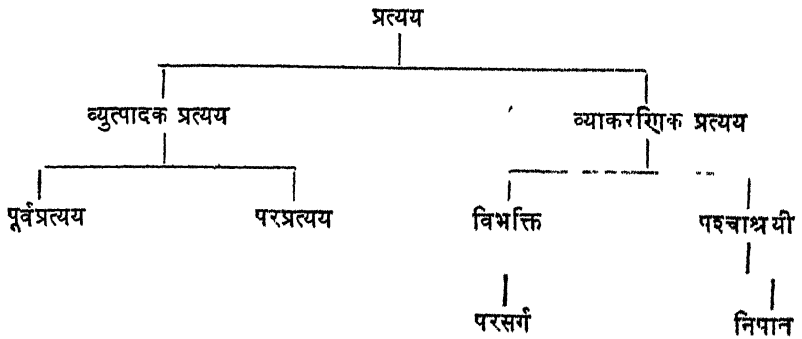
०. ६. २. १. हिन्दी प्रत्यय-विधान[1]

(१) पूर्वप्रत्यय—मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति→व्युत्पन्न रचना

---

१. हिन्दी मे अन्त प्रत्ययो के विधान की प्रवृत्ति नही है। यह प्रवृत्ति हिन्दी मे गृहीत अरबी के शब्दों मे परिलक्षित होती है परन्तु यह प्रवृति उस भाषा के दृष्टि से है, न कि हिन्दी की दृष्टि से। दे० 'अरबी प्रत्यय' कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, काशी, संवत्, १९७७, §४४०, §४४१, §४४२, §४४३।

उदाहरण:—कु-शकुन　　कुशकुन
　　　　बा-होश्यारी　　बाहोश्यारी

(२) मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति - परप्रत्यय→व्युत्पन्न रचना
　　उदाहरण — मिल-अन　　मिलन
　　　　मिलन-सार　　मिलनसार

(३) मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति - विभक्ति→पद रचना
　　उदाहरण - लडक-ओं　　लडकों
　　　　पंचायत-एँ　　पचायतें

(४) पद-प्रकृति तथा पश्चाश्रयी→पश्चाश्रयी रचना
　　उदाहरण:— पचायतों की
　　　　सोहन भी

० ६ २. २　हिन्दी प्रत्ययों में पारस्परिक अन्तर

(ऊपर हिन्दी प्रत्ययो की निश्चित परिभाषाएँ दी जा चुकी है। इन परिभाषाओ से प्रत्येक प्रकार के प्रत्यय का पार्थक्य स्पष्ट हो जाता है। इस प्रसग मे उनके पार्थक्य की कुछ और विशेषताओ का उल्लेख किया जाता है) पूर्वप्रत्यय तथा परप्रत्यय का सामान्य अन्तर उनके नामो से ही स्पष्ट हो जाता है। पूर्वप्रत्ययो का प्रयोग धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व होता है तथा परप्रत्ययो का उनके पश्चात् इस भेद के अतिरिक्त एक वैचारिक सामान्य भेद[1] यह प्रतीत होता है कि (पूर्वप्रत्यय अपने परवर्त्ती प्रकृति तत्वो की किसी न किसी रूप मे विशेषता प्रकट करते हैं, यद्यपि यह विशेषता उस ढग की नही है जिसे व्याकरणिक दृष्टि से विचारा जा सके, यदि यह बात होती तो इन्हे व्युत्पादक प्रत्यय के रूप मे स्वीकार नही किया जाता। परन्तु परप्रत्ययो के विषय मे यह लक्षण घटित नही होता। परप्रत्ययो के योग से तो प्रायः शब्द कोशीय अर्थो की सिद्धि ही होती है, उनके द्वारा अपनी पूर्ववर्त्ती प्रकृतियो की पूर्वप्रत्ययो जैसी विशेषता उद्दिष्ट नही होती। उदाहरणार्थ / अनमोल, उन्तीस, कुशकुन, दरसूरत, कुराज, निडर, परदादा, बाखबर, बैचेन, सजन, सुफल / इत्यादि जैसे प्रातिपदिको मे / अन-, उन-, कु-, दर-, दु-, नि-, पर-, बा-, बे-, स-, सु-, / पूर्वप्रत्यय अपनी-अपनी सहगामी प्रकृतियो की विशेषता व्यक्त करते हुए प्रतीत होते)

---

१. यह वैचारिक सामान्य भेद अग्रेजी के पूर्वप्रत्ययो तथा परप्रत्ययो मे भी परिलक्षित होता है। दे० Hans Marchand—The categories and types of English Word-formation, Weisbaden, 1960, § 3. 1. 14., § 4. 1. 2.

है। जैसे, / कु- / पूर्वप्रत्यय शकुन की विशेषणगत विशेषता व्यक्त कर रहा है। / निडर / मे / नि- / पूर्वप्रत्यय क्रिया-विशेषण-गत विशेषता प्रकट कर रहा है। इसी प्रकार / परदादा / मे / पर- / पूर्वप्रत्यय सम्बन्ध-सूचक विशेषता प्रकट कर रहा है। इस प्रकार इन पूर्वप्रत्ययो मे विशेषणीभूत शक्ति स्पष्ट रूप से विदित होती है तथा इस दृष्टि से इन्हे विशेषक तत्व कहा जा सकता है (परप्रत्ययो के सम्बन्ध मे विपरीत दशा है। उदाहरणार्थ / पचायत, सपेरा, घस्यारा, रँगरेज, तीरदाज, कपडाइँद, दस्तावेज, लडकपन, शैविज्म / इत्यादि प्रातिपदिको मे / पंच, साँप, घास, रग, तीर, कपडा, दस्त, लडका, शिव / आधारभूत-तत्व इस बात का निर्णय करते है कि / -आयत, -एरा, -यारा, -रेज, -अदाज, -आवेज, -पन, -इज्म / वस्तुतः क्या है) जैसे, / -रेज / व्यवसाय बोधक तत्व है, / -आइँद / एक भावबोधक तत्व है / -पन / भी भावबोधक तत्व है जिन्हे क्रमश / रँगरेज, कपडाइँद, लडकपन / रूपो मे देखा जा सकता है। इस स्थिति मे परप्रत्ययो को विशेष्यो के रूपो मे आँका जा सकता है, तथा अर्थ-विज्ञान की दृष्टि से इनकी महत्ता पूर्वप्रत्ययो से व्युत्पन्न प्रातिपदिको की अपेक्षा अधिक है।

४- व्युत्पादक प्रत्यय तथा विभक्तियो मे सामान्य अन्तर यह कि व्युत्पादक प्रत्यय धातु अथवा प्रातिपदिको मे लगकर दूसरे प्रकार के धातु अथवा प्रातिपदिको का निर्माण करते हैं तथा विभक्तियाँ धातु अथवा प्रातिपदिको मे लगकर नामपद अथवा क्रिया-पदो की रचना करते है) इस प्रकार व्युत्पादक प्रत्ययो के योग से शब्दकोशीय अर्थो की सृष्टि होती है जबकि विभक्तियो के योग से व्याकरणिक रूपो की सिद्धि होती है तथा उनके द्वारा व्याकरणिक अर्थ उद्दिष्ट होते है। (उदाहरणार्थ / इसान / प्रातिपदिक मे जब / -इयत / परप्रत्यय का योग होता है तो इसमे भावबोधक / इसानियत / शब्द की सिद्धि होती है। इसी प्रकार / डौल / प्रातिपदिक मे / कु- / पूर्व प्रत्यय का योग होता है तो / कुडौल / हीन अर्थक शब्द की सिद्धि होती है। इसी प्रकार / गर्म / मे / -आ / प्रत्यय के योग से / गरमा / सकर्मक नाम-धातु व्युत्पन्न होती है। (इस प्रकार नवीन शब्दो के उत्पादन की शक्ति इन व्युत्पादक प्रत्ययो की होती है जबकि विभक्तियो मे यह बात नही। वाक्य मे जब ये शब्द प्रयुक्त होते है तो वे विभक्तियो के योग से व्याकरणिक विधान मे प्रतिबधित हो जाते है, इनसे नवीन रूपो की उत्पत्ति नही होती। उदाहरणार्थ / इसान कितना स्वार्थी है / वाक्य में / इसान / पद प्रत्यक्ष कारक एकवचन पुल्लिग सूचक / -० / विभक्ति से प्रतिबधित है। इसी प्रकार / आप क्यों इतने गरमाए / वाक्य मे / गरमाए / क्रियापद कर्तृ-वाचक, निश्चय, भूतकाल, मध्यम पुरुष, पुल्लिग बहुवचन सूचक / -ए / विभक्ति मे मर्यादित है। कभी-कभी ऐसे सयोग भी आते हैं जहाँ व्युत्पादक प्रत्यय तथा विभक्ति

संबंधी धारणा एक समान प्रतीत होती है। उदाहरणार्थ / कागजात / तथा / कागजों / मे क्रमशः / -आत / तथा / -ओं / प्रत्यय 'बहुत्व' का बोध करते हुए एक समान प्रतीत होते है। ऐसी स्थिति मे यह कठिनाई आती है कि किसे व्युत्पादक प्रत्यय माना जाय और किसे विभक्ति ? विचार करने पर कठिनाई का कोई कारण नही, दोनो प्रत्ययो से शब्दकोशीय अथवा व्युत्पन्न अर्थ तथा व्याकरणिक अर्थ स्पष्ट प्रतीत होते हैं। / -आत / प्रत्यय उन शब्दो को व्युत्पन्न करता है जिन्हे अर्थ के आधार पर समूह-वाचक कहा जाता है, जैसे, / मकानात, जवाहरात / इत्यादि। / -ओं / प्रत्यय अन्य पदो मे विद्यमान / -ओं / जैसे, / **लड़क-ओं** को देखो / , / **बालक-ओं** को पढाओ / , की भाँति व्याकरणिक बहुवचन का बोध करता है। इस प्रकार / -आत / तथा / -ओं / क्रमश व्युत्पादक प्रत्यय तथा विभक्ति है। इसी प्रकार / चितेरिन / तथा / चितेरी / मे क्रमश / -इन / तथा / -ई / प्रत्यय स्त्रीवाचक है। इनके निर्णय मे भी वही सिद्धान्त कार्य करता है। / -इन / प्रत्यय से उन शब्दो की सिद्धि होती है जिन्हे स्त्री अथवा मादा की संज्ञा दी जाती है तथा उनका नर अथवा पुरुष होता है, या यो कहा जा सकता है कि वे शब्द जो नर सत्व सूचक प्रकृतियो से सिद्ध होते है। जैसे, / तेलिन, मालिन / इत्यादि। अत / -इन / व्युत्पादक प्रत्यय है। / -ई / विभक्ति इसलिए है कि यह अन्य पदो मे विद्यमान / -ई / की भाँति, जैसे, / **लड़क-ई** जाती है /, / **काल-ई** गाय आती है / व्याकरणिक स्त्रीलिग की सूचक है। विभक्तियो तथा व्युत्पादक प्रत्ययो के निर्णय मे यह भी बडे महत्त्व की बात है कि विभक्तियो के द्वारा एक साथ कई व्याकरणिक कोटियो की सूचना मिलती है, जैसे, संज्ञापदो की विभक्तियो से कारक, लिंग तथा वचन की तथा क्रियापदो की विभक्तियो से वाच्य, काल, रीति, पुरुष, लिंग, वचन की। परन्तु व्युत्पादक प्रत्ययो से सामूहिक अर्थ अभिव्यक्त नही होते। विभक्तियो तथा व्युत्पादक प्रत्ययो के अन्तर की दूसरी बात यह है कि विभक्तियो के लगने पर व्युत्पादक प्रत्ययो का व्यवहार नही होता। यदि किसी प्रत्यय का व्यवहार होगा तो वह व्युत्पादक प्रत्यय न होगा, परचाश्रयी होगा। उदाहरणार्थ / लडके से काम न चलेगा / वाक्य मे / लडक- / प्रातिपदिक मे तिर्यक कारक, एकवचन, पुल्लिग सूचक / -ए / विभक्ति का योग है, इसके पश्चात अन्य कोई व्युत्पादक प्रत्यय नही आ सकता। / से / प्रत्यय परचाश्रयी प्रत्यय है। इसी प्रकार / लडकों ने काम किया / वाक्य मे / लडक- / प्रातिपदिक के पश्चात् / -ओं / विभक्ति तिर्यक कारक बहुवचन पुल्लिग की द्योतक है। इसके पश्चात् / लडकोंपन ने मुझे सताया / ऐसा प्रयोग नही होता। इस प्रकार विभक्तियाँ व्युत्पादक प्रत्ययो के सीमा-संकेत-प्रत्यय है। कभी-कभी ऐसे स्थल भी मिलते है जहाँ विभक्ति तथा व्युत्पादक प्रत्यय ऐसी अवस्था मे आते है जहाँ उन्हे विभक्ति भी कहा जा सकता

है और व्युत्पादक प्रत्यय भी) उदाहरणार्थ /गठरा कहाँ है/ वाक्य में /गठरा/ पद द्रष्टव्य है। इसमे /गठर-/ प्रातिपदिक द्रष्टव्य है। इसमे लगने वाला /-आ/ प्रत्यय प्रत्यक्ष कारक पुल्लिग एक वचन का सूचक है। इस दृष्टि से यह विभक्ति है। परन्तु इसके द्वारा अनभीष्ट वृहत्कायिकता भी व्यक्त होती है जो /गठरी/ मे नही। यह वृहतार्थक विषय व्युत्पत्ति का विषय है। इस दृष्टि से /-आ/ व्युत्पादक प्रत्यय भी है। इसी प्रकार (मेरा जाना वहाँ ठीक नहीं /वाक्य मे /जाना/ पद मे /जा/ धातु है तथा /-न-/ प्रत्यय है। इस वाक्य मे /-न-/ व्युत्पादक प्रत्यय है) क्योकि धातु से सज्ञा प्रातिपदिक, /जान-/ व्युत्पन्न होता है। (परन्तु /वहाँ मत जाना/ वाक्य मे /जाना/ क्रियापद है। इसमे /जा/ धातु के पश्चात् लगने वाला /-न-/ प्रत्यय कर्तृवाच्य विधि-भविष्यत् काल की सूचना देता है। इस दृष्टि से यह विभक्ति भी कही जा सकती है। ऐसे प्रत्ययो मे व्युत्पादन-क्षमता तथा विभक्ति-तत्व विद्यमान है। इस परिस्थिति मे ये **व्युत्पादक विभक्ति** नाम से अभिहित की गई है।)

३— व्युत्पादक प्रत्यय तथा विभक्ति प्रत्ययो के अन्तर की एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि व्युत्पादक रचना मे विभक्तियो का लोप हो जाता है, जब भी धातु अथवा प्रातिपदिक मे व्युत्पादक प्रत्यय का योग होगा तो उसके पूर्व विभक्ति नही रह सकती। उदाहरणार्थ /लडका जाता है/, /लडके जाते हैं/, /लडकी जाती है/, /लड़कियाँ जाती हैं/ वाक्यो मे /लडका, लडके, लडकी, लडकियाँ/ सज्ञापद द्रष्टव्य है। इन पदो मे /लडक-/ प्रातिपदिक है तथा /-आ, -ए, -ई, -इयाँ/ विभक्तियाँ है जो कारक, लिंग तथा वचन को सूचित करती है। हिन्दी मे /-पन/ व्युत्पादक प्रत्यय है जब इसका योग होता है तो /लडकपन/ भावबोधक प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यहाँ यह स्पष्ट है कि ऊपर चर्चित विभक्तियो की स्थिति /-पन/ प्रत्यय के यौगिक विधान मे नही रह पाती। /लडकेपन, लडकियाँपन, लड़कीपन/ ऐसे रूप नही होगे। इसी प्रकार /मशाल जल रही है/, /मशालो को मत जलाओ/ वाक्यो मे /मशाल, मशालों/ पद द्रष्टव्य है। इन पदो मे /मशाल/ प्रातिपदिक है तथा /-०, -ओं/ विभक्तियाँ कारक, लिङ्ग तथा वचन की द्योतक है। /-च-/ व्युत्पादक प्रत्यय के योग होने पर ये विभक्तियाँ नही रहती। जैसे, /मशालची/। यहाँ यह कहा जा सकता है कि /-०/ विभक्ति /मशालची/ मे क्यो नही मानी जा सकती? वस्तुतः बात यह है कि /मशाल/ पद भी है और प्रातिपदिक भी। जब इसे पद कहा जायगा तो इसकी कोई न कोई विभक्ति अवश्य होगी, क्योंकि विभक्तियुक्त शब्द को ही पद कहते है। यहाँ /-०/ विभक्ति /मशाल जल रही है/ वाक्य के, /मशाल/ पद मे प्रत्यक्ष कारक, एकवचन स्त्रीलिङ्ग की सूचक है। जब मशाल को प्रातिपदिक कहा जायगा तो वहाँ इसकी अवस्थिति नही होगी। इस परिस्थिति

को इस प्रकार रखा जा सकता है । । । कोष्ठक विभक्ति के लोप की अवस्था का सूचक है—/ मशाल । -० । -च- → मशालची / । इस प्रकार स्पष्ट है कि धातु अथवा प्रातिपदिक तथा व्युत्पादक प्रत्यय के बीच कोई विभक्ति नही रहती ।

१- विभक्ति तथा पश्चाश्रितो मे सामान्य अन्तर यह है कि विभक्तियो का प्रयोग धातु अथवा प्रातिपदिको के पश्चात् होता है, इस प्रकार पदो की रचना होती है परन्तु पश्चाश्रितो का प्रयोग पदो के पश्चात् होता है, इस प्रकार **पश्चाश्रयी-रचनाएँ** सद्ध होती है । उदाहरणार्थ / लडके को जाने दो / , / मैं जाने ही वाला था / वाक्यों मे / लडके को / तथा / जाने ही वाला / पश्चाश्रयी-रचनाएँ है । कुछ अपवादो को छोडकर, सामान्यतः पश्चाश्रयी विभक्तियो के सीमा सकेत है) हिन्दी मे { क- }, { वाल- } तथा { स- } पश्चाश्रयी इस नियम के अपवाद है, इनमे लिङ्ग तथा वचन के अनुसार / -आ, ई, -ए, / विभक्तियो का योग होता है, इस प्रकार ये पश्चाश्रयी विशेषण प्रातिपदिको की भाँति रूपान्तरित होते है (§ २. १. ३ (१) पुलिंग तथा (२) स्त्रीलिङ्ग) । जैसे, / राम का / , / राम की / , / राम के / , / इक्के वाला / , / इक्के वाली / , / इक्के वाले / , / मुझ सा / , / मुझ सी / , / मुझ से / ।

२- (विभक्ति तथा पश्चाश्रितो के भेद के सम्बन्ध मे दूसरी बात यह है कि हिन्दी मे विभक्तियो की यौगिक प्रक्रिया संश्लिष्ट है जबकि पश्चाश्रितो की यौगिक प्रक्रिया विश्लिष्ट है) दूसरे ढंग से यो कहा कि विभक्ति तथा पश्चाश्रितो के व्यवहार मे सक्रमण जनित (§०. ५. ४) अन्तर विद्यमान है ।(विभक्तियो तथा प्रातिपदिको अथवा धातुओ के बीच युक्त सक्रमण होता है तथा पदो और पश्चाश्रितो के बीच मुक्त सक्रमण होता है । जैसे, / लडकों, लडकियों / सज्ञा पदो मे / लडक- / तथा / ओं / अथवा / -इयो / विभक्तियो के बीच युक्त सक्रमण है) यहाँ मिला हुआ प्रतिलेखन इस बात का द्योतक है । (लडकों को / , / घर में / , / राम को भी / जैसी पश्चाश्रयी रचनाओ मे / लडकों, धर, राम / पदो तथा / को, मे, भी / पश्चाश्रितो के बीच मुक्त सक्रमण है) यहाँ खाली जगह इस बात की द्योतक है । सर्वनाम पदो के साथ कुछ पश्चाश्रितो के व्यवहार मे इस नियम के अपवाद मिलते है । इन अपवादो मे पश्चाश्रितो के सपरिवर्तक[1] आते है (§२. १. २. ३. २, §३. २. ७) । ये सपरिवर्तक पद-प्रतिबधित है । उदारहणार्थ / मेरा, अपना / मे / -र-, -न- / सपरिवर्तक { क- } पश्चाश्रयी के सपरिवर्तक है जो / मे-, अप- / रूपो द्वारा प्रति-

१. 'Alternant' अथवा 'Variant', Mario A. Pei and Frank Gaynor— Dictionary of Linguistics, Newyork, 1954.

बधित है। इसी प्रकार / यही, हमीं / मे / -ई, -ईं / { ही } पश्चाश्रयी के सपरिवर्तक है जो / यह-, हम- / रूपो द्वारा प्रतिबधित है। इन्हे पश्चाश्रितो के अन्तर्गत इसलिए माना जाता है कि इनकी कार्यकारिता पश्चाश्रितो की है। जैसे, / राम का घर / : / मेरा घर / / हमारा घर / . / अपना घर / रचनाओ मे जो कार्य क- / का है वही कार्य / -र-, -न- / का है। इसी प्रकार / बालक ही / . / हमीं / रचनाओ मे जो कार्य / ही / का है वही कार्य / -ईं / का है। इस प्रकार के अपवादो को छोडकर प्राय पश्चाश्रितो के प्रयोगो मे मुक्त सक्रमण होता है। पश्चाश्रितो के अन्तर्गत परसर्ग तथा निपात आते है। इनमे भेद यह है कि परसर्ग एक पद अथवा पदसमुच्चय का सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे पद या पदसमुच्चय से जोडते है जबकि निपातो के द्वारा व्याकरणिक धारणा अथवा विधि का बोध होता है। उदाहरणार्थ / राम का घर / रचना मे / का / परसर्ग द्वारा / राम / और / घर / के बीच भेद्य-भेदक सम्बन्ध व्यक्त होता है जबकि / राम ही / मे / राम / के अवधारण का बोध होता है।

०.७ प्रकृति-प्रत्यय संपरिवर्तक[1]

हिन्दी प्रत्यय-विधान के अन्तर्गत प्रकृति तथा प्रत्ययो के अनेक सपरिवर्तक हो जाते है। ये सपरिवर्तक ध्वनि-प्रक्रियात्मक अथवा रूपात्मक दृष्टि से प्रतिबधित होते है।[2] ध्वनि प्रक्रियात्मक सपरिवर्तक ध्वनि-नियमो के अन्तर्गत आते है तथा रूपात्मक सपरिवर्तक रूप-रचना सम्बन्धी नियमो के अन्तर्गत आते है, परन्तु उनके अर्थ विभिन्न नही होते अपितु एक ही आधारभूत अर्थ को उद्दिष्ट करते है। उदाहरणार्थ / लोह / प्रातिपदिक मे जब / -आर / प्रत्यय का योग होता है तो इस प्रक्रिया मे / लोह / का / लुह- / हो जाता है। इस प्रकार / लुहार / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। / लोह / तथा / लुह- / एक ही अर्थ को द्योतित करते है तथा प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे / ओ / स्वर का / उ / मे परिवर्तन हो जाना हिन्दी ध्वनि-नियम के अनुसार है। / काम / प्रातिपदिक मे जब / -आ / व्युत्पादक प्रत्यय का योग होता है तो / कमा /

---

१. वही।
'morphemic alternant' or 'allomorph', E. A. Nida—Morphology Newyork, 1949, §2. 22. 1.
'allomorph', H. A. Gleason—An Introduction to Descriptive Linguistics, Newyork, 1955, Chapter 7.

२. 'Phonologic Conditioning, तथा 'Morphologic Conditioning', वही Chapter 7.

धातु व्युत्पन्न होती है। / काम / तथा / कम / एक ही अर्थ को द्योतित करते है तथा / आ / स्वर का / अ / मे परिवर्तन हिन्दी ध्वनि-नियम के अनुसार है। / साठ / प्रातिपदिक मे जब / उन- / पूर्व प्रत्यय का योग होता है तो / उनसठ / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। / साठ / तथा / सठ / एक ही अर्थ का द्योतन करते है तथा /आ/ स्वर का / अ / मे परिवर्तन हो जाना ध्वनि-नियम के अनुसार है। इस प्रकार ये प्रकृति-सपरिवर्तक ध्वन्यात्मक दृष्टि से प्रतिबन्धित समझने चाहिए। ठीक यही बात प्रत्यय सपरिवर्तको के सम्बन्ध मे है। उदाहरणार्थ / ठन, ठम / इत्यादि मे जब / -अक / प्रत्यय का योग होता है तो / ठनक, ठमक / रूप व्युत्पन्न होते है परन्तु जब / फूँ, छीँ, हू / इत्यादि मे जब योग होता है तो केवल / -क / का योग होता है। इस प्रकार / -अक / तथा / -क / प्रकृति के आश्रय से एक ही भावबोधक अर्थ की अभिव्यक्ति करते है परन्तु ये दोनो ध्वनि-नियम से अनुसार प्रतिबन्धित है। / अक / का योग सवृत्ताक्षर के पश्चात् होता है तथा / -क / का योग विवृत्ताक्षर के पश्चात्। इसी प्रकार / राम / प्रातिपदिक के पश्चात् / ही / पश्चाश्रयी का व्यवहार होता है परन्तु जब / यह, वह / आदि के पश्चात् आता है तो / ई / का प्रयोग होता है, जैसे; / यही, वही / इत्यादि। / ही / तथा / ई / के प्रयोग से अवधारण व्यक्त होता है। परन्तु ये दोनो ध्वनि-नियम से प्रतिबन्धित है। / ही / का व्यवहार अल्पप्राण ध्वनियों के पश्चात् होता है तथा / ई / का व्यवहार महाप्राण ध्वनियो के पश्चात्। इस प्रकार प्रत्यय-सपरिवर्तक भी ध्वनि-नियमो के अनुसार प्रतिबधित है।

रूप-रचना की दृष्टि से प्रतिबन्धित सपरिवर्तक ध्वनि-नियमो के अन्तर्गत नही आते वे एक ही प्रकार की रचनाओ मे विभिन्न रूप धारण करते हुए होते हैं, उनके विषय मे ऐसा कोई निश्चित ध्वनि-नियम नही बताया जा सकता जिससे उन्हे प्रतिबधित किया जा सके। यह बात केवल विशिष्ट रूपो के विषय मे होती है। उदाहरणार्थ / चालीस, पचास, सत्तर, बीस, अस्सी / प्रातिपदिको मे जब / उन- / पूर्व प्रत्यय का योग होता है, तो / उन्तालीस, उनचास, उन्हैत्तर, उन्नीस, उन्यासी / प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। / चालीस, अचास, हैत्त, नीस, यासी / सपरिवर्तक किसी भी निश्चित ध्वनि-नियम के अन्तर्गत नही आते। इनके विषय मे इतना ही कहा जा सकता है कि उक्त पूर्व-प्रत्यय के योग से ये सपरिवर्तक केवल / चालीस, पचास, सत्तर, बीस, अस्सी / के ही समझने चाहिए। इसी प्रकार सर्वनाम प्रातिपदिको मे जब / -०/ विभक्ति का योग होता है उनके अनेक सपरिवर्तक देखे जाते है। उदाहरणार्थ / मैं / प्रातिपदिक मे जब प्रत्यक्ष कारक एक वचन की / -० / विभक्ति लगती है तो / मैं / पद सिद्ध होता है, जब इसमे प्रत्यक्ष कारक बहुवचन की / -० / विभक्ति का योग तो / हम / पद बनता है। तिर्यक कारक एकवचन मे जब / -० / विभक्ति का योग

होता है तो / मुझ, मे- / तथा तिर्यक कारक बहुवचन मे / -० / का योग होता है, तो / हम, हमा- / सपरिवर्तक देखे जाते है। इस प्रकार / मैं / के सपरिवर्तक किसी ध्वनि-नियम के अनुसार प्रतिबधित नही किए जा सकते। इनके सम्बन्ध मे केवल यही कहा जा सकता है कि यह बात केवल / मैं / तथा इसी प्रकार के अन्य सर्वनामो के साथ है। यही बात प्रत्ययो के सम्बन्ध मे कही जा सकती है। उदाहरणार्थ / कुकाठ, कुराज, कुचाल / प्रातिपदिको मे / कु- / पूर्व प्रत्ययो का योग स्पष्ट है परन्तु / पूत / के पूर्व / क- / का योग होता है। / कु- / तथा / क- / एक ही भाव को द्योतित करते है। इस प्रकार ये एक ही कोटि की रचना को उद्दिष्ट करते है। इनके प्रयोग किसी भी ध्वनि-नियम के अन्तर्गत नही आते। इनके विषय मे केवल इतना ही कहा जा सकता है कि / क- / का व्यवहार / पूत / के पूर्व होता है तथा / कु- / का अन्यत्र। इसी प्रकार सकर्मक तथा अकर्मक धातुओ मे / -आ / के योग से प्रथम प्रेरणार्थक धातुएँ बनती है, जैसे, / डरा, चरा / इत्यादि परन्तु / भीग / तथा / डूब / धातुओ के पश्चात् / -ओ / का योग होता है, यथा. / भिगो, डुबो /। इस प्रकार दोनो के अर्थ एक ही है परन्तु / -ओ / का प्रयोग केवल / भीग / तथा / डूब / धातुओ के पश्चात् होता है। अत यह रूप की दृष्टि से प्रतिबधित है। इसी प्रकार / राम का, उस का / इत्यादि रचनाओ मे / क- / परसर्ग का व्यवहार है परन्तु / मेरा, अपना / जैसी रचनाओ मे / -र- / तथा / -न- / का व्यवहार है। इनका व्याकरणिक कार्य भी / क- / के समान है, परन्तु / -र- / तथा / -न- / का व्यवहार केवल / मैं / तथा / आप / सर्वनाम के पश्चात् होता है, अन्यत्र नही। इस प्रकार ये संपरिवर्तक रूप-प्रतिबधित है।

इस प्रसग मे यह प्रश्न खड़ा होता है कि सपरिवर्तकों मे किसे आधार-भूत सपरिवर्तक[१] माना जाय ? इसका सहज उत्तर यह है कि आधारभूत सपरिवर्तक उसी को माना जाय जिसका प्रयोग अन्य की अपेक्षा अधिकता से होता हो। उदाहरणार्थ / काम / तथा / कम / दो सपरिवर्तक है, दोनो का अर्थ भी एक है। इन दोनो मे से / काम / का व्यवहार सामान्यत. होता है, जैसे; / मुझे काम है / , / काम कर लिया / , / वह काम पर गया / इत्यादि प्रयोगो मे / काम / के प्रयोग की प्रचुरता है। यह बात / कम / के सबंध मे इतनी व्यापक नही है, इसका व्यवहार तो सबद्ध परिस्थितियो मे ही सभव है। जैसे, जब / काम / के पश्चात् / -आ / व्युत्पादक प्रत्यय लगता है तो / काम / का / कमा / रूप व्युत्पन्न होता है तथा / काम / का / कम / हो जाना एक ध्वन्यात्मक परिस्थिति है। इसी प्रकार सकर्मक तथा अकर्मक

---

१. 'Basic altenant', Leonard Bloomfield—Language, London, 1955, § 10. 4. (3).

धातुओं के पश्चात् जब / -आ / पर-प्रत्यय का योग होता है तो इसके योग से प्रथम प्रेरणार्थक धातुएँ (§ १.२.१० ४.३ १ १) व्युत्पन्न होती है। जैसे, / उड-आ→उडा /, / चल-आ →चला /, / बन-आ→बना /, / लिख-आ→लिखा /, / पकड-आ →पकडा / इत्यादि। परन्तु / भीगँ, डूब / धातुओ मे / -ओ / का तथा / रो, सो, जी, पी / इत्यादि कुछ धातुओ के पश्चात् / ला / का योग होता है। इस प्रकार हिन्दी मे / -आ, -ओ, -ला / के योग से प्रथम प्रेरणार्थक धातुएँ निष्पन्न होती है। इस स्थिति मे / -आ / परप्रत्यय को आधारभूत रूप मे स्वीकार किया जायगा क्योकि हिन्दी की अधिकाश धातुओ के पश्चात् / आ / का योग होता है। / -ओ / तथा / -ला / का योग कुछ ही धातुओ तक सीमित है। इस प्रकार यह सिद्धान्त प्रतिपादित होता है कि आधारभूत सपरिवर्तक उन्ही को स्वीकार किया जाय जिनका व्यवहार सामान्यत· होता है तथा जिनके द्वारा परिणामी या परिस्थितिजन्य (ध्वन्यात्मक अथवा रूपात्मक दृष्टि से सीमित) सपरिवर्तको का विवरण अर्थ की दृष्टि से अथवा व्याकरणिक रचना की दृष्टि से प्रस्तुत किया जा सके। अत आधार भूत सपरिवर्तक अथवा प्रधान सपरिवर्तक के क्रोड मे एक ही व्याकरणिक कोटि के ध्वन्यात्मक एव रूपात्मक सपरिवर्तक समाहित हो जाते है। प्रत्येक सपरिवर्तक की तज्जनित परिस्थितियों का उल्लेख प्रत्ययो के अलग-अलग निरूपण के साथ-साथ प्रस्तुत किया जायगा। सपरिवर्तको को सूचित करने वाले ~ तथा ∞ सकेत है। ~ सकेत ध्वन्यात्मक परिस्थिति को द्योतित करता है तथा ∞ सकेत रूपात्मक परिस्थिति का। जैसे, / -आ ∞ -ओ ∞ -ला ∞ -० /, / काम (~ कम) -आ → कमा /। प्रधान रूप (प्रत्यय के सबध मे) बद्ध कोष्ठक द्वारा प्रस्तुत किया जायगा। जैसे, / -आ∞ -ओ∞-ला∞-० / सपरिवर्तको का प्रधान अथवा आधार {-आ}।

प्रधान संपरिवर्तक की स्थापना के लिए यह प्रस्तावित किया जा सकता है कि हम विवरणात्मक अध्ययन मे ऐसे प्रधान सपरिवर्तक को स्वीकार करे जो ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक हो। परन्तु यह दृष्टिकोण किसी भी भाषा के विवरणात्मक अध्ययन मे सिद्धान्ततः स्वीकृत नही है। यदि हम इसे स्वीकार करेंगे तो इस प्रधान सपरिवर्तक का अन्य सपरिवर्तको से सबध उस प्रकार का नही होगा जिसे हम भाषा की साकालिक व्यवस्था तथा ध्वनि-व्यवस्था के अनुसार कह सके। इस प्रकार तथ्यो के निरूपण मे अव्यवस्था तथा भ्रम उत्पन्न होगा। वस्तुत किसी भी भाषा के अध्ययन मे ऐतिहासिक एव विवरणात्मक विश्लेषण भिन्न-भिन्न प्रक्रियाएँ है। विश्लेषण मे ऐतिहासिक दृष्टि का प्रवेश तब तक वर्जित है जब तक विवरणात्मक प्रक्रिया द्वारा तथ्यो की सुनिश्चित स्थापना नही हो जाती। उदाहरणार्थ हिन्दी मे / -आऊ ~ -ऊ / विशेषण प्राति-

पदिक व्युत्पन्न करने वाले प्रत्यय-सपरिवर्तक है। इनका प्रधान रूप / -आऊ / है क्योंकि अधिकाश रचनाओ मे इसके व्यवहार की प्रचुरता है। / -ऊ / का योग / आ / स्वरान्त धातुओ के पश्चात् होना है तथा / -आऊ / का योग शेष धातुओ के पश्चात्। जैसे, / कमा-ऊ, खा-ऊ / तथा / चल-आऊ, जड-आऊ / इत्यादि। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से इन सपरिवर्तको के प्रधान रूप सस्कृत / -उक[1] / को माने, तो उक्त प्रकार की परिस्थितिजन्य स्थिति मे अव्यवस्था होगी। यहाँ यह कहना कि / -आऊ~-ऊ / सपरिवर्तक / -उक / प्रधान रूप के ही परिस्थितिजन्य भेद है, नितान्त हास्यास्पद है। / -उक / की व्यवस्था सस्कृत-भाषा के अनुसार है न कि हिन्दी के अनुसार। एक भाषा की व्यवस्था दूसरी भाषा की व्यवस्था के सम्यक् अनुरूप हो यह सर्वाशत. सत्य नही कहा जा सकता। यह सौभाग्य एव सयोग की बात है कि ऐतिहासिक तथ्य विवरणात्मक तथ्यो के अनुरूप हो परन्तु उन्हे पहले से व्यभिचरित रूप मे लाना नित्यत असगत है। जब हम ऐतिहासिक दृष्टि से अध्ययन करेंगे, तो हिन्दी के प्रत्येक ऐतिहासिक काल के विवरणात्मक अध्ययन से प्राप्त तथ्यो की कडियो को जोडेंगे और हमारा ऐतिहासिक अध्ययन सपन्न होगा।

०. ८. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

यह कहा जा चुका है कि प्रत्यय सबंधी यह अध्ययन हिन्दी प्रत्ययो का ऐतिहासिक अध्ययन नही है, अपितु विवरणात्मक अध्ययन है (§ ० २.)। हिन्दी में व्यवहृत प्रत्येक प्रत्यय के ऐतिहासिक विकास निकास का अध्ययन एक अलग अनुसधान का विषय है इसलिए इस दिशा मे कुछ कहने का साहस नहीं है। इस प्रसग मे तो प्रस्तुत अध्ययन की जानकारी एव सुलभता के लिए एक विहगम दृष्टि से हिन्दी मे व्यवहृत प्रत्ययो के स्रोतो तथा उनके रचना-विधान को ऐतिहासिक परिपार्श्व मे प्रस्तुत भर कर देना है।

इतिहासज्ञो के अनुसार हिन्दी में व्यवहृत प्रत्ययो का स्रोत तीन दिशाओं से है.—प्राचीन भारतीय आर्य-भाषाओ से, विदेशी भाषाओ से तथा देशी भाषाओ से। जो प्रत्यय भारतीय आर्य-भाषाओ से हिन्दी मे आए है उन्हे दो वर्गो मे रखा जाता है—तत्सम तथा तद्भव। तत्सम प्रत्ययो से अभिप्राय उन प्रत्ययों से है जिनको हिन्दी ने प्राचीन आर्य-भाषा सस्कृत से तद्वत रूप मे ग्रहण किया है। इनका व्यवहार

---

१. धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग, १९५३ § १८५।

सामान्यतः संस्कृत जैसा है।[1] परन्तु हिन्दी मे ऐसे भी स्थल है जहाँ इनकी प्रवृत्ति हिन्दी के अनुसार बदल गई है। उदाहरणार्थ संस्कृत मे / इत /[2] प्रत्यय है जिसके योग से विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है, जैसे, / कटकित, कुसुमित / इत्यादि। परन्तु संस्कृत-व्याकरण के अनुसार / एकत्र / अव्यय के पश्चात् इसका व्यवहार नही होता। हिन्दी मे/ एकत्र/ के पश्चात् इसका व्यवहार मिलता है, जैसे, /एकत्रित भीड/, /एकत्रित लोग/ इत्यादि। इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी संस्कृत-शब्द है जो हिन्दी मे आकर अपनी स्वतन्त्र सत्ता खो बैठे है तथा हिन्दी के व्यवहार मे प्रत्यय बन गए है। उदाहरणार्थ/ कुकर्म, कुरूप, कापुरुष, कदाचार/ इत्यादि मे /कु ∞का ∞कद-/ तथा /प्राक्कथन, प्राक्कर्म, प्राक्तन, प्रागैतिहासिक / इत्यादि मे /प्राक्-∾प्राग्-/ संस्कृत-भाषा के अनुसार स्वतन्त्र शब्द है परन्तु हिन्दी मे इनका व्यवहार स्वतन्त्र रूप से नही होता। अत इस प्रकार के संस्कृत तत्सम शब्द हिन्दी मे प्रत्ययो के रूप मे व्यवहृत होते है।

तद्भव प्रत्ययो से अभिप्राय सामान्यत उन प्रत्ययो अथवा उन शब्दो से है जो प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा से मध्यकालीन भारतीय आर्य-भाषाओ मे होकर हिन्दी मे आए है। इस प्रकार इन प्रत्ययो का संबध अप्रत्यक्ष रूप से प्राचीन आर्य-भाषा संस्कृत से स्थापित होता है। उदाहरणार्थ / बहुतायत, पचायत / इत्यादि भाववाचक सज्ञाओ मे / -आयत[3]/ प्रत्यय का विकास इस प्रकार है — प्रा० भा० आ० भा०/-वत, मत /> म० भा० आ० भा० /-वत, -मत,-इ त, -इत्त, -अवत, -अमत, -ऊअत, -अयत, अइंत/> आ० भा० आ० भा० हि० >/-आयत /। इसी प्रकार /सुनार, कुम्हार, लुहार/ सज्ञाओ मे / -आर[4]/ प्रत्यय का विकास इस प्रकार है:— प्रा० भा० आ० भा० /-कार /> म० भा० आ० भा० / -आरो /> आ० भा० आ० भा० हि० / -आर/। परन्तु कुछ ऐसे भी प्रत्यय है जिनका संबध प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा से इस प्रकार स्थिर नही मिलता। इसके दो कारण है। या तो हमे बीच की कडियो का पता नही अथवा वे प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा की निधि नही है। वास्तव मे यह अनुसधान का विषय है। उदाहरणार्थ / पथरीला, रँगीला, गँठीला / इत्यादि विशेषणो मे / -ईल-/[5] प्रत्यय का विकास प्राकृत से इस प्रकार माना जाता है.— प्राकृत / -इल्ल />

---

१. कामताप्रसाद गुरु-हिन्दी—व्याकरण, काशी, सवत् १९७७,§४३३ सस्कृत उपसर्ग, §४३५ सस्कृत कृदन्त, सस्कृत तद्धित।

२. किशोरीदास बाजपेयी-हिन्दी शब्दानुशासन, काशी, सवत् २०१४, पृष्ठ २९८-३००।

३. धीरेन्द्र वर्मा-हिन्दी भाषा का इतिहास, प्रयाग, १९५३, § १९२।

४. वही § १९३।

५. वही § २०६।

हिन्दी / -ईल- /। परन्तु यह / ग्रथिल, पकिल / इत्यादि संस्कृत-शब्दों में भी माना जाता है।

विदेशी प्रत्ययो से अभिप्राय उन प्रत्ययो से है जो हिन्दी मे विदेशी भाषाओं से आए है। इसका स्रोत अरबी, फारसी, तुर्की तथा अँग्रेजी भाषाओ से है। अरबी-फारसी प्रत्ययो की सख्या तुर्की तथा अंग्रेजी प्रत्ययो की अपेक्षा अधिक है। तुर्की तथा अँग्रेजी प्रत्ययो की सख्या कुछ ही है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हे — / अलमस्त, अलगरज / तथा / इसानियत, अँगरेजियत / मे / अल- / तथा /- इयत /अरबी प्रत्यय है। / बेईमान, बेकाम, बेजोड / तथा / चमकदार, जमींदार, दूकानदार /मे / बे- / तथा / -दार / फारसी प्रत्यय है। / तबलची, खजानची, मशालची / तथा / बेगम, खानम / मे / -च- / तथा / -अम / तुर्की प्रत्यय है। बुद्धिज्म, सनातनिज्म, ब्राह्मणिज्म / मे / -इज्म / अँग्रेजी प्रत्यय है।

देशी प्रत्ययो से तात्पर्य उन प्रत्ययो से है जो आधुनिक हिन्दी मे देशी भाषाओ अथवा सामान्य बोलचाल के रूप से हिन्दी मे प्रयुक्त होते है। प्राचीन वैयाकरणो के अनुसार देशी भाषाओ से अभिप्राय अनार्य भाषाओ से समझा जाता है, परन्तु हम यहाँ इस शब्द के अन्तर्गत ऐसे रूपो को भी मानते हे जो आधुनिक युग मे स्वतःस्फूर्त हुए है। उदाहरणार्थ / पियक्कड, भुलक्कड /, /अधड, पगड / तथा / झब्बू / मे / -अक्कड /, / -अड / तथा / अब्बू / प्रत्यय इसी प्रकार के प्रतीत होते है।

प्रत्ययो के विभिन्न स्रोतो के विषय मे जो ऊपर कहा गया है ठीक वही बात हिन्दी मे व्यवहृत उन शब्दो अथवा प्रकृतियो के सबध मे समझनी चाहिए। जिनमे प्रत्ययो का योग होता है, इनके भी वही स्रोत है। व्युत्पन्न रूपो मे प्रकृति-प्रत्ययो के सयोग की सामान्य प्रवृत्ति यह है कि वे स्वजातीय संबध रखते है। स्वजातीय सम्बन्ध से तात्पर्य यह है कि जिस स्रोत की प्रकृति है उसी स्रोत के प्रत्यय है तथा इस सयोग से जो रूप व्युत्पन्न होता है वह उसी स्रोत को लक्षित करता है जिस स्रोत के प्रकृति-प्रयत्य है। यथा —

तत्सम प्रकृति	**तत्सम प्रत्यय→**	**तत्सम रूप**
अग्र	-इम	अग्रिम
नव	-ईन	नवीन
वेद	-इक	वैदिक
दशा	दुर-	दुर्दशा
अपराध	निर-	निरपराध
तद्भव प्रकृति	**तद्भव प्रत्यय →**	**तद्भव रूप**
डर	नि-	निडर

चेत	अ	अचेत
लोह	-आर	लुहार
ढेर	-ओं	ढेरों
उपज	-आऊ	उपजाऊ

विदेशी प्रकृति	**विदेशी प्रत्यय**	**विदेशी रूप**
गरज (अ०)	अल- (अ०)	अलगरज
इ सान (अ०)	-इयत (अ०)	इ सानियत
दस्तूर (फा०)	ब- (फा०)	बदस्तूर
सौदा (फा०)	-गर (फा०)	सौदागर
बेग (तु०)	-अम (तु०)	बेगम
खजाना (तु०)	-ची (तु०)	खजानची
रजिस्ट्रार (अँ०)	सब- (अ०)	सब-रजिस्ट्रार
राशन (अँ०)	-इ ग (अँ०)	राशनिंग

उक्त स्वजातीय सम्बन्धो से व्युत्पन्न रूपो की सख्या एव प्रयोग हिन्दी मे सर्वोपरि है। इनके अतिरिक्त हिन्दी मे ऐसे भी सयोग उपलब्ध है जिनमे प्रकृति तथा प्रत्ययो के स्रोत भिन्न-भिन्न है। इस प्रकार इन विभिन्न स्रोतो के सयोग से मिश्रित रूपो की सृष्टि होती है। यथा —

प्रकृति		प्रत्यय	→	मिश्रित रूप
शास्त्र	(तत्स०)	-ई	(तद०)	शास्त्री
पडित	,,	-आऊ	,,	पडिताऊ
फल	,,	-दार	(फा०)	फलदार
रस	,,	-दार	,,	रसदार
पच	,,	-सर	,,	सरपच
सनातन	(तत्स०)	-इस्ट	(अँ०)	सनातनिस्ट
गुरु	,,	-डम	,,	गुरुडम
सराहना	(तद०)	-ईय	(तत्स०)	सराहनीय
गाडी	,,	-वान	,,	गाडीवान
हाथी	,,	-वान	,,	हाथीवान
चमक	,,	-दार	(फा०)	चमकदार
नाता	,,	-दार	,,	नातेदार
पीक	,,	-दान	,,	पीकदान
चाल	,,	-बाज	,,	चालबाज़
जोड	,,	बे-	,,	बेजोड

काम (फा०)	बे- (फा,	बेकाम
जान ,,	-कार ,,	जानकार
चुन ,,	-ईंदा ,,	चुनींदा
हिन्दू ,,	-इज्म (अँ०)	हिन्दुइज्म
पी ,,	-अक्कड (देश०)	पियक्कड
आँधी ,,	-अड ,,	अन्धड
उड ,,	-अछू ,,	उड छू
जोश (फा०)	-ईला (तद०)	जोशीला
शर्म ,,	-ईला ,,	शर्मीला
मिसकीन (अ०)	-ता (तत्स०)	मिसकीनता
साइत ,,	कु- ,,	कुसाइत
गडबड (देश०)	ई (तद०)	गडबडी

इस प्रकार प्रकृति-प्रत्ययो के योग से स्वजातीय एव मिश्रित रूप हिन्दी मे व्युत्पन्न होते है । यहाँ एक बडी रोचक बात यह है कि हिन्दी मे प्रयुक्त जितनी भी धातुएँ है वे प्राय तद्भव है, चाहे वे मूल धातु हो अथवा व्युत्पन्न धातु । ऐसी धातुओ की सख्या बहुत ही कम है जिनका स्रोत विदेशी हो अथवा तत्सम । जिन्हे इतिहासज्ञ तत्सम धातुएँ कहते है वे भी प्राय हिन्दी की प्रकृति के अनुसार परिवर्तित होकर तद्भव बन गई है । उदाहरणार्थ सस्कृत / गर्ज / धातु हिन्दी की ध्वनि-प्रक्रियानुसार / गरज / रूप मे प्रयुक्त होती है । अत विदेशी तत्वो का प्रवेश धातुओ मे नही के बराबर है, हाँ प्रातिपदिको मे इन्हे खोजा जा सकता है ।

हिन्दी की सभी विभक्तियाँ तद्भव-प्रत्यय है । इनका प्रयोग विभिन्न स्रोतो से प्राप्त मूल प्रकृति, स्वजातीय व्युत्पन्न प्रकृति तथा मिश्रित व्युत्पन्न प्रकृतियो के साथ होता है । यथा —

मूल प्रकृति	**विभक्ति**	**पद**
पर्वत (तत्स०)	-ओ (तद०)	पर्वतों
चेत (तद०)	-इए ,,	चेतिए
नजर (फा०)	-ओं ,,	नजरों
इसान (अ०)	ओं ,,	इसानों
खजाना (तु०)	-ए ,,	खजाने
डाक्टर (अँ०)	-ओं ,,	डाक्टरों
स्वजातीय व्युत्पन्न प्रकृति	**विभक्ति**	**पद**
दुर्दशा (तत्स०)	एँ (तद०)	दुर्दशाएँ
लुहार (तद०)	-ओं	लुहारों

सौदागर (फा०)	-ओं	,,	सौदागरों
बेगम (तु०)	-ओं	,,	बेगमों
सबडिप्टी (अँ०)	-इयों	,,	सबडिप्टियों
मिश्रित व्युत्पन्न प्रकृति	**विभक्ति**		**पद**
सुजान (तत्स०, तद्०)	-ओं	(तद०)	सुजानों
सर-पच (फा०, तत्स०)	-ओं	,,	सरपचों
सनातन-इस्ट (तत्स०, अँ०)	-ओं	,,	सनातनिस्टों
नाते-दार (तद०, फा०)	-ओं	,,	नातेदारों
पिय-अक्कड (तद०, देश०)	-ओं	,,	पियक्कडों

विभक्तियो की भाँति / मात्र / को छोडकर सभी पश्चाश्रयी भी तद्भव प्रत्यय है। इनका प्रयोग अपनी प्रकृति के अनुसार पदो के पश्चात् होता है चाहे वे पद विभक्तियो के योग से मूल प्रकृति, अथवा स्वजातीय व्युत्पन्न प्रकृति अथवा मिश्रित व्युत्पन्न प्रकृति से सिद्ध हो। यथा —

पर्वतों से
नजर को
इंसान मैं
डाक्टर ही
दुर्दशाएं भी
बेगमों को
सरपच की
सनातनिस्टों पर
नातेदार से
पियक्कड ने

व्युत्पादक प्रत्यय-विचार

१

व्युत्पादक प्रत्यय-विचार

१.०. सामान्य विवेचन

आधार-भूत शब्दो मे जिन व्युत्पादक प्रत्ययो का योग होता है उनसे संबधित अनेक अर्थक शब्दो की सृष्टि होती है। शब्दो की इस सृष्टि को भाषाविद् व्युत्पत्ति नामक सज्ञा से अभिहित करते है। यह व्युत्पत्ति-विचार दो दृष्टियो से सभव हैं—ऐतिहासिक दृष्टि से, तथा विवरणात्मक दृष्टि से। जैसा कि हम पहले कह आए है प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक दृष्टि पर आधारित है इसलिए ऐतिहासिक दृष्टि को प्रश्रय देना हमारी सीमा के बाहर है। इस अध्ययन मे व्युत्पत्ति से अभिप्राय इस प्रकार के स्पष्टीकरण से है कि हिन्दी मे अमुक प्रचलित शब्द, हिन्दी मे अन्य प्रचलित शब्द से, किस प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न हुआ है। उदाहरणार्थ / चुगलखोर / शब्द / चुगल / शब्द मे / –खोर / प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न यौगिक शब्द है तथा जिसका व्यवहार हिन्दी मे विशेषण के रूप मे होता है। / चुगल / शब्द का व्यवहार भी हिन्दी मे वर्तमान है। / चुगल / तथा / –ख़ोर / अंशो के ऐतिहासिक स्रोत किस भाषा से हैं, यह विवरणात्मक व्युत्पत्ति का विषय नही है। विवरणात्मक व्युत्पत्ति मे यौगिक शब्दो की रचना वर्तमान रूढ शब्दो से समझनी चाहिए। रूढ शब्दो से हमारा अभिप्राय उन मूल शब्दो से है जिनके, वर्तमान हिन्दी भाषा की दृष्टि से, सार्थक खंड होना असभव है, चाहे वे अपनी स्रोतस्विनी भाषा मे यौगिक भले ही हो। उदाहरणार्थ / स्थान / शब्द हिन्दी मे रूढ़ है। हिन्दी मे / स्था / तथा / -अन / जैसे खंड असंभव है क्योकि / स्था / से हिन्दी मे कोई अर्थ-बोध नही होता। परन्तु सस्कृत भाषा मे यह यौगिक शब्द है जो / स्था / धातु मे / -अन / प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न है। / स्था / का व्यवहार सस्कृत भाषा मे क्रिया के रूप मे उपलब्ध है। इस प्रकार संस्कृत का / स्थान / यौगिक शब्द हिन्दी मे आते-आते रूढ़ हो गया है। अत. हिन्दी मे यौगिक शब्दो से अभिप्राय केवल उन्ही शब्दो से है जिनके सार्थक खंड हिन्दी के स्तर पर हो

सके । प्रस्तुत अध्ययन मे व्युत्पत्ति से हमारा यही अभिप्राय है । व्युत्पत्ति विषयक इस मान्यता के अनुसार हमने प्रत्ययो का विवरण वर्णात्मक क्रम से प्रस्तुत किया है । इस विवरण मे ऐसा निरूपण नही है कि अमुक प्रत्यय अथवा प्रत्यय-वर्ग सस्कृत, फारसी, अथवा अरबी इत्यादि से प्रादुर्भूत है । हाँ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि मे इनकी ओर सकेत अवश्य किया है परन्तु वह सामान्य जानकारी के लिए निर्देशन मात्र है ।

व्युत्पत्ति विषयक उक्त मान्यता के क्रोड मे जिन मूलभूत सिद्धान्तो को अपनाया है उनका विवरण इस प्रकार है —

व्युत्पत्ति-विचार के अन्तर्गत ऐसे मूल प्रकृति-तत्वो अथवा तथाकथित रूढ शब्दो को प्राप्त किया है जिनके अर्थबोधक खड आगे सभव नही हो सके है । उदाहरणार्थ / घर, मैदान, दौलत, हाथ, चल, खा / ऐसे प्रकृति-तत्व है जिनका विभाजन सभव नही है । ऐसे प्रकृति-तत्त्वो की बहुत बडी सख्या हिन्दी मे उपलब्ध है । हिन्दी के मूला-धार तत्व वास्तव मे ये ही शब्द है । इन मूल तत्वो का व्यवहार दो रूपो में देखा जाता है—ये अकेले भी प्रयुक्त होते है तथा अन्य अशो को साथ लेकर भी । अन्य अशो से अभिप्राय उन आबद्ध अशो से हैं जो मूल प्रकृति के निहित अर्थ मे कुछ और अर्थवत्ता प्रदान करते है, परन्तु यह अर्थवत्ता मूल प्रकृति के अर्थ से सबधित होती है वह उस से निरपेक्ष या तटस्थ नही होती । उदाहरणार्थ / काम / मूल प्रकृति है, इसकी सत्ता / कमेरा, कमा, कामदार, कमाई, कमवा / शब्दो मे परिलक्षित होती है । इसके साथ-साथ इनमे नवीन अर्थवत्ता भी परिलक्षित होती है । यह नवीन द्योतकता उन अशो के कारण है जो मूल प्रकृति से जुडे हुए है । उक्त शब्दो मे / - एर । आ, –आ, –दार, - आ । ई, –वा / ऐसे ही अश हैं । दूसरे इन आबद्ध अशो का प्रकृति-तत्वो की भाँति अपना कोई स्वतत्र अस्तित्व नही । हमने इन्हे व्युत्पादक प्रत्यय कहा है (§ ०. ६. २) । प्रकृति-तत्वो के साथ-साथ इन प्रत्ययो को प्राप्त किया है । इस प्रकार व्युत्पन्न रूपो का विश्ले-षण प्रस्तुत किया है । इस विश्लेषण मे मे निम्न तथ्यो को प्रस्तुत किया गया है ।

(१) सघटक तत्वो—प्रकृति-प्रत्यय—की वे व्याकरणिक कोटियाँ जिनके योग से अन्य व्याकरणिक कोटि वाला व्युत्पन्न रूप प्राप्त हुआ है । उदाहरणार्थ /इसान/ संज्ञा प्रातिपदिक मे / -इयत / परप्रत्यय के योग से / इसानियत / भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न हुआ है ।

(२) सघटक तत्वो का वह क्रम जिसमे उनकी व्यवस्था है । उदाहरणार्थ / लापरवाही / व्युत्पन्न प्रकृति के सघटक तत्व / ला-परवाह-ई / है । / परवाह / प्रकृति के पूर्व / ला- / पूर्व प्रत्यय है तथा उसके पश्चात् / -ई / परप्रत्यय है । इस यौगिक शब्द मे प्रकृति से / ला- / का सम्बन्ध पहले है तत्पश्चात् / -ई / का । जैसे,

/ परवाह→लापरवाह→लापरवाही / । हम ऐसी व्यवस्था नही कर सकते कि / पर-वाह / से / -ई / का सम्बन्ध पहले जोडें तत्पश्चात् / ला- / का, क्योकि हिन्दी मे इस प्रकार का व्यवहार नही है । /लापरवाह / का तो व्यवहार होता है परन्तु /परवाही/ का नही । इस प्रकार भाषा के व्यवहार के विपरीत हम कैसे व्यवस्था कर सकते है ! हमारी व्यवस्था तो व्यवहार के अनुकूल ही होनी चाहिए । इसी प्रकार / बेखबरी / यौगिक शब्द है । / खबरी / जैसा शब्द व्यवहार मे नही है । अतः / खबर / का / -ई / से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नही / बे- / का सम्बन्ध पहले है, जैसे, / बेखबर / तत्पश्चात् / -ई / से इसका सम्बन्ध स्थापित होता है । इस प्रकार पूर्व-प्रत्यय तथा पर-प्रत्यय-युक्त शब्दो मे क्रम का महत्वपूर्ण स्थान है । पूर्व-प्रत्ययो तथा परप्रत्ययो के विवेचन मे इस क्रम पर विचार किया जायगा ।

(३) प्रकृति-प्रत्यय की यौगिक प्रक्रिया मे अनेक प्रकार के **ध्वनि-विकार** परि-लक्षित होते है । ये विकार दो प्रकार के है — **ध्वनि-प्रक्रियात्मक** तथा **रूपात्मक** या **शब्द-प्रतिबंधित** । ध्वनि-प्रक्रियात्मक विकार हिन्दी ध्वनि-नियमो के अनुसार होते हैं तथा रूपात्मक विकार केवल रूपो से ही प्रतिबधित होते है, उनके सम्बन्ध मे कोई ध्वनि-नियम निश्चित नही किया जा सकता (§० ७) । प्रत्येक प्रत्यय के विवरण के साथ इन ध्वनि-विकारो को प्रस्तुत किया जायेगा ।

व्युत्पत्ति-विचार के अन्तर्गत उक्त विश्लेषणो के साथ-साथ यह प्रश्न बराबर रहता है कि व्युत्पन्न अथवा यौगिक रूपो की सिद्धि मे किस व्याकरणिक कोटि वाली प्रकृति को **आधार** चुना जाय ? इस प्रश्न का सामान्य उत्तर यही है कि आधार उसी व्याकरणिक कोटि को स्वीकार किया जाय जिसका व्यवहार विचाराधीन प्रत्यय सम्बन्धी एक ही प्रकार की **रूपतालिका**[1] की समस्त रचनाओ मे उपलब्ध हो । उदाहरणार्थ / रगीन, शौकीन, मलीन, नमकीन / विशेषण कोटि की व्युत्पन्न रचनाएँ है । इनमे / -ईन / परप्रत्यय की सत्ता बराबर परिलक्षित होती है तथा जिन आधारो से यह प्रत्यय सम्बद्ध है, वे सभी आधार, यथा / रग, शौक, मल, नमक / सज्ञा कोटि के अन्तर्गत आते है । इस प्रकार उक्त व्युत्पन्न रचनाओ के आधार सज्ञा शब्द ठहरते है । इसके अतिरिक्त / -ईन / परप्रत्यय की स्थिति / कमीन / मे भी है परन्तु / कम / विशेषण है और माना कि यह एक ही प्रकार का यौगिक शब्द है, तब इसके आधार की पुष्टि कैसे हो ? इसका भी वही उत्तर है । यदि यह एक ही रचना है तो इसकी एक

---

१. 'paradigm', Bernard Bloch & Trager—Outline of Linguistic Analysis, Linguistic society of America, 1942, § 4. 4.

ही प्रकार की रूपतालिका है और उस तालिका मे विशेषण ही आधार ठहरता है। दूसरे, जिस प्रकार विशेषणो मे अन्य प्रत्यय दूसरे विशेषण व्युत्पन्न करते है उसी प्रकार यह प्रत्यय भी। इस प्रकार आधारो का निश्चय एक ही प्रकार की रूपतालिकाओ द्वारा होता है।

कभी-कभी परिस्थिति इस प्रकार स्पष्ट नही होती। उदाहरणार्थ / उतार, उबाल, सुधार, फेर, लूट, घोल, मोड / इत्यादि सकर्मक धातुएँ है तथा इनके ही समानान्तर / उतर, उबल, सुधर, फिर, लुट, घुल, मुड / अकर्मक धातुएँ है। दूसरे, यहाँ पर कोई ऐसा आबद्ध अश नही जो प्रत्यय के रूप मे किसी कोटि मे जुडता हो तथा जिसके द्वारा यह सिद्ध किया जा सके कि अमुक मूल धातु से व्युत्पन्न अमुक व्युत्पन्न धातु है। हाँ, अकर्मक धातु की अपेक्षा सकर्मक धातु मे आन्तरिक ध्वनि परिवर्तन अवश्य है, जैसे, / उतर उतार / मे / अ→आ / स्वर-परिवर्तन स्पष्ट है। इस स्थिति मे आधार किस व्याकरणिक कोटि को माना जाय, अकर्मक धातु को अथवा सकर्मक धातु को, अथवा दोनो को स्वतत्र माना जाय ? इस के समाधान के लिए हमे हिन्दी की व्युत्पन्न उन अकर्मक एव सकर्मक धातुओ की रूप तालिकाएँ सामने लानी होगी जिनके द्वारा यह स्पष्ट होगा कि हिन्दी की धातुएँ अन्य व्याकरणिक कोटियो—सज्ञा, विशेषण आदि- से व्युत्पन्न होती है। जैसे, / लोभ / सज्ञा तथा / धमधम / क्रिया-विशेषण मे / -आ / प्रत्यय के योग से / लुभा / तथा / धमधमा / सकर्मक एव अकर्मक धातुएँ व्युत्पन्न होती है। इसी धरातल पर हमे उक्त धातुओ की परीक्षा करनी होगी। देखने से ज्ञात होता है कि जिस प्रकार / -आ / प्रत्यय का योग / लुभा, धमधमा / मे स्पष्ट है वैसा कोई योग इनमे नही है जिसे प्रत्यय कहा जा सके। इस स्थिति मे हमे शून्य प्रत्यय मानना पडेगा। जब इस स्थिति मे आते है तो उक्त धातुओ को या तो अकर्मक धातुओ से व्युत्पन्न माना जा सकता है या सकर्मक धातुओ से। अब यह निश्चय करना है कि अकर्मक धातु को आधार माना जाय अथवा सकर्मक धातु को। अध्येता के पास इसके दो हल है। वह या तो स्वय की अपनाई हुई व्याकरण विषयक व्यवस्था के अनुसार किसी को भी आधार चुन सकता है या बहु प्रचलित कोटि को आधार मान सकता है। परन्तु केवल प्रचलन के आधार पर की गई व्यवस्था मे अधिक गडबड रहने की सभावना है क्योकि इस दिशा मे विश्लेषक को प्रत्येक शब्द के व्यवहार के अनुक्रम की परीक्षा करनी होगी। यदि बहुप्रचलन और व्यवस्था मे पारस्परिक अनुकूलता हो, तो वह बहुत ही सुन्दर व्यवस्था होगी। प्रस्तुत परिस्थिति मे इस दृष्टिकोण को प्रश्रय दिया गया है। प्रचलन एव व्यवस्था के अनुसार / उतार, उबाल, सुधार, फेर, लूट, घोल, मोड / सकर्मक धातुएँ / उतर, उबल, सुधर, फिर, लुट, घुल, मुड / अकर्मक धातुओ

से व्युत्पन्न समझनी चाहिए और आन्तरिक ध्वनि परिवर्तनो को मूल धातुओ के क्रम से स्वीकार करना चाहिए। जैसे, / उतर / से व्युत्पन्न रूप / उतार / मे / अ→आ / ध्वनि-परिवर्तन। कुछ ऐसी भी परिस्थितियाँ सामने आती है जहाँ शब्दो मे आन्तरिक परिवर्तन भी नही होते और न कोई प्रत्यय ही लगता है परन्तु उनके व्यवहार मे उनकी भिन्न-भिन्न व्याकरणिक कोटियाँ उद्दिष्ट होती है, जैसे, / उतार, उबाल, सुधार / इत्यादि, सकर्मक धातुएँ भी है और संज्ञाएँ भी। ऐसी स्थिति मे किसे आधार माना जाय ? सज्ञा को अथवा धातु को इसका हल भी हमारे उक्त कथन मे निहित है। हिन्दी की सामान्यत यह व्यवस्था है कि धातुओ से सज्ञाओ की व्युत्पत्ति होती है। इस प्रकार इन्हे भी धातुओ से व्युत्पन्न माना जायगा परन्तु अकर्मक धातु से नही अपितु सकर्मक धातु से। जैसे, / उतार / सकर्मक धातु तथा शून्य प्रत्यय / -० / के योग से व्युत्पन्न / उतार / सज्ञा प्रातिपदिक। हिन्दी मे ऐसी भी व्यवस्था है जहाँ सज्ञा, विशेषण आदि से धातुएँ बनती है, जैसे, / दुख / से / दुखा / इत्यादि। इन व्युत्पन्न धातुओ को नाम-धातु कहा गया है तथा इनकी रूपतालिका फिर दूसरे प्रकार की है।

कुछ ऐसे भी स्थल आते है जहाँ व्युत्पन्न रूपो के आधार-निर्णय मे और ही कठिनाई प्रतीत होती है। उदाहरणार्थ / खिलवाड / व्युत्पन्न शब्द है जिसका आधार / खेल / है। यह व्यवहार मे सज्ञा भी है और धातु भी। ऐसी स्थिति मे / खिलवाड / को धातु से व्युत्पन्न माना जाय अथवा सज्ञा से ? इस दशा मे हमारा ध्यान आधारभूत रूप तथा व्युत्पन्न रूपो के अर्थो के तोलने पर होना चाहिए। विचार करने पर / खेल / धातु से उसका ऐसा घनिष्ठ सबध नही जितना कि / खेल / सज्ञा से है। वस्तुतः / खिलवाड / रूप / खेल / सज्ञा का ही अवमानित रूप है।

इस प्रकार निश्चय करने के ये सामान्य सिद्धान्त अपनाए गए है। पूर्वप्रत्ययो तथा परप्रत्ययो के विवेचन मे हिन्दी की समस्त व्युत्पादक प्रक्रियाएँ प्रस्तुत की जायँगी।

पूर्वप्रत्यय तथा **परप्रत्यय** ही **व्युत्पादक प्रत्यय** है। **मध्य-प्रत्यय** वाली व्यवस्था हिन्दी की सहज एव स्वाभाविक प्रवृति नही है। अत हमने मध्य-प्रत्यय हिन्दी में स्वीकार नही किए है। अरबी शब्दो मे भले ही मध्य-प्रत्यय हो पर वे अरबी-भाषा की दृष्टि से है न कि हिन्दी की दृष्टि से। हिन्दी मे जो भी अरबी के शब्द आए हैं उनमे हमने ऐसे कोई आबद्ध अश स्वीकार नही किए है जो उनके मध्य मे निक्षिप्त होते हो। यह कहा जा सकता है / कत्ल / से व्युत्पन्न / कातिल / रूप है और /···-आ···-इ···/ इस बात के ये मध्य-प्रत्यय है, जैसे, / क आ त इ ल /। परन्तु हमने इन्हे रूप प्रतिबंधित ध्वनि-विकारो के अन्तर्गत स्वीकार किया। उक्त उदाहरण मे / अ→ आ / स्वर परिवर्तन तथा / इ / का आगम समझना चाहिए।

परप्रत्ययो के विवरण मे हमने कृदन्त एवं तद्धितान्त वाली व्यवस्था को नही अपनाया है। विवेचन की सुविधा की दृष्टि से प्रकृति-प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न रूपो को सज्ञा-प्रातिपादिक, सर्वनाम-प्रातिपादिक, विशेषण-प्रानिपादिक, धातु तथा क्रियाविशेषण-प्रातिपदिको के अन्तर्गत रखा गया है इस प्रकार प्रत्येक कोटि—सज्ञा, सर्वनाम आदि—के अन्तर्गत प्रत्ययो के समवेत प्रयोग सामने आ जाते है। पूर्व-प्रत्ययो के विवेचन मे परम्परागत पद्धति का अनुसरण किया गया है। इसका एक-मात्र कारण यही है कि परप्रत्ययो की प्रवृत्ति और पूर्वप्रत्ययो की प्रवृत्ति मे अन्तर है। पूर्वप्रत्यय समास जैसी प्रवृत्ति लक्षित करते है परन्तु परप्रत्ययो मे यह बात नही। उदाहरणार्थ / अनबन / के / अन - / पूर्व-प्रत्यय मे 'निषेध' अर्थ निहित है परन्तु / लडकपन / के / - पन / परप्रत्यय के अर्थ की प्रधानता ऐसी नही। दूसरे हिन्दी मे पूर्वप्रत्ययो की सख्या परप्रत्ययो अपेक्षा बहुत ही कम है। इसलिए सज्ञा-प्रातिपादिक, विशेषण-प्रातिपदिक इत्यादि जैसे विभाजनो के अन्तर्गत रखकर उनका विवरण उपस्थित नही किया है। प्रत्येक पूर्वप्रत्यय के अन्तर्गत प्रातिपदिक अथवा धातु कोटियो को बतलाया गया है।

नीचे हिन्दी के व्युत्पादक प्रत्ययो पर विचार किया जाता है।

१.१ पूर्वप्रत्यय विचार

हिन्दी मे पूर्वप्रत्ययो का व्यवहार सज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण प्रातिपदिकों तथा धातुओ के पूर्व होता है तथा इसके योग से प्रकृत्यर्थ मे भिन्नता हो जाती है। हिन्दी मे सर्वनामो के पूर्व पूर्वप्रत्ययो का व्यवहार नही होता।

१ १.१. हिन्दी में उपलब्ध पूर्वप्रत्यय तथा उनका वर्गीकरण

प्रस्तुत अनुसधान मे सस्कृत के तत्सम पूर्वप्रत्ययो को छोडकर / **अ-, अन-, अल-, उ$_1$-, उ$_2$-, उन-, औ-, कु-, दर-, दु-, नि-, पर-, फिल-, ब-, बर-, बा-, बे-, बं-, ला-, स-, सब-, सर-, सु-, हम-, बहर-,** / ये २५ पूर्वप्रत्यय उपलब्ध हुए है। इन पूर्वप्रत्ययो का अध्ययन हमारे प्रस्तुत विषय से सम्बन्धित है। व्युत्पादक रचना की दृष्टि से इनका वर्गीकरण तीन वर्गों मे निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जाता है:—

(१) वे पूर्व-प्रत्यय जो सज्ञा, विशेषण अथवा धातु के पूर्व लगकर वही कोटि व्युत्पन्न करते है जिसमे ये लगते है। उदाहरणार्थ / परदादा / मे / पर- / पूर्वप्रत्यय है जो / दादा / सज्ञा के पूर्व लगकर सज्ञा ही व्युत्पन्न करता है। इसी प्रकार / सरनाम / प्रातिपदिक द्रष्टव्य है जिसमे / सर- / पूर्व-प्रत्यय है तथा / नाम / सज्ञा के पूर्व लगकर सज्ञा ही व्युत्पन्न करता है। इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले / पर-, सब-, सर-, उ$_1$-, उन-, / पूर्व-प्रत्यय है। / पर-, सब-, सर-, / का व्यवहार

संज्ञाओ के पूर्व होता है, जैसे, / परनाना /, / सबइन्सपेक्टर /, / सरपच / इत्यादि । / उ₁न- / का व्यवहार धातु के पूर्व होता है, जैसे, / उबट / इत्यादि । / उन- / का व्यवहार विशेषणो (सख्यावाचक) के पूर्व होता है, जैसे; / उन्तीस / इत्यादि ।

(२) वे पूर्व-प्रत्यय जो संज्ञा, विशेषण अथवा धातु के पूर्व लगकर उनसे भिन्न कोटि या कोटियाँ व्युत्पन्न करते है। उदाहरणार्थ / दरअसल / मे / दर- / पूर्वप्रत्यय / असल / विशेषण के पूर्व लगकर क्रिया विशेषण व्युत्पन्न करता है । इसी प्रकार / उथला / मे / उ- / पूर्व-प्रत्यय / थल- / सज्ञा के पूर्व लगकर विशेषण व्युत्पन्न करता है। इस प्रकार इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले / उ₂-, बा-, दर-, फिल-, बहर-/ पूर्व प्रत्यय है।

(३) वे पूर्व-प्रत्यय जो सज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण अथवा क्रिया के पूर्व लगकर वही कोटि या उससे भिन्न कोटि व्युत्पन्न करते है। उदाहरणार्थ / अकाज / मे / अ- / पूर्वप्रत्यय / काज / सज्ञा के पूर्व लगकर सज्ञा व्युत्पन्न करता है तथा यही पूर्वप्रत्यय / अचेत / मे / चेत / सज्ञा के पूर्व लगकर विशेषण व्युत्पन्न करता है । इस प्रकार अन्य पूर्व-प्रत्यय को देखा जा सकता है। जैसे, / कुराज / मे / कु- / पूर्वप्रत्यय सज्ञा के पूर्व लगकर संज्ञा ही व्युत्पन्न करता है परन्तु / कुपढ / मे / पढ़ / धातु के पूर्व लगकर विशेषण व्युत्पन्न करता है। ऊपर (१) तथा (२) वर्गों मे गिनाए गए पूर्व-प्रत्ययो को छोडकर शेष कभी पूर्वप्रत्यय इस वर्ग के अन्तर्गत आते है, जो इस प्रकार है — / अ -, अन औ-, कु-, दु-, बे-, बै-, ला-, स-सु, नि-, बर-, ब-, हम-, अल- / ।

११२. पूर्व-प्रत्ययों का यौगिक-विधान तथा उसके अन्तर्गत पूर्व-प्रत्यय

हिन्दी मे पूर्व-प्रत्ययो का व्यवहार संज्ञा, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषणो के पूर्व होता है तथा इनके योग से सज्ञा, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। नीचे हिन्दी के समस्त यौगिक-विधान को उदाहरणो सहित प्रस्तुत किया जाता है तथा इस यौगिक विधान के अन्तर्गत आने वाले पूर्वप्रत्ययो को भी अन्तर्भुक्त किया जाता है।

हिन्दी मे नौ प्रकार के यौगिक विधान मिलते है । यथा :—

(१) पूप्र० -	स०	→	स०	पूर्वप्रत्यय
कु-	शकुन		कुशकुन	अ-, अन-, औ-, कु-,
				पर-, बे-, बै-, ला-,

			स-, सब-, सर-, सु-, हम-
(२)	पूप्र० - सं० → वि०	अन- मेल अनमेल	अ-, अन-, अल-, उ$_2$-, औ-, कु-, दु, नि-, बर-, बा-, बे-, बैं-, ला-, स-, सु-, हम-
(३)	पूप्र० - स० → क्रि० वि०	ब- दस्तूर बदस्तूर	अल-, दर-, फ़िल-, ब-, बर-, बा-, बे-, स-, बहर-
(४)	पूप्र० - वि० → वि०	अ- कुंठ अकुंठ	अ-, अन-, अल-, उन-, कु-, नि-, बर-
(५)	पूप्र० - वि० → क्रि० वि०	दर- असल दरअसल	दर-
(६)	पूप्र० - क्रि० → क्रि०	उ$_1$- भर उभर	उ$_1$-
(७)	पूप्र० - क्रि० → स०	अन- बन अनबन	अन-
(८)	पूप्र० - क्रि० → वि०	स- जग सजग	अ-, अन-, औ-, कु-, स-, सु-
(९)	पूप्र० - क्रि० वि० → क्रि० वि०	नि- खर्चे निखर्चे	अन-, नि-, ब-, बे-, फ़िल-

पूर्व-प्रत्ययो के इन समस्त विधानो मे पूर्वप्रत्ययो का इकहरा प्रयोग होता है। दुहरे पूर्व-प्रत्ययो का व्यवहार हिन्दी के पूर्व-प्रत्ययो की प्रकृति नही है। हाँ, सस्कृत तत्सम रूपो मे पूर्वप्रत्ययो के दुहरे तथा तिहरे प्रयोग मिलते है परन्तु ये रूप हमारे अध्ययन के बाहर है (§ ०. २)।

हिन्दी मे पूर्वप्रत्यय तथा मूलरूप की यौगिक प्रक्रिया में सन्निकट सबध रहता है। यथा :—

पूप्र० मूलरूप ——→ व्युत्पन्न रूप

उदाहरण '—

उक्त उदाहरणो मे / गिन्ती, बिधा, कलकी, मस्ती, नामी, डरे / मूल रूप हैं जिनका प्रयोग हिन्दी मे पूर्वप्रत्यय रहित अवस्था मे भी होता है। उदाहरणार्थं / आप बिना डरे चले जाइए / , / कैसी मस्ती छाई हुई है वाक्यो मे / डरे / तथा / मस्ती / का पूर्वप्रत्यय रहित अवस्था मे प्रयोग है। इस प्रकार सामान्यत ऐसे ही मूल रूपो के पूर्व हिन्दी मे पूर्व-प्रत्ययो का योग होता है। परन्तु हिन्दी मे कुछ ऐसे भी मूल रूपो के उदाहरण मिलते है जिनका व्यवहार पूर्वप्रत्यय के बिना नही होता। उदाहरणार्थ / निपूता / रूप मे / नि- / पूर्वप्रत्यय है तथा / पूता / मूलरूप। / पूता / का व्यवहार हिन्दी मे नही होता। इसी प्रकार / उथला / मे / उ- / पूर्वप्रत्यय है तथा / थला / मूल रूप। / थला / का व्यवहार नही होता। इस प्रकार के रूप सदैव पूर्वप्रत्ययो के साथ जाते है। इस प्रकार के मूल रूपो मे केन्द्रीय रूप होता है तथा उसके पश्चात् कोई न कोई आबद्ध अ श अवश्य होता है। इन आबद्ध अशो के अन्तर्गत प्राय विशेषण विभक्ति अथवा भाववाचक सज्ञा प्रत्यय आते है। उदाहरणार्थं / निपूता / रूप मे / नि- / पूर्वप्रत्यय है, / पूत / केन्द्रीय रूप तथा / -आ / विशेषण विभक्ति है। इसी प्रकार / बेचैनी / मे / बे- / पूर्वप्रत्यय है / चैन / केन्द्रीय रूप तथा / -ई / भाववाचक सज्ञा प्रत्यय। इस दशा मे परवर्ती आबद्ध अशो का सबध सीधा केन्द्रीय रूप से होकर

पूर्वप्रत्यय तथा केन्द्रीय रूप के सयुक्त मेल से होता है। इस स्थिति को नीचे इस प्रकार स्पष्ट किया जाता है .—
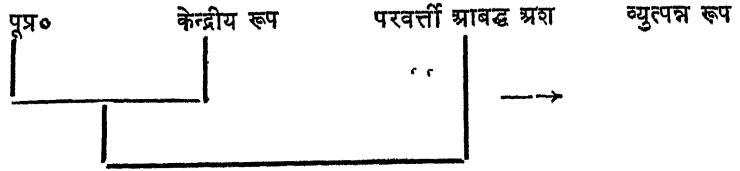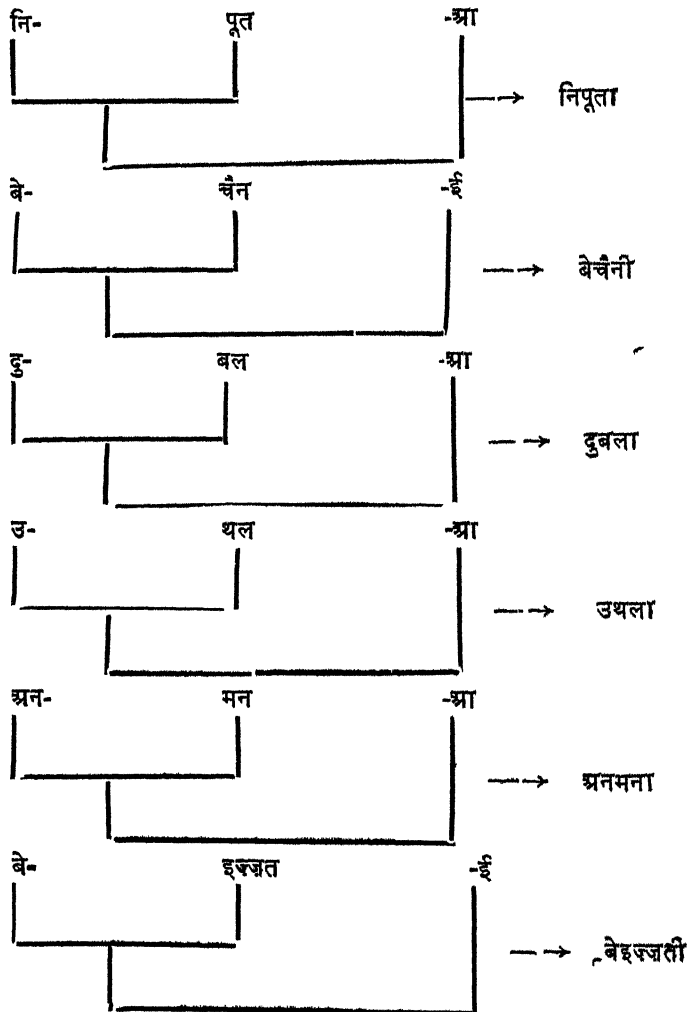
१. १. ३. भ्रम-निवारण

हिन्दी की परम्परागत व्याकरणो तथा अन्य प्रसंगो मे / अध, ऐन, कम, खुश, गैर, ना, फी, बद, बिन, बिला, भर, हर, हाफ, हैड / रूपो को उपसर्ग या पूर्वप्रत्यय माना जाता रहा है परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से ये प्रत्यय नही माने जा सकते। प्रत्यय वस्तुतः आबद्ध अश होता है जिसका अपना कोई स्वतन्त्र अर्थ नही होता। उसकी सार्थकता केवल अर्थवान् स्वतन्त्र इकाइयो के साथ ही परिलक्षित होती है और उन्ही पर वह आश्रित होता है। ध्यानपूर्वक देखने से ज्ञात होता है कि उक्त रूप प्रत्यय नही ठहरते। नीचे प्रत्येक की अर्थवान् स्वतत्र सत्ता उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है। जो अर्थ प्रत्ययो के रूप मे माना जाता रहा है वही अर्थ इन उदाहरणो से स्पष्ट होता है।

१. १. ३. १. / अध /

/ आधा~अध / विशेषण, 'आधा'। यह 'अध' (नीचे) से भिन्न होता है तथा {आधा} का ही सपरिवर्तक है जिसका व्यवहार समासो मे होता है। जैसे, /अधखिला/, / अधसकरा /, / अधबीच / इत्यादि।

उदाहरण —

उसे **अध**-बुना क्यों छोड दिया ?
आधा कल बुनना और **आधा** परसों।

१. १. ३. २. / ऐन /

विशेषण, 'उपयुक्त' या 'ठीक'

उदाहरण :—

ऐन-वक्त पर आप पहुँचे।
ऐन वहीं की तो बात है।

१. १. ३. ३. / कम /

विशेषण, 'थोडा'

उदाहरण :—

बेचारा **कम**-उम्र मे ही चल बसा।
न ज्यादा न **कम**।

१. १. ३. ४. / खुश /

विशेषण, 'अच्छा'।

उदाहरण :—

आज वह **खुश**-दिल प्रतीत होता है।
उसकी हालत आज पहले से **खुश** नज़र आती है।

१.१ ३.५. / ग़ैर /

विशेषण, 'दूसरा' या 'भिन्न'

उदाहरण .—

किसी ग़ैर-मुल्क में रहना ठीक नहीं।
वे क्या कोई ग़ैर है ?

१.१ ३.६. / ना /

/ न∽ना /, अव्यय 'निषेध' या 'अभाव' विवरणात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि से यह {न} का ही सपरिवर्तक माना जायगा। इसका व्यवहार अरबी-फारसी रूपो के साथ होता है। जैसे, / ना-पाक / , / ना-लायक / इत्यादि। ये सभी समास होते है।

उदाहरण :—

मेरी **ना**-पसन्दगी का कोई प्रश्न नहीं।
ना, ऐसा मत करना।
कहीं ऐसा **न** हो।

१.१.३.७. / फ़ी /

विशेषण, 'प्रत्येक'

उदाहरण :—

फ़ी आदमी ऐसा करेगा।
फ़ी बडे मकान को देखिए।

१.१.३.८. / बद /

विशेषण, 'बुरा'

उदाहरण .—

यह बडा **बद**नाम है।
यह लडका बडा **बद** है।

१.१ ३.९ / बिन /

/ बिना∽बिन / , अव्यय, 'बिना' या निषेध'। यह {बिना} का ही सपरिवर्तक है जिसका प्रयोग केवल समासो मे होता है। जैसे, / बिन-ब्याहा / इत्यादि।

उदाहरण :—

बिन-जाने ऐसी कौनसी बात होगई ?
तुम्हारे **बिना** मैं कैसे यह काम कर सकता हूँ।

१. १. ३. १०. / **बिला** /

/ बिना∞बिला / , अव्यय, 'बिना'। विवरणात्मक भाषा विज्ञान की दृष्टि यह { बिना } का ही से सपरिवर्तक माना जायगा। इसका प्रयोग प्रायः अरबी-फारसी रूपो के पूर्व होता है।

उदाहरण :—

बिला शक आप उसे क्यों डाँटते है ?
उसे कसूरवार ठहराए ही **बिना** डाँटते हैं।

१. १. ३. ११. / **भर** /

क्रिया, 'भरना'।

उदाहरण :—

उसे **भर**-पेट भोजन की आवश्यकता है।
उसे लोटे को मत **भर**।

१. १. ३. १२. / **हर** /

विशेषण, 'प्रत्येक'

उदाहरण :—

हर साल ऐसा होता है।
हर लाल झडी अच्छी है।

१. १. ३. १३. / **हाफ़** /

विशेषण 'आधा'

उदाहरण —

वह कैसा **हाफ**-सिडी है ?
इसका **हाफ़** कीजिए।

१. १. ३. १४. / **हैड** /

विशेषण, 'मुख्य'

उदाहरण —

हैड-पडित से पूछिए।
मैं यहाँ **हैड** थोडे ही हूँ !

इस प्रसग मे यह शका उठाई जा सकती है कि कभी-कभी किसी पूर्व **पदिम**[1] के योग से व्युत्पन्न रूप से एक नया ही अर्थ व्यक्त होता है तथा व्युत्पादक प्रक्रिया मे उसके रूप भी विकृत हो जाते हैं, जैसे,

---

me', L Bloomfield--Language, London, 1955, § 10. 2.

हम-दर्द-ई	हमदर्दी	'सहानुभूति'
कम-असल	कमअसल	'दोगला'
हर-जाई	हरजाई	'दुश्चरित्र'
हाफ-सिडी	हाफसिडी	'पागल'
अध-सकरा	अधसकरा	आधा∾अध
बिन-जाने	बिनजाने	बिना∾बिन

तब फिर ऐसे रूपो को क्यो नही पूर्वप्रत्यय माना जाए ? इसका समाधान यह है कि नवीन अर्थप्रधान-विषयक तथा रूपविकार सबधी बाते केवल प्रत्यय-विचार के ही अन्तर्गत नही है, अपितु सामासिक रचना के भी अन्तर्गत है। दूसरी बात यह है कि सामासिक रचना मे उन्ही पदिमो पर विचार किया जाता है जो अर्थवान् होते है तथा जिनका प्रयोग स्वतत्र रूप से होता है। उक्त उदाहरणो को देखने से ज्ञात होगा कि जिसे नवीन अर्थ कहा गया है उसमे स्वतत्र रूप थी अर्थवत्ता बराबर झलकती है। उदाहरणार्थ / हरजाई / का अर्थ 'दुश्चरित्र' दिया गया है। इस अर्थ को इस प्रकार विश्लेषित किया जा सकता है ·— 'जो प्रत्येक के पास जाती है, वह स्त्री'। इसी प्रकार / कमअसल / का अर्थ है 'दोगला'। इसे इस प्रकार विश्लेषित किया जाता है :—'जिसमे कम असलियत हो।' इस प्रकार स्पष्ट है कि उक्त सभी रूप पूर्वप्रत्यय नही ठहरते।

१ १.४. संस्कृत-पूर्वप्रत्यय

हिन्दी मे ऐसे पूर्वप्रत्ययो का व्यवहार अधिकता से होता है जिन्हे संस्कृत-तत्सम कहा जा सकता है। वे हिन्दी मे इस प्रकार गृहीत हुए है.—

(१) वे पूर्वप्रत्य जिन्हे सस्कृत मे उपसर्ग कहा गया है और हिन्दी मे तत्सम रूप मे गृहीत हुए है। उदाहरणार्थ / अनु- /, / अभि- / इत्यादि।

(२) वे सस्कृत-तत्सम शब्द जिसका हिन्दी मे स्वतन्त्र प्रयोग नही होता अपितु पूर्वप्रत्यय के रूप मे ही व्यवहृत होते है। हिन्दी मे इनकी स्वतत्र सत्ता लुप्त हो गई है। उदाहरणार्थ / प्राक- ∾ प्राग, / सस्कृत मे विशेषण है परन्तु हिन्दी मे इसका स्वतन्त्र प्रयोग नही होता। सस्कृत-भाषा की दृष्टि से / प्राक्कथन /, / प्रागऐतिहासिक / आदि सामासिक रूप है परन्तु हिन्दी मे {प्राक-} पूर्वप्रत्यय है क्योकि इसका स्वतन्त्र प्रयोग नही मिलता।

हिन्दी मे उक्त प्रकार के तत्सम पूर्वप्रत्ययो का व्यवहार सामन्यत सस्कृत के तत्सम शब्दो के साथ होता है। आजकल कुछ ऐसे भी प्रयोग है जहाँ संस्कृत-तत्सम

पूर्वप्रत्ययों का हिन्दी तद्भव तथा हिन्दी मे गृहीत विदेशी शब्दो के साथ भी होता है। जैसे, / कु-साइत (अरबी)→कुसाइत / , / कु-काठ (तद्भव)→ कुकाठ / इत्यादि। हमने ऐसे पूर्वप्रत्ययो को प्रस्तुत विवेचन मे हिन्दी के अन्तर्गत स्वीकार किया है। पारिभाषिक शब्द-योजना के अन्तर्गत तत्सम प्रत्ययो का व्यवहार प्रचुरता से किया जा रहा है। प्रस्तुत अनुसधान के अन्तर्गत ऐसे सस्कृत-तत्सम रूपो मे व्यवहृत इन प्रत्ययो को नही लिया गया है क्योकि सस्कृत ग्रन्थो मे इनका वैज्ञानिक विवेचन उपलब्ध है।

१ १. ५. हिन्दी पूर्वप्रत्ययों का विवरण

हिन्दी मे उपलब्ध पूर्व-प्रत्ययो को गिनाया जा चुका है (§१. १. १.)। नीचे प्रत्येक का विवरण क्रमिक रूप से प्रस्तुत किया जाता है।

१ १. ५. १ {अ-}

हिन्दी मे / अ- / पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'हीनता' और 'अभाव' के अर्थ मे होता है तथा इसका प्रयोग सज्ञा, विशेषण तथा क्रियाओ के पूर्व किया जाता है। सज्ञा के योग से संज्ञा, तथा सज्ञा विशेषण और क्रियाओ के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा:—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	अ-	काग		अकाल	'हीनता'
	अ-	काल		अकाल	,,
	अ-	समय		असमय	,,
	अ-	चाह		अचाह	'अभाव
(२)	पूर्व०	स०	→	वि०	
	अ-	चेत		अचेत	,,
	अ-	दत		अदत	,,
	अ-	थाह		अथाह	,,
	अ-	चूक		अचूक	,,
	अ-	घोस		अघोस	,, 'कंपन रहित'
	अ-	पलक		अपलक	,,
	अ-	छूत		अछूत	'हीनता'
(३)	पूप्र०	वि०		वि०	
	अ-	कुठ		अकुठ	'अभाव'
	अ-	छूत-आ		अछूता (वि० विभ०, सहित)	
	अ-	सासद		असासद	

	अ-	शरीरी		अशरीरी	,,
	अ-	कलकी		अकलंकी	,,
	अ-	भोगी		अभोगी	,,
(४)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	,,
	अ-	जान		अजान	,,
	अ-	टल		अटल	,,
	अ-	डिग		अडिग	,,
	अ-	थक		अथक	,,

१. १. ५. २. {अन-}

इस पूर्वप्रत्यय का प्रयोग 'अभाव' या 'निषेध' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा, विशेषण, क्रिया और क्रिया विशेषणो के पूर्व इसका व्यवहार किया जाता है। सज्ञा और क्रिया के योग से संज्ञा, सज्ञा विशेषण और क्रिया विशेषण के योग से विशेषण, तथा क्रिया विशेषण के योग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	अन-	हित		अनहित	'अभाव'
	अन-	मन		अनमन	,,
(२)	पूप्र०	क्रि०	→	सं०	
	अन-	बन		अनबन	,,
(३)	पूप्र०	सं०	→	वि०	
	अन-	गिन्ती		अनगिन्ती	,,
	अन-	मेल		अनमेल	,,
	अन-	मोल		अनमोल	,,
	अन-	समझ		अनसमझ	,,
	अन-	मन-आ		अनमना (वि० विभ० सहित)	,,
	अन-	होना		अनहोना	,,
(४)	पूप्र०	वि०	→	वि०	
	अन-	खुला		अनखुला	,,
	अन-	खिला		अनखिला	,,
	अन-	भला		अनभला	,,
	अन-	चाहा		अनचाहा	,,

अन-	बोला		अनबोला	,,
अग-	बिधा		अनबिधा	,,

(५)

पूप्र०	क्रि०	→	वि०	अर्थ
अन	गढ़		अनगढ	'अभाव'
अन-	जान		अनजान	,,
अन-	पढ़		अनपढ़	,,
अन-	मिल		अनमिल	,,

(६)

पूप्र०	क्रि०वि०	→	क्रि० वि०	
अन-	जाने		अनजाने	,,
अन-	पूछे		अनपूछे	,,
अन-	समझे		अनसमझे	,,
अन-	देखे		अनदेखे	,,
अन-	बोले		अनबोले	,,

१. १ ५. ३. {अल-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा और विशेषणो के पूर्व इसका व्यवहार होता है। सज्ञा के योग से संज्ञा और क्रिया विशेषण तथा विशेषण के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

(१)

पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
अल-	मस्ती		अलमस्ती	'निश्चय'

(२)

पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	
अल-	गरज		अलगरज	,,

(३)

पूप्र०	स०	→	वि०	
अल-	मस्त		अलमस्त	,,

१. १. ५. ४. {उ१-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'ऊपर' के अर्थ मे होता है तथा क्रियाओं के पूर्व इसका प्रयोग होता है। क्रियाओ के योग से 'ऊपरवाची' क्रियाएँ व्युत्पन्न होती है। यथा —

पूप्र०	क्रि०	→	क्रि०	अर्थ
उ-	कस		उकस	'ऊपर'
उ-	तर		उतर	,,

उ-	पट	उपट	,,
उ-	भर	उभर	,,
उ-	बट	उबट	,,

१.१.५.५ { $उ_3$- }

यह पूर्वप्रत्यय / $उ_1$- / पूर्वप्रत्यय से भिन्न है। इसका प्रयोग 'अभाव' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञाओ के पूर्व इसका व्यवहार होता है। सज्ञा के योग से दशावाचक विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

पूप्र०	स०	→	वि०	अर्थ
उ-	थल-आ		उथला (वि० विभ० 'अभाव' साहित)	
उ-	नीँद-आ		उनीँदा ,,	,,

१.१.५.६. { उन- }

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'एक कम' के अर्थ में होता है तथा इसका प्रयोग केवल संख्यावाचक विशेषणो के पूर्व होता है। विशेषणो के योग से दूसरे विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा .—

पूप्र०	वि०	→	वि०	अर्थ
उन-	तीस		उन्तीस	'एक कम'

जब यह पूर्वप्रत्यय / बीस, चालीस, पचास, साठ, सत्तर, अस्सी / विशेषणों के पूर्व लगता है, तो इनमे अनेक प्रकार के आन्तरिक परिवर्तन होते है। यथा .—

पूप्र०	वि०	→	वि०	अर्थ
उन-	बीस	(~नीस)	उन्नीस	'एक कम'
उन-	चालीस	(~तालीस)	उन्तालीस	,,
उन-	पचास	(~अचास)	उनचास	,,
उन-	साठ	(~सठ)	उनसठ	,,
उन-	सत्तर	(~हैत्तर)	उन्हैत्तर	,,
उन-	अस्सी	(~यासी)	उन्यासी	,,

१.१.५.७. { औ- }

इसका व्यवहार 'हीनता' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा और क्रियाओं के पूर्व इसका प्रयोग होता है। संज्ञा के योग से सज्ञा और विशेषण तथा क्रियाओ के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा .—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	औ-	झड		औझड	'हीनता'
	औ-	गुन		औगुन	,,
	औ-	गति		औगति	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	
	औ-	घट		औघट	,,
	औ-	रग		औरग	,, (हीन रग)
	औ-	बास		औबास	,, (हीन बास)
(३)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	
	औ-	गढ		औगढ	,,
	औ-	ढर		औढर	,,

१ १ ५ ८ {कु-} /कु- ∞ क-/

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'हीनता' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा, विशेषण और क्रियाओ के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञा के योग से संज्ञा तथा विशेषण तथा विशेषण और क्रियाओ के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	कु-	काठ		कुकाठ	'हीनता'
	कु-	शकुन		कुशकुन	,,
	कु-	ठौर		कुठौर	,,
	कु-	चाल		कुचाल	,,
	कु-	नजर		कुनजर	,,
	कु-	राज		कुराज	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	
	कु-	डौल		कुडौल	,,
	कु-	ढब		कुढब	,,
	कु-	ढग-आ		कुढगा (व०विभ सहित)	,,
(३)	पूप्र०	वि०	→	वि०	
	कु-	घाती		कुघाती	,,
	कु-	राही		कुराही	,,
	कु-	नामी		कुनामी	,,
	कु-	ख्यात		कुख्यात	,,

(४)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	
	कु-	पढ		कुपढ	,,
	कु-	पच		कुपच	,,
	कु-	चर		कुचर	,,
	कु-	ढर		कुढर	,,

/ क- / सपरिवर्तक का प्रयोग रूप प्रतिबधित है जिसका प्रयोग केवल / पूत / के पूर्व होता है । यथा .—

पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
क-	पूत		कपूत	'हीनता'

१. १ ५ ६. { दर- }

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा और विशेषण के पूर्व इसका प्रयोग होता है। इनके योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	अर्थ
	दर-	हकीक़त		दरहकीकत	'निश्चय'
	दर-	सूरत		दरसूरत	,,
(२)	पूप्र०	वि०	→	क्रि० वि०	
	दर	असल		दरअसल	,,

१. १. ५. १०. { दु- }

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'हीनता' तथा 'कठिनता' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा और क्रिया के पूर्व इसका प्रयोग होता है । सज्ञा के योग से सज्ञा तथा विशेषण और क्रिया के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है । यथा :—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	दु-	राज		दुराज	'हीनता'
	दु-	काल		दुकाल	,,
	दु-	भाग	(~हाग)	दुहाग	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	
	दु-	बल-आ		दुबला (वि० विभ० सहित)	,,
	दु-	थल-आ		दुथला ,,	,, 'बुरी भूमि'
(३)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	
	दु-	सह		दुसह	'कठिनता'

१. १ ५. ११. {नि-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'बिना' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा और क्रिया-विशेषण के पूर्व इसका प्रयोग होता है। मज्ञा के योग से विशेषण तथा क्रियाविशेषण के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हे। यथा —

(१)	पूप्र०	स० →	वि०	अर्थ
	नि-	डर	निडर	'बिना'
	नि-	बल	निवल	,,
	नि-	धडक	निधडक	,,
	नि-	पून-आ	निपूता (वि०विभ० सहित)	,,

जब इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार / काम, तथा / हाथ / सज्ञाओ के पूर्व होता है तो मध्यवर्ती / आ / / अ / मे परिवर्तित हो जाता हे तथा / म → म्म /, / थ → त्थ / परिवर्तन होते है यथा —

	नि-	काम (∼कम्म) -आ	निकम्मा	'बिना'
	नि-	हा (∼हत्थ) -आ	निहत्था	,,
(२)	पूप्र०	क्रि०वि० →	क्रि० वि०	
	नि-	खर्चे	निखर्चे	,,
	नि-	डरे	निडरे	,,

१. १ ५. १२. {पर-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'पहले की पीढी' के अर्थ मे होता है तथा सबंध वाचक सज्ञाओ के पूर्व इसका व्यवहार होता है। सज्ञाओ के योग से सज्ञाएँ व्युत्पन्न होती है। यथा —

पूप्र०	स० →	स०	अर्थ
पर-	दादा	परदादा	'पहले की पीढी'
पर-	नाना	परनाना	,,
पर-	बाबा	परबाबा	,,

१. १ ५ १३ {फिल-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ मे होता है। तथा इसका प्रयोग सज्ञाओ से पूर्व होता है। सज्ञाओ के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	पूप्र०	स० →	क्रि० वि०	
	फिल-	हकीकत	फिलहकीकत	'निश्चय'
	फिल-	वाका	फिलवाका	

(२)	पूप्र०	क्रि वि०	→	क्रि० वि०	
	फिल	हाल		फ़िलहाल	,,

१. १. ५. १४. {ब}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'अनुसार' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञाओ के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञाओ के योग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	अनुसार
ब-	खूबी		बखूबी	,,
ब-	दस्तूर		बदस्तूर	,,
ब-	नाम		बनाम	,,
ब-	तौर		बतौर	,,

१. १ ५. १५. {बर-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा और विशेषण के पूर्व इसका व्यवहार होता है। सज्ञा के योग से विशेषण तथा क्रियाविशेषण और क्रिया के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

(१)	पूप्र०	स०	→	वि०	अर्थ
	बर-	जबान		बरजबान	'निश्चय'
	बर-	करार		बरकरार	,,
	बर-	तरफ		बरतरफ	,,
(२)	पूप्र०	सं०	→	क्रि० वि०	अर्थ
	बर-	वक्त		बरवक्त	'निश्चय'
	बर-	अक्स		बरअक्ल	,,
(३)	पूप्र०	वि०	→	क्रि० वि०	
	बर-	खिलाफ		बरखिलाफ	,,

१. १. ५. १६. {बहर-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'निश्चय' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञाओ को योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :—

पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	अर्थ
बहर-	हाल		बहरहाल	'निश्चय'
बहर-	कैफ		बहरकैफ़	,,

१. १. ५. १७. {बा-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'सहित' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा के पूर्व इसका प्रयोग होता है। संज्ञाओ के योग से विशेषण तथा क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	पूप्र०	स०	→	वि०	अर्थ
	बा-	खबर		बाखबर	'सहित'
	बा-	मुहावरा		बामुहावरा	,,
	बा-	तमीज		बातमीज	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	
	बा-	कायदा		बाकायदा	,,
	बा-	जाब्ता		बाजाब्ता	,,
	बा-	होश्यारी		बाहोश्यारी	,,
	बा-	वजूद		बावजूद	,,

१. १. ५. १८. {बे-}

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'बिना' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा और क्रिया-विशेषणो के पूर्व इसका प्रयोग होता है। संज्ञा के योग से सज्ञा, विशेषण और क्रिया विशेषण तथा क्रियाविशेषण के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा :-

(१)	पूप्र०	सं०	→	स०	अर्थ
	बे-	इज्जत-ई		बेइज्जती (भाव वा०	'बिना' प्रत्यय सहित)
	बे-	खबर-ई		बेखबरी ,,	,,
	बे-	चैन-ई		बेचैनी ,,	,,
	बे-	रहम-ई		बेरहमी ,,	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	
	बे-	जान		बेजान	,,
	बे-	काम		बेकाम	,,
	बे-	डौल		बेडौल	,,
	बे-	धड़क		बेधड़क	,,
	बे-	तुक-आ		बेतुका (वि०विभ-	,, सहित)

(३)	पूप्र०	सं०	→	क्रि० वि०	
	बे-	तरह		बेतरह	,,
	बे-	शक		बेशक	,,
	बे-	फायदा		बेफायदा	,,
	बे-	वक़्त		बेवक़्त	,,
	बे-	गरज़		बेगरज़	,,

(४)	पूप्र०	क्रि०वि०	→	क्रि० वि०	
	बे-	चले		बेचले	,,
	बे-	खटके		बेखटके	,,
	बे-	कसे		बेकसे	,,
	बे-	मरे		बेमरे	,,

१. १. ५. १९ { बै- }

/ बै- / पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'अभाव' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा के पूर्व इसका प्रयोग होता है। संज्ञा के योग से संज्ञा तथा विशेषण व्युत्पन्न होते हैं। यथा —

(१)	पूप्र०	सं०	→	सं०	अर्थ
	बै-	राग		बैराग	'अभाव'
	बै-	वर्ण		बैवर्ण	,,

(२)	पूप्र०	सं०	→	वि०	
	बै-	राग-ई		बैरागी (वि० प्रत्यय सहित)	,,
	बै-	देह-ई		बैदेही ,,	,,

१. १. ५. २० { ला- }

इस पूर्व प्रत्यय का व्यवहार 'निषेध' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञाओं के पूर्व इसका व्यवहार होता है। संज्ञा के योग से संज्ञा और विशेषण व्युत्पन्न होते हैं। यथा .—

(१)	पूप्र०	सं०	→	सं०	अर्थ
	ला-	परवाह-ई		लापरवाही (भाव वा० प्रत्यय सहित)	'निषेध'
	ला-	वारिस-ई		लावारिसी ,,	,,

(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	
	ला-	वारिस		लावारिस	,,
	ला-	जबाब		लाजबाब	,,
	ला-	इलाज		लाइलाज	,,
	ला-	मजहब		लामज़हब	,,

१. १. ५. २१. {स-

इस पूर्वप्रत्यय का व्यवहार 'अच्छा' तथा 'सहित' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञा और क्रिया के पूर्व इसका व्यवहार होता है। सज्ञा के योग से सज्ञा, विशेषण और क्रियाविशेषण तथा क्रिया के योग से विशेषण व्युत्पन्न होते है यथा :—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	स-	पूत		सपूत	'अच्छा'
	स-	जन		सजन	,,
	स-	बेला	(∼बेरा)	सबेरा	,,
(२)	पूप्र०	सं०	→	वि०	
	स-	जीव		सजीव	'सहित'
	स-	घोस		सघोस	,,
	स-	जल		सजल	,,
	स-	काम		सकाम	,,
(३)	पूप्र०	स०	→	क्रि० वि०	
	स-	देह		सदेह	,,
	स-	शरीर		सशरीर	,,
	स-	परिवार		सपरिवार	,,
(४)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	
	स-	जग		सजग	,,
	स-	चल		सचल	,,

१. १. ५ २२ {सब-}

इस का व्यवहार 'लघुता' के अर्थ मे होता है तथा संज्ञाओ के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञाओ के योग से सज्ञाएँ व्युत्पन्न होती है। यथा :—

पूप्र०	सं०	→	सं०	अर्थ
सब-	ओवरसियर		सबओवरसियर	'लघुता'
सब-	रजिस्ट्रार		सबरजिस्ट्रार	,,

सब-	डिप्टी	सबडिप्टी	,,
सब-	इन्सपेक्टर	सबइन्सपेक्टर	,,

१. १. ५ २३. {सर-}

इसका व्यवहार 'मुख्यता' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञाओ के योग से सज्ञाएँ व्युत्पन्न होती है। यथा .—

पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
सर-	हृद		सरहद	'मुख्यता'
सर-	ख़त		सरख़त	,,
सर-	नाम		सरनाम	,,
सर-	पच		सरपच	,,
सर-	ताज़		सरताज़	,,

१. १ ५. २४. {सु-}

/ सु- / का व्यवहार 'श्रेष्ठता' के अर्थ मे होता है तथा सज्ञा और क्रियाओं के पूर्व इसका प्रयोग होता है। सज्ञा के योग से सज्ञा और विशेषरा तथा क्रिया के योग से विशेषरा व्युत्पन्न होते हैं। यथा :—

(१)	पूप्र०	स०	→	स०	अर्थ
	सु-	नाम		सुनाम	'श्रेष्ठता'
	सु-	चाल		सुचाल	,,
	सु-	दिन		सुदिन	,,
	सु-	कवि		सुकवि	,,
	सु-	चाव		सुचाव	,,
(२)	पूप्र०	स०	→	वि०	अर्थ
	सु-	जन		सुजन	'श्रेष्ठता'
	सु-	काल		सुकाल	,,
	सु-	फल		सुफल	,,
(३)	पूप्र०	क्रि०	→	वि०	
	सु-	जान		सुजान	,,
	सु-	ढर		सुढर	,,
	सु-	डौल		सुडौल	,,
	सु-	गढ	(~ घड)	सुघड	,,

१ १ ५ २५. { हम- }

इसका व्यवहार 'साथ' तथा 'समता' के अर्थ मे होता है। यह / हम / सर्वनाम से भिन्न है। इसका प्रयोग सज्ञा के पूर्व होता है तथा सज्ञा के योग के सज्ञा तथा विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	पूप्र०	सं०	→	स०	अर्थ
	हम-	दर्द-ई		हमदर्दी (भाव वा०स० 'साथ' प्रत्यय सहित)	
(२)	पूप्र०	सं०	→	वि०	
	हम-	दर्द		हमदर्द	,,
	हम-	राह		हमराह	,,
	हम-	उम्र		हमउम्र	,,
	हम-	राह-ई		हमराही (वि०प्रत्यय,, सहित)	

१.२ परप्रत्यय विचार

हिन्दी मे परप्रत्ययो का व्यवहार सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण प्रातिपदिको तथा धातुओ के पश्चात् होता है तथा इनके योग से अनेक प्रकार के सज्ञा, विशेषण, क्रियाविशेषण, प्रातिपदिक तथा धातु रूप व्युत्पन्न होते है। हिन्दी मे परस्परता बोधक सर्वनाम / आपस / को छोडकर (§ १ २ १० २ १.१) व्युत्पन्न सर्वनाम प्रातिपदिक उपलब्ध नही है। जिन सर्वनामो का व्यवहार हिन्दी मे होता है वे मूल प्रातिपदिक होते है, उनमें लगने वाले वे परप्रत्यय नही है जिनके द्वारा व्युत्पन्न सर्वनाम प्रातिपदिक बतलाए जा सके। हाँ, कुछ मूल सर्वनाम प्रातिपदिको से सज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिक अवश्य व्युत्पन्न होते है। जैसे, / आप-आ→आपा / स०, / यह (∼इ) -तन|आ→इतन|आ / वि०, / यह (∼इ) -धर→इधर / क्रि० वि० । इस प्रसग मे यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी मे / आप / (निज० वा०) सर्वनाम को छोडकर (§ १ २. १०. ४ १ १) शेष सभी सर्वनामो से धातुएँ व्युत्पन्न नही होती। / आप / से / अपना / सकर्मक धातु इस प्रकार व्युत्पन्न होती है / आप (∼अप) -ना→अपना / सक० धा०। उदाहरणार्थ / मैं उसे नहीं अपनाता /। यहाँ यह स्मरणीय है कि { क- } परसर्ग का / -न|आ / एक अलग परसर्ग संपरिवर्तक है (§ २ १ ७ ३ २) तथा जिसकी सार्थकता भेद्य-भेदक सबध प्रगट करने की है और उसका रूपान्तर लिग और वचन के अनुसार होता है। परन्तु / -ना / की सार्थकता यहाँ पर सकर्मक धातु बनाने की है। इस प्रकार / -ना / तथा / -न|आ / की अलग-अलग कार्यकारिता है।

१ २ १ हिन्दी में उपलब्ध परप्रत्यय

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत सस्कृत-तत्सम परप्रत्ययो को छोडकर ये परप्रत्यय प्राप्त हुए है । यहाँ यह स्मरण रखना आवश्यक है कि सकेत | इस बात का द्योतक है कि उसके पर्व का तत्व यथार्थतः व्युत्पादक प्रत्यय है तथा इसके पश्चात् का तत्व विभक्ति सूचक । इस प्रकार विभक्ति और व्युत्पादक प्रत्यय के बीच यह खडी पाई विभाजक सकेत है । दूसरी आवश्यकता इस सकेत की यह है कि इसकी सहायता से हिन्दी प्रातिपदिको के समझने मे सहायता एव सरलता होगी । / -०, -अक, -अक्कड, -अट, -अट|ई, -अड, -अड्ड|ई, -अत, -अन, -अम, -अल, -अल्ल|आ, -अस, -अस्वी, -अहाँ, -अकू, -अग|आ, -अछू, -अत, -अदाज, -आ, -आ|ई, -आइन, -आइँद, -आई, -आऊ, -आक, -आक|आ, -आका, -आकी, -आकू, -आड, -आड|ई, -आडी, -आत, -आर्ता,-आन, -आन|आ, -आन|ई, -आना, -आनी, -आप, -आप|आ, -आम, -आमी, -आय|आ, -आयत -आर, -आर|आ, आर|ई, -आल, -आल|आ, -आलू, -आव, -आव|आ, -आवट, -आवत, -आवर, -आवेज, -आस, -आस|आ, -आसू, -आहट, -आहत, -इक, -इक|आ, इज्म, -इत, -इन, -इम, -इम|आ, -इय|आ, -इयत, -इयल, -इया, -इयार|आ, -इल, -इश, -इस्ट, -इ ग, -इ द|आ, -इ दा, -ई, -ईजा, -ईदा, -ईन, ईन|आ, ईना, -ईल|आ, -ईय, ईदँ|आ, -उ|आ, -उट|आ, -उल, -ऊ, -ऊट|आ, -ऊन, -ऊनी, -ए, -एज्, -एज|आ, -एड, -एतर, -एर, -एर|आ, -एल, -एल|आ, -एल|ई, -एलू, -ऐत, -ऐनी, -ऐल, -ऐल|आ, -ओ, -ओ|ई, -ओट, -ओड|आ, -ओर, -ओल|आ, -ओह|ई, -ओहर, -ओँ, -औट|आ, -औट|ई, -औठ|आ, -औड|आ, -औड|ई, -औत, -औत|आ, -औत|ई, -औन|आ, -औन|ई, -और|आ, -और|ई, -औल|आ, -औस, -औहँ|आ, -अइय|आ, -अउअल, -अउआ, -क|आ, -क|ई, -कड|आ, -कम, -कर,

-कान|आ, -कार, -कार|आ, -की, -कुन, -कू, -खेज, -खोर, -ग|ई, -गर, -गार, -गीन, -गीर, -गीर|ई, च|आ, -च|ई, -चार|आ, -ची, -चे, -ज, -ज|आ, -जाद|आ, -ट, -ट|आ, ट|ई, -ट्ठ|आ, -डम, -ड|आ, -ड|ई, -डी, -त|आ, त|ई, -तन|आ, -तम, -तया, -तर, -ती, -त्व, -दान, -दार, -दाँ, -धर, न|आ, -न|ई, -नाक, नाम|आ, -नी, -नुम|आ, -नुमा, प|ऊ, -पन, -ब, -ब|ई, -बाज, -बीन, -मती, -मन, -मद, -य|आ, -यार|आ, -योँ, -र|आ, -र|ई, -र|ऊ, -रूक, रेज, -ल|आ, -ल|ई, -ली, -लौत|आ, -व|आ, -व|आँ, -व|ईँ, -वज, -वती, -वन|आ, वन|ई, -वर, वइय|आ, -वत, -वा, -वाड,

-वाड|आ, -वान, -वार, -वार|आ, -वाल, -वाह|आ, 'वाँ, -वी, -शुदा, -स|आ, -सार, -सू, -ह, -हज, -हट, -हट|ई, -हर, -हर|आ, -हर|ई, -हार, -हार|आ, -जनी / इन परप्रत्ययो

की सख्या २४६ है। इनमे मे कुछ परप्रत्ययो के अन्तर्गत सपरिवर्तक भी है जिनका उल्लेख नही किया गया है, केवल उनके प्रधान सपरिवर्तक का ही उल्लेख किया है। नीचे प्रधान सपरिवर्नको के अन्तर्गत आने वाले सपरिवर्तको को भी प्रस्तुत किया जाता है।

{ -अक } / -अक ∼ -क /
{ -अक्कड } / -अक्कड ∼ -क्कड /
{ -अड } / -अड ∼ -अर ∞ -अगड /
{ -अन } / -अन ∼ -न / , / -अन ∞ -तन /
{ -अस } / -अस ∞ -एँ ∞ -ठ ∞ -थ ∞ -म|ई /
{ -आ } / -आ ∞ -इया ∞ -ना ∞ -रा ∞ -० / , / -आ ∞ -ओ ∞ -ला ∞ -० /
{ -आ|ई } / -आ|ई ∞ -ला|ई ∞ -वा|ई /
{ -आऊ } / -आऊ ∼ -ऊ /
{ -आल } / -आल ∞ -इयाल ∞ -इहाल /
{ -आव|आ } / -आव|आ ∼ -व|आ /
{ -आवट } / -आवट ∼ -वट /
{ -आस } / -आस ∞ -लास /
{ -ए } / -ए ∞ - अम ∞ -आम /
{ -ओँ } / -औँ ∼ -इयाँ /
{ -क|आ } / -क|आ ∞ -क्क|आ ∞ -ज|आ ∞ -ठ|आ ∞ -त|आ ∞ -ल|आ /
{ -ग|ई } / -ग|ई ∞ -यग|ई /
{ -च|आ } / -च|आ ∞ -ईच|आ /
{ -पन } / -पन ∞ -अप्पन
{ -योँ } / -योँ ∼ -ओँ /
{ ल|ई } / -ल|ई ∞ -अल्ल|ई /
{ व|आँ } / -व|आँ ∞ -ट|आ ∞ -थ|आ ∞ -ल|आ ∞ -सर|आ /
{ -वा } / -वा ∼ -लवा ∼ -० /
{ -हर|आ } / -हर|आ ∞ -हल|आ /

ये सपरिवर्तक ध्वनि-प्रक्रियात्मकअथवा रूपरचनात्मक दृष्टि से प्रतिबधित है। आगे परप्रत्ययो के सम्यक् विवरण मे (§ १२.१०.) इनकी सीमाओ को यथा-स्थान प्रस्तुत किया जायगा।

१. २. २ व्युत्पादक विभक्ति-प्रत्यय

इन परप्रत्ययो के अतिरिक्त कुछ ऐस भी प्रत्यय हे जो ऐसे सधि-स्थलो पर है जिन्हे एक ओर तो व्युत्पादक परप्रत्यय कहा जा॰ सकता है तथा दूसरी ओर उन्हे विभक्ति। उदाहरणार्थ /लडक-/ प्रातिपदिक मे जब /-आ/ का योग होता है तो /लडका/ सज्ञापद सिद्ध होता हे। इस प्रकार /-आ/ की सार्थकता पुल्लिग, प्रत्यक्षकारक एकवचन की विभक्ति के रूप मे द्रष्टव्य है। परन्तु, उदाहरणार्थ /अगार/, /लोमड-/ प्रातिपदिको मे, जब /-आ/ का योग होता है तो /अगारा/ /लामडा/ रूप सिद्ध होते हे। इस परिस्थिति मे /-आ/ प्रत्यय एक ओर तो पुल्लिग प्रत्यक्ष कारक एकवचन का द्योतन करता है तथा साथ ही दूसरी ओर 'अनभीष्ट वृह-त्कायिकता'। इस प्रकार /-आ/ प्रत्यय का अध्ययन दो क्षेत्रो मे अपेक्षित है —पद-रचना मे तथा व्युत्पादक रचना मे। हमने ऐसे प्रत्ययो को **व्युत्पादक विभक्ति** कहा है तथा विभक्ति विचार के अन्तर्गत इनका विवरण किया है। ये व्युत्पादक प्रत्यय सज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त-पद प्रकरणो के अन्तर्गत आते है (§ २. १ १ ३ § २ १ ३. २ § २ २. २.)।

१. २ ३ /-नाम|आ, -दार, -पन, -बाज़, -मंद, -वर, -वार/ परप्रत्यय

हिन्दी मे परप्रत्ययो का व्यवहार प्रातिपदिको अथवा धातुओ के पश्चात् होता है तथा इनके योग से दूसरे प्रकार के प्रातिपदिक अथवा धातु-रूप व्युत्पन्न होते है। जब मूल प्रातिपदिको अथवा धातुओ या व्युत्पन्न प्रातिपदिको अथवा धातुओ के पश्चात् विभक्तियाँ लगती है तो पद बनते है। इन विभक्तियो के अन्तर्गत /—०/ भी विभक्ति है जो विभिन्न परिस्थितियो मे देखी जा सकती है (§ २ १. १. १., § २ १ २, § २ १ ३, § २ २ १. १ १. १, § २ २ १ १ २ १., § २ २. १. १. ३, § २ २ १ १. ३ १., § २ ३. १)। इस प्रकार सिद्धान्तत प्रातिपदिक अथवा धातुएँ पदो से भिन्न कोटि की है। हिन्दी मे /-नाम|आ, -दार, -पन, -बाज़ मद, -वर, -वार/ ऐसे परप्रत्यय है जिनके सबध मे यह कहे जाने की सभावना है कि ये प्रत्यय पदो के पश्चात् भी लगते है। यह सभावना इस प्रकार प्रस्तुत की जाती है। खडी पाई के कोष्ठक मे प्रस्तुत अश पदरचना सबधी विभक्तियो के द्योतक है —

{-नाम|आ}

किराय|आ|	नाम|आ	→	किरायानाम|आ
सुपुर्दग|ई|	नाम|अ		सुपुर्दगीनाम|आ

{-दार}

छत्त|ए|दार	छत्तेदार

दान|ए|दार	दानेदार
मज|ए|दार	मज़ेदार
ठेक|ए|दार	ठेकेदार

{ -पन }

काल|आ|पन	कालापन
गुंड|आ|पन	गुंडापन
काग्रेस|ई|पन	काग्रेसीपन
लचील|आ|पन	लचीलापन

{ -बाज़ }

बहान|ए|बाज	बहानेबाज़
धोख|ए|बाज़	धोखेबाज़
नश|ए|बाज़	नशेबाज़
नख|ए|बाज	नखरेबाज़

{ -मद }

फायद|ए|मद	फायदेमद

{ -वर

गुस्स|ए|वर	गुस्सेवर
ताल|ए|वर	तालेवर

{ -वार

जिम्म|ए|वार	जिम्मेवार
ब्यौर|ए|वार	ब्यौरेवार
दर्ज|ए|वार	दर्जेवार
सिलसिल|ए|वार	सिलसिलेवार

इस दशा मे इन्हे परप्रत्यय कैसे कहा जाय ? यहाँ भी हमने उक्त प्रकार के व्युत्पन्न रूपो की सिद्धि प्रातिपदिको से स्वीकार की है, पदो से नही। जिस प्रकार अनेक प्रातिपदिको के पश्चात् परप्रत्यय लगते है उसी प्रकार यहाँ भी उसी दृष्टि को अपनाया गया है। उक्त उदाहरणो मे कोष्ठको के अन्तर्गत विभक्तियाँ नही है अपितु मूल प्रातिपदिक के ही अश है। इस प्रकार / किराया, छत्ते, बहाने, फायदे, गुस्से / इत्यादि पद नही है प्रातिपदिक है। यह ठीक है कि जब लिंग, वचन और कारक के अनुसार इनके रूपान्तर होते है तो विभक्ति रहित अवस्था मे / किराय-, छत्त-, बहान-फायद-, गुस्स- / प्रातिपदिक ही अवशिष्ट रहते है, परन्तु प्रातिपदिको के सपरिवर्तक भी तो हो सकते है। यह आवश्यक नही कि केवल एक ही रूप प्रातिपदिक हो, परि-

स्थितियो—ध्वनिप्रक्रियात्मक अथवा रूपरचनात्मक प्रतिबन्धो मे—के अनुसार एक क्या अनेक प्रातिपदिक सपरिवर्तक हो सकते है। इस प्रसग के अन्तर्गत / किराय- ~किराया / , / छत्त ~छत्ते / , / काल-~काला / , / बहान ~बहाने / इत्यादि सपरिवर्तक रूपरचनात्मक दृष्टि से पदप्रतिबन्धित माने जायँगे। इस प्रकार हमारी शका का समाधान हो जाता है।

१.२ ४ {वाल|आ} प्रत्यय

हिन्दी मे मूल रूप तथा परप्रत्यय के बीच ऐसा कोई मध्यवर्ती तत्व विभक्ति या पश्चाश्रयी नही आता जो मूल रूप तथा परप्रत्यय के बीच व्यवधान अथवा विभाजन उपस्थित कर दे। इस प्रकार व्युत्पन्न रूप मे मूल रूप तथा परप्रत्यय के बीच समवाय, चरम समीपी एव सीधा सबध रहता है। हिन्दी मे / वाल|आ / का व्यवहार पदो के पश्चात् होता है। यथा.—/ लडके वाला / , / लडकियों वाला / , / भूतों वाला / , / पेटी वाली / , / ताँगे वालों / इत्यादि । इन उदाहरणों मे / वाल|आ / तथा प्रातिपदिको के बीच / -ए, -इयों, -ओं, -ई / विभक्तियाँ स्पष्ट रूप से परिलक्षित है। इसके अतिरिक्त / वाल|आ / का व्यवहार पश्चाश्रयी के पश्चात् भी होता है। जैसे , / जाने ही वाला / , / खाने ही वाला / , / मरने ही वाला / , / मेरे ही वाले बक्स में / , / उसके वाले / , / तेरे वाले / उदाहरणों मे { ही } तथा { क- } पश्चाश्रितो के पश्चात् इस प्रत्यय का व्यवहार द्रष्टव्य है। इस प्रकार / वाल|आ / प्रत्यय तर्क की कसौटी पर व्युत्पादक परप्रत्यय नहीं माना जा सकता, उसकी प्रकृति व्युत्पादक परप्रत्ययो से नितान्त भिन्न है। हम ने इसे परसर्ग के रूप मे स्वीकार किया है तथा जिस प्रकार परसर्गों के द्वारा अनेक प्रकार के व्याकरणिक संबध प्रकट होते है उसी प्रकार इसके द्वारा भी। पश्चाश्रयी के अन्तर्गत इस पर विचार किया गया है (§ ३ १ २ २)।

१.२ ५. भ्रम-निवारण

हिन्दी मे / आबाद, इस्तान, खान|आ, गाह, गुन|आ, चद, जी, नवीस, परस्त, पोश, वद, राम, साज / रूपो को परप्रत्यय माने जाने की संभावना है परन्तु वैज्ञानिक दृष्टि से ये परप्रत्यय नही कहे जा सकते। ये वास्तव मे स्वतत्र रूप है। नीचे प्रत्येक की अर्थवान् स्वतत्र सत्ता उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है।

१ २ ५ १. / आबाद /

विशेषण, क्रियाविशेषण, 'बसा हुआ'।

उदाहरण:—

हैदराबाद नाम क्यों पडा ?

क्योंकि हैदर ने उसे **आबाद** किया।
किसी **आबाद** देश में रहना ठीक है।

१.२ ५.२. / **इस्तान** /

/ इस्तान / संज्ञा, 'जगह'। / इस्तान / का प्रयोग, स्थान / के समान है। दोनो का अर्थ भी समान है। कुछ प्रयोगो मे / इस्तान / का प्रयोग होता है, कुछ मे / स्थान / का[1]। इस प्रकार दोनो का व्यवहार रूप प्रतिबधित कहा जा सकता है, यथा —/ अरबिस्तान, कब्रिस्तान, राजस्थान, सुन्दर स्थान /। / हिन्दुस्तान, हिन्दुस्थान / प्रयोग वैकल्पिक है।

उदाहरण—

अर्थी **कब्रिस्तान** को चली।
उस **स्थान** को जहाँ पर कुछ निस्तब्ध शाति मिलेगी।

१.२.५.३. / **खान|आ** /

संज्ञा, 'विभाग'।

उदाहरण —

आज डाक**खाने** की छुट्टी है।
ये सब बातें इस **खाने** में हैं।
खाना-पूरी करो।
यह **खाना** कैसे भरा जाय ?

१.२.५ ४. / **गाह** /

सज्ञा, 'स्थान'।

उदाहरण —

ईद**गाह** दर**गाह** आदि स्थान मानव के भीतर अतीत

---

१. / स्तान / का प्रयोग फारसी शब्दो के साथ होता है जब कि /स्थान / का सस्कृत तत्सम तथा तद्भव शब्दो के साथ। इस प्रकार इन रूपो के प्रयोग प्रतिबन्धित कहे जा सकते है। परन्तु यह प्रतिबन्ध हमारे उक्त कथन मे दोषपूर्णहोगा क्योकि इसमे ऐतिहासिक दृष्टिकोण की झलक आने लगती है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण का प्रवेश तब तक वर्जित है जब तक साकालिक सरचना का स्थिरीकरण न हो जाय। हमारा तो केवल इतना ही कहना है कि / स्थान / तथा / स्तान / सयोगवश, प्रयोग तथा अर्थ की दृष्टि से प्राय समान है और ये रूप-प्रतिबधित सपरिवर्तक है। यह बात दूसरी है कि रूप-प्रतिबन्धन मे ऐतिहासिक अध्ययन की अपेक्षा है।

की सुन्दर झलक दिखाते हैं इन गाहो में
भावुक मन कुछ रमणीय तत्व पाता है ।

१. २. ५. ५. / गुन|आ /

/ गुन|आ ∼ न|आ / विशेषण, 'गुणा वाचक अर्थ' । / न|आ /, / गुन|आ / का रूप-प्रतिबधित रूप है जिसका व्यवहार केवल / दो / सख्यावाचक विशेषण के पश्चात् होता है, यथा —/ दो (∼ दू) -न|आ → दून|आ / , / गुना / और / गुणा / मे अर्थतत्व एक ही है। परन्तु / गुना / का प्रयोग विशेषण के रूप मे होता है तथा / गुणा / का प्रयोग सज्ञा के रूप मे जैसे , / दो में तीन का गुणा करो / , / वह पहले तिगुना बढ गया / , / तीन गुना पानी और चार गुना जल मिलाओ / इत्यादि ।

१. २. ५. ६. / चंद /

सज्ञा, 'चन्द्रमा' ।

इसमे वस्तुन 'चन्द्रमा' का ही अर्थतत्व निहित है परन्तु हास्य या विनोद मे इस का प्रयोग सज्ञाओ के पश्चात् होता है । हास्य या विनोद मे भी इसका प्रयोग स्वतत्र रूप मे होता है । यथा.—

ये हैं हमारे यहाँ के गीदड**चद** !
कहिए **चद** जी क्या हाल हैं ?
दाल-भात मे मूसल**चद** ।

१. २ ५. ७. / जी /

इसका प्रयोग सज्ञाओ के पश्चात् आदर प्रगट करने के अर्थ मे होता है । जैसे ; / गुरू जी, पडित जी, बहन जी, ताऊ जी / इत्यादि । परन्तु इसका प्रयोग स्वतत्र रूप मे भी होता है । यथा.—

जी, हाँ !
जी नही, ऐसा होना असभव है ।
जी, वह अभी नहीं आया ।

१ २. ५. ८. / नवीस /

कर्तृवाचक संज्ञा, 'लिखने वाला' ।

उदाहरण.—

वह नकल **नवीस** वहाँ नहीं है ।
भाई इसी **नवीस** से काम लो ।

. . ५. ६ / **परस्त** /

विशेषण, 'लीन', 'लगा हुआ' ।

उदाहरणः—

आजकल फिरका**परस्त** लोग अधिक हैं ।
कौम में **परस्त** व्यक्ति अपना कर्तव्य भूल जाता है ।

१ २. ५ १०. / **पोश** /

संज्ञा, विशेषण, 'आवरण' तथा 'पोशाक' के अर्थ मे ।

उदाहरण —

इस **पोश** की क्या कीमत है ?
हमारा मेज**पोश** बडा सुन्दर है।
सफेद**पोश** बाहर से कैसे लगते हैं ?
आजकल इस **पोशी** से कोई हित नहीं ।

१. २. ५. ११. / **बंद** /

जब इसका प्रयोग सज्ञाओ के पश्चात् होता है तो इसके योग से सज्ञाएँ बनती है परन्तु इन प्रयोगो मे उसका अर्थतत्व परिलक्षित होता है। जैसे , / बिस्तरबंद / 'बिस्तर बाँधने वाला' / गलेबद / गले को बाँधने वाला इत्यादि । इसका स्वतत्र प्रयोग विशेषण के रूप मे होता है यथा - / बद कमरा /, / बद हवा / इत्यादि ।

१. २ ५. १२ **राम** /

इसका प्रयोग नाम-पदो के पश्चात् निरादर अथवा विनोद के अर्थ मे होता है परन्तु संज्ञा 'राम' का अर्थतत्व इसमे अवश्य निहित है। उदाहरणार्थ / अपने राम /, / पिता राम /, / दून राम / इत्यादि मे 'राम' का अर्थ अवश्य है परन्तु यहाँ निरादर अथवा विनोद प्रधान है । 'व्यग या विनोद' मे इसका स्वतंत्र प्रयोग भी होता है । जैसे , / कहिए **राम** कैसे आए ? मुझे **राम** क्यों कहा ? इसलिए कि आप सब जगह व्याप्त हैं / ।

१. २ ५. १३ / **साज** /

जब इसका प्रयोग सज्ञा के पश्चात् होता है तो इसके योग से कर्तृवाचक विशेषण सज्ञाएँ बनती है परन्तु स्वतत्र रूप मे इसका प्रयोग क्रिया अथवा सज्ञा के रूप मे होता है । इन दोनो कोटियो मे 'बनाना' अर्थतत्व निहित है । जैसे, / जाल-साज, घड़ीसाज / इत्यादि कर्तृवाचक विशेषण अथवा सज्ञाएँ । / उसे अभी मत **साजो** /, / इसकी **साज** अभी ठीक नहीं / इत्यादि ।

१. २ ६. संस्कृत परप्रत्यय

जो स्थिति हिन्दी मे सस्कृत पूर्वप्रत्ययो की है वही स्थिति संस्कृत परप्रत्ययो की है (§ १. १. ४) । ये परप्रत्यय हिन्दी मे इस प्रकार गृहीत हुए है —

(१) वे परप्रत्यय जिन्हे सस्कृत मे प्रत्यय कहा गया है तथा हिन्दी में तत्सम रूप मे गृहीत हुए है । उदाहरणार्थ / -इन, -ईन, -ईय -त्य / इत्यादि, जैसे, / मलिन, कुलीन, अग्रिम, नारदीय, दक्षिणात्य / इत्यादि मे ।

(२) वे संस्कृत तत्सम शब्द जिनका हिन्दी मे स्वतत्र प्रयोग नही होता अपितु परप्रत्यय के रूप मे ही व्यवहृत होते है । हिन्दी मे आते-आते इनकी स्वतत्र सत्ता लुप्त हो गई है । उदाहरणार्थ, / -अपह, -अर्ह, -आवह, -आस्पद, -आढ्य, -ग, -गम, -घ्न, -ज, -द, -शाली, -स्थ, -ज्ञ / इत्यादि । जैसे, / शोकापह, पूजार्ह, हितावह, हास्यास्पद, गुणाढ्य, नग, उरग, विहगम, कृतघ्न, अडज, स्वेदज, जलद, धनद, भाग्यशाली, गृहस्थ, दूरस्थ, शास्त्र, मर्मज्ञ / इत्यादि । सस्कृत भाषा की दृष्टि से ये जटिल रूप है ।

हिन्दी मे सामान्यत तत्सम परप्रत्ययो का व्यवहार सस्कृत तत्सम शब्दो के साथ होता है । कुछ ऐसे भी प्रयोग है जहाँ हिन्दी के तद्भव शब्दों के साथ इनका व्यवहार होता है । जैसे, / अपन|आ| -त्व→अपनत्व / । जहाँ इस प्रकार की परिस्थितियाँ आई है वहाँ हमने इन्हे हिन्दी प्रत्यय-विचार के अन्तर्गत स्वीकार किया है ।

हिन्दी की पारिभाषिक शब्द-योजना के अन्तर्गत संस्कृत तत्सम परप्रत्ययो को प्रचुरता से गृहीत किया जा रहा है परन्तु प्रस्तुत अनुसधान मे इन परप्रत्ययो को नही लिया गया है क्योकि इनका सम्यक् विवेचन सस्कृत ग्रन्थो मे उपलब्ध है ।

१. २ ७ हिन्दी परप्रत्ययों के वर्ग

हिन्दी के उपलब्ध परप्रत्ययो के निम्न वर्ग है .—

(१) वे परप्रत्यय जिनके योग से केवल सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

स०	-पप्र०	→	स०
कपड|आ|	-आइँद		कपडाइँद
पच	-आयत		पचायत
वि०	-पप्र०	→	सं०
खिलाफ	-अत		खिलाफ़त
बहुत	-आयत		बहुतायत

क्रि०	पप्र०	→	वि०
खा	-ऊ		खाऊ
लड	-आकू		लडाकू

क्रि० वि०	पप्र०	→	वि०
बाहर	-ई		बाहरी
ऊपर	-ई		ऊपरी

इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले ये परप्रत्यय है—/ -अट|ई, -अड्‌ड्|ई, -अस्वी, -अकू, -अछू, -अदाज, -आई, -आऊ, -आका, -आकी, -आकू, -आती, -आनी, -आमी, आय|आ, -आलू, -आवर, -आसू, -इत, -इम, इयल, -इया, -इल, -इस्ट, -इ दा, -ई, -ईजा, -ईदा, -ईन, -ईना, -ईय, -ईल|आ, ईँद|आ, -ऊ, -ऊट|आ, -ऊन, -ऊनी, एड, -एतर, -एलू, -ऐत, -ऐनी, -ऐल|आ, -ओड|आ, -आँ, -औठ|आ, -और|आ, -औँह|आ, -अउअल, -अउआ, -कम, -कान|आ, -की, -कू, -खेज़, -खोर, -गीन, -ची, ट्|आ, -डी, -तन|आ, -तम, -ती, -दार, -दाँ, -नाक, -नी, -नुमा, -बाज़, -मती, -मद, -रूक, -ल|आ, -ली, -लौत|आ, -व|आँ, -वती, -वन|आ, -वत, -वाँ, -वी, -शुदा -सार, -सू, -ह / ।

(३) वे परप्रत्यय जिनके योग से केवल क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा:—

स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
कानून	-अन		क़ानूनन
इरादा|आ|	-तन		इरादतन

सर्व०	पप्र०	→	क्रि० वि०
यह (∼य)	-जहाँ		यहां
वह (∼उ)	-धर		उधर

वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
करीब	-अन		करीबन
पूर्ण	-तया		पूर्णतया

क्रि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
चाह	-ए		चाहे
कस	-ए		कसे
मान	-ओ		मानो

क्रि० वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
रोज	-ग्राना		रोजाना
क्यों	-कर		क्योंकर

इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले परप्रत्यय इस प्रकार हैं—/ -अहाँ, -आना, -औ, -चे -तया, -धर, -ब, यों /।

(४) वे परप्रत्यय जिनके योग से सज्ञा तथा विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा :—

सं०	पप्र०	→	स०
घर	-आन|आ		घरान|आ
जुर्म	-आन|आ		जुर्मान|आ
स०	पप्र०	→	वि०
मर्द	-आन|आ		मर्दान|आ
दोस्त	-आन|आ		दोस्तान|आ
क्रि०	पप्र०	→	सं०
लड़	-अत		लडत
भिड	-अत		भिड़ंत
क्रि०	पप्र०	→	वि०
रट	-अत		रटंत
गढ़	-अंत		गढ़ंत

इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले परप्रत्यय इस प्रकार है :—/ -अक्कड़, -अट, -अड, -अल, -अग\|आ, -अंत, -आक\|आ, -आड़\|ई, -आन\|आ, -आर, -आर\|ई, -आल\|आ -इक, -ईन\|आ, -एर\|आ, -एल\|आ, -ऐल, -ओर, -ओल\|आ, -औट\|आ, -औन\|आ -क\|ई, -कार, -गार, -जाद\|आ, -रेज़, -वर, -वइय\|आ, -वान, - स\|आ, -हर\|आ, -हार /।

(५) वे परप्रत्यय जिनके योग से विशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रातिपादिक व्युत्पन्न होते है। यथा.—

वि०	पप्र०	→	वि०
अधिक	-तर		अधिकतर
उच्च	-तर		उच्चतर
क्रि० वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
पेश	-तर		पेश्तर

इस वर्ग के अन्तर्गत आने वाले परप्रत्यय ये है. — / -ए, -कर, -तर / ।

(६) वे परप्रत्यय जिनके योग से सज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

स०	पप्र०	→	स०
पोश	-आक		पोशाक
क्रि०	पप्र०	→	वि०
तैर	-आक		तैराक
स०	पप्र०	→	क्रि॰ वि०
तड	-आक		तडाक

इस वर्ग के अन्तर्गत / -आक, -वार / परप्रत्यय आते है।

(७) वे परप्रत्यय जिनके योग से सज्ञा, तथा सर्वनाम प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस वर्ग के अन्तर्गत / -अस / परप्रत्यय आता है। यथा —

स०	पप्र०	→	स०
घाम (~घम)	-अस		घमस
सर्व०	पप्र०	→	सर्व०
आप	-अस		आपस

(८) वे परप्रत्यय जिनके योग से सज्ञा तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस वर्ग के अन्तर्गत / -अन / परप्रत्यय आता है। यथा :—

वि०	पप्र०	→	स०
झूठ (~ जूठ)	-अन		जूठन
स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
कानून	-अन		कानूनन

(९) वे परप्रत्यय जिनके योग से सज्ञा प्रातिपदिक तथा सकर्मक धातु व्युत्पन्न होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत केवल / -० / परप्रत्यय आता है। यथा —

क्रि०	पप्र०	→	स०
छूट	-०		छूट
क्रि० अक०	पप्र०	→	क्रि० सक०
उखड (~उखाड)	-०		उखाड
उतर (~उतार)	-०		उतार

(१०) वे परप्रत्यय जिनके योग से विशेषण प्रातिपदिक, धातु तथा प्रथम प्रेरणार्थ धातुएँ व्युत्पन्न होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत / -आ / परप्रत्यय आता है। यथा —

स०	पप्र०	→	वि०
गेरू (∼गेरु)	-आ		गेरुआ
स०	पप्र०	→	क्रि०
शर्म (∼शरम)	-आ		शरमा
अक० क्रि०	पप्र०	→	प्रथम प्रे०
उग	-आ		उगा
सक० क्रि०	पप्र०	→	प्रथम प्रे०
लिख	-आ		लिखा

(११) वे परप्रत्यय जिनके योग से विशेषण प्रातिपदिक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक धातुएँ व्युत्पन्न होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत/-वा/परप्रत्यय आता है। यथा :—

सं०	पप्र०	→	वि०
पीछ|आ (∼पछ)	-वा		पछवा
क्रि०	पप्र०	→	द्वितीय प्रे०
चल	-वा		चलवा

१. २. ८. हिन्दी परप्रत्ययों का यौगिक विधान

जैसा कि नाम से स्पष्ट है, परप्रत्ययो का व्यवहार सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण प्रातिपदिक तथा धातुओ के पश्चात् होता है। इन परप्रत्ययो के योग से दूसरे प्रकार के प्रातिपदिक तथा धातु-रूप व्युत्पन्न होते है। नीचे हिन्दी के समस्त यौगिक विधान को उदाहरणो सहित प्रस्तुत किया जाता है। हिन्दी मे २३ प्रकार के यौगिक विधान उपलब्ध है।

(१)	स०	पप्र०	→	सं०
	बुद्ध	-इज्म		बुद्धिज्म
	सनातन	-इज्म		सनातनिज्म
	नाक (∼ नक)	-एल		नकेल
	फूल (∼फुल)	-एल		फुलेल

(२)	सर्व०	पप्र०	→	स०
	आप (~अपन)	-त्व		अपनत्व
	आप (~अपना)	-पन		अपनापन
(३)	वि०	पप्र०••	→	स०
	कच्चा|आ| (~कच)	-आइँद		कचाइँद
	चिकन |आ|	-आहट		चिकनाहट
	शैव	-इज्म		शैविज्म
	बंद	-इश		बंदिश
(४)	धातु	पप्र०	→	स
	बैठ	-अक		बैठक
	लिख (~लेख)	-अक		लेखक
	मिल	-अन		मिलन
	सड	-आव		सडाव
(५)	क्रि० वि०	पप्र०	→	स०
	पैदा	-वार		पैदावार
	जरूर	-अत		जरूरत
	पैक	-इंग		पैकिंग
(६)	सर्व	पप्र०	→	सर्व०
	आप	-अस		आपस
(७)	स०	पप्र०	→	वि०
	पडित	-आऊ		पडिताऊ
	जिस्म	-आनी		जिस्मानी
	दस्त	-आवर		दस्तावर
	नमक	-ईन		नमकीन
(८)	सर्व	पप्र०	→	वि०
	आपस	-ई		आपसी
	यह (~इ)	-तन|आ		इतन|आ
	जो (~जै)	-स|आ		जैस|आ
(९)	वि०	पप्र०	→	वि०
	एक	-आकी		एकाकी
	निज	-ई		निजी

	कम	-ईन		कमीन
	कोमल	-तर		कोमलतर
(१०)	धातु०	पप्र०	→	वि०
	उपज	-आऊ		उपजाऊ
	ढल	-वाँ		ढलवाँ
	जाग	-रूक		जागरूक
	दब	-ऐल		दबैल
(११)	क्रि० वि०	प्रप्र०	→	वि०
	एकत्र	-इत		एकत्रित
	गिर्द	-आवर		गिर्दावर
	बाहर	-ई		बाहरी
(१२)	स०	पप्र०	→	नामधातु
	दुख	-आ		दुखा
	घिन	-आ		घिना
(१३)	सर्व	पप्र०	→	नामधातु
	आप (∼अपन)	-आ		अपना
(१४)	वि०	पप्र०	→	नामधातु
	गर्म (∼गरम)	-आ०		गरमा
	तुतल|आ|	-आ		तुतला
	कडु|आ|	-आ		कडुआ
	नर्म (∼नरम)	-आ		नरमा
(१५)	क्रि० वि०	पप्र०	→	नामधातु
	धमधम	-आ		धमधमा
	धड़धड़	-आ		धड़धड़ा
	जगमग	-आ		जगमगा
	सनसन	-आ		सनसना
(१६)	अक० धातु	पप्र०	→	सक० धातु
	उखड़ (∼उखाड़)	-०		उखाड़
	कट (∼काट)	-०		काट
	पिट (∼पीट)	-०		पीट
	घुल (∼घोल)	-०		घोल

(१७)	अक० सक० धातु	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धातु
	उग	-आ		उगा
	उठ	-आ		उठा
	गढ	-आ		गढा
	लिख	-आ		लिखा
(१८)	अक० सक० धातु	पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धातु
	गल	-वा		गलवा
	बदल	-वा		बदलवा
	गिन	-वा		गिनवा
	लिख	-वा		लिखवा
(१९)	स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	कुदरत	-अन		कुदरतन
	आदत	-अन		आदतन
	आग|आ|	-ए		आगे
	तरतीब	-वार		तरतीबवार
(२०)	सर्व०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	यह (∼य)	-अहाँ		यहाँ
	जो (∼ज)	-अहाँ		जहाँ
	कौन (∼कि)	-धर		किधर
	जो (∼ज)	-यों		ज्यों
	यह (∼अ)	-ब		अब
(२१)	वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	करीब	-अन		करीबन
	वैस|आ|	-ए		वैसे
	खास	-कर		खासकर
	पूर्ण	-तया		पूर्णतया
(२२)	अक० सक० धातु	पप्र०	→	क्रि० वि०
	बीत	-ए		बीते
	चाह	-ए		चाहे
	मर	-ए		मरे

	ले (~लि)	-ए		लिए
	मान	-ओ		मानो
(२३)	क्रि० वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	रोज ,,	-आना		रोजाना
	क्यों	-कर		क्योंकर
	अगर	-चे		अगरचे
	पेश	-तर		पेश्तर

हिन्दी मे मूल रूप के पश्चात् अधिक से अधिक तीन परप्रत्ययो का योग देखा जाता है। दो परप्रत्ययो के योग के उदाहरण पर्याप्त मात्रा मे मिलते है, तीन परप्रत्ययो के सयोगो के उदाहरण बहुत ही कम है। यौगिक प्रक्रिया मे इन परप्रत्ययो का समीपी सम्बन्ध इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है —
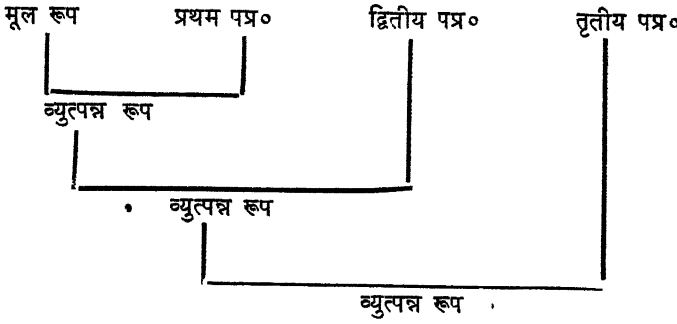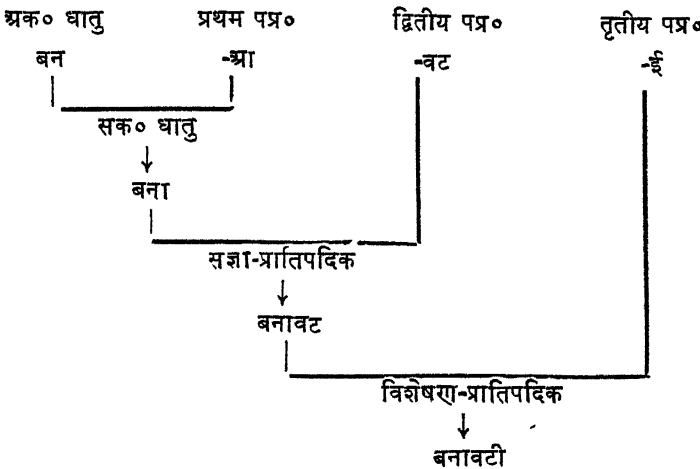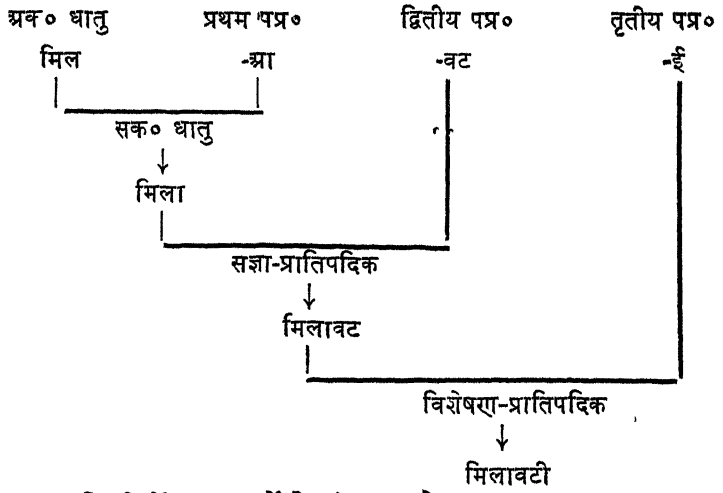
१. २. ९. हिन्दी में परप्रत्ययों के संयुक्त प्रयोग

इस प्रकार हिन्दी मे परप्रत्ययो के दुहरे तथा तिहरे संयोग मिलते है। जिन परप्रत्ययो के दुहरे सयोग मिलते है वे इस प्रकार है—

{ -अक, -अन }

अनु०वा०स०	पप्र०	→	अक०धातु	पप्र०	→	स०
धड	-अक		धडक	-अन		धडकन
फड	-अक		फडक	-अन		फड़कन

अनु०वा०स०	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	स०
फूँ	-क		फूँक (∼फुक)	-अन		फुकन

{ -अक, -ईल\|आ }

अनु०वा०स०	पप्र०	→	अक०धातु	पप्र०	→	वि०
भड	-अक		भडक	-ईल|आ		भडकील|आ
चट	-अक		चटक	-ईल|आ		चटकील|आ
चम	-अक		चमक	-ईल|आ		चमकील|आ

{ -अक, -बाज }

अक०धातु	पप्र०	→	स०	पप्र०	→	वि०
बैठ	-अक		बैठक	-बाज़		बैठकबाज़

{ -अक, -न\|ई }

अनु०वा०स०	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	सं०
फूँ	-क		फूँक	-न|ई		फूँकन|ई

{ -अक्कड, -ई }

स०	पप्र०	→	स०	पप्र०	→	वि०
साधू (∼सधु)	-क्कड		सधुक्कड	-ई		सधुक्कडी

{ -अट, -ई }

स०	पप्र०	→	सं०	पप्र०	→	वि०
फोक	-अट		फोकट	-ई		फोकटी

{ -अड, आ|ई }

स०	पप्र०	→	अक०धातु	पप्र०	→	स०
अग (∼अँग)	-अड़		अँगड	-आ|ई		अँगडा|ई

{ -अन, -सार }

अक०धातु	पप्र०	→	सं०	पप्र०	→	वि०
मिल	-अन		मिलन	-सार		मिलनसार

{ -अन, -हार }

धातु०	पप्र०	→	स०	पप्र०	→	वि०
मर	-अन		मरन	-हार		मरनहार
चल	-अन		चलन	-हार		चलनहार
ले	-न		लेन	-हार		लेनहार
दे	-न		देन	-हार		देनहार

{ -अस, -ई }

सर्व०	पप्र०	→	सर्व०	पप्र०	→	वि०
आप	-अस		आपस	-ई		आपसी

{ -अस्वी, -नी }

स०	पप्र०	→	वि०	पप्र०	→	वि०
तप	-अस्वी		तपस्वी (∼तपस्वि)	-नी		तपस्विनी
तेज	-अस्वी		तेजस्वी (∼तेजस्वि)	-नी		तेजस्विनी

{ -आ, -ट|आ }

अनु०वा०सं०	पप्र०	→	धातु	पप्र०	→	स०भा०वा०
सन (∼सन्न)	-आ		सन्ना	-ट|आ		सन्नाट|आ
अर (∼अर्र)	-आ		अर्रा	-ट|आ		अर्राट|आ
घर (∼घर्र)	-आ		घर्रा	-ट|आ		घर्राट|आ
[illegible] (∼खर्र)	-आ		खर्रा	-ट|आ		खर्राट|आ

{ -आ, -आवट }

अक०धातु०	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	स०
सज	-आ		सजा	-वट		सजावट
बन	-आ		बना	-वट		बनावट
दिख	-आ		दिखा	-वट		दिखावट

{ -आ, -वन|आ }

स०	पप्र०	→	धातु	पप्र०	→	वि०
लोभ (~लुभ)	-आ		लुभा	-वन|आ		लुभावन|आ
अक०धातु०	**पप्र०**	**→**	**सक०धातु**	**पप्र०**	**→**	**वि०**
डर	-आ		डरा	-वन|आ		डरावन|आ

{ -आ, -व|आ }

अक०धातु	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	सं०
बढ	-आ		बढा	-व|आ		बढाव|आ
फैल	-आ		फैला	-व|आ		फैलाव|आ
बोल (~बुल)	-आ		बुला	-व|आ		बुलाव|आ
चढ	-आ		चढा	-व|आ		चढाव|आ
सक०धातु	**पप्र०**	**→**	**सक०धातु**	**पप्र०**	**→**	**स०**
भूल (~भुल)	-आ		भुला	-व|आ		भुलाव|आ

{-आ, -वन|ई}

अक०धातु	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	स०
पहर	-आ		पहरा	वन|ई		पहरावन|ई
पधर	-आ		पधरा	वन|ई		पधरावन|ई

{-आ, -हट}

अक०धातु	पप्र०	→	सक०धातु	पप्र०	→	स०
उकस	-आ		उकसा	-हट		उकसाहट
अनु०वा०स०	**पप्र०**	**←**	**अक०धातु**	**पप्र०**	**→**	**स०**
गुर (~गुर्र)	-आ		गुर्रा	-हट		गुर्राहट
वि०	**पप्र०**	**→**	**सक०धातु**	**पप्र०**	**→**	**स०**
गर्म (~गरम)	-आ		गरमा	-हट		गरमाहट
नर्म (~नरम)	-आ		नरमा	-हट		नरमाहट
क्रि०वि०	**पप्र०**	**→**	**धातु**	**पप्र०**	**→**	**स०**
गडगड	-आ		गडगडा	-हट		गडगडाहट

झनझन   -आ   झनझना   -हट   झनझनाहट

सनसन   -आ   सनसना   -हट   सनसनाहट

कडकड   -आ   कडकड़ा   -हट   कडकड़ाहट

थरथर   -आ   थरथरा   -हट   थरथराहट

{-आऊ, -पन}

स०   पप्र० →   वि०   पप्र० →   स०

पडित   -आऊ   पडिताऊ   -पन   पडिताऊपन

{-आकी, -पन}

वि०   पप्र० →   वि०   पप्र० →   स०

एक   -आकी   एकाकी   -पन   एकाकीपन

{-आन|आ, -ग|ई}

स०   पप्र० →   वि०   पप्र० →   सं०

मर्द   -आन|आ   मर्दान |आ| -ग|ई   मर्दानग|ई

{-आयत, -ई}

स०   पप्र० →   सं०   पप्र० →   वि०

ठाकुर (∼ठकुर)   -आयत   ठकुरायत   -ई   ठकुरायती

पच   -आयत   पंचायत   -ई   पचायती

लोक   -आयत   लोकायत   -ई   लोकायती

{-इश, -ई}

धातु   पप्र० →   स०   पप्र० →   वि०

फरमा   -इश   फरमाइश   -ई   फरमाइशी

क्रि०वि०   पप्र०   स०   पप्र० →   वि०

पैदा   -इश   पैदाइश   -ई   पैदाइशी

{ इ द|आ, -ग|ई}

स०   पप्र० →   वि०   पप्र० →   स०

शर्म   इ द|आ   शर्मिद|आ| ग|ई   शर्मिदग|ई

{-ईद|आ, -ग|ई}

स०   पप्र० →   वि०   पप्र० →   स०

रज   -ईद|आ   रजीद|आ| -ग|ई   रजीदग|ई

-ईद|आ   पेचीद|आ| -ग|ई   पेचीदग|ई

{-ई, -पन}

वि०	पप्र० →	वि०	पप्र० →	स०
कम	-ईन	कमीन	-पन	कमीनपन

{-ऊन, -ई}

स०	पप्र० →	वि०	पप्र० →	वि०
बात	-ऊन	बातून	-ई	बातूनी

{-एर, आन|आ}

स०	पप्र० →	वि०	पप्र० →	वि०
दिल	-एर	दिलेर	-आन|आ	दिलेरान|आ

{-एर|आ, -इन}

स०	पप्र० →	स०	पप्र० →	स०
मछ	-एर|आ	मछेर|आ|	-इन	मछेरिन
साँप (∼सप)	-एर|आ	सपेर|आ।	-इन	सपेरिन
चित	-एर|आ	चितेर|आ|	-इन	चितेरिन

{-ओट, -इया}

स०	पप्र० →	स०	पप्र० →	वि०
लाँग (∼लँग)	-ओट	लँगोट	-इया	लँगोटिया

{-दान, -ई}

स०	पप्र० →	स०	पप्र० →	वि०
खान	-दान	खान्दान	-ई	खान्दानी

{-न|आ, -ईय}

धातु	पप्र० →	स०	पप्र० →	वि०
सराह	न|आ	सराहन|आ	-ईय	सराहनीय

{-न|आ, -हार}

धातु	पप्र० →	स०	पप्र० →	वि०
हो	-न|आ	होन|आ|	-हार	होनहार
देख	-न|आ	देखन|आ|	-हार	देखनहार
जान	-न|आ	जानन|आ|	-हार	जाननहार
पढ	-न|आ	पढन|आ|	-हार	पढनहार

{-ज, -आर}

अनु०वा०स०	पप्र० →	स०	पप्र० →	सं०
गूँ	-ज	गूँज (∼गुंज)	-आर	गुंजार

{-यार|आ, -इन}

स०	पप्र० →	म०	पप्र० →	म०
घास (~घस)-यार|आ		घस्यार|आ|	-इन	घस्यारिन
भाट (~भट)-यार|आ		''भट्यार|आ|	-इन	भट्यारिन

{-रेज, इन}

धातु	पप्र० →	स०	पप्र० →	स०
रँग	-रेज्	रँगरेज	-इन	रँगरेजिन

{-वी, -नी}

म०	पप्र० →	वि०	पप्र० →	वि०
मेधा	-वी	मेधावी (~मेधावि)	-नी	मेधाविनी
माया	-वी	मायावी (~मायावि)	-नी	मायाविनी

{-हर|आ, -आवट}

वि०	पप्र० →	वि०	पप्र० →	स०
दो (~दु)	-हर|आ	दुहर|आ|	-आवट	दुहरावट
तीन (~ति)	-हर|आ	तिहर|आ|	-आवट	तिहरावट

हिन्दी मे परप्रत्ययो का तिहारा सयोग इस प्रकार मिलता है —

{-आ, -वट, -ई}

अक०धातु	पप्र० →	सक०धातु	पप्र० →	स०	पप्र० →	वि०
बन	-आ	बना	-वट	बनावट	-ई	बनावटी
मिल	-आ	मिला	-वट	मिलावट	-ई	मिलावटी
दिख	-आ	दिखा	वट	दिखावट	-ई	दिखावट

१. २ १० हिन्दी परप्रत्ययों का विवरण

१. २. १०. १. संज्ञा-प्रातिपदिक

१. २. १० १. १. संज्ञा-प्रातिपदिक तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २. १० १ १. १ { -अक } /-अक~-क /

इस परप्रत्यय के योग से भाववाचक, कर्तृवाचक, सवध वाचक तथा लघुवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा :—

(१)	अनु०वा०म०	पप्र० →	भाव वा० म०
	ठन	-अक	ठनक
	ठम	-अक	ठमक

	झन	-अक		झनक
	कड	-अक		कडक
(२)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
	पाठ	-अक		पाठक
	कार	-अक		कारक
	उपचार	-अक		उपचारक
(३)	स०	पप्र०	→	सबध वा०सं०
	दस्त	-अक		दस्तक 'हाथ से उत्पन्न ताली'
(४)	स०	पप्र०	→	लघु० वा० स०
	ढोल	-अक		ढोलक

/ तोप / प्रातिपदिक मे जब इस प्रत्यय का योग होता है तो / ओ / स्वर / उ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा :—

तोप (~तुप)	-अक	तुपक

/ -क / सपरिवर्तक / -अक / प्रधान का ही एक रूप है जो केवल विवृताक्षरों के पश्चात् लगता है। यथा —

अनु०वा०स०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
फूँ	-क		फूँक
कू	-क		कूक
छीँ	-क		छीँक
हू	-क		हूक
अनु०वा०स	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
बो	-क		बोक 'बो-बो की आवाज़ करने वाला बकरा'

१. २. १०. १ १. २. { **-अक्कड़** } / **-अक्कड़~-क्कड़** /

इस परप्रत्यय के योग से कर्तृवाचक तथा हीनता सूचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इसके योग से आधार-प्रातिपदिक का मध्यवर्ती / आ / स्वर / अ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	कथ|आ|	-अक्कड		कथक्कड
	बात (∼-बत)	-अक्कड		बतक्कड

/ -अक्कड / सपरिवर्तक / -क्कड / का ही दूसरा रूप है जिसका व्यवहार / ऊ / अन्त वाले प्रातिपदिक के पश्चात् होता है । यथा·—

(२)	स०	पप्र०	→	हीनता वा० स०
	साधू (∼सधु)	-उक्कड		सधुक्कड

१. २. १० १. १ ३ { -अट }

इस परप्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा :—

सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
फोक	-अट		फोकट

१. २. १०. १. १. ४ {-अड़} /-अड़ ∼-अर ∞-अगड़ /

इसके योग से आधिक्य वाचक, कर्तृवाचक, स्वार्थिक तथा भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे आधार भूत संज्ञा प्रातिपदिक मे / आ → अग/, / आँ → अ /, / ऊ → उक / , / ऑ → अट / तथा / ऊ → उल / परिवर्तन होते हैं। यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	आधिक्य वा० स०
	पाग (∼पग्ग)	-अड		पग्गड
	आँध|ई (∼अध)	-अड		अधड़
(२)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	भग	-अड		भगड
	भूख (∼भुक्ख)	-अड		भुक्खड
(३)	स०	पप्र०	→	स्वार्थिक स०
	कीच	-अड		कीचड
(४)	अनु० वा० स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	हूल (∼हुल्ल)	-अड		हुल्लड

उक्त उदाहरणो से स्पष्ट है कि यदि एकाक्षरिक सज्ञा प्रातिपदिको मे / अ / तथा / ऊ / स्वर हो तो वे / अ / तथा / उ / मे परिवर्तित हो जाते हैं तथा परवर्ती व्यजन के [illegible] उसके सहजातीय या समागीय व्यजन का आदेश होता है। जैसे, / भुक्ख / मे / क / सहजातीय तथा / पग्ग / मे / ग / समागीय व्यजन है।

/ -अड / के दूसरे सपरिवर्तक / -अगड / तथा / -अर / है । / -अगड / का योग रूप-प्रतिबधित है क्योकि इसका योग केवल / बात / सज्ञा प्रातिपदिक के पश्चात् ही होता है । / -अर/का योग ध्वनि-प्रक्रियात्मक रूप से प्रतिबधित है । क्योकि इसका योग तब होता है जब आधारभूत सज्ञा प्रातिपदिक का अन्तिम स्वनिम मूर्धन्य होता है । निम्न उदाहरणो द्वारा ये इस प्रकार है —

स०	पप्र०	→	आधिक्य वा० स०
बात (∾बत)	-अगड		बतगड
गाँठ (∾गट्ठ)	-अर		गट्ठर

१. २ १० १. १. ५. {**-अत**}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
शौक	-अत		शौकत
हज्जाम (∾हजाम)	-अत		हजामत

इस योग मे / हज्जाम / का पूर्ववर्ती / ज / लुप्त हो जाता है ।

१. २. १०. १ १. ६. {**-अम**}

इस परप्रत्यय का प्रयोग का पुरुषवाचक सज्ञा प्रातिपदिको के पश्चात् होता है तथा इसके योग से स्त्रीवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

पुरुष वा०स०	पप्र०	→	स्त्री वा० स०
खान	-अम		खानम
बेग	-अम		बेगम

१. २ १०. १. १. ७. {**-अल**}

इसके योग से आभूषण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आव → आय / विकार होता है । यथा '—

स०	पप्र०	→	आभूषण वा० स०
पाँव (∾पाय)	-अल		पायल

१. २. १० १. १. ८ {**-अल्ल\|आ**}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ऊँ → उ / विकार होता है । यथा :—

सं०	पप्र०	→	संबध वा स०
'पूँछ (∾पुछ)	-अल्ल|आ		पुछल्ल|आ

१. २ १०. १. १. ९. {-अस}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / तथा / श → ० / विकार होते है । यथा —

स०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
घाम	(~घम)	-अस		घमस
ऊश्म	(~उम)	-अस		उमस

१ २. १०. १ १ १०. {-अंग|आ}

इसके योग से आधिक्य वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / ध्वनिविकार होते है । यथा —

स०		पप्र०	→	आधिक्य वा० स०
बात	(~बत)	-अग|आ		बतंग|आ
आड	(~अड)	-अग|आ		अडग|आ

१ २. १० १. १. ११. {-आ|ई}

इसके योग से भाववाचक तथा स्त्रीवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते तथा इस योग मे / आ→अ /, / ई→इ /, / ओ→उ / तथा / →ँ / विकार होते है । यथा :—

	स०		पप्र०	→	भाव वा० स०
(१)	पडित		-आ|ई		पडिता|ई
	ठाकुर	(~ठकुर)	-आ|ई		ठकुरा|ई
	काम	(~कम)	-आ|ई		कमा|ई
	पाहुन	(~पहुन)	-आ|ई		पहुना|ई
	पीछ|आ	(~पिछ)	-आ|ई		पिछा|ई
	लोन	(~लुन)	-आ|ई		लुना|ई
	अक	(~अँक)	-आ|ई		अँका|ई
(२)	स०		पप्र०	→	स्त्री वा० स०
	लोग	(~लुग)	-आ|ई		लुगा|ई

१ २ १० १ १ १२ {-आइन}

इसका व्यवहार उपनाम पुरुषवाचक सज्ञा प्रातिपदिको के पश्चात् होता है तथा इस प्रत्यय के योग से उपनाम स्त्रीवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । इस योग मे / आ→अ / तथा / ऑ→अ / विकार होते है । यथा.—

उपनाम पुरुष वा० सं०	पप्र०	→	उपनाम स्त्री वा० स०
पडित	-आइन		पडिताइन
शुक्ल	-आइन		शुक्लाइन
मिश्र	-आइन		मिश्राइन
ठाकुर (~ठकुर)	-आइन		ठकुराइन
लाल|आ|(~लल)	-आइन		ललाइन
दुब|ए|	-आइन		दुबाइन
पाँड|ए| (~पंड)	-आइन		पडाइन

१. २. १०. १. १. १३ {-आइँद}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / तथा / ऊ→उ / ध्वनि-विकार होते है। यथा —

सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
घिन	-आइँद		घिनाइँद
कपड|आ|	-आइँद		कपडाइँद
धूँ|आ| (~धुँ)	-आइँद		धुँआइँद

१. २. १०. १ १. १४ {-आक}

इसके योग से वस्त्र वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

स०	पप्र०	→	वस्त्र वा० स०
पोश	-आक		पोशाक

१. २ १०. १. १. १५. {-आक|आ}

इस परप्रत्यय का प्रयोग अनुकरण वाचक सज्ञा प्रातिपदिको के पश्चात् होता है तथा इसके योग से भाववाचक तथा वस्तु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा.—

(१)

अनु० वा० स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
सड	-आक|आ		सडाक|आ
धम	-आक|आ		धमाक|आ
भड	-आक|आ		भडाक|आ

(२)

अनु० वा० सं०	पप्र०	→	वस्तु वा० स०
पट	-आक|आ		पटाक|आ

१ २. १० १ १ १६ {-आड़}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / आ→अ / , / यो→जु / ध्वनि-विकार होते है। यथा —

स०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
लात	(~लत)	-आड		लताड
योग	(~जुग)	-आड		जुगाड़

१. २ १० १ १. १७. {-आड़\|ई}

इसके योग से स्वार्थिक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / और / ई→इ / विकार होते हैं। यथाः—

सं०		पप्र०	→	स्वार्थिक सं०
आग|आ|	(~अग)	-आड|ई		अगाड|ई
पीछ|आ|	(~पिछ)	-आड|ई		पिछाड|ई

१ २. १० १. १. १८ {-आत}

इसके योग से समुदाय वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

स०	पप्र०	→	समुदाय वा० स०
जवाहर	-आत		जवाहरात
काग़ज़	-आत		काग़ज़ात
मकान	-आत		मकानात
ख्याल	-आत		ख्यालात

१ २ १०. १. १ १९. {-आन}

इसके योग से समुदाय वाचक तथा भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा.—

(१)

स०	पप्र०	→	समुदाय वा० सं०
साहब	-आन		साहबान
मालिक	-आन		मालिकान
काश्तकार	-आन		काश्तकारान

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
दौर	-आन		दौरान

१. २ १०. १ १. २०. {आन|आ}

इस परप्रत्यय के योग से भाववाचक, स्थान वाचक तथा वस्तुवाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	दोस्त	-आन|आ		दोस्तान|आ
	घर	-आन|आ		घरान|आ
	जुर्म	-आन|आ		जुर्मान|आ
	यार	-आन|आ		यारान|आ
	नजर	-आन|आ		नजरान|आ
	मेहनत (∼मेहन्त)	-आन|आ		मेह्न्तान|आ
(२)	स०	पप्र०	→	स्थान वा० सं०
	राजपूत	-आन|आ		राजपूतान|आ
(३)	स०	पप्र०	→	वस्तु वा० सं०
	दस्त	-आन|आ		दस्तान|आ

१. २. १०. १. १. २१. {-आन|ई}

इसके योग से स्त्रीवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / ए→इ / विकार होता है। यथा —

पुरुष वा० स	पप्र०	→	स्त्री वा० स०
महतर	-आन|ई		महतरान|ई
नौकर	-आन|ई		नौकरान|ई
सेठ	-आन|ई		सेठान|ई
चौधर|ई|	-आन|ई		चौधरान|ई
खत्र|ई|	-आन|ई		खत्रान|ई
जेठ (∼जिठ)	-आन|ई		जिठान|ई

१. २. १० १. १. २२. {-आप|आ}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा.—

सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बहन	-आप|आ		बहनाप|आ
राँड़ (∼रँड)	-आप|आ		रँडाप|आ

१. २. १०. १. १. २३ {-आम}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है ' यथा.—

अनु० वा० स०	प्प्र०	→	भाव वा० स०
धड	-आम		धड़ाम

१. २ १० १ १ २४ {-आयत}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	भाव० वा० सं०
पच	-आयत		पचायत
लोक	-आयत		लोकायत
ठाकुर (~ठकुर)	-आयत		ठकुरायत

१. २. १० १. १ २५. {-आर}

इसके योग से व्यवसाय वाचक तथा सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ /, / इत्र → अत्त /, ओ → उ /, / कुंभ → कुम्ह / ऊँ → उ / विकार होते है। यथा.—

(१) स०		पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
चाम	(~चम)	-आर		चमार
इत्र	(~ अत्त)	-आर		अत्तार
लोह|आ|	(~लुह)	-आर		लुहार
सोन|आ|	(~सुन)	-आर		सुनार
कुंभ	(~कुम्ह)	-आर		कुम्हार

(२) सं०		पप्र०	→	सबध वा० स०
गूँज	(~गुंज)	-आर		गुंजार

१. २. १० १. १. २६. {-आर|आ}

इसके योग के कर्तृवाचक तथा सबध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / भाप → बफ / तथा / आग → अग / विकार होते है। यथा —

(१) स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
	-आर|आ		बजार|आ
	-आर|आ		हत्यार|आ

(२) स०　　　　　　पप्र०　→　सबध वा० सं०

भाप (∼वफ)　-आर|आ　बफार|आ

आग (∼अग)　-आर|आ　अगार|आ

१. २ १० १. १ २७. {-आर|ई}

इसके योग से व्यवसाय वाचक तथा लघु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊ → व / तथा / ई → इ / विकार होते है। यथा —

(१)　स०　　पप्र०　→　व्यवसाय वा० स०

जू|आ| (∼ज्व) -आर|ई　ज्वार|ई

भीख (∼भिख) -आर|ई　भिखार|ई

(२)　स०　　पप्र०　→　लघु वा० स०

अट|आ|　-आर|ई　अटार|ई

१. २. १० १ १. २८. {-आल} / -आल ∞ -इयाल ∞ -इहाल /

इसके योग से स्थान वाचक, कर्म वाचक तथा वृहत्कायिकता वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ /, /एल → य/ विकार होते है। / -इयाल / तथा / -इहाल / संपरिवर्तको का प्रयोग रूप-प्रतिबधित है। यथा:—

(१)　सं०　　पप्र०　→　स्थान वा० स०

ससुर　-आल　ससुराल

नान|ई|(∼नन)-इहाल　ननिहाल

(२)　स०　　पप्र०　　वृहतकायिकता वा० स०

घड|ई|　-इयाल　घडियाल

(३)　स०　　पप्र०　　कर्म वा० स०

खेल (∼ख्य)-आल　ख्याल

१ २. १०. १. १ २९ {-आल|आ}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

स०　　पप्र०　→　करण वा० स०

पान|ई| (∼पन) -आल|आ　पनाल|आ

१ २. १०. १. १ ३०. {-आवट}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

स०　　पप्र०　→　भाव वा० स०

आम (∼अम) -आवट　अमावट 'आम के रस की सूखी तह'

माह (∼मह) -आवट　महावट 'माह की वर्षा'

१. २ १०. १ १. ३१ **{-आवत}**

इसके योग से कारण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	कारण वा० स०
कहन|आ|	-आवत		कहनावत

सूचना (१) / कहनावत / और / कहावत / मे अन्तर है। / कहनावत / मे अर्थ है किसी दूसरे व्यक्ति की कही हुई बात। / कहावत / का अर्थ है कथा, कहानी या दृष्टान्त।

१ २ १०. १ १. ३२. **{-आवेज}**

इसके योग से वस्तुवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	वस्तु वा० स०
दस्त	-आवेज		दस्तावेज

१ २. १०. १ १. ३३. **{-आस}**

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / ई → इ / विकार होता है। यथा —

अनु०वा०स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
भड	-आस		भडास
सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
नींद (~निंद)	-आस		निंदास

१ २ १०. १ १. ३४ **{-आस\|आ}**

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊँ → उ / विकार होता है। यथाः—

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
मुँह	-आस|आ		मुँहास|आ
मूँड (~मुड)	-आस|आ		मुडास|आ

सूचना (२) / मुडासा / का दूसरा वैकल्पिक रूप /मुडीसा/ भी है। / मुडासा / का अर्थ है वह वस्त्र जो सिर पर किसी बोझ की वस्तु को रखने के लिए वर्तुलाकार रूप मे बनाकर रखा जाता है।

१. २ १० १. १. ३५. **{-आहत}**

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / अ → अ̃ / विकार होता है। यथाः—

सं०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
भल|आ|मानस(∼भलमनस)-आहत			भलमनसाहत

१ २. १० १ १ ३६ {-इक|आ}

इसके योग से स्थान वाचक सज्ञा प्रानिर्पदिक व्युत्पन्न होता है । यथा —

सं०	पप्र०	→	स्थान वा० सं०
मा	-इक|आ		माइक|आ

सूचना (३) / माइका / का दूसरा वैकल्पिक रूप / मैका / भी है।

१. २. १०. १ १ ३७. {-इज्म}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । तथा इस योग मे / ऊ → उ / विकार होता है । यथा.—

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बुद्ध	-इज्म		बुद्धिज्म
सनातन	-इज्म		सनातनिज्म
हिन्दू (∼हिन्दु)	-इज्म		हिन्दुइज्म
ब्राह्मण	-इज्म		ब्राह्मणिज्म

१ २. १०. १ १. ३८. {-इन}

इसके योग से मनुष्य तथा मनुष्येतर स्त्रीवाचक तथा कारण वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

(१)

पुरुष वा०स०	पप्र०	→	स्त्री वा० स०
लुहार	-इन		लुहारिन
सुनार	-इन		सुनारिन
मास्टर	-इन		मास्टरिन
धोब|ई|	-इन		धोबिन
तेल|ई|	-इन		तेलिन
सपेर|आ|	-इन		सपेरिन
मछेर|आ|	-इन		मछेरिन
नात|ई|	-इन		नातिन
समध|ई|	-इन		समधिन
बाघ	-इन		बाघिन
साँप	-इन		साँपिन
नाग	-इन		नागिन

(२) सं०		पप्र०	→	कारण वा० सं०
दुहाग		-इन		दुहागिन
सुहाग		-इन		सुहागिन

इस योग मे / दूल्ह → दुलेह / तथा / भा → बह / विकार होते हैं। यथा —

पुरुष वा० स०		पप्र०	→	स्त्री वा० स०
दूल्ह|आ|	(~दुल्ह)	-इन		दुलहिन
भा|ई|	(~बह)	-इन		बहिन

१. २. १०. १. १. ३९. {इय\|आ}

इसके योग से स्त्रीवाचक, व्यवसाय वाचक, लघु वाचक, वस्त्र वाचक तथा दुलार वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / त → ० /, / ट → ० /, / ड → ० /, / ड → ० /, / आ → अ /, / ओ → उ /, / अ → अँ /, / ए → इ / तथा / ब → ० / विकार होते है। यथा —

(१) पुरुष वा० स०		पप्र०	→	स्त्री वा० स०
कुत्त|आ|	(~कुत)	-इय|आ		कुतिय|आ
पट्ठ|आ|.	(~पठ)	-इय|आ		पठिय|आ
बुड्ढ|आ|	(~बुढ)	-इय|आ		बुढिय|या
बछड|आ|	(~बछ)	-इय|आ		बछिय|आ

(२) स०		पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
कबाड		-इय|आ		कबाडय|आ
रोकड़		-इय|आ		रोकड़िय|आ
डाक		-इय|आ		डाकिय|आ
आढत		-इय|आ		आढतिय|आ
गाडर	(~गडर)	-इय|आ		गडरिय|आ

(३) स०		पप्र०	→	लघु वा० स०
हाँड|ई	(~हँड)	-इय|आ		हँडिय|आ
आम	(~अम)	-इय|आ		अमिय|आ
खाट	(~खट)	-इय|आ		खटिय|आ
चोट|ई|	(~चुट)	-इय|आ		चुटिय|आ
लोट|आ	(~लुट)	-इय|आ		लुटिय|आ
फोड|आ|	(~फुड)	-इय|आ		फुड़िय|आ

डिब्ब|आ| (∼डिब)	-इय|आ		डिबिय|आ
पुल	-इय|आ		पुलिय|आ
डल|आ|	-इय|आ		डलिय|आ
रेत	-इय|आ		रेतिय|आ

(४)	सं०	पप्र०	→	वस्त्र वा० सं०
	जाँघ	-इय|आ		जाँघिय|आ
	अग (∼अँग)	-इय|आ		अँगिय|आ

(५)	सं०	पप्र०	→	दुलार वा० सं०
	बेट|ई| (∼बिट)	-इय|आ		बिटिय|आ

१.२.१०.१.१.४०. {-इयत}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

सं०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
इंसान	-इयत		इंसानियत
अँगरेज़	-इयत		अँगरेज़ियत
कब्ज़	-इयत		कब्ज़ियत
कमाल	-इयत		कमालियत

१.२.१०.१.१.४१. {-इश}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / आ→अ / तथा / न→० / विकार होते है। यथा —

सं०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
रंज	-इश		रंजिश
ताप (∼तप)	-इश		तपिश
परवर	-इश		परवरिश
पैमान|आ (∼ पैमा)	-इश		पैमाइश

१.२.१०.१.१.४२ {-इंग}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सं०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
राशन	-इंग		राशनिंग
साइकिल	-इंग		साइकिलिंग

१. २. १०. १ १. ४३. {-इंद|ग्रा}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

सं०	पप्र०	→	कर्तृवाचक सं०
कार	-इ द|ग्रा		कारिंद|ग्रा
बास	-इ द|ग्रा		बासिंद|ग्रा

१. २. १०. १ १. ४४. {-ईन|ग्रा}

इसके योग से स्वार्थिक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा / ग्रा→ग्र / विकार होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	स्वार्थिक सं०
माह (~मह)	-ईन|ग्रा		महीन|ग्रा

१. २. १० १. १. ४५. {-उ|ग्रा}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ग्रा→ग्र / तथा / ग्रॉ→ग्र / विकार होते है। यथा·—

	स०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० स०
(१)				
	मृछ	-उ|ग्रा		मछु|ग्रा
	फाग (~फग)	-उ|ग्रा		फगु|ग्रा
	ग्राग|ग्रा| (~ग्रग)	-उ|ग्रा		ग्रगु|ग्रा
	राँड (~रड)	-उ|ग्रा		रडु|ग्रा
	भॉड (~भड)	-उ|ग्रा		भडु|ग्रा
(२)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
	टहल	-उ|ग्रा		टहलु|ग्रा

१. १. १०. १. १. ४६ {-उट|ग्रा}

इसके योग से ग्राभूषण वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ग्रा→ग्र / विकार होता है। यथा —

सं०	पप्र०	→	ग्राभूषण वा० सं०
बाँह (~बँह)	-उट|ग्रा		बँहुट|ग्रा

१ २. १०. १. १. ४७. {-उल}

इस परप्रत्यय के योग से सम्बन्ध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा :—

स०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० स०
मात|आ|	-उल		मातुल
बाब|ञ|	-उल		बाबुल

१. २. १०. १. १. ४८. {-एर}

इस परप्रत्यय के योग से संबंध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। तथा / ऊड़→उड / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
मूँड (~मुँड़)	-एर		मुँडेर

१. २. १०. १. १ ४९. {-एर\|आ}

इसके योग से व्यवसाय वाचक, कर्तृ वाचक तथा अन्य अर्थक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आँ→अ / , / आ→अ / , / त्र→त / /ड→०/ विकार होते है। यथा —

(१)	अनु०स०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
	ठठ	-एर|आ		ठठेर|आ
	स०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
	मछ	-एर|आ		मछेर|आ
	साँप (~सप)	-एर|आ		सपेर|आ
	काँस|आ|(~कस)	-एर|आ		कसेर|आ
(२)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	काम (~कम)	-एर|आ		कमेर|आ
	चित्र (~चित)	-एर|आ		चितेर|आ
(३)	स०	पप्र०	→	अन्य अर्थ वा० स०
	बछड|आ|(~बछ)	-एर|आ		बछेर|आ

१ १. १०. १. १. ५०. {-एल}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग में / आ→अ / और / ऊ→उ / विकार होते हैं। यथा:—

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
नाक (~नक)	-एल		नकेल
फूल (~फुल)	-एल		फुलेल

१. २. १०. १. १. ५१. {-एल|आ}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा —

सं०		पप्र०	←	करण वा० स०
पाट	(~पट)	-एल|आ		पटेल|आ
हाथ	(~हथ)	-एल|आ		हथेल|आ

१. २. १० १. १. ५२. {-एल|ई}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / साथ→सह / विकार होता है। यथा —

सं०		पप्र०	→	सबध वा० स०
साथ	(~सह)	-एल|ई		सहेल|ई

१. २. १०. १. १. ५३. {-ऐल}

इस परप्रत्यय के योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ट→० / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	सबध वा० सं०
खपर|आ|	-ऐल		खपरैल
पट्ट्|आ|	-ऐल		पटैल 'गाँव का मुख्य व्यक्ति'

१. २. १०. १. १. ५४. {-ओ|ई}

इसके योग से लघु वाचक तथा सबध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः —

	स०	पप्र०	→	लघु वा० स०
(१)	बटल|आ|	-ओ|ई		बटलो|ई
	सं०	**पप्र०**	**→**	**सबध वा० स०**
(२)	बहिन	-ओ|ई		बहिनो|ई
	ननद	-ओ|ई		ननदो|ई

१. २. १०. १. १. ५५. {-ओट}

इसके योग से वस्त्र वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा.—

स०		पप्र०	→	वस्त्र वा० सं०
लाँग	(~लँग)	-ओट		लँगोट

१ २. १०. १ १ ५६. {-ओल|आ}

इसके योग से लघु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे /आ → अ/ विकार होता है। यथा —

स०		पप्र०	→	लघु वा० स०
खाट	(~खट)	-ओल|आ		खटोल|आ
साँप	(~सँप)	-ओल|आ		सँपोल|आ

१ २ १० १ १. ५७. {ओह|ई}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा·—

स०		पप्र०	→	सबध वा० सं०
बाट	(~बट)	-ओह|ई		बटोह|ई

१. २. १०. १. १. ५८. {-औट|आ}

इसके योग से स्थूलता वाचक एव पात्र वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ल → ० / , / त → ० / तथा / आ → अ / विकार होते है। यथाः—

(१)

स०		पप्र०	→	स्थूलता वा० स०
बिल्ल|ई	(~बिल)	-औट|आ		बिलौट|आ
हिरन		-औट|आ		हिरनौट|आ

(२)

स०		पप्र०	→	पात्र वा० स०
पत्थर	(~पथर)	-औट|आ		पथरौट|आ
काजर	(~कजर)	-औट|आ		कजरौट|आ

१ २. १० १ १. ५९. {-औट|ई}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र	→	संबध वा० स०
अक्षर	-औट|ई		अक्षरौट|ई 'वर्णमाला'

१. २. १० १. १. ६०. {-औड़|आ}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

सं०		पप्र०	→	करण वा० स०
हाथ	(∼हथ)	-औड़|आ		हथौड़|आ

१. २ १० १. १ ६१ {-औत}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / ए→इ / विकार होता है। यथा —

स०		पप्र०	→	सबध वा० स०
बहिन		-औत		बहिनौत
जेठ	(∼जिठ)	-औत		जिठौत

१. २. १०. १ १. ६२. {-औत|आ}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

स०		पप्र०	→	सबध वा० स०
काठ	(∼कठ)	-औत|आ		कठौत|आ
समझ		-औत|आ		समझौत|आ

१ २ १० १. १. ६३. {-औत|ई}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा—

स०		पप्र०	→	भाव वा० स०
बाप	(∼बप)	-औत|ई		बपौत|ई

१. २. १० १ १. ६४. {-और|ई}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक अपत्य वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / ईम→इब / विकार होता है।

(१)	स०		पप्र०	→	सबंध वा० स०
	फल		-और|ई		फलौर|ई 'फल जैसा पक्वान्न'
(२)	स०		पप्र०	→	अपत्य वा० स०
	नीम	(∼निब)	-और|ई		निबौर|ई

१. २. १०. १. १ ६५. {-औल|आ}

इसके योग से अपत्य वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सं०	पप्र०	→	अपत्य वा० स०
बन	-औल|आ		बनौल|आ

१ २ १० १. १ ६६. {-अइय|आ}

इसके योग से लघु वाचक तथा दुलार वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा :—

(१)

स०		पप्र०	→	लघु वा० स०
ताल	(~तल)	-अइय|आ		तलइय|आ
तार|आ|	(~तर)	-अइय|आ		तरइय|आ

(२)

स०		पप्र०	→	दुलार वा० स०
कान्ह|आ|	(~कन्ह)	-अइय|आ		कन्हइय|आ
भा|ई|	(~भ)	-अइय|आ		भइय|आ
मा	(~म)	-अइय|आ		मइय|आ

१ २. १०. १. १. ६७. {-क|आ}

इसके योग स स्थूलता वाचक तथा सम्बन्ध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊ→उ / तथा / आ→अ / विकार होते है। यथा.—

(१)

स०		पप्र०	→	स्थूलता वा० स०
बूँद	(~बुँद)	-क|आ		बुँदक|आ
कन		-क|आ		कनक|आ

(२)

स०		पप्र०	→	सबध वा० स०
भाप	(~भप)	-क|आ		भपक|आ
छाप	(~छप)	-क|आ		छपक|आ

१. २. १०. १. १. ६८ {-क|ई}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

अनु०वा०स०	पप्र०	→	भाव०वा०स०
घुड	-क|ई		घुडक|ई
धम	-क|ई		धमक|ई
भभ	-क|ई		भभक|ई

१. २. १०. १. १. ६६. {-कार}

इस परप्रत्यय के योग से भाववाचक तथा कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊँ→उं / तथा / अन→अं / विकार होते है। यथा:—

(१)

स०	पप्र०	→	भाव० व० स०
जय	-कार		जयकार
अनु०वा०सं०	पप्र०	→	भाव व० स०
पुच	-कार		पुचकार
फुस	-कार		फुसकार
फूँ (~फुं)	-कार		फुंकार
हूँ (~हुँ)	-कार		हुंकार
झन (~झं)	-कार		झंकार
टन (~टं)	-कार		टंकार
मनोभाव वा० स०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
हाहा	-कार		हाहाकार
दुत	-कार		दुत्कार
धिक	-कार		धिक्कार

(२)

सं०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
काश्त	-कार		काश्तकार
इतिहास	-कार		इतिहासकार
शिल्प	-कार		शिल्पकार
चित्र	-कार		चित्रकार
कला	-कार		कलाकार

सूचना (४) / -कार / प्रत्यय उस / कार / शब्द से भिन्न है जिसका अर्थ 'कार्य' है। जैसे; / कारकुन / के / कार / का अर्थ कार्य है। यहा यह अर्थ नही है।

१. २. १०. १. १. ७०. {-कुन}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
कार	-कुन		कारकुन
जाँच	-कुन		जाँचकुन
नसीहत	-कुन		नसीहतकुन

१. २. १०. १. १. ७१. {-ग|ई}

इसके योग से भाववाचक, लघुवाचक तथा संबधवाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / य→० / तथा / बाहन→बहँ / विकार होते है। यथा :—

(१)	सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	वैद्य (~बैद)	-ग|ई		बैदग|ई
	मर्द	-ग|ई		मर्दग|ई
	बान	-ग|ई		बानग|ई
(२)	स०	पप्र०	→	लघु वा० स०
	बाहन (~बहँ)	-ग|ई		बहँग|ई
(३)	स०	पप्र०	→	संबध वा० स०
	देन	-ग|ई		देनग|ई

१. २. १०. १ १. ७२. {-गर}

इसके योग से कर्तृ वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा:—

स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
जिल्द	-गर		जिल्दगर
सौदा	-गर		सौदागर
जादू	-गर		जादूगर
कलई	-गर		कलईगर
सितम	-गर		सितमगर

१ २. १०. १ १. ७३ {-गार}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सं०	पप्र०	→	सबध वा० स०
याद	-गार		यादगार

१ २. १०. १, १. ७४. {-गीर}

इसके योग से संबध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

सं०	पप्र०	←	सबध वा० सं०
राह	-गीर		राहगीर
दस्त	-गीर		दस्तगीर
दावा	-गीर		दावागीर

१. २. १०. १. १ ७५. {-गीर|ई}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा :—

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बाबू	-गीर|ई		बाबूगीर|ई
कुली	-गीर|ई		कुलीगीर|ई
नेता	-गीर|ई		नेतागीर|ई
राज	-गीर|ई		राजगीर|ई

१. २. १०. १. १. ७६. {-च|आ} /-च|आ /- ∞ -ईच|आ/

इसके योग से वृहत् अर्थवाचक तथा लघु अर्थ वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा .—

(१) स०	पप्र०	→	वृहत् अर्थ वा० सं०
देग	च|आ		देगच|आ
सीँक	च|आ		सीँकच|आ

/ -ईच|आ / , / -च|आ / का सपरिवर्तक जिसका व्यवहार रूप प्रतिबंधित है । यह निम्न रूप के साथ आता है । तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है । यथा —

(२) सं०	पप्र०	→	लघु वा० सं०
बाग (∼बग)	-ईच|आ		बगीच|आ

१. २. १०. १. १. ७७. {च|ई}

इसके योग से व्यवसाय वाचक, संबध वाचक तथा लघु वाचक सज्ञा प्राति-पदिक व्युत्पन्न होते है । यथा.—

(१) स०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० सं०
मशाल	-च|ई		मशालच|ई
तोप	-च|ई		तोपच|ई
तबल|आ|	-च|ई		तबलच|ई
खज़ान|आ|	-च|ई		खजानच|ई

(२) सं०	पप्र०	→	सबध वा० सं०
दुम	-च|ई		दुमच|ई 'घोड़े की पूँछ का तसमा'

(३)	सं०	पप्र०	→	लघु वा० स०
	डोल	-च|ई		डोलच|ई
	चिलम	-च|ई		चिलमच|ई

१. २. १० १. १. ७८. {-चार|आ}

इसके योग से भाववचाक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है । यथा —

सं०	पप्र०	→	भाव वा० स०
भाई	-चार|आ		भाईचार|आ

१. २, १०. १. १. ७९. {-ज}

यह परप्रत्यय अनुकरण वाचक संज्ञाओ मे लगकर भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न करता है । यथा —

अनु० वा० स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
फू	-ज		कूल
गूँ	-ज		गूँज

१, २. १०. १ १ ८०. {-ज|आ}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / भा → भती / तथा / बहिन → भान / विकार होते है । यथा —

स०		पप्र०	→	सबध वा० स०
भा|ई|	(~भती)	-ज|आ		भतीज|आ
बहिन	(~भान)	-ज|आ		भानज|आ

१. २. १० १. १. ८१. {-जाद|आ}

इसके योग से अपत्य वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं । यथा —

स०	पप्र०	→	अपत्य वा० स०
शाह	जाद|आ		शाहजाद|आ

१. २. १०. १. १. ८२ {-ट}

इस परप्रत्यय के योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है । यथा —

अनु० वा० स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
छीं	-ट		छींट

१. १. १०. १. १ ८३. {-ट|आ}

इसके योग से अनादर सूचक, स्थूलता वाचक तथा सबध वाचक सज्ञा प्राति-पदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / र → ट / , / ० → अ / तथा / ० → ग / विकार होते हैं । यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	अनादर वा० स०
	चोर (~चोट	-ट|आ		चोट्ट|आ
	मीँ|आ| (~मीअँ)	-ट|आ		मीअँट|आ
(२)	स०	पप्र०	→	स्थूलता वा० स०
	रोँ|आ| (~राँग)	-ट|आ		रेँगट|आ
	चूह|आ|	-ट|आ		चूहट|आ
(३)	स०	पप्र०	→	सबध वा०
	पट	-ट|आ		पट्ट|आ
	दोपट (~दुपट)	-ट|आ		दुपट्ट|आ

१. २. १० १. १. ८४. {-ट|ई}

इसके योग से लघु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा.—

स०	पप्र०	→	लघु वा० स०
बधू	-ट|ई		बधूट|ई

१. २ १०. १. १. ८५. {-डम}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
गुरु	-डम		गुरुडम 'गुरु बन कर अपनी पूजा कराने का भाव'

१. २. १०. १. १. ८६. {-ड़|आ}

इसके योग से स्वार्थिक, सबध वाचक तथा अनादर वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊँ → उ /, / आ → अ / विकार होते है। यथा:—

(१)	सं०	पप्र०	→	स्वार्थिक स०
	टूँक (~टुक)	-ड|आ		-टुकड|आ
	मुख	-ड|आ		मुखड|आ
	दुख	-ड|आ		दुखड|आ
	चाम (~चम)	-ड|आ		चमड|आ
(२)	सं०	पप्र०	→	सबध वा० स०
	आँक	-ड|आ		आँकड|आ
(३)	स०	पप्र०	→	अनादर वा० स०
	जोग|ई|	-ड|आ		जोगड|आ

१. २. १०. १ १. ८७. {-ड़|ई}

इसके योग से लघुवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथाः—

स०		पप्र०	→	लघु वा० स०
दाम	(~दम)	-ड|ई		दमड|ई
पाग	(~पग)	-ड|ई		पगड|ई
पलग		-ड|ई		पलगड|ई

१ २. १०. १. १. ८८. {-त|आ}

इसके योग से समुदाय वाचक तथा सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / व→य / तथा / ०→य / विकार होते है। यथा —

	स०		पप्र०	→	समुदाय वा० स०
(१)	जन		-त|आ		जनत|आ

	स०		पप्र०	→	सबध वा० स०
(२)	पाँव	(~पाँय)	-त|आ		पाँयत|आ
	रा|ई|	(~राय)	-त|आ		रायत|आ

१. २ १०. १ १ ८९ {-दान}

इसके योग से पात्र वाचक, कर्तृवाचक तथा सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा .—

	स०	पप्र०	→	पात्र वा० स०
(१)	चाय	-दान		चायदान
	इत्र	-दान		इत्रदान
	पान	-दान		पानदान
	कलम	-दान		कलमदान
	शमा	-दान		शमादान

	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सज्ञा
(२)	कदर	-दान		कदरदान
	कार	-दान		कारदान

	स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
(३)	रोशन|ई|	-दान		रोशनदान
	खान	-दान		खानदान

१. २. १०. १. १. ६०. {-न|आ}

इसके योग से स्वार्थिक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	स्वार्थिक स०
परवाह	-न|आ		पहरावन|आ

१. २. १.० १. १. ६१ {-न|ई}

इसके योग से सबध वाचक, आभूषण वाचक, स्वार्थिक तथा स्त्रीवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / पाँव → पैँज / , / य → ० / , / उ → ० / , / आ → अ / तथा / ऊँ → उँ / विकार होते है। यथा —

	स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
(१)	चाँद	-न|ई		चाँदन|ई
	पहराव	-न|ई		पहरावन|ई 'विवाह के अवसर पर वस्त्र आदि पहनाना'

	स०	पप्र०	→	आभूषण वा० स०
(२)	पाँव (~पैँज)	-न|ई		पैँजन|ई

	स०	पप्र०	→	स्वार्थिक स०
(३)	आमद	-न|ई		आमदन|ई
	नथ	-न|ई		नथन|ई

	पुरुष वा० स०	पप्र०	→	स्त्री वा० स०
(४)	भील	-न|ई		भीलन|ई
	मोर	-न|ई		मोरन|ई
	साँड	-न|ई		साँडन|ई
	कुमुद	-न|ई		कुमुदन|ई
	बहेलिय|आ|(~बहेलि)	-न|ई		बहेलिन|ई
	बेडिय|आ|(~बेडि)	-न|ई		बेडिन|ई
	टहलु|आ|(~टहल)	-न|ई		टहलन|ई
	हाथ|ई|(~हथि)	-न|ई		हथिन|ई
	ऊँट (~ऊँट)	-न|ई		ऊँटन|ई

१. २. १०. १. १ ६२ {-नाम|आ}

इसके योग से सबध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा —

सं०	पप्र०	→	संबंध वा० सं०
किराया	-नाम|आ		कियायानाम|आ
सुपुर्दगी	-नाम|आ		सुपुर्दगीनाम|आ

१.२.१०.१.१.६३. {-नुम\|आ}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

स०	पप्र०	→	करण वा० स०
कुत्व	-नुम|आ		कुत्वनुम|आ

१.२.१०,१ १.६४. {-प\|ऊ}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

अनु०वा०स०	पप्र०	→	करण वा० स०
भों	-प|ऊ		भोंप|ऊ

१ २.१०.१.१.६५ {-पन}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / च→० / विकार होता है। यथा —

सं०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
लड़क|आ|	-पन		लडकपन
बच्च|आ| (~बच)	-पन		बचपन
बाँझ	-पन		बाँझपन
शिशु	-पन		शिशुपन

१.२ १० १ १.६६ {-य\|आ}

इसके योग से मुद्रावाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ऊ→उ / विकार होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	मुद्रा० वा० सं०
रूप|आ|(~रुप)	-य|आ		रुपया|आ

१.२ १०,१ १ ६७. {-यार\|आ}

इसके योग से वृहत्काय वाचक तथा व्यवसाय वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा :—

(१)

स०	पप्र०	→	वृहत्काय वा० स०
गल|ई	-यार|आ		गलयार|आ

(२)	स०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० सं०
	घास (∾घस)	-यार|ग्रा		घस्यार|ग्रा
	भाट (∾भट)	-यार|ग्रा		भट्यार|ग्रा

१. २ १० १. १ ९८. {-र|ग्र}

इसके योग से स्वार्थिक अथवा लघुवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा .—

स०	पप्र०	→	स्वार्थिक अथवा लघु वा० स०
पपीह|ग्रा|	-र|ग्रा		पपीराह|ग्रा

१ २. १०. १. १. ९९. {-र|ई}

इसके योग से लघुवाचक तथा सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा :—

(१)	सं०	पप्र०	→	लघु वा० सं०
	कोठ|ग्रा|	-र|ई		कोठर|ई
	छात|ग्रा| (∾छत)	-र|ई		छतर|ई
	सूत	-र|ई		सूतर|ई
(२)	सं०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० सं०
	बाँस	-र|ई		बाँसर|ई

१. २. १०. १. १. १००. {-र|ऊ}

इसके योग से स्वार्थिक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / पक्ष→पखे / विकार होता है। यथा.—

सं०	पप्र०	→	स्वार्थिक सं०
गो	-र|ऊ|		गोर|ऊ
पक्ष|ई |(∾पखे)	-र|ऊ		पखेर|ऊ

१. २. १०. १. १. १०१. {-रेज़}

इसके योग के कर्तृवाचक तथा सम्बन्ध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / खून→खूँ / विकार होता है। यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	खून (∾खूँ)	-रेज़		खूँरेज़
(२)	सं०	पप्र०	→	सबध वा० सं०
	गुल	-रेज़		गुलरेज़ 'फुलझड़ी'

१ २. १०. १. १. १०२. {-ल|ई} / -ल|ई∞-अल्ल|ई /

इसके योग से लघुवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ओ→उ / , / ई→इ / तथा / य→० / विकार होते है। यथा.—

स०	पप्र०	→	लघु वा० स०
घोड|आ| (~घुड)	-ल|ई		घुडल|ई
ढप	-ल|ई		ढपल|ई
मछ	-ल|ई		मछल|ई
टीक|आ| (~टिक)	-ल|ई		टिकल|ई

/ -अल्ल|ई / सपरिवर्तक का प्रयोग रूप प्रतिबधित है, इसका व्यवहार निम्न रूप के साथ होता है। यथा —

रुपय|आ| (~रुप)	-अल्ल|ई	रुपल्ल|ई

१. २. १०. १. १. १०३. {-व|आ}

इसके योग से एकत्र वाचक, लघुवाचक, तथा सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

(१)	स०	पप्र०	→	एकत्र वा० स०
	मल	-व|आ		मलव|आ
(२)	स०	पप्र०	→	लघु वा० स०
	पुर	-व|आ		पुरव|आ 'छोटा गॉव'
(३)	स०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० स०
	बल	-व|आ		बलव|आ

१. २ १०. १. १. १०४. {-वज}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

स०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० स०
भा|ई|	-वज		भावज

१. २. १०. १. १. १०५. {-वर}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० सं०
जान	-वर		जानवर

१. २. १०. १. १. १०६. {-वाड़}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ए→इ / विकार होता है। यथा:—

सं०		पप्र०	→	भाव वा० स०
खेल	(~खिल)	-वाड		खिलवाड

१. २. १०. १. १. १०७ {-वाड़|ग्रा}

इसके योग से स्थान वाचक मज्ञा पातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ई→इ / तथा / ग्रा→ग्र / विकार होते है। यथा.—

स०		पप्र०	→	स्थान वा० सं०
पीछ|ग्रा|	(~पिछ)	-वाड|ग्रा		पिछवाड|ग्रा
ग्राग|ग्रा|	(~ग्रग)	-वाड|ग्रा		ग्रगवाड|ग्रा

१. २. १०. १. १. १०८. {-वान} / -वान~-बान /

इसके योग ग्रधिकार वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा —

स०	पप्र०	→	ग्रधिकार वा० स०
इक्का	-वान		इक्कावान
रथ	-वान		रथवान

/ -बान / संपरिवर्तक का व्यवहार कुछ (फारसी) शब्दो से साथ होता है। यथा —

सं०	पप्र०	→	ग्रधिकार वा० सं०
बाग	-बान		बागबान
दर	-बान		दरबान

१ २ १०. १. १. १०९. {-वाल}

इसके योग से उपनाम वाद्धक स ज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। इस योग मे / ट→त / विर्कार होता है।

स०		पप्र०	→	उपनाम वा० सं०
पाली		-वाल		पालीवाल
जायस		-वाल		जायसवाल
कोट	(~कोत)	-वाल		कोतवाल

१ २. १०. १. १. ११०. {-वाह|ग्रा}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा.—

स०	पप्र०	→	संबध वा० स०
हल	-वाह|ग्रा		हलवाह|ग्रा
कुश	-वाह|ग्रा		कुशवाह|ग्रा

१. २. १०. १. १. १११. {-हज}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
साल|आ|(∼सल)	-हज		सलहज

१. २. १०. १. १. ११२. {-हट\|ई}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
तल	-हट|ई		तलहट|ई

१. २. १०. १. १. ११३. {-हर}

इसके योग से स्थान वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / पित→पी / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	स्थान वा० स०
पित|आ| (∼पी)	-हर		पीहर
खड	-हर		खडहर

१. २. १०. १. १. ११४. {-हर\|आ}

इसके योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	सबध वा० स०
काठ (∼कठ)	-हर|आ		कठहर|आ

१. २ १०. १. १. ११५. {-हर\|ई}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

अनु०वा०स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
फुर	-हर|ई		फुरहर|ई

१. २ १० १ १ ११६. {-हार}

इसके योग से व्यवसाय वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। इस योग मे / ण→न / विकार होता है। यथा.—

सं०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
मणि (∼मनि)	-हार		मनिहार

१. २. १०. १. १ ११७. {-हार|ग्रा}

इसके योग से व्यवसाय वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / ग्रा→ग्र / विकार होते है। यथा.—

स०	पप्र०	→	व्यवसाय वा० स०
पान|ई| (~पन)-हार|ग्रा			पनहार|ग्रा
लकड|ई|	-हार|ग्रा		लकडहार|ग्रा

१. २. १० १ १. ११८ {-जनी}

इसके योग से लूट सम्बन्धी भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा·—

स०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
डाका	-जनी		डाकाजनी
ग्राग	-जनी		ग्रागजनी
राह	-जनी		राहजनी

१ २. १० १. २. सर्वनाम तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २ १० १. २. १ {-त्व}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस का योग निजवाचक / ग्राप / सर्वनाम के पश्चात् होता है। इस योग मे / ग्राप→ग्रपन / विकार होता है। यथा —

सर्व०	पप्र०	→	भाव वा० स०
ग्राप (~ग्रपन) -त्व			ग्रपनत्व

ग्रपनत्व के ग्रतिरिक्त / ग्रपनापा / तथा / ग्रपनापन / रूप भी विकल्प से प्रयुक्त होते है। इन विकल्पात्मक रूपो मे / -ग्राप|ग्रा / तथा / -पन / परप्रत्यय हैं। शेष ग्राधारभूत रूप उसी प्रकार विकृत होते है। यथा —

{ -ग्राप|ग्रा }

स०	पप्र०	→	भाव वा० स०
ग्राप (~ग्रपन) -ग्राप|ग्रा			ग्रपनाप|ग्रा

{ -पन }

ग्राप (~ग्रपना)-पन			ग्रपनापन

सूचना (५) हमने / ग्रपनत्व, ग्रपनापा, ग्रपनापन / प्रातिपदिको की व्युत्पत्ति / ग्रपना / से नही स्वीकार की है क्योकि / -न- / को {क-} परसर्ग का सपरिवर्तक कहा है (§ ३. १. २. १.)। ग्रत परसर्ग युक्त रूप से दूसरे प्रातिपदिक व्युत्पन्न नही माने जा सकते।

१. २. १०. १. ३. विशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१ २ १० १. ३. {-अक}

इसके योग से समुदाय वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आँ→अ / विकार होता है। यथा.—

वि०		पप्र०	→	समुदाय वा० स०
पॉच	(∼पच)	-अक		पचक
दश		-अक		दशक
शत		-अक		शतक

१. २. १० १. ३. २. {-अत}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
खिलाफ़	-अत		खिलाफत
मुलायम	-अत		मुलायमत

१. २. १०. १. ३. ३. {-अन}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

वि०		पप्र०	→	भाव वा० स०
झूठ	(∼जूठ)	-अन		जूठन

१ २ १०. १ ३. ४. {-अस} / -अस ∞ एँ -∞ -ज ∞-ठ ∞-थ ∞-म|ई /

इसके योग से तिथि वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। / -अस ∞ -एँ ∞ -ज ∞-ठ ∞-थ ∞ -म|ई / संपरिवर्तक रूप-प्रतिबधित है। / -अस / का योग / ग्यारह, तेरह, चौदह / संख्यावाचक विशेषणो के पश्चात् होता है तथा इसके योग से / अह → ० / विकार होता है। / -एँ / सपरिवर्तक का योग / पाँच, सात, आठ / सख्या वाचक विशेषणो के पश्चात् होता है। / -ज / सपरिवर्तक का योग / दो, तीन / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / दो → दू / तीन → ती / विकार होते है। / -ठ / का व्यवहार / छै / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / छै → छ / विकार होता है । / -थ / का व्यवहार / चार / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / चार → चौ / विकार होता है। / -म|ई / सपरिवर्नक का व्यवहार / नौ, दस / के पश्चात् होता है। यथा —

वि०		पप्र०	→	तिथि वा० सं०
ग्यारह	(∼ग्यार)	-अस		ग्यारस
तेरह	(∼तेर)	-अस		तेरस

चौदह	(~चौद)	-अस	चौदस
पाँच		-एँ	पाँचें
सात		-एँ	सातें
आठ		-एँ	आठें
दो	(~दू)	-ज	दूज
तीन	(~ती)	-ज	तीज
छै	(~छ)	-ठ	छठ
चार	(~चौ)	-थ	चौथ
दस		-म|ई	दसम|ई
नौ		-म|ई	नौम|ई

१. २. १०. १. ३ ५. {-आ|ई}

इसके योग भाववाचक तथा वस्तु वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / , / ई → इ / , / ऊ → उ / , / ए → इ / , / ओ → उ / , / स → ह / तथा / ट → ० / विकार होते है । यथा —

(१)

वि०		पप्र०	→ भाव वा० स०
चतुर		-आ|ई	चतुरा|ई
निठुर		-आ|ई	निठुरा|ई
सच		-आ|ई	सचा|ई
चिकन|आ|		-आ|ई	चिकना|ई
भल|आ|		-आ|ई	भला|ई
महँग|आ|		-आ|ई	महँगा|ई
साफ	(~सफ)	-आ|ई	सफा|ई
ढीट	(~ढिट)	-आ|ई	ढिटा|ई
ढील|आ|	(~ढिल)	-आ|ई	ढिला|ई
रूख|आ|	(~रुख)	-आ|ई	रुखा|ई
एक	(~इक)	-आ|ई	इका|ई
मोट|आ|	(~मुट)	-आ|ई	मुटा|ई
दस	(~दह)	-आ|ई	दहा|ई

(२)

वि०		पप्र०	→ वस्तु वा० सं०
खट्ट|आ|	(~खट)	-आ|ई	खटा|ई
मीठ|आ|	(~मिठ)	-आ|ई	मिठा|ई
ठंड|आ|		-आ|ई	ठडा|ई

१. २. १०. १. ३. ६. {-आइँद

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / तथा / च→० / विकार होते है। यथा —

वि०	पप्र०,	→	भाव वा० स०
खार|आ| (~खर)	-आइँद		खराइँद
कच्च|आ| (~कच)	-आइँद		कचाइँद

१ २ १०. १. ३. ७ {-आन}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ई→इ / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
अलग	-आन		अलगान
लम्ब|आ|	-आन		लम्बान
चौड|आ|	-आन		चौडान
नीच|आ| (~निच)	-आन		निचान

१. २ १० १. ३. ८. {-आप\|आ}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ओ→उ / तथा / ऊ→उ / विकार होते है। यथा --

वि०	पप्र०	→	भाव० वा० सं०
मोट|आ|(~मुट)	-आप|आ		मुटाप|आ
छोट|आ|(~छुट)	-आप|आ		छुटाप|आ
बूढ|आ| (~बुढ)	-आप|आ		बुढाप|आ

१ २ १० १. ३. ९. {-आयत}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बहुत	-आयत		बहुतायत

१ २ १० १. ३. १० {-आव}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ओ→उ / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
अलग	-आव		अलगाव
मोट|आ| (~मुट)	-आव		मुटाव

१ २ १०. १. ३. ११. {-आवट}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
तर	-आवट		तरावट
दुहर|आ|	-आवट		दुहरावट

१. २ १० १. ३. १२. {-आस}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ट→० / तथा / ई→इ / विकार होते है । यथा.—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
खट्ट्|आ| (~खट)	-आस		खटास
मीठ|आ| (~मिठ)	-आस		मिठास

१. २. १०. १. ३. १३. {-आहट}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा:—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
कड़ुव|आ|	-आहट		कड़ुवाहट
चिकन|आ|	-आहट		चिकनाहट

१. २. १०. १. ३. १४. {-इज़्म}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा:—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
शैव	-इज़्म		शैविज़्म

१. २. १०. १. ३. १५. {-इम\|आ}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा·—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
काल|आ|	-इम|आ		कालिम|आ
नील|आ|	-इम|आ		नीलिम|आ
पील|आ|	-इम|आ		पीलिम|आ
मधुर	-इम|आ		मधुरिम|आ
लाल	-इम|आ		लालिम|आ
श्वेत	-इम|आ		श्वेतिम|आ

१.२ १०.१.३ १६ {-इय|आ}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा:—

वि०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० स०
पील|आ|	-इय|आ		पीलिय|आ
चिकन|आ|	-इय|आ		चिकनिय|आ 'छैला'

१ २.१०.१ ३.१७. {-इयत}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
असल	-इयत		असलियत
खास	-इयत		खासियत
मनहूस	-इयत		मनहूसियत
मासूम	-इयत		मासूमियत
महरूम	-इयत		महरूमियत

१ २ १० १ ३ १८. {-इयार|आ}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / अ→अँ / विकार होता है। यथा:—

वि०	पप्र०	→	सम्बन्ध वा० सं०
अध (~अँध)	-इयार|आ		अँधियार|आ

१ २.१० १.३.१९. {-इश}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा—

वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बंद	-इश		बदिश

१ २ १०.१.३.२० {-एर}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा—

वि०	पप्र०	→	भाववा० स०
अध	-एर		अधेर

१ २.१० १.३ २१. {-एर|आ}

इसके योग से सम्बन्ध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / अ→अँ / विकार होता है। यथा—

वि०	पप्र०	→	सबध वा० सं०
अध (~अँ)	-एर|आ		अँधेर|आ

	जीत	-०		जीत
	सीख	-०		सीख
	पकड	-०		पकड
	परख	-०		परख
(३)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	बाँध	-०		बाँध
	छाप	-०		छाप
	छेद	-०		छेद
	घेर	-०		घेर
	घोल	-०		घोल
	गाँठ	-०		गाँठ
(४)	सक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	ठेल	-०		ठेल
	बाँट	-०		बाँट
(५)	सक० धा०	पप्र०	→	पदार्थ वा० सं०
	चाट	-०		चाट 'खाने की वस्तु'
	रेत	-०		रेत 'धूल'
	माँड	-०		माँड 'चावल का'
	पाग	-०		पाग 'मिठाई'
(६)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
	ठग	-०		ठग

शून्य परप्रत्य की इस प्रक्रिया मे कुछ धातुओ मे आन्तरिक ध्वनि-विकार होते है। ये इस प्रकार है—/ अ→आ /, / इ→ए /, / उ→ओ /, / ऊ→औ /, / अँ→अ / तथा / ए→इया /। नीचे इनके उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है :—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
चल (~चाल)	-०		चाल
बढ (~बाढ)	-०		बाढ
निकल (निकास)	-०		निकास
मिल (~मेल)	-०		मेल
लिख (~लेख)	-०		लेख
झुक (~झोक)	-०		झोक

अक० धा०		पप्र०	←	करण वा० सं०
अड	(∼आड)	-०		आड
रँग	(∼रंग)	-०		रग
अक० धा०		पप्र०	→	कर्म वा० स०
झूल	(∼झोल)	-०		झोल

१ २ १० १.४ २. {-अक}

इसके योग से कर्मवाचक, अधिकरण वाचक, भाववाचक, करण वाचक तथा कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / अ→आ / , / इ→ए / विकार होते है । यथा :—

(१)	अक० धा०		पप्र०	→	कर्म वा० स०
	बन	(∼बान)	-अक		बानक
(२)	अक० धा०		पप्र०	→	अधिकरण वा० सं०
	बैंठ		-अक		बैठक
(३)	अक० धा०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
	अट		-अक		अटक
	रम		-अक		रमक
(४)	सक० धा०		पप्र०	→	करण वा० स०
	फट	(∼फाट)	-अक		फाटक
(५)	सक० धा०		पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	जन		-अक		जनक
	पोस		-अक		पोसक
	साध		-अक		साधक
	लिख	(∼लेख)	-अक		लेखक

१.२.१० १.४.३. {-अत}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / अँ→अं / विकार होता है । यथा —

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	बच	-अत		बचत
	खप	-अत		खपत

(२)	सक० धा०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
	लिख		-अत		लिखत
	चाह		-अत		चाह्
	रँग	(~रंग)	-अत		रगत

१. २. १०. १. ४. ४. {-अन} / -अन~-न /

इसके योग से भाववाचक, करणवाचक, वस्तुवाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / अ→आ / विकार होता है। यथा:—

(१)	अक० धा०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
	कह्		-अन		कह्न
	जल		-अन		जलन
	मिल		-अन		मिलन
	चल		-अन		चलन
	लग		-अन		लगन
	उलझ		-अन		उलझन
	फिसल		-अन		फिसलन
	धड़क		-अन		धडकन
	फडक		-अन		फडकन
	फुक		-अन		फुकन
(२)	सक० धा०		पप्र०	→	भाव वा० सं०
	सह्		-अन		सह्न
	पाल		-अन		पालन
	गढ		-अन		गढन
	मसल		-अन		मसलन
(३)	अक० धा०		पप्र०	→	करण वा० सं०
	जम	(~जाम)	-अन		जामन 'दूध जमाने का पुट'
(४)	सक० धा०		पप्र०	→	करण वा० सं०
	झाड		-अन		झाड़न 'झाड़ू'
	बेल		-अन		बेलन
(५)	अक० धा०		पप्र०	→	वस्तु वा० सं०
	उतर		-अन		उतरन 'उतरी वस्तु'
	फूट		-अन		फूटन 'फूटी वस्तु'

(६)	सक० धा०	पप्र०	→	वस्तु वा० सं०
	कतर	-अन		कतरन

/ -न / सपरिवर्तक का योग ध्वन्यात्मक प्रक्रियानुसार प्रतिबधित है जिसका योग केवल उन धातुओ मे होता है जिनका अन्तिमाक्षर विवृत होता है। यथा:—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
नहा	-न		नहान
बतरा	-न		बतरान
सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
ले	-न		लेन
दे	-न		देन
फरमा	-न		फरमान

१. २. १०. १. ४. ५. {-अंत}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	लड	-अंत		लडंत
	भिड	-अंत		भिडत
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	लिख	-अंत		लिखत

१ २. १० १. ४. ६ {-आ|ई} / -आ|ई∞-ला|ई∞-वा|ई /

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं।

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	चर	-आ|ई		चरा|ई
	उतर	-आ|ई		उतरा|ई
	उग	-आ|ई		उगा|ई
	धुन	-आ|ई		धुना|ई
	अँगड	-आ|ई		अँगडा|ई
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	कतर	-आ|ई		कतरा|ई
	जड	-आ|ई		जडा|ई
	गढ	-आ|ई		गढा|ई
	लिख	-आ|ई		लिखा|ई

/ -ला|ई / तथा / -वा|ई / सपरिवर्तको का योग उन धातुओ के पश्चात् होता है जिनके अतिमाक्षर विवृत होते है। / -ला|ई / सपरिवर्तक का योग / रो / , / सो / , / धो / , / सी / धातुओ के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / ओ→उ / तथा / ई→इ / विकार होते है। / -वा|ई / का योग / आ / तथा / छा / धातुओ के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
रो (∼रु)	-ला|ई		रुला|ई
सो (∼सु)	-ला|ई		सुलाई
सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
धो (∼धु)	-ला|ई		धुला|ई
सी (∼सि)	-ला|ई		सिला|ई
अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
आ (∼अ)	-वा|ई		अवा|ई
सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
छा (∼छ)	वा|ई		छवा|ई

सूचना (६) कुछ सवृताक्षरिक धातुओ के पश्चात् भी / -वा|ई / का प्रयोग मिलता है, जैसे; / पीस / से / पिसवा|ई / । परन्तु ये प्रयोग वैकल्पिक है तथा सामान्यत इनका व्यवहार नही किया जाता।

१. २. १०. १. ४. ७. {-आइँद}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
सड	-आइँद		सडाइँद

१ २. १०. १. ४. ८. {-आक}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
फिर	-आक		फिराक

१. २ १० १. ४ ९. {-आन}

इसके योग से भाव वाचक, करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊ→उ / विकार होता है। यथाः —

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	उठ	-आन		उठान
	मिल	-आन		मिलान

	लग	-आन		लगान
	थक	-आन		थकान
	कूद (∼कुद)	-आन		कुदान
(२)	अक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	मूत (∼मुत)	-आन		मुतान

१ २. १०. १. ४. १० {-आन|ई}

इसके योग से कर्म वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
कह	-आन|ई		कहान|ई

१ २. १०. १. ४. ११. {-आप}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा.—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
मिल	-आप		मिलाप

१ २ १०. १. ४. ११२. {-आप|आ}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। इस योग मे / ऊ→उ / विकार होता है। यथा.—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	जल	-आप|आ		जलाप|आ
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	पूज (∼पुज)	-आप|आ		पुजाप|आ

१. २. १०. १ ४. १३ {-आर|आ}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
निपट	-आर|आ		निपटार|आ

१. २. १० १ ४ १४. {-आर|ई}

इसके योग से करण वाचक तथा कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे / ऊ→उ / विकार होता है। यथा —

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	पिचक	-आर|ई		पिचकार|ई
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
	पूज (∼पुज)	-आर|ई		पुजार|ई

१.२ १०.१.४.१५. {-आव}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे /ऊ→उ/, /ई→इ/ विकार होते हैं। यथा —

(१)

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
सड	-आव		सडाव
लग	-आव		लगाव
गल	-आव		गलाव
पड	-आव		पडाव
बह	-आव		बहाव
झुक	-आव		झुकाव
तन	-आव		तनाव
पहर	-आव		पहराव
ठहर	-ठहर		ठहराव
घूम (~घुम)	-आव		घुमाव
फूल (~फुल)	-आव		फुलाव

(२)

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
चुन	-आव		चुनाव
जड़	-आव		जडाव
भर	-आव		भराव
बरत	-आव		बरताव
छिडक	-आव		छिडकाव
रीझ (~रिझ)	-आव		रिझाव

१.२.१०.१.४.१६. {-आव|आ} / -आव|आ~-व|आ /

इसके योग से भाव वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं तथा इस योग मे /ओ→उ/ विकार होता है। यथाः—

(१)

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
फैल	-आव|आ		फैलाव|आ
बढ	-आव|आ		बढाव|आ
बोल (~बुल)	-आव|आ		बुलाव|आ

(२)

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
छल	-आ|आ		छलाव|आ
पहन	-आव|आ		पहनाव|आ

/ व| आ / संपरिवर्तक का योग उन धातुओ के पश्चात् होता है जिनका अंतिमाक्षर विवृत होता है। यथा:—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पछता	-व|आ		-पछताव|आ
सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
दिखा	-व|आ		दिखाव|आ
भुला	-व|आ		भुलाव|आ

सूचना (७) / -आव / परप्रत्यय से इसकी भिन्नता यह है कि इसके द्वारा वृहत अर्थ व्यक्त होता है।

१ २. १० १. ४. १७ {-आवट} / -आवट∼-वट /

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ओ → उ / विकार होता है। यथा:—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा स०
	थक	-आवट		थकावट
	रोक (∼रुक)	-आवट		रुकावट
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	लिख	-आवट		लिखावट
	बुन	-आवट		बुनावट

/ -वट / सपरिवर्तक का योग ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से प्रतिबधित है। इसका योग उन धातुओ के पश्चात् होता है जिनके अतिमाक्षर विवत होते है। यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
दिखा	-वट		दिखावट
सजा	-वट		सजावट
मिला	-वट		मिलावट
बना	-वट		बनावट

१. २. १०. १. ४ १८. {-आवत}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
कह	-आवत		कहावत

१ २. १०. १. ४. १९. {-आस} / -आस∞-लास /

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ऊ → उ /, / ओ → उ /, / ई → य / विकार होते हैं। यथा.—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	हँग	-आस		हँगास
	मूत (∼मुत)	-आस		मुतास
	ऊँघ (∼उँघ)	-आस		उँघास
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	पी (∼प्य)	-आस		प्यास

/ -लास / सपरिवर्तक का योग रूप-प्रतिबधित है। इसका योग / रो / तथा / पी / धातुओ के पश्चात् होता है। यथा.—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
रो (∼रु)	-लास		रुलास
सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पी (∼पि)	-लास		पिलास

१. २. १०. १. ४. २० {-इय|आ}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
धुन	-इय|आ		धुनिय|आ
जड	-इय|आ		जडिय|आ
लिख	-इय|आ		लिखिय|आ
गढ	-इय|आ		गढिय|आ
छल	-इय|आ		छलिय|आ

१. २. १०. १ ४. २१. {-इयत}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
कबूल	-इयत		कबूलित

१. २. १०. १. ४. २२. {-इश}

इनेके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग में / अ → आ / विकार होता है। यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
फरमा	-इश		फरमाइश
मल (~माल)	-इस		मालिश

१ २. १०. १. ४. २३. {-एज}

इसके योग से करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग इस योग मे / आँ → अ / विकार होता है। यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
बाँध (~बध)	-एज		बधेज 'जिसमे बॉधा जाय'

१. २. १० १. ४. २४ {-एज\|आ}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
धर	-एज|आ		धरेज|आ

१. २ १०. १. ४. २५ {-एर\|आ}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
बस	-एर|आ		-बसेर|आ

१. २. १०. १. ४. २६. {-ऐल}

इसके योग से कर्मवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० सं०
रख	-ऐल		रखैल

१. २. १०. १. ४. २७ {-ओर}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा.—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
हिल	-ओर		हिलोर

१. २. १०. १. ४. २८. {-ओहर}

इसके योग से कर्मवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
धर	-ओहर		धरोहर

१. २. १०. १. ४. २९. {-ओंट|ई}

इसके योग से करण वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

सक० धा०	पप्र०	→	करण वा० स०
कस	-औट|ई		कसौट|ई

१. २ १० १. ४. ३० {-औड़|ई}

इसके योग से वस्तु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	वस्तु वा० स०
पक	-औड|ई		पकौड|ई

१. २. १०. १. ४. ३१. {-औत|ई}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

	पप्र०	→	भाव वा० स०
(१) अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पुर	-औत|ई		पुरौत|ई
चुक	-औत|ई		चुकौत|ई
(२) सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
चुन	-औत|ई		चुनौत|ई
काट (~कट)	-औत|ई		कटौत|ई
मान (~मन)	-औत|ई		मनौत|ई

१. २. १०. १. ४. ३२. {-औन|आ}

इसके योग से वस्तु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ए → इ / विकार होता है। यथा :—

अक० धा०	पप्र०	→	वस्तु वा० सं०
खेल (~खिल)	-औन|आ		खिलौन|आ
बिछ	-औन|आ		बिछोन|आ

१. २. १०. १. ४. ३३. {-औन|ई}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ई → इ / विकार होता है। यथा :—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
मीच (~मिच)	-औन|ई		मिचौन|ई

१. २. १०. १. ४. ३४. {-औरǀई}

इसके योग स वस्तु वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ऊ → उ / विकार होता है। यथा :—

अक० धा०	पप्र०	→	वस्तु वा० स०
फूल (∼फुल)	-औरǀई		फुलौरǀई 'पकौड़ी'

१. २. १०. १. ४ ३५. {-ओस}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा .—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पड	-ओस		पडोस

१. २. १०. १ ४. ३६. {-कǀआ}

इसके योग से कर्म वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ई→इ / विकार होता है। यथा.—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	झप	-कǀआ		झपकǀआ
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	छील (∼छिल)	-कǀआ		छिल्कǀआ

१. २. १०. १. ४. ३७ {-कǀई}

इसके योग से कर्म वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे /·ऊ→उ / तथा / ए→इ / विकार होते है। यथा :—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	डूब (∼डुब)	-कǀई		डुबकǀई
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	फेर (∼फिर)	-कǀई		फिरकǀई 'फिराने की वस्तु'
	खेड़ (∼खिड़)	-कǀई		खिड़कǀई

१. २. १०. १. ४. ३८. {-कारǀआ}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ऊ → उ / विकार होता है। यथा:—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
छूट (∼छुट)	कारǀआ		छुटकारǀआ

१. २. १०. १. ४. ३९. {-ट|आ}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथाः—

अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
झपट	-ट|आ		झपट्ट|आ
सना	-ट|आ		सनाट|आ
अर्रा	-ट|आ		अर्राट|आ
सर्रा	-ट|आ		सर्राट|आ
खर्रा	-ट|आ		खर्राट|आ
घर्रा	-ट|आ		घर्राट|आ

१ २. १०. १. ४. ४०. {-त|आ}

इसके योग से कर्तृ वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ग→क / विकार होता है। यथा —

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० सं०
हर	त|आ		हर्त|आ
धर	त|आ		धर्त|आ
भर	त|आ		भर्त|आ
भोग (~भोक)	त|आ		भोक्त|आ

१ २ १०. १. ४. ४१. {-त|ई}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथाः—

	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
(१)				
	बोल	त|ई		बोलत|ई
	बस	त|ई		बस्त|ई
	कट	त|ई		कटत|ई
	बढ	त|ई		बढ़त|ई
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	गिन	त|ई		गिनत|ई
	भर	त|ई		भर्त|ई

सूचना (८) यह प्रत्यय कृदन्त प्रत्यय / -त- / से भिन्न है (§ २. २. २. १. २. १)।

१ २. १० १. ४. ४२. {-न|आ}

इसके योग से कर्मवाचक तथा करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ओ→उ / विकार होता है। यथा.—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० सं०
	घट	-न|आ		घटन|आ
	झर	-न|आ		झरन|आ 'निर्झर'
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० सं०
	रच	-न|आ		रचन|आ 'कृति'
	तोल (~तुल)	-न|आ		तुलन|आ
	गा	-न|आ		गान|आ 'गीत'
	खा	-न|आ		खान|आ 'भोजन'
(३)	अक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	ढक	-न|आ		ढकन|आ 'ढक्कन'
	झूल	-न|आ		झूलन|आ 'झूला'
(४)	सक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	घोट	-न|आ		घोटन|आ 'जिससे घोटा जाय'
	बेल	-न|आ		बेलन|आ 'जिससे बेला जाय'
	पोत	-न|आ		पोतन|आ 'जिससे पोता जाय'

सूचना (६) यह प्रत्यय कृदन्त प्रत्यय / -न- / से भिन्न है (§२.२ २.१. ११)।

१. २. १०. १. ४. ४३. {-न|ई}

इसके योग से भाववाचक कर्मवाचक, तथा करण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / आ→अ / तथा / ए→इ / विकार होते है। यथा.—

(१)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	छट	-न|ई		छटन|ई
	मिल	-न|ई		मिलन|ई
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	कर	न|ई		करन|ई
	कह	न|ई		कहन|ई
	माँग (~मँग)	न|ई		मँगन|ई

(३)	सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
	चाट (~चट)	न|ई		चटन|ई
	सूँघ	न|ई		सूँघन|ई
	ओढ	न|ई		ओढन|ई
(४)	सक० धा०	पप्र०	→	करण वा० सं०
	धौंक	न|ई		धौंकन|ई
	कतर	न|ई		कतरन|ई
	कुरेद	न|ई		कुरेदन|ई
	लिख (~लेख)	न|ई		लेखन|ई
	गूँथ	न|ई		गूँथन|ई

१ २. १०. १. ४. ४४ {-ब|ई}

इसके योग से कर्तृवाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
धो	ब|ई		धोब|ई

१. २. १०. १. ४. ४५. {-मन}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
सी	-मन		सीमन

१. २. १०. १. ४. ४६. {-रेज़}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
रँग	-रेज़		रँगरेज़

१ २. १०. १. ४. ४७. {-ल|ई}

इसके योग से कारण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ→० / विकार होता है। यथा :—

सक० धा०	पप्र०	→	कारण वा० सं०
खुजा (~खुज)	-ल|ई		खुजल|ई

१. २. १०. १. ४. ४८. {-वन|ई}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथाः—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० स०
पधरा	-वन|ई		पधरावन|ई
पहरा	-वन|ई		पहरावन|ई

१. २. १०, १ ४. ४९. {-वान}

इसके योग से कर्मवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है । यथा —

अक० धा०	पप्र०	→	कर्म वा० सं०
पक	-वान		पकवान

१ २. १०. १. ४. ५०. {-वार|ग्रा}

इसके योग से भाव वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ग्राँ → ग्र / विकार होता है । यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
बाँट (∼बट)	-वार|ग्रा		-बटवार|ग्रा

१. २ १० १ ४. ५१. {-वाह|ग्रा}

इसके योग से कर्तृ वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ग्रा → ० / विकार होता है । यथा.—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
चरा (∼चर)	वाह|ग्रा		चरवाह|ग्रा

१. २. १०. १. ४. ५२ {-वइय|ग्रा}

इसके योग से कर्तृ वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ग्रा → ग्र / , / ए → इ / , / ई → इ / , / ग्रो → उ / तथा / ऊ → उ / विकार होते हैं । यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
रख	-वइय|ग्रा		रखवइय|ग्रा
गा (∼ग)	-वइय|ग्रा		गवइय|ग्रा
दे (∼दि)	-वइय|ग्रा		दिवइय|ग्रा
ले (∼लि)	-वइय|ग्रा		लिवइय|ग्रा
पी (∼पि)	-वइय|ग्रा		पिवइय|ग्रा
खो (∼खु)	-वइय|ग्रा		खुवइय|ग्रा
छू (∼छु)	-वइया|ग्रा		छुवइय|ग्रा

१. २. १०. १ ४. ५३ {-स|आ}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होना है। यथा:—

सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
घिस	-स|आ		घिस्स|आ

१. २. १०. १. ४ ५४. {-हट}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
	आ	-हट		आहट
	गुर्रा	-हट		गुर्राहट
	मुसकरा	-हट		मुसकराहट
	गडगडा	-हट		गडगडाहट
	झनझना	-हट		झनझनाहट
	कडकडा	-हट		कडकडाहट
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
	बुला	-हट		बुलाहट
	उकसा	-हट		उकसाहट

१. २. १०. १. ५. क्रिया विशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न संज्ञा प्रातिपदिक

१. २. १०. १. ५. १. {-अत}

इसके योग से भाव वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा·—

क्रि० वा०	पप्र०	→	भाव वा० स०
जरूर	-अत		जरूरत

१. २. १० १. ५. २. {-इय|आ}

इस के योग से सबध वाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	सबध वा० सं०
खडखड़	-इय|आ		खड़खडिया|आ 'खड खड करने वाला वाहन'

१. २. १०. १. ५. ३. {-इश}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा·—

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पैदा	-इश		पैदाइश

१.२ १०.१ ५.४. {-इंग}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
पैंक	-इ ग		पैंकिग 'पैंक करना'

१.२ १०.१.५ ५. {-कार}

इसके योग से कर्तृवाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	कर्तृ वा० स०
पेश	-कार		पेशकार

१.२.१०.१.५.६. {-ग\|ई} / -ग\|ई∞-यग\|ई /

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
रोज़	-ग|ई		रोजग|ई
पेश	-ग|ई		पेशग|ई

/ -यग|ई / सपरिवर्तक का योग / जुदा / तथा / अदा / क्रिया विशेषणो के पश्चात् होता है। इस प्रकार यह सपरिवर्तक रूप-प्रतिबधित है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
जुदा	-यग|ई		जुदायग|ई
अदा	-यग|ई		अदायग|ई

१.२.१०.१.५.७. {-गार}

इसके योग से भाववाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० स०
रोज़	-गार		रोज़गार

१.२.१०.१.५ ८ {-बीन}

इसके योग से करण वाचक संज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ऊ → उ / विकार होता है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	करण वा० स०
दूर (∼दुर)	-बीन		दुरबीन

१.२.१०.१.५.९. {-वार}

इसके योग से भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा—

क्रि० वि०	पप्र०	→	भाव वा० सं०
पैदा	-वार		पैदावार

१. २. १०. २ सर्वनाम प्रातिपदिक

१. २ १०. २. १ सर्वनाम तथा प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न सर्वनाम प्रातिपदिक

१ २ १०. २ १ १ {-अस}

इस परप्रत्यय के योग से परस्परता वाचक सर्वनाम प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

सर्व०	पप्र०	→	परस्परता वा० सर्व
आप	-अस		आपस

सूचना (१०) हिन्दी मे केवल यही एक परप्रत्यय है जिसके योग से उक्त सर्वनाम प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। इसके अतिरिक्त और परप्रत्यय नही है जिनसे सर्वनाम प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हो।

१. २. १०. ३ विशेषण प्रातिपदिक

१ २. १०. ३. १. संज्ञा तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २. १०. ३. १. १. {-अड्डी}

अनु० ना० सं०	पप्र०	→	वि
फिस	-अड्डी		फिसड्डी

१. २. १०. ३. १ २. {-अड़}

अनु० वा० स०	पप्र०	→	वि०
फू	-अड़		फूअड

१. २. १०. ३. १. ३. {-अल}

इसके योग से / व → य / तथा / पूँछ → पुच्छ / विकार होते है। यथा.—

स०	पप्र०	→	वि०
घाव (~घाय)	-अल		घायल
पूँछ (~पुच्छ)	-अल		पुच्छ

१. २. १०. ३. १. ४. {-अस्वी}

स०	पप्र०	→	वि०
तप	-अस्वी		तपस्वी
यश	-अम्वी		यशस्वी
तेज	-अस्वी		तेजस्वी
पय	-अस्वी		पयस्वी

सूचना (११) जब उक्त प्रातिपदिक सज्ञा के रूप मे प्रयुक्त होते हैं तो ये प्राति-
पदिक / -अस्व|ई / परप्रत्यय से व्युत्पन्न माने जाएँगे।

१. २. १०. ३. १. ४. **{-अंग आ}**

इसके योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा :—

स०	पप्र०	→	वि०
ताड़ (~तड)	-अग|आ		तडग|आ

१. २. १०. ३. १. ५. **{-अंदाज}**

स०	पप्र०	→	वि०
तीर	-अदाज		तीरदाज़
गोल आ|	-अदाज़		गोलदाज़
दस्त	-अदाज़		दस्तदाज़

१. २. १०. ३. १. ६ **{-आ}**

स०	पप्र०	→	वि०
एकतरफ (~इकतरफ)	-आ		इकतरफ़ा
दो तरफ (~दुतरफ)	-आ		दुतरफ़ा

१. २. १०. ३. १. ७. **{आई}**

स०	पप्र०	→	वि०
दुनिय|आ|	-आई		दुनियाई

इसके योग मे / ऊ → उ / विकार होता है। यथा :—

पूरब (~पूरब)	-आई		पुरबाई

१. २. १०. ३ १. ८. **{-आ,ऊ}**

स०	पप्र०	→	वि०
पडित	-आऊ		पडिताऊ

इसके योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा :—

आग|आ| (~अग)	-आऊ		अगाऊ

१. २ १०. ३. १ ९. **{-आड़ी}**

इसके योग मे / ए → इ / विकार होता है। यथा :—

स०	पप्र०	→	वि०
खेल (~खिल)	-आडी		खिलाडी

सूचना—(१२) जब प्रातिपदिक का प्रयोग सज्ञा प्रातिपदिक के रूप मे होता है तो / -आड|ई / परप्रत्यय माना जायगा।

१. २. १०. ३ १. १०. {-आती}

सं०	पप्र०	→	वि०
घर	-आती		घराती
बर	-आती		बराती

सूचना—(१३) जब इन प्रातिपदिको का प्रयोग सज्ञा के रूप मे होगा तो / -आत|ई / परप्रत्यय माना जायगा।

१ २ १० ३ १ ११. {-आन|आ}

स०	पप्र०	→	वि०
साल	-आन|आ		सालान|आ
मर्द	-आन|आ		मर्दान|आ
जन	-आन|आ		जनान|आ
दोस्त	-आन|आ		दोस्तान|आ
लीडर	-आन|आ		लीडरान|आ
बेवकूफ़	-आना		बेवकूफ़ान|आ

इसके योग मे / ऊ → उ / विकार होता है। यथा :—

हिंदू (~हिंदु)	-आन|आ	हिंदुआन|आ

१. २. १०. ३. १. १२. {-आनी}

स०	पप्र०	→	वि०
जिस्म	-आनी		जिस्मानी
रूह	-आनी		रूहानी
बर्फ	-आनी		बर्फ़ानी

१. २. १०. ३. १. १३. {-आमी}

स०	पप्र०	→	वि०
आग|आ|	-आमी		आगामी

१. २. १०. ३ १. १४ {-आर}

स०	पप्र०	→	वि०
गिरफ़्त	-आर		गिरफ्तार

इसके योग मे / आ→अ / तथा / ऊ→उ / विकार होते हैं। यथा :—

गाँव	(~गँव)	-आर	गँवार
दूध	(~दुध)	-आर	दुधार

१.२.१०.३.१ १५. {-आर|ई}

इसके योग मे / आ→अ / विकार होते है। यथा:—

सं०		प्र०	→	वि०
काजर	(∼कजर)	-आर|ई		कजरार|ई

१.२.१०.३.१.१६. {-आल|आ}

इसके योग मे / ऊ→उ / तथा / मिट्ट→मटिय / विकार होते हैं। यथा:—

सं०		प्र०	→	वि०
घूँघर	(∼घुँघर)	-आल|आ		घुँघराल|आ
मिट्ट|ई|	(∼मटिय)	-आल|आ		मटियाल|आ

१.२.१०.३.१ १७. {-आलू}

सं०	प्र०	→	वि०
झगड|आ|	-आलू		झगडालू
दय|आ|	-आलू		दयालू
श्रद्ध|आ|	-आलू		श्रद्धालू
क्रिप|आ|	-आलू		क्रिपालू

१.२ १०.३.१ १८. {-आवर}

सं०	प्र०	→	वि०
जोर	-आवर		जोरावर
दिल	आवर		दिलावर
दस्त	-आवर		दस्तावर 'दस्त करने वाली'

१ २.१०.३ १.१९. {-इक}

सं०	प्र०	→	वि०
इस्लाम	-इक		इस्लामिक
रोम	-इक		रोमिक

इसके योग मे / ए→ऐ / , / उ→औ / , / ई→ऐ / , / इ → के / आदि विकार होते है। यथा :—

वेद	(∼वैद)	-इक	वैदिक
पुराण	(∼पौराण)	-इक	पौराणिक
नीत|इ	(∼नैत)	-इक	नैतिक
दिन	(∼दैन)	-इक	दैनिक

१. २. १०. ३. १. २०. {-इम}

स०	पप्र०	→	वि०
अतर	-इम		अतरिम

१. २. १०. ३ १. २१. {-इयल}

इसके योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र०	→	वि०
दाड|ई| (∼दड)	-इयल		दडियल

१. २. १० ३. १. २२. {-इया}

सं०	पप्र०	→	वि०
केसर	-इया		केसरिया
दूध	-इया		दूधिया
लँगोट	-इया		लँगोटिया
सौत	-इया		सौतिया
अलसेट	-इया		अलसेटिया
दिवाल|आ|	-इया		दिवालिया
कौड|ई|	-इया		कौडिया

इसके योग मे / आ→अ / तथा / ऊ→उ / विकार होते है। यथा —

पान|ई| (∼पन)	-इया		पनिया
पूरब (∼पुरब)	-इया		पुरबिया

सूचना (१४) जब / दिवालिया / जैसे विशेषण प्रातिपदिको का प्रयोग संज्ञा के रूप मे होता है तो / -इय|आ / परप्रत्यय माना जायगा इस प्रकार / दिवालिया- / सज्ञा प्रातिपदिक होगा।

१. २. १०. ३. १. २३. {-इल}

सं०	पप्र०	→	वि०
तौंद	-इल		तौंदिल
बोझ	-इल		बोझिल
पक	-इल		पकिल
धूम	-इल		धूमिल
फेन	-इल		फेनिल

१. २. १०. ३. १. २४. {-इस्ट}

सं०	पप्र०	→	वि०
बुद्ध	-इस्ट		बुद्धिस्ट

संघ	-इस्ट		संघिस्ट
सनातन	-इस्ट		सनातनिस्ट

१. २. १०. ३. १ २५. {-इंदा}

स०	पप्र०	→	वि०
शर्म	-इंदा		शर्मिदा
बाश	-इंदा		बाशिंदा

१ २. १०. ३. १. २६. {-ई}

स०	पप्र०	→	वि०
देश	-ई		देशी
फौज	-ई		फौजी
नक़ल	-ई		नक़ली
पाखड	-ई		पाखडी
अगूर	-ई		अगूरी
लालच	-ई		लालची
बनावट	-ई		बनावटी
पैदायश	-ई		पैदायशी

१. २. १०. ३. १. २७ {-ईदा}

सं०	पप्र०	→	वि०
रंज	-ईदा		रजीदा
पेच	-ईदा		पेचीदा
पोश	-ईदा		पोशीदा

१. २. १०. ३. १. २८. {-ईन}

सं०	पप्र०	→	वि०
रग	-ईन		रगीन
शौक	-ईन		शौकीन
मल	-ईन		मलीन
नमक	-ईन		नमकीन

१. २. १०. ३. १. २९. {-ईना}

स०	पप्र०	→	वि०
पश्म	-ईना		पश्मीना 'मुलायम ऊनी कपडा'

सूचना (१५) जब इसका प्रयोग संज्ञा प्रातिपदिक के रूप मे होता है तो / ईन|आ / परप्रत्यय माना जायगा ।

१. २. १०. ३. १. ३०. **{-ईय}**

स०	पप्र०	→	वि०
सराहन|आ|	-ईय		सराहनीय

१. २. १०. ३. १ ३१. **{-ईल|आ}**

सं०	पप्र०	→	वि०
खर्च	-ईल|आ		खर्चील|आ
फुर्त|ई|	-ईल|आ		फुर्तील|आ
चमक	-ईल|आ		चमकील|आ
ज़हर	-ईल|आ		ज़हरील|आ
चटक	-ईल|आ		चटकील/आ
महक	-ईल|आ		महकील|आ
भडक	-ईल|आ		भडकील|आ
नखर/आ	-ईल|आ		नखरील|आ

इसके योग मे / आ → अ / , / आॅ → अ / , / अं → अँ / , /ओ → उ/ तथा / त → ० / विकार होते है । यथा —

लाज	(~लज)	-ईल|आ	लजील|आ
गाँठ	(~गँठ)	-ईल|आ	गँठील|आ
कॉट|आ|	(~कट)	-ईल|आ	कटील|आ
पान|ई|	(~पन)	-ईल|आ	पनील|आ
ककड	(~कँकड)	-ईल|आ	कँकडील|आ
रग	(~रँग)	-ईल|आ	रँगील|आ
नोक	(~नुक)	-ईल|आ	नुकील|आ
पत्थर	(~पत्थर)	-ईल|आ	पथरील|आ

१. २. १०. ३. १. ३२. **{-ऊ}**

सं०	पप्र०	→	वि०
पेट	-ऊ		पेटू
बाज़ार	-ऊ		बाजारू
घर	-ऊ		घरू

१.२.१०.३ १.३३. {-ऊन}

सं०	पप्र०	→	वि० (कर्तृ वा०)
बात	-ऊन		बातून

१.२.१०.३.१.३४. {ऊनी}

सं०	पप्र०	→	वि०
बात	-ऊनी		बातूनी

१.२.१०.३.१ ३५ {-एर}

सं०	पप्र०	→	वि०
दिल	-एर		दिलेर

१ २ १०.३, १ ३६ {-एर|आ}

इसके योग से / आ→अ /, / ऊ→उ /, / औ→उ / तथा / र→० / विकार होते है। यथा.—

सं०		पप्र०	→	वि०
काम	(∼कम)	-एर|आ		कमेर|आ
चाच|आ|	(∼चच)	-एर|आ		चचेर|आ
माम|आ|	(∼मम)	-एर|आ		ममेर|आ
फूफ|आ|	(∼फुफ)	-एर|आ		फुफेर|आ
मौस|आ|	(∼मुस)	-एर|आ		मुसेर|आ
चित्र	(∼चित)	-एर|आ		चितेर|आ

१ २ १०.३.१.३७. {-एल|आ}

सं०		पप्र०	→	वि०
सौत		-एल|आ		सौतेल|आ

इसके योग से / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

बाघ	(∼बघ)	-एल|आ		बघेल|आ

१.२ १०.३.१.३८ {-एलू}

सं०	पप्र०	→	वि०
घर	-एलू		घरेलू

१ २ १० ३.१ ३९ {-ऐत}

सं०	पप्र०	→	वि०
बरछ|आ|	-ऐत		बरछैत

इसके योग से / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

कमान	(~कमन)	-ऐत	कमनैत
डाक|आ|	(~डक)	-ऐत	डकैत
लाठ|ई|	(~लठ)	-ऐत	लठैत
अखाड|आ|	(~अखड)	-ऐत	अखड़ैत

१. २. १०. ३. १. ४०. {-ऐनी}

सं०	पप्र०	→	वि०
पुश्त	-ऐनी		पुश्तैनी

१ २. १०. ३. १ ४१. {-ऐल}

सं०	पप्र०	→	वि०
गुस्स|आ|	-ऐल		गुस्सैल

इसके योग से / आ → अ / , / ऊ → उ / तथा / ओ → उ / विकार होते है। यथा —

दाग	(~दग)	-ऐल	दगैल
दाँत	(~दँत)	-ऐल	दँतैल
दूध	(~दुध)	-ऐल	दुधैल
चोट	(~चुट)	-ऐल	चुटैल

१. २ १०. ३. .१ ४२. {-ऐल|आ}

सं०	पप्र०	→	वि०
बन	-ऐल|आ|		बनैल|आ
कस	-ऐल|आ		कसैल|आ
विश	-ऐल|आ		विशैल|आ

इसके योग से / आ → अ / , / ऊँ → उ / तथा / मिट्ट—मट / विकार होते है। यथा —

घाम	(~घम)-	ऐल|आ	घमैल|आ
मूँछ	(~मुछ)	-ऐल|आ	मुछैल|आ
मिट्ट|ई|	(~मट)	-ऐल|आ	मटैल|आ

१ २. १०. ३ १. ४३. {-ओड़|आ}

इसके योग से / गप्प → गप / विकार होता है। यथा—

सं०	पप्र०	→	वि०
गप्प (~गप)	-ओड़|आ		गपोड़|आ

१. २. १०. ३. १. ४४. {-ओल|आ}

इसके योग से / ध्य ← झ / विकार होता है। यथा:—

सं०	पप्र० →	वि०
मध्य (~मझ)	ओल|आ	मझोल|आ

१ २. १०. ३. १. ४५ {-ओँ}

स०	पप्र० →	अनिश्चित परिमाण वा० वि०
ढेर	-ओँ	ढेरोँ
मन	-ओँ	मनोँ

१. २ १०. ३ १. ४६. {-औन|आ}

स०	पप्र० →	वि०
घिन	-औन|आ	घिनौन|आ

१. २. १०. ३. १. ४७. {-और|आ}

इसके योग से / ई→इ / विकार होता है। यथा —

स०	पप्र० →	वि०
बीज (~बिज)	-और|आ	बिजौर|आ 'बीज वाला'

१. २ १० ३. १ ४८ {-औँह|आ}

इसके योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

स०	पप्र० →	वि०
लालच (~ललच)	-औँह|आ	ललचौँह|आ

१ २. १०. ३ १ ४९. {-कम}

इसके योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

स०	पप्र० →	वि०
भार (~भर)	-कम	भरकम

१ २ १०. ३ १ ५०. {-कान|आ}

इसके योग से / च→० / विकार होता है। यथा:—

स०	पप्र० →	वि०
बच्च|आ| (~बच)	-कान|आ	बचकान|आ

१. २. १०. ३. १ ५१. {-कार}

स०	पप्र० →	वि०
सलाह	-कार	सलाहकार

तन्त्र	-कार		तन्त्रकार
पैरवी	-कार		पैरवीकार
शिल्प	-कार		शिल्पकार

१. २. १० ३ १. ५२. {-की}

स०	पप्र०	→	वि०
सन	-की		सनकी
झक	-की		झक्की

सूचना (१६) जब इन विशेषण प्रातिपदिको का व्यवहार संज्ञा की भाँति होता है तो वहाँ / -क|ई / परप्रत्यय माना जायगा।

१. २. १०. ३. १. ५३. {-कू}

इसके योग से / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

स०	पप्र०	→	वि०
नाक (~नक)	-कू		नक्कू

१. २. १०. ३ १. ५४. {-खेज}

सं०	पप्र०	→	वि०
हैरत	-खेज़		हैरतखेज़
जर	-खेज़		ज़रखेज़
सनसनी	-खेज़		सनसनीखेज़

१. २. १०. ३. १. ५५. {-ख़ोर}

स०	पप्र०	→	वि०
घूस	-खोर		घूसखोर
हराम	-ख़ोर		हरामखोर
सूद	-ख़ोर		सूदख़ोर
चुगल|ई|	-ख़ोर		चुग़लखोर

१. २ १०. ३ १. ५६. {-गार}

स०	पप्र०	→	वि०
मदद	-गार		मददगार
गुनाह	-गार		गुनाहगार
खिदमत	-गार		ख़िदमतगार
परहेज़	-गार		परहेज़गार

१. २. १०. ३ १. ५७ {-गीन}

सं०	पप्र०	→	वि०
गम	-गीन		गमगीन

१. २. १०. ३. १. ५८ {-ची}

सं०	पप्र०	→	वि०
मदक	-ची		मदकची
अफीम	-ची		अफीमची

सूचना (१७) इन प्रातिपदिको का प्रयोग जब सज्ञाओ के रूप मे होगा, तो / -च|ई / परप्रत्यय माना जायगा ।

१ २ १० ३. १. ५६ {-ज़ाद|आ}

सं०	पप्र०	→	वि०
अमीर	-जाद|आ		अमीरजाद|आ
हराम	-जाद|आ		हरामजाद|आ

१. २ १०. ३. १. ६० {-ड़ी}

इसके योग से /आँ→अ / विकार होता है । यथा —

सं०	पप्र०	→	वि०
भंग	-डी		भगडी
गाँज|आ| (∾गज)	-डी		गजडी

सूचना (१८) जब इन प्रातिपदिको का प्रयोग संज्ञा के रूप मे होगा, तो / -ड|ई / परप्रत्यय माना जायगा ।

१. २. १०. ३. १. ६१. {-दार}

सं०	पप्र०	→	वि०
फल	-दार		फलदार
रस	-दार		रसदार
चमक	-दार		चमकदार
कल	-दार		कलदार
शान	-दार		शानदार
पत्ती	-दार		पत्तीदार
रुई	-दार		रुईदार

इसके योग से / न→ ँ / विकार होता है । यथा.—

जमीन (∾जमीँ)	-दार		जमीँदार

१. २. १०. ३. १. ६२. {-दाँ}

स०	पप्र०	→	वि०
कानून	-दाँ		कानूनदाँ
फ़ारसी	-दाँ		फारसीदाँ
कद्र	-दाँ		कद्रदाँ
अँगरेजी	-दाँ		अँगरेज़ीदाँ
साइंस	-दाँ		साइंसदाँ

सूचना (१९) जब इन प्रातिपदिकों का प्रयोग संज्ञा के रूप में होगा, तो / -द|आँ / पर प्रत्यय माना जायगा।

१. २. १०. ३. १. ६३. {-नाक}

स०	पप्र०	→	वि०
दर्द	-नाक		दर्दनाक
खौफ	-नाक		खौफनाक
खतर|आ|	-नाक		खतरनाक

१. २. १०. ३. १. ६४ {-नुमा

स०	पप्र०	→	वि०
किश्त	-नुमा		किश्तनुमा
बटन	-नुमा		बटननुमा
राह	-नुमा		राहनुमा

१. २. १०. ३ १. ६५ {-बाज़}

सं०	पप्र०	→	वि०
पतंग	-बाज		पतंगबाज़
बम	-बाज		बमबाज
ट्रिक	-बाज		ट्रिकबाज
रंडी	-बाज		रंडीबाज

इसके योग में / आ → ए / विकार होता है। यथा —

दगा (~दगे)	-बाज		दगेबाज़
धोका (~धोके)	-बाज़		धोकेबाज

१. २. १०. ३. १. ६६. {-बीन}

स०	पप्र०	→	वि०
तमाश|आ|	-बीन		तमाशबीन

१. २. १० ३. १. ६७. {-मती}

स०	पप्र०	→	वि०
बास	-मती		बासमती 'सुगन्ध युक्त'
मधु	-मती		मधुमती

१ २. १०. ३ १. ६८. {-मंद}

स०	पप्र०	→	वि०
दौलत	-मद		दौलतमंद
अक्ल	-मद		अक़्लमद
हुनर	-मद		हुनरमद
गरज़	-मद		गरज़मद

१. २ १०. ३ १. ६९. {-रेज़}

इसके योग से / ऊन→ऊँ / विकार होता है। यथा.—

स०	पप्र०	→	वि०
खून (~खूँ)	-रेज		खूँरेज़

१. २. १०. ३ १ ७०. {-ल|आ}

इसके योग से / आ→अ / , / ई→इ / , / ऊ→उ / विकार होते है।
यथा :—

स०	पप्र०	→	वि०
लाड़	-ल|आ		लाडल|आ
माँझ (~मँझ)	-ल|आ		मँझल|आ
आग|आ| (~अग)	-ल|आ		अगल|आ
पीछ|आ| (~पिछ)	-ल|आ		पिछल|आ
धूँध (~धुँध)	-ल|आ		धुँधल|आ

१. २. १०. ३ १. ७१. {-ली}

सं०	पप्र०	→	वि०
कागो	-ली		कागोली

सूचना (२०) जब इस प्रातिपदिक का प्रयोग संज्ञा के रूप मे होगा, तो / -उ|ई / परप्रत्यय माना जायगा।

१ .२. १०. ३. १. ७२. {-वर}

स०	पप्र०	→	वि०
दिल	-वर		दिलवर

नाम	-वर	नामवर
ताकत	-वर	ताक़तवर
ताज़वर	-वर	नाजवर

१. २. १०. ३. १. ७३. {-वंत}

सं०	पप्र० →	वि०
शील	-वंत	शीलवत
गुण	-वंत	गुणवत
कला	-वंत	कलावंत
धन	-वत	धनवत

१. २. १० ३. १ ७४. {-वा}

इसके योग से / ई→अ / विकार होता है। यथा—

सं०	पप्र० →	वि०
पीछ|आ| (~पछ)	-वा	पछवा

१. २. १०. ३ १. ७५. {-वान}

स०	पप्र० →	वि०
बल	-वान	बलवान
धन	-वान	धनवान
गुण	-वान	गुणवान
रूप	-वान	रूपवान
मेहर	-वान	मेहरवान

१. २. १०. ३. १. ७६ {वार}

सं०	पप्र० →	वि०
उम्मेद	-वार	उम्मेदवार
कसूर	-वार	कसूरवार

१. २. १०. ३. १. ७७. {-वी}

स०	पप्र० →	वि०
माया	-वी	मायावी
मेधा	-वी	मेधावी

सूचना (२१) जब इन प्रातिपदिको का प्रयोग सज्ञा के रूप मे होता है, तो / -व\|ई / परप्रत्यय माना जायगा।

१ २ १०. ३ १ ७८ {-शुदा}

स०	पप्र०	→	वि०
शादी	-शुदा		शादीशुदा

१. २. १०. ३ १. ७९ {-सार}

स०	पप्र०	→	वि०
खाक	-सार		खाकसार
मिलन	-सार		मिलनसार

१ २ १०. ३ १. ८०. {-हर|आ} / -हर|आ∞-हल|आ /

इसके योग से / आ→अ / तथा /·ओ→उ / विकार होते है। यथा.—

स०		पप्र०	→	वि०
काक|आ|	(∼कक)	-हर|आ		ककहर|आ
सोन|आ|	(∼सुन)	-हर|आ		सुनहर|आ

/ -हल|आ / सपरिवर्तक का योग रूप-प्रतिबधित है। इसका योग केवल निम्न रूप के साथ होता है। इस योग मे / ऊ→उ / विकार होता है।

स०		पप्र०	→	वि०
रूप	(∼रुप)	-हल|आ		रुपहल|आ

१. २ १० ३. १. ८१ {-हार}

स०	पप्र०	→	वि०
मरन|आ|	-हार		मरनहार
देन|आ|	-हार		देनहार
होन|आ|	-हार		होनहार
देखन|आ|	-हार		देखनहार

१. २. १० ३. २ **सर्वनाम तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न**

१ २ १०. ३ २. १. {-ई}

परस्परता वा० सर्व०	-पप्र०	→	वि०
आपस			आपसी

१ २ १०. ३. २. २. {-तन|आ}

इसके योग से / यह→इ / , / वह→उ / , / जो→जि / तथा /कौन→कि/ विकार होते है। यथा —

सर्व०		पप्र०	→	परिमाण वा० वि०
यह	(∼इ)	-तन|आ		इतन|आ

वह	(~उ)	-तन|आ	उतन|आ
जो	(~जि)	-तन|आ	जितन|आ
कौन	(~कि)	-तन|आ	कितन|आ

१. २. १०. ३ २ ३. {-स|आ}

इसके योग से / यह→ऐ / , / वह→वै / , / जो→जै / तथा / कौन→कै / विकार होते है। यथा —

सर्व०		पप्र० →	प्रकार वा० वि०
यह	(~ऐ)	-स|आ	ऐस|आ
वह	(~वै)	-स|आ	वैस|आ
जो	(~जै)	-स|आ	जैस|आ
कौन	(~कै)	-स|आ	कैस|आ

सूचना (२२) यह परसर्ग से भिन्न प्रत्यय है। परसर्ग के द्वारा समता सूचक सबध व्यक्त होता है, जैसे, / राम का सा /, परन्तु उक्त सर्वनामो के साथ प्रकार वाचक विशेषण के रूप मे प्रयुक्त है।

१. २ १०. ३. ३. **विशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न**

१. २ १० ३. ३. १. {-आ}

इसके योग से दशा वाचक विशेषण व्युत्पन्न होता है। यथा.—

वि०	पप्र० →	दशा वा० वि०
मौजूद	-आ	मौजूदा

१. २ १०. ३ ३ २ {-आई}

इसके योग से अपूर्णांक सख्यावाचक विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा.—

वि०	पप्र० →	अपूर्णांक सख्या वा० वि०
चौथ|आ|	-आई	चौथाई

इसके योग से / तीन → तिह / विकार होता है। यथाः—

तीन	(~तिह)	-आई	तिहाई

१. २. १०. ३ ३ ३. {-आकी}

इसके योग से अकेलार्थक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

वि०	पप्र० →	अकेलार्थक वि०
एक	-आकी	एकाकी

१.२ १० ३ .३ ४ {-आय|आ}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण व्युत्पन्न होते है। यथा·—

वि०	पप्र०	→	सबध वा० वि०
पर	-आय|आ		पराय|आ

इस योग मे / बाकी → बक / तथा / सवा → सव / विकार होते है। यथा:—

बाकी	(∼बक)	-आय|आ	बकाय|आ
सवा	(∼सव)	-आय|आ	सवाय|आ

१.२.१० ३ ३ ५. {-ई}

इसके योग मे सबधवाचक विशेषण व्युत्पन्न होता है। यथा.—

वि०	पप्र०	→	सबध वा० वि०
निज	-ई		निजी

१.२ १०.३ ३.६. {-ईज़ा}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण व्युत्पन्न होता है। यथा.—

वि०	पप्र०	→	सबध वा० वि०
पाक	-ईज़ा		पाकीजा

१.२.१०.३.२ ७ {-ईन}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→	सबध वा० वि०
कम	-ईन		कमीन

१.२.१०.३.३.८. {-ऊ}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण प्रानिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा:—

वि०	पप्र०	→	सबध वा० वि०
गँवार	-ऊ		गँवारू

१.२.१० ३.३ ९ {-ऊट|आ}

इसके योग से अनादर वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→	अनादर वा० वि०
काल|आ| (∼कल)	-ऊट|आ		कलूट|आ

१. २ १० ३ ३. १० {-ए} / -ए∞-अम∞-आम /

इस परप्रत्यय के योग से पहाडे वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है, जैसे . / सात अट्ठे छप्पन / मे / अट्ठे / विशेषण / आठ / संख्या वाचक विशेषण मे / -ए / परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न है। इस प्रकार सख्या वाचक विशेषणो के पश्चात् इस प्रत्यय के योग से पहाडे वाचक विशेषण व्युत्पन्न होते है। इस प्रत्यय के अन्तर्गत उक्त सपरिवर्तक रूप-प्रतिबधित है। / -ए / प्रधान का योग / दो, तीत, चार, पॉच, छै, सात, आठ, नौ / सख्यावाचक विशेषणो से पश्चात् होता है तथा इस योग मे / दो → दून / , / तीन → ति / / चार → चौके / , / पाँच → पज / , / छै → छक्क / , / सात → सत्त / , / आठ → अट्ठ / तथा / नौ → नम्म / विकार होते है। / -अम / का योग केवल एक के पश्चात् होता। / -आम / का योग / दस, सवा, ढाई / के पश्चात् होता है तथा / दस → दह / , / सवा → सव / तथा / ढाई → ढ / विकार होते है। यथा.—

वि०		पप्र०	→	पहाडे वा० वि०
दो	(~दून)	-ए		दूने
तीन	(~ति)	-ए		तिए
चार	(~चौक)	-ए		चौके
पॉच	(~पज)	-ए		पजे
छैं	(~छक्क)	-ए		छक्के
सात	(~सत्त)	-ए		सत्ते
आठ	(~अट्ठ)	-ए		अट्ठे
नौ	(~नम्म)	-ए		नम्मे
एक		-अम		एकम
दस	(~दह)	-आम		दहाम
सवा	(~सव)	-आम		सवाम
ढाई	(~ढ)	-आम		ढाम

१. २. १०. ३. ३ ११. {-एड}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा.—

वि०		पप्र०	→	संबध वा० वि०
आध|आ|	(~अध)	-एड		अधेड

१. २. १०. ३. ३. १२. {एर|आ}

इसके योग के आधिक्य वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा.—

वि०	पप्र०	→	आधिक्य वा० वि०
बहुत	-एर|आ		बहुतेर|आ
घन|आ|	-एर|आ		घनेर|आ

१. २. १०. ३. ३. १३. {-एल|आ}

इसके योग मे सबध वाचक विशेपण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ए → अ / तथा / दो → दुक / विकार होते है । यथा —

वि०		पप्र०	→	सबध वा० वि०
एक	(∼अक)	-एल|आ		अकेल|आ
दो	(∼दुक)	-एल|आ		दुकेल|आ
नव		-एल|आ		नवेल|आ

सूचना (२३) यद्यपि / दुकेला / रूप समुदाय का द्योतक है तथा / अकेला / एकाकी व्यक्ति का । तो भी दोनो मे एक सामान्य लक्षण यह है कि ये रूप अपने मूल विशेषण से सबध रखते है । अतः इन विशेषणो को सबध वाचक कहना अधिक समीचीन है । कुछ, दोनो को सबध वाचक विशेषण मानते है परन्तु उक्त विभेद के कारण इन्हे समुदाय वाचक विशेषण नही कहा जा सकता ।

१ २. १०. ३. ३ १४. {-ओँ}

इसके योग से समुदाय वाचक तथा अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । यथा —

	वि०		पप्र०	→	समुदाय वा० वि०
(१)	चार		-ओँ		चारोँ
	आठ		-ओँ		आठोँ
	चालीस		-ओँ		चालीसोँ
	दस		-ओँ		दसोँ
	बीस		-ओँ		बीसोँ

इसके योग मे / दो → दोन / विकार होता है । यथाः—

	दो	(∼दोन)	-ओँ		दोनोँ

	वि०	पप्र०	←	अनिश्चित सख्या वा० वि०
(२)	लाख	-ओँ		लाखोँ
	पचास	-ओँ		पचासोँ

करोड	-ओं	करोडों
हजार	-ओं	हजारों
अनेक	-ओं	अनेकों
सैकड|आ|	-ओं	सैकडों

/ -इयों / सपरिवर्तक का योग वैकल्पिक है। यह वैकल्पिक प्रयोग निम्न विशेषणों के साथ प्रायः होता है।

वि०	पप्र०	→ अनिश्चित सख्या वा० वि०
बीस	-इयों	बीसियों
दस	-इयों	दसियों
पच्चीस	-इयों	पच्चीसियों

१. २ १०. ३. ३. १५. {-औठ\|आ}

इसके योग से प्रथम प्रसव सबधी विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→ प्रथम प्रसव वा० वि०
पहल|आ|	-औठ|आ	पहलौठ|आ

१. २. १०. ३. ३. १६. {-कर}

इसके योग से सबध वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / स→० / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→ सबंध वा० वि०
स्फुट (~फुट)	-कर	फुटकर 'मुतफर्रिक'

१. २. १०. ३ ३. १७. {-कार}

इसके योग से सबध वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है। यथाः—

वि०	पप्र०	→ सबध वा० वि०
बद	कार	बदकार

१. २ १० ३. ३ १८. {-ट्ठ\|आ}

इसके योग से समवेत वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ए→इ / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र०	→ समवेत वा० वि०
एक (~इक)	-ट्ठ|आ	इकट्ठ|आ

१. २. १०. ३ ३. १९. {-तम}

इसके योग से तमवंत तुलना वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है।
यथा:—

वि०	पप्र० →	तमवत वि०
गूढ	-तम	गूढतम
सुन्दर	-तम	सुन्दरतम
लघु	-तम	लघुतम
निकट	-तम	निकटतम

१. २. १०. ३. ३ २०. {-तर}

इसके योग से तरवत तुलना वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है।
यथा —

वि०	पप्र० →	तरवत वि०
अधिक	-तर	अधिकतर
कोमल	-तर	कोमलतर
ज्यादा	-तर	ज्यादातर
बद	-तर	बदतर
गुरु	-तर	गुरुतर

१. २. १०. ३. ३. २१. {-ती}

इसके योग से परिमाण वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है
यथा:—

वि०	पप्र० →	परिमाण वा० वि०
कम	-ती	कमती

१. २. १०. ३. ३. २२. {-नी}

इसके योग स्त्रीवाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ई→इ / विकार होता है। यथा —

पुरुष वा० वि०	पप्र० →	स्त्री वा० वि०
मायावी (~मायावि)	-नी	मायाविनी
मेधावी (~मेधावि)	-नी	मेधाविनी
तपस्वी (~तपस्वि)	-नी	तपस्विनी
तेजस्वी (~तपस्वि)	-नी	तेजस्विनी
यशस्वी (~यशस्वि)	-नी	यशस्विनी

१. २. १०. ३ ३. २३. {-ल|आ}

इसके योग से सबध वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

वि०	पप्र० →	सबध वा० वि०
पर	-ल|आ	परल|आ

इसके योग मे / ई→इ / विकार होना है। यथा.—

नीच|आ| (~निच)	-ल|आ	निचल|आ

१. २. १० ३. ३ २४ {-लौत|आ}

इसके योग से एकमात्र सतति वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होता है तथा इस योग मे / ए→इ / विकार होता है। यथा —

वि०	पप्र० →	एकमात्र सतति वा० वि०
एक (~इक)	-लौत|आ	इकलौत|आ

१ २ १०. ३ ३. ३५ {-व|आँ} / -व|आँ∞-ट|आ∞-थ|आ∞-ल|आ∞ -सर|आ /

इसके योग से क्रमवाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। उक्त सपरिवर्तको का योग रूप-प्रतिबधित है। / -व|आँ / प्रधान का योग / पाँच, सात, आठ, नौ, दस / तथा / दस / के आगे की सख्या के पश्चात् होता है। / -ट|आ / का योग / छै / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / छै→छ / विकार होता है। / -थ|आ / का योग / चार / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / चार←चौ / विकार होता है। / -ल|आ / का योग / एक / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / एक→पह / विकार होता है। / -सर|आ / का योग / दो, तीन / के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / दो→दू / तथा / तीन→ती / विकार होते हैं। यथा —

वि०	पप्र० →	क्रम वा० वि०
पाँच	-व|आँ	पाँचव|आँ
सात	-व|आँ	सातव|आँ
आठ	-व|आँ	आठव|आँ
नौ	-व|आँ	नौव|आँ
दस	-व|आँ	दसव|आँ
सौ	-व|आँ	सौव|आँ
पचास	-व|आँ	पचासव|आँ
छै (~छ)	-ट|आँ	छट|आँ

सूचना (२४) / छटा / का / छटवाँ / रूप भी हिन्दी मे प्रयुक्त होता है। इस दृष्टि से यह प्रातिपदिक / -व|ऑ / प्रधान के अन्तर्गत स्वीकार किया जा सकता है।

चार (~चौ)	-थ|आ	चौथ|आ
एक (~पह)	-ल|आ	पहल|आ
दो (~दू)	-सर|आ	दूसर|आ
तीन (~ती)	-सर|आ	तीसर|आ

सूचना (२५) / दूसरा / तथा / तीसरा / के दूसरे रूप / दूजा / और / तीजा / प्रान्तिक है। प्रामाणिक हिन्दी मे वे रूप प्रयुक्त नही होते।

१ २. १०. ३. ३ २६. {-शुदा}

इसके योग से सबधवाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा.—

वि०	पप्र० →	सबध वा० वि०
तय	-शुदा	तयशुदा
गुम	-शुदा	गुमशुदा

१. २. १० ३. ३ २७. {-हर|आ}

इसके योग से प्रकार या परत वाचक विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / ए→इ /, / ओ→उ /, / तीन→ति /, / ऑ→अ / तथा / आ→अ / विकार होते है। यथा —

वि०	पप्र० →	प्रकार या परत वा० वि०
एक (~इक)	-हर|आ	इकहर|आ
दो (~दु)	-हर|आ	दुहर|आ
तीन (~ति)	-हर|आ	तिहर|आ
पॉच (~पच)	-हर|आ	पचहर|आ
सात (~सत)	-हर|आ	सतहर|आ

१ २. १०. ३ ४. धातु तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २. १०. ३. ४ १. {-अक्कड़}

इसके योग से / ऊ→उ / तथा / ई→इय / विकार होते है। यथा·—

(१)

अक० धा०	पप्र० →	कर्तृ वा० वि०
घूम (~घुम)	-अक्कड	घुमक्कड़
कूद (~कुद)	-अक्कड़	कुदक्कड़

(२) सक० धा० पप्र० → कर्तृ वा० वि०

भूल	(~भुल)	-अक्कड	भुलक्कड
पी	(~पिय)	-अक्कड	पियक्कड

१ २.१० ३ ४. २ {-अट}

सक० धा०	पप्र०	कर्तृ वा० वि०
चूस	-अट	चूसट

१. २. १०. ३ ४ ३ {-अट|ई}

इसके योग से / आ→अउ / विकार होता है। यथा.—

सक० धा०		पप्र०	→	कर्तृ वा० वि०
खा	(~खउ)	-अट|ई		खउअट|ई

१ २.१० ३. ४ ४. {-अंकू}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
उड	-अकू		उड कू

१ २ १० ३. ४. ५. {-अंछू}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
उड	-अछू		उड छू

१ २ १०. ३. ४ ६ {-अंत}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
रट	-अत		रटत
गढ	-अत		गढ त

१. २ १०. ३. ४. ७. {-आऊ} / -आऊ~-ऊ /

(१)

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
उपज	-आऊ		उपजाऊ
बिक	-आऊ		बिकाऊ
चल	-आऊ		चलाऊ
टिक	-आऊ		टिकाऊ

(२)

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
जड	-आऊ		जडाऊ
धर	-आऊ		धराऊ
गढ	-आऊ		गढाऊ

इस योग मे / ओ → उ / विकार होता है। यथा —

जोत (∼जुत)	-आऊ	जुताऊ

/ -ऊ / सपरिवर्तक का प्रयोग ध्वन्यात्मक दृष्टि से प्रतिबंधित है। इसका योग उन धातुओ के पश्चात् होता है जिनके अन्तिमाक्षर / आ / स्वरान्त होते है। यथा —

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
कमा	∼-ऊ		कमाऊ
खा	∼-ऊ		खाऊ
उडा	∼ ऊ		उडाऊ

१.२ १०.३ ४ ८ {-आक}

अक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० वि०
तैर	-आक		तैराक

१ २.१०.३ ४ ९ {आका}

अक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० वि०
लड	-आका		लडाका
उड	-आका		उडाका

३.२.१०.३ ४ १०. {आकू}

अक० धा०	पप्र०	→	कर्तृ वा० वि०
लड	-आकू		लडाकू

१.२ १०.३.४.११. {-आसू}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
गिरा	-आसू		गिरासू
मर	-आसू		मरासू

१.२ १० ३ ४ १२ {-इयल}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
सड	-इयल		सडियल
अड	-इयल		अडियल
मर	-इयल		मरियल

१ २.१०.३.४.१३ {-इया}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
बढ	-इया		बढिया

घट	-इया	घटिया
उड	-इया	उडिया
खस	-इया	खसिया

सूचना (२६) / खसिया /ऻका / खस्सी / वैकल्पिक रूप भी हिन्दी मे प्रयुक्त होता है।

१. २. १०. ३. ४. १४ {-ईल|आ}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
सज	-ईल|आ		सजील|आ
हँस	-ईल|आ		हँसील|आ
फब	-ईल|आ		फबील|आ
सक० धा०	पप्र०	→	वि०
डस	-ईल|आ		डसील|आ
कस	-ईल|आ		कसील|आ

इसके योग मे / आ → अ / विकार होता है। यथा:—

काट	(~कट)	-ईल|आ	कटील|आ

१ २ १० ३. ४ १५. {ईदँ|आ}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
चुन	-ईदँ|आ		चुनीदँ|आ

१. २ १०. ३ ४. १६. {-ऊ}

इसके योग मे / अ → आ / विकार होता है। यथा·—

(१)	अक० धा०		पप्र०	→	वि०
	चल	(~चाल)	-ऊ		चालू
	अकड		-ऊ		अकडू
(२)	सक० धा०		पप्र०	→	वि
	टाल		-ऊ		टालू
	रट	(~रट्ट्)	-ऊ		-रट्टू

१ २. १०. ३ ४ १७. {-एतर}

इसके योग से / आ → अ / विकार होता है। यथा:—

सक० धा०		पप्र० →	वि०
माँग	(~मँग)	-एतर	मँगेतर 'माँगा हुआ'

१.२.१०.३ ४ १८ {-एर|आ}

इसके योग से / ऊ → उ / विकार होता है। यथाः—

सक० धा०		पप्र०	→	वि०
लूट	(∼लुट)	-एर|आ		लुटेर|आ

१.२.१० ३ ४.१९. {-ऐत}

(१)	अक० धा०		पप्र०	→	वि०
	लड		-ऐत		लडैत

इसके योग से / ए → इ / विकार होता है। यथा —

(२)	सक० धा०		पप्र०	→	वि०
	फेक	(∼फिक)	-ऐत		फिकैत

१.२ १०.३ ४.२०. {-ऐल}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
बिगड	-ऐल		बिगडैल
खँग	-ऐल		खँगैल
छट	-ऐल		छटैल
दब	-ऐल		दबैल

१.२.१०.३ ४.२१. {-ओड़|आ}

अक० धा०		पप्र०	→	वि०
हँस		-ओड|आ		हँसोड|आ

इसके योग से / आ → अ / विकार होता है। यथा —

भाग	(∼भग)	-ओड|आ		भगोड|आ

सूचना (२७) / हँसोडा, भगोडा / के / हँसोड, भगोड / रूप विकल्प से प्रयुक्त होते हैं।

१.२.१० ३.४ २२. {-ओर}

इसके योग से / आ→अ / विकार होता है। यथा·—

सक० धा०		पप्र०	→	वि०
चाट	(∼चट)	-ओर		चटोर

सूचना (२८) / चटोर / का / चटोरा / रूप भी प्रयुक्त होता है।

१ २.१० ३.४.२३. {-औँह|आ}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
उकस	-औँह|आ		उकसौँह|आ
उलझ	-औँह|आ		उलझौँह|आ

१. २. १०. ३. ४. २४. {-अउअल}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
बुझ	-अउअल		बुझउअल
मिच	-अउअल		मिचउअल
ठस	-अउअल		ठसउअल

१. २. १०. ३. ४. २५. {-अउआ}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
उठ	-अउआ		उठउआ
चल	-अउआ		चलउआ

सूचना (२९) / चलउआ / का वैकल्पिक रूप / चलतउआ / भी प्रयुक्त होता है।

१. २. १०. ३. ४. २६. {-कार}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
जान	-कार		जानकार

१. २. १०. ३. ४. २७. {-की}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
बक	-की		बक्की

१. २. १०. ३. ४. २८. {-रूक}

अक० धा०	पप्र०	→	वि०
जाग	-रूक		जागरूक

१. २. १०. ३. ४. २९. {-वती}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
पा	-वती		पावती

१. २. १०. ३. ४. ३०. {-वन\|आ}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
सुहा	-वन|आ		सुहावन|आ

लुभा	-वन|आ	लुभावन|आ
डरा	-वन|आ	डरावन|आ

१. २. १० ३ ४. ३१. {-वाँ}

(१)

अक० धा०	पप्र० →	वि०
ढल	-वाँ	ढलवाँ
कट	-वाँ	कटवाँ
जुड	-वाँ	जुडवाँ

(२)

सक० धा०	पप्र० →	वि०
चुन	-वाँ	चुनवाँ

१ २. १०. ३. ४ ३२. {-वइय\|आ}

इससे योग से /ओ→उ/, /ए→इ/, /ई→इ/ विकार होते है। यथाः—

(१)

अक० धा०	पप्र० →	वि०
सौ (∼सु)	-वइय|आ	सुवइय|आ
चल	-वइय|आ	चलवइय|आ

(२)

सक० धा०	पप्र० →	वि०
खो (∼खु)	-वइय|आ	खुवइय|आ
चिन	-वइय|आ	चिनवइय|आ
रख	-वइय|आ	रखवइय|आ
ले (∼लि)	-वइय|आ	लिवइय|आ
दे (∼दि)	-वइय|आ	दिवइय|आ
पी (∼पि)	-वइय|आ	पिवइय|आ

१. २. १०. ३. ४. ३३. {-सू}

सक० धा०	पप्र० →	कर्तृ वा० वि०
घिस	-सू	घिस्सू

१ २. १०. ३. ४ ३४. {-ह}

सक० धा०	पप्र०	→	वि०
आरामदे	-ह		आरामदेह
तकलीफदे	-ह		तकलीफदेह

सूचना (३०) इस परप्रत्यय का योग समासो मे होता है, जैसा कि उक्त उदाहरणो से प्रकट है।

१ २. १०. ३. ५. क्रियाविशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २ १०. ३. ५. १ **{-आवर}**

क्रि० वि०	पप्र०	→	वि०
गिर्द	-आवर		गिर्दावर

१. २. १०. ३ ५ २. **{-इत}**

क्रि० वि०	पप्र०	→	वि०
एकत्र	-इत		एकत्रित

सूचना (३१) / -इत / परप्रत्यय का योग सामान्यत सस्कृत प्रातिपदिको मे होता है। इस प्रकार यह सस्कृत प्रत्यय है। परन्तु सस्कृत व्याकरण के अनुसार / एकत्र / क्रियाविशेषण मे इसका योग नही होता, हिन्दी मे इसकी यौगिक प्रक्रिया उपलब्ध है। अत इसे यहाँ स्थान दिया है।

१. २. १० ३ ५ ३ **{-ई}**

क्रि० वि०	पप्र०	→	वि०
ऊपर	-ई		ऊपरी
बाहर	-ई		बाहरी
अटपट	-ई		अटपटी

१ २. १० ३ ५. ४. **{-बाज}**

इसके योग से / ई→० / विकार होता है। यथा —

क्रि० वि०	पप्र०	→	कर्तृ वा० वि०
जल्दी (∾जल्द)	-बाज		जल्दबाज

१ २ १० ४. {धातु}

१ २ १० ४. १. नाम-धातु

मूल धातुओ को छोडकर हिन्दी मे कुछ धातुएँ सज्ञा, विशेषण आदि प्रातिपदिको से व्युत्पन्न होती है। सस्कृत तथा हिन्दी व्याकरणो मे इस प्रकार की धातुओ

को नाम-धातु कहा गया है। हिन्दी मे ये धातुएँ सामान्यत. / -आ / परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होती है। इसके अन्तर्गत कई सपरिवर्तक है। नीचे इस प्रत्यय का विवरण प्रस्तुत किया जाता है।

१.२ १०.४.१ १ {-आ} / -आ∞-इया∞-ना∞-रा∞-० /

/ -आ / प्रधान परप्रत्यय का योग सज्ञा, विशेषण तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिको के पश्चात् होता है। यथा —

(१)	सं०	पप्र०	→	नाम-धा०
	धिन	-आ		घिना
	रिस	-आ		रिसा
	लहर	-आ		लहरा
	शरम	-आ		शरमा
	दुख	-आ		दुखा
	दफन	-आ		दफना
	नजर	-आ		नजरा

इसके योग से / आ→अ /, / ई→इ /, / ओ→ऊ /, / क→० / तथा / त→० / विकार होते है। यथा.—

लाज (∾लज)	-आ	लजा
आलस (∾अलस)	-आ	अलसा
काजल (∾कजल)	-आ	कजला
काम (∾कम)	आ	कमा
बात (∾बत)	-आ	बता
लालच (∾ललच)	-आ	ललचा
पीर (∾पिर)	-आ	पिरा
कीचड (∾किचड)	-आ	किचडा
लोभ (∾लुभ)	-आ	लुभा
ठोकर (∾ठुकर)	-आ	ठुकरा
चक्कर (∾चकर)	-आ	चकरा
पत्थर (∾पथर)	-आ	पथरा

(२)	वि०	पप्र०	→	नाम-धा०
	मस्त	-आ		मस्ता
	अलग	-आ		अलगा
	गरम	-आ		गरमा

नरम	-आ	नरमा
कड़ |आ|	-आ	कड़आ
तुतल|आ|	-आ	तुतला
बौर|आ|	-आ	बौरा
हकल|आ|	-आ	हकला
लँगड|आ|	-आ	लँगडा
चिकन|आ|	-आ	चिकना
दुहर|आ|	-आ	दुहरा

इसके योग से / आ → अ /, / ई → इ /, / ईल → इयर / , / ऊ → उ /, / च → ० / तथा / ट → ० / विकार होते है। यथाः—

आकुल	(∼अकुल)	-आ	अकुला
मीठ|आ|	(∼मिठ)	-आ	मिठा
पील|आ|	(∼पियर)	-आ	पियरा
बूढ|आ|	(∼बुढ)	-आ	बुढा
कच्च|आ|	(∼कच)	-आ	कचा
खट्ट|आ|	(∼खट)	-आ	खटा

(३)	क्रि० वि०	पप्र०	→	नाम-धा०
	धँमधम	-आ		धमधमा
	चमचम	-आ		चमचमा
	धड़धड	-आ		धडधड़ा
	जगमग	-आ		जगमगा
	झलमल	-आ		झलमला
	तडतड	-आ		तडतडा
	सनसन	-आ		सनसना
	बडबड़	-आ		बडबडा
	थरथर	-आ		थरथरा
	मचमच	-आ		मचमचा
	खटखट	-आ		खटखटा
	गुदगुदा	-आ		गुदगुदा

इसके योग से / ई → इय / तथा / एँ → इँय / विकार होते है। यथाः—

सीसी	(∼सिसिय)	-आ	सिसिया
मेंमें	(∼मिमिँय)	-आ	मिमिँया

सूचना (३२) / |आ| / तथा / -आ / मे अन्तर यह है कि / |आ| / विभक्ति-प्रत्यय है और / आ / परप्रत्यय। / -आ / के लगने से / |आ| / लुप्त हो जाता है।

/ -इया / सपरिवर्तक का योग रूप प्रतिबधित है। यह केवल कुछ ही सज्ञा तथा विशेषण प्रातिपदिको से युक्त होता है। इसके योग से / आ→अ /, / ग→० / तथा / मिट्ट→मट / विकार होते है। यथा.—

(१)	स०	पप्र०	→	नाम धा०
	आग (∼अग)	-इया		अगिया
	लात (∼लत)	-इया		लतिया
	हाथ (∼हथ)	-इया		हथिया
	पपड|ई|	-इया		पपडिया
	घिग्घ|ई| (∼घिघ)	-इया		घिघिया
	मिट्ट्|ई| (∼मट)	-इया		मटिया
(२)	वि०	पप्र०	→	नाम-धा०
	साठ (∼सठ)	-इया		सठिया

/ -ना / सपरिवर्तक का योग रूप प्रतिबधित है। इसका योग केवल निज-वाचक / आप / सर्वनाम के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा.—

सर्व०	पप्र०	→	नाम-धा०
आप (∼अप)	-ना		अपना

/ -रा / सपरिवर्तक का योग रूप प्रतिबधित है। इसका योग केवल / बात / सज्ञा प्रातिपदिक के पश्चात् होता है तथा इस योग मे / आ→अ / विकार होता है। यथा:—

स०	पप्र०	→	नाम धा०
बात (∼बत)	-रा		बतरा 'बात करना'

/ -० / सपरिवर्तक की स्थिति भी रूप प्रतिबधित है। इसकी स्थिति केवल उन सज्ञा प्रातिपदिको मे परिलक्षित होती है जिनका प्रयोग धातुओ के रूप मे भी होता है। उदाहरणार्थ / मोह के कारण मुक्ति सभव नही / तथा / वह सभी को मोहती है / वाक्यो मे / मोह / क्रमश सज्ञा प्रातिपदिक तथा धातु के रूप मे व्यवहृत है। इस स्थिति मे शून्य परप्रत्यय माना जाता है तथा / मोह / सज्ञा को आधार मान-कर / मोह / नाम-धातु व्युत्पन्न मानी जायगी। कुछ उदाहरण इस प्रकार है --

स०	पप्र०	→	नाम धा०
फुसकर	-०		फुसकर
फुंकार	-०		फुंकार
विचार	-०		विचार
हुंकार	-०		हुंकार
गुंजार	-०		गुंजार
ललकार	-०		ललकार
छल	-०		छल
छींट	-०		छींट
फूँक	-०		फूँक
थूक	-०		थूक
दुत्कार	-०		दुत्कार
धिक्कार	-०		धिक्कार
पहचान	-०		पहचान
पुकार	-०		पुकार
पुचकार	-०		पुचकार
फटकार	-०		फटकार
लताड़	-०		लताड
भोग	-०		भोग
झगड/आ/	-०		झगड

१. २. १०. ४ २. सकर्मक धातु

हिन्दी मे अकर्मक धातुओ से सकर्मक धातु व्युत्पन्न होते है। इस प्रक्रिया मे अकर्मक धातुओ के पश्चात् शून्य प्रत्यय की स्थिति है तथा आन्तरिक ध्वनि-परिवर्तन होते है। प्रेरणार्थक धातुओ को एक प्रकार से सकर्मक कहा जा सकता है। परन्तु वहाँ प्रेरणा की प्रधानता के कारण उन्हे हम सकर्मक नही कहते, आगे के विवेचन मे इस बात का उल्लेख किया जायगा। इस प्रसग मे सकर्मक धातुओ से अभिप्राय उन धातुओ से है जिनकी प्रधानता सकर्मकत्व द्योतन मे है।

१. २. १०. ४. २. १ {-०}

यह परप्रत्यय अकर्मक धातुओ से सकर्मक धातुएँ सिद्ध करता है तथा इस प्रक्रिया मे / अ→आ /, / अ→आँ /, / अट→आड /, / इ→ई /, / इ→ईँ /, / इ→ए /, / इ→एँ /, / इक→एच /, / इल→ईँ /, / उ→ऊ /, / उ→ओ /

, / उल→ओ / , / ऊ→ओ / , / ऊट→ओड / , / हु→ख / , / टूट→तोड / ध्वनि-परिवर्तन होते है । यथा —

/ अ→आ /

अक० क्रि०	पप्र०	→	सक० क्रि०
उखड (∼उखाड)	-०		उखाड़
उतर (∼उतार)	-०		उतार
उबल (∼उबाल)	-०		उबाल
उजड़ (∼उजाड)	-०		उजाड
कट (∼काट)	-०		काट
टँक (∼टाँक)	-०		टाँक
निकल (∼निकाल)	-०		निकाल
फँस (∼फाँस)	-०		फाँस
बँध (∼बाँध)	-०		बाँध
बिगड (∼बिगाड)	-०		बिगाड
निकस (∼निकास)	-०		निकास
अक० क्रि०	पप्र०	→	सक० क्रि०
सुधर (∼सुधार)	-०		सुधार
तक (∼ताक)	-०		ताक
टल (∼टाल)	-०		टाल

/ अ→आँ /

अक० क्रि०	पप्र०	→	सक० क्रि०
गठ (∼गाँठ)	-०		गाँठ
ढक (∼ढाँक)	-०		ढाँक
ठस (∼ठाँस)	-०		ठाँस

/ अट→आड /

फट (∼फाड)	-०		फाड

/ इ→ई /

चिर (∼चीर)	-०		चीर
छिन (∼छीन)	-०		छीन
पिट (∼पीट)	-०		पीट
पिस (∼पीस)	-०		पीस

/ ई→ईं /

भिच (~भींच)	-०	भींच
खिच (~खींच)	-०	खींच
मिच (~मींच)	-०	मींच
सिच (~सींच)	-०	सींच

/ इ→ए /

गिर (~गेर)	-०	गेर
घिर (~घेर)	-०	घेर
दिख (~देख)	-०	देख
फिर (~फेर)	-०	फेर
मिट (~मेट)	-०	मेट

/ इ→एँ /

फिक (~फेंक)	-०	फेंक

/ इक→एच /

बिक (~बेच)	-०	वेच

/ इल→ईं /

सिल (~सीं)	-०	सीं

/ उ→ऊ /

कुट (~कूट)	-०	कूट
लुट (~लूट)	-०	लूट
भुन (~भून)	-०	भून
गुँथ (~गूँथ)	-०	गूँथ
पुर (~पूर)	-०	पूर

/ उ→ओ /

घुल (~घोल)	-०	घोल
तुल (~तोल)	-०	तोल
जुड (~जोड़)	-०	जोड
रुक (~रोक)	-०	रोक
ठुक (~ठोक)	-०	ठोक
खुल (~खोल)	-०	खोल
मुड (~मोड़)	-०	मोड
घुट (~घोट)	-०	घोट

/ उल→ओ /

धुल (~धो)	-०	धो

/ उ→ओ /

सूख (~सोख)	-०	सोख

/ उट→ओड /

फूट (~फोड)	-०	फोड
टूट (~तोड)	-०	तोड
छूट (~छोड)	-०	छोड

/ ह→ख /

रह (~रख)	-०	रख

/ टूट→तोड /

टूट (~तोड)	-०	तोड

१ २.१० ४ ३ प्रेरणार्थक धातु

अकर्मक तथा सकर्मक धातुओ से प्रेरणार्थक धातुएँ व्युत्पन्न होती है। ये सभी प्रेरणार्थ धातुएँ सकर्मक कही जा सकती है परन्तु इस प्रसग मे इन्हे सकर्मक न कहकर प्रेरणार्थक इसलिए कहा जाता हे कि इनके द्वारा प्रेरणा अभिव्यक्त होती है। उदाहरणार्थ / रस्सी कटती है /, / वह रस्सी काटती है /, / वह रस्सी कटाती है / वाक्यो मे / कट /, / काट / तथा / कटा / धातुएँ द्रष्टव्य है। इनमे / कट / अकर्मक धातु है जिससे / काट / तथा / कटा / धातुएँ व्युत्पन्न है। इन दोनो को / कट / के सकर्मक रूप कह सकते है परन्तु इनमे अन्तर है। / काट / मे वह भाव नही जो / कटा / मे है। / काट / क्रिया का कर्ता स्वय है जबकि / कटा / मे वह प्रत्यक्ष नही, वह काटने की क्रिया अन्य व्यक्ति से कराता है। इस प्रकार सकर्मक तथा प्रेरणार्थक धातुओ मे कार्यगत अन्तर है। प्रेरणार्थक धातुएँ वे है जिनका कर्त्ता प्रत्यक्षतः क्रिया नही करता अपितु किसी अन्य के माध्यम से उस क्रिया का सम्पादन कराता है अथवा उसके कराने की आकाक्षा प्रकट करता है। हिन्दी मे प्रेरणार्थक धातुएँ दो प्रकार की है —प्रथम प्रेरणार्थक तथा द्वितीय प्रेरणार्थक। प्रथम प्रेरणार्थक वह धातु है जिसमे कर्त्ता अपने से भिन्न व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। उदाहरणार्थ / बच्चे को दूध पिलाओ / वाक्य मे अध्यरित कर्त्ता किसी अन्य व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। द्वितीय प्रेरणार्थक धातु वह है जिसमे कर्त्ता किसी दूसरे दूसरे व्यक्ति के माध्यम से तीसरे व्यक्ति या पक्ष को क्रिया करने के लिए बाध्य करता है। उदाहरणार्थ / बच्चे को दूध पिलवाओ / वाक्य मे

कोई व्यक्ति किमी दूसरे व्यक्ति के माध्यम मे तीमरे व्यक्ति को दूध पिलाने के लिए बाध्य करता है।

हिन्दी मे / आ, जा, भास, रुक, हो, मुहा, समा, मोह, विचार, चाह, पा, फरमा, त्याग, बखान, हथिया / धातुओ से प्रेरणार्थक रूप व्युत्पन्न नही होते, इनका व्यवहार केवल अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओ का होता है।

१. २. १०. ४ ३ १. प्रथम प्रेरणार्थक

१ २ १०. ४ ३. १ १ {-आ} / -आ∞-ओ∞-ला ∞-०,

/ -आ / प्रधान प्रत्यय का प्रयोग अकर्मक एव सकर्मक धातुओ के पश्चात् होता है तथा इसके योग से प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते हैं। यथा :—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
	उग	-आ		उगा
	उठ	-आ		उठा
	उड	-आ		उडा
	औट	-आ		औटा
	खप	-आ		खपा
	गल	-आ		गला
	चढ	-आ		चढा
	चल	-आ		चला
	चिढ	-आ		चिढा
	चिन	-आ		चिना
	चौंक	-आ		चौंका
	छिप	-आ		छिपा
	जम	-आ		जमा
	जल	-आ		जला
	झुक	-आ		झुका
	डर	-आ		डरा
	तैर	-आ		तैरा
	पहुँच	-आ		पहुँचा
	बढ	-आ		बढा
	बन	-आ		बना
	भौंक	-आ		भौंका

लड	-आ	लड़ा
सज	-आ	सजा
हिल	-आ	हिला
रस	-आ	रसा
अटक	-आ	अटका
उचक	-आ	उचका
उपज	-आ	उपजा
उमड़	-आ	उमड़ा
उलझ	-आ	उलझा
कसक	-आ	कसका
टहल	-आ	टहला
ठहर	-आ	ठहरा
तरस	-आ	तरसा
पधर	-आ	पधरा
चमक	-आ	चमका
धमक	-आ	धमका

इसके योग से / आ→अ /, / ई→इ /, / ऊ→उ /, / ए→इ / तथा / ओ→उ / विकार होते है। यथा:—

अक० धा०		पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
खाँस	(~खँस)	-आ		खँसा
झाँक	(~झँक)	-आ		झँका
हाँप	(~हँप)	-आ		हँपा
हार	(~हर)	-आ		हरा
जाग	(~जग)	-आ		जगा
खीज	(~खिज)	-आ		खिजा
झींक	(~झिँक)	-आ		झिँका
बीत	(~बित)	-आ		बिता
छींक	(~छिँक)	-आ		छिँका
सीज	(~सिज)	-आ		सिजा
ऊभ	(~उभ)	-आ		उभा
ऊब	(~उब)	-आ		उबा
कूद	(~कुद)	-आ		कुदा

घूम	(~घुम)	-आ	घुमा
छूट	(~छुट)	-आ	छुटा
फूल	(~फुल)	-आ	फुला
सूख	(~सुख)	-आ	सुखा
गूँज	(~गुँज)	-आ	गुँजा
थूक	(थू~थुक)	-आ	थुका
फूँक	(~फुँक)	-आ	फुँका
छूट	(~छुट)	-आ	छुटा
खेल	(~खिल)	-आ	खिला
चेत	(~चित)	-आ	चिता
लेट	(~लिट)	-आ	लिटा
सोच	(~सुच)	-आ	सुचा

(२) सक० धा० पप्र० → प्रथम प्रे० धा०

सक० धा०	पप्र०		प्रथम प्रे० धा०
कर	-आ		करा
गढ़	-आ		गढ़ा
गिन	-आ		गिना
चर,	-आ		चरा
जन	-आ		जना
डस	-आ		डसा
धोँक	-आ		धोँका
पढ़	-आ		पढ़ा
बुन	-आ		बुना
मढ	-आ		मढा
रँग	-आ		रँगा
लिख	-आ		लिखा
सुन	-आ		सुना
उगल	-आ		उगला
निगल	-आ		निगला
पकड़	-आ		पकड़ा
पहन	-आ		पहना
समझ	-आ		समझा

इसके योग से / आ → अ /, / ई → इ /, / ए → इ /, / ऊ → उ / तथा / ओ → उ / विकार होते हैं। यथा —

बुहार	(~बुहर)	-आ	बुहरा
सराह	(~सरह)	-आ	सरहा
उजाड	(~उजड)	-आ	उजडा
उखाड	(~उखड)	-आ	उखडा
उबाल	(~उबल)	-आ	उबला
उभार	(~उभर)	आ	उभरा
निखार	(~निखर)	-आ	निखरा
लाँघ	(~लँघ)	-आ	लँघा
आँज	(~अँज)	-आ	अँजा
चाख	(~चख)	-आ	चखा
अलाप	(~अलप)	-आ	अलपा
कात	(~कत)	-आ	कता
चाट	(~चट)	-आ	चटा
छाप	(~छप)	-आ	छपा
नाच	(~नच)	-आ	नचा
जीत	(~जित)	-आ	जिता
छींट	(~छिँट)	-आ	छिँटा
खींच	(~खिच)	-आ	खिचा
चीर	(~चिर)	-आ	चिरा
छीन	(~छिन)	-आ	छिना
पीस	(~पिस)	-आ	पिसा
गेर	(~गिर)	-आ	गिरा
घेर	(~घिर)	-आ	घिरा
छेद	(~छिद)	-आ	छिदा
टेक	(~टिक)	-आ	टिका
पूछ	(~पुछ)	-आ	पुछा
भूल	(~भुल)	-आ	भुला
सूँघ	(~सुँघ)	-आ	सुँघा
फूँक	(~फुँक)	-आ	फुँका
कूट	(~कुट)	-आ	कुटा

गूँथ	(~गुँथ)	-आ	गुँथा
पूर	(~पूर)	-आ	पुरा
मूँद	(~मुँद)	-आ	मुँदा
ओढ	(~उढ)	-आ	उढा
बटोर	(~बटुर)	-आ	बटुरा
फोड	(~फुड)	-आ	फुडा
तोड	(~तुड)	-आ	तुडा
छोड	(~छुड)	-आ	छुडा
खोद	(~खुद)	-आ	खुदा
खोल	(~खुल)	-आ	खुला
गोद	(~गुद)	-आ	गुदा
घोट	(~घुट)	-आ	घुटा
ठोक	(~ठुक)	-आ	ठुका
रोक	(~रुक)	-आ	रुका

सूचना (३३) / छुटा / प्रेरणार्थक की व्युत्पत्ति / छूट / अकर्मक क्रिया से से है न कि सकर्मक क्रिया / छोड / से जिसका प्रेरणार्थक रूप / छुडा / होता है । / छूट / , / फूट / , / टूट / क्रियाएँ अकर्मक है इनमे आन्तरिक परिवर्तन होकर / छोड / , / फोड / , / तोड / सकर्मक क्रियाएँ बनती है । फिर इनके प्रथम प्रेरणार्थक रूप / छुडा / , / फुडा / , / तुडा / व्युत्पन्न होते है । परन्तु अकर्मक / छूट / का रूप / छुटा / हिन्दी मे सामान्यत. प्रयोग मे मिलता है शेष रूपो के प्रयोग सामान्य प्रचलन मे नही हैं ।

/ -ओ / सपरिवर्नक का योग रूप-प्रतिबधित है जिसका व्यवहार निम्न प्रातिपदिको के साथ होता है तथा इस योग मे / ई→इ / और / ऊ→उ / विकार होते है । यथा .—

अक० धा०		पप्र०	→ प्रथम प्रे० धा०
भीग	(~भिग)	-ओ	भिगो
डूब	(~डुब)	-ओ	डुबो

सूचना (३४) / भिगा / तथा / डुबा / धातुएँ / भिगो / तथा / डुबो / के वैकल्पिक रूप है, हिन्दी मे इनका भी व्यवहार होता है ।

/ -ला / सपरिवर्तक का योग भी रूप-प्रतिबधित है जिसका योग निम्न प्रातिपदिको मे होता है तथा इस योग मे / इ→इ / , / ऐ→इ / , / ऊ→उ / , / आ→इ / , / ओ→उ / , / ए→इ / विकार होते है । यथा —

	अक० धा०	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
(१)	जी (~जि)	-ला		जिला
	बैठ (~बिठ)	-ला		बिठला
	चू (~चु)	-ला		चुला
	रो (~रु)	-ला		रुला
	सो (~सु)	-ला		सुला

	सक० धा०	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
(२)	कह	-ला		कहला
	खा (~खि)	-ला		खिला
	पी (~पि	-ला		पिला
	दे (~दि)	-ला		दिला
	देख (~दिख)	-ला		दिखला
	सीख (~सिख)	-ला		सिखला
	छू (~छुला)	-ला		छुला

सूचना (३५) / बिठला / , / दिखला / , / सिखला / के दूसरे रूप / बिठा / , / दिखा / , / सिखा / है इनका प्रयोग भी हिन्दी मे होता है ।

हिन्दी मे कुछ ऐसी अकर्मक एव सकर्मक धातुएँ है जिनका प्रयोग प्रेरणार्थक धातुओ के रूप मे भी होता है परन्तु उनमे कोई यौगिक अश नही जुडता । इस दशा मे आधारभूत धातुओ से सिद्ध प्रेरणार्थक धातुओ मे / -० / सपरिवर्तक की स्थिति स्वीकार की गई है । ये धातुएँ प्राय / आ / स्वरान्त वाली है । यथा —

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
	घबरा	-०		घवरा
	पछता	-०		पछता
	कजला	-०		कजला
	घिना	-०		घिना
	पथरा	-०		पथरा
	रिसा	-०		रिसा
	लजा	-०		लजा
	लहरा	-०		लहरा
	शर्मा	-०		शर्मा
	कचा	-०		कचा
	गरमा	-०		गरमा
	धमधमा	-०		धमधमा
	चमचमा	-०		चमचमा
	धडधडा	-०		धडधडा
	झलमला	-०		झलमला
	जगमगा	-०		जगमगा
	थरथरा	-०		थरथरा
	मचमचा	-०		मचमचा
	नहा (~निल्हा)	-०		निल्हा
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	प्रथम प्रे० धा०
	कुम्हला	-०		कुम्हला
	गँवा	-०		गँवा
	लठिया	-०		लठिया
	लुभा	-०		लुभा
	शरमा	-०		शरमा
	अलगा	-०		अलगा
	दुखा	-०		दुखा
	सता	-०		सता
	जता	-०		जता
	कमा	-०		कमा
	दफना	-०		दफना

लतिया	-०	लतिया
चिकना	-०	चिकना
तिहरा	-०	तिहरा
दुहरा	-०	दुहरा
नरमा	-०	नरमा

१. २ १०. ४. .३. २. द्वितीय प्रेरणार्थक

१ २ १०. ४. ३. २. १. {-वा} / -वा∼-लवा∼-० /

यह परप्रत्यय अकर्मक तथा सकर्मक क्रिया प्रातिपदिको मे लगता है इसके योग से द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है। यथा:—

(१)

अक० धा०	पप्र० →	द्वितीय प्रे० धा०
उग	-वा	उगवा
उठ	-वा	उठवा
उपज	-वा	उपजवा
औट	-वा	औटवा
गल	-वा	गलवा
घट	-वा	घटवा
चौंक	-वा	चौंकवा
जम	-वा	जमवा
दौड	-वा	दौडवा
बिछ	-वा	बिछवा
सम्हल	-वा	सम्हलवा
बदल	-वा	बदलवा

इसके योग से / नह→निल्ह / , / आ→अ / , / ई→इ / , / ऊ→उ / , / ए→इ / तथा / ओ→उ / विकार होते है। यथा —

(१)

नहा (∼निल्ह)	-वा	निल्हवा
खाँस (∼खँस)	-वा	खँसवा
झाँक (∼झँक)	-वा	झँकवा
हार (∼हर)	-वा	हरवा
खीज (∼खिज)	-वा	खिजवा
छीज (∼छिज)	-वा	छिजवा

बीत (~बित)	-वा	बितवा
कूद (~कुद)	-वा	कुदवा
घूम (~घुम)	-वा	घुमवा
सूख (~सुख)	-वा	सुखवा
सूझ (~सुझ)	-वा	सुझवा
खेल (~खिल)	-वा	खिलवा
लेट (~लिट)	-वा	लिटवा
बैठ (~बिठ)	-वा	बिठवा
सोच (~सुच)	-वा	सुचवा

(२) सक० धा० पप्र० → द्वितीय प्रे० धा०

चुन	-वा	चुनवा
घिस	-वा	घिसवा
उगल	-वा	उगलवा
गिन	-वा	गिनवा
बुन	-वा	बुनवा
चर	-वा	चरवा
सुन	-वा	सुनवा

इसके योग से / आ→अ / , / ए→इ / तथा / ओ→उ / विकार होते है।
यथा —

सता (~सत)	-वा	सतवा
जता (~जत)	-वा	जतवा
दफना (~दफन)	-वा	दफनवा
अपना (~अपन)	-वा	अपनवा
चिकना (~चिकन)	-वा	चिकनवा
दुहरा (~दुहर)	-वा	दुहरवा
कमा (~कम)	-वा	कमवा
पछाड (~पछड)	-वा	पछडवा
पहचान (~पहचन)	-वा	पहचनवा
गा (~ग)	-वा	गवा
छा (~छ)	-वा	छवा
खतिया (~खत)	-वा	खतवा

लतिया	(~लत)	-वा	लतवा
खे	(~खि)	-वा	खिवा
ले	(~लि)	-वा	लिवा
ओढ	(~उढ)	-वा	उढवा
खो	(~खु)	-वा	खुवा
बो	(~बु)	वा	बुव
तोड	(~तुड)-	-वा	तुडवा
फोड	(~फुड)	-वा	फुडवा
जोड	(~जुड)	-वा	जुडवा
मोड	(~मुड़)	-वा	मुडवा

कुछ धातुओ के पश्चात् / -आ / का योग होता है। इस योग से व्युत्पन्न रूप वैकल्पिक है।

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	डर	-आ		डरा
	फिसल	-आ		फिसला
	बिछूड	-आ		बिछुडा
	मचल	-आ		मचला
	रेंग	-आ		रेंगा
	चमक	-आ		चमका
	छिटक	-आ		छिटना
	तडप	-आ		तडपा

इसके योग से / आ→इ /, / ई→इ /, / ऊ→उ / तथा / ए→इ / विकार होते है। यथा —

हाँप	(~हँप)	-आ	हँपा
भीग	(~भिग)	-आ	भिगा
छींक	(~छिंक)	-आ	छिंका
फूल	(~फुल)	-आ	फुला
गूँज	(~गुँज)	-आ	गुँजा
थूक	(~थुक)	-आ	थुका
मूत	(~मुत)	-आ	मुता

छूट (~छुट)	-आ		छुटा
चेत (~चित)	-आ		चिता

(२) सक० धा० पप्र० → द्वितीय प्रे० धा०

कर	-आ	करा
कस	-आ	कसा
गढ	-आ	गढा
गिन	-आ	गिना
डस	-आ	डसा
पकड	-आ	पकडा
रँग	-आ	रँगा
लिख	-आ	लिखा

इसके योग से / आ→अ / , / ई→इ / , / ऊ→उ / , / ए→इ / तथा / ओ→उ / विकार होते है। यथा:—

काट (~कट)	-आ	कटा
कात (~कत)	-आ	कता
टाँक (~टँक)	-आ	टँका
टाल (~टल)	-आ	टला
जीत (~जित)	-आ	जिता
खीच (~खिच)	-आ	खिचा
कबूल (~कबुल)	-आ	कबुला
पूछ (~पुछ)	-आ	पुछा
भूल (~भुल)	-आ	भुला
छेद (~छिद)	-आ	छिदा
पेर (~पिर)	-आ	पिरा
खोद (~खुद)	-आ	खुदा
खोल (~खुल)	-आ	खुला
गोद (~गुद)	-आ	गुदा

/ -लवा / सपरिवर्तक का योग विवृत्ताक्षरिक धातुओ के पश्चात् होता है तथा इसके योग से / ई→इ / , / ऊ→उ / , / ओ→उ / , / आ→इ / तथा / ए→इ / विकार होते है। यथा —

(१)	अक० धा०		पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	जी	(~जि)	-लवा		जिलवा
	चू	(~चु)	-लवा		चुलवा
	सो	(~सु)	-लवा		सुलवा
	रो	(~रु)	-लवा		रुलवा
(२)	सक० धा०		पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	खा	(~खि)	-लवा		खिलवा
	पी	(~पि)	-लवा		पिलवा
	छू	(~छु)	-लवा		छुलवा
	दे	(~दि)	-लवा		दिलवा
	धो	(~धु)	-लवा		धुलवा
	सी	(~सि)	-लवा		सिलवा

इसका योग / कह / धातु के पश्चात् भी होता है। यथा —

कह	-लवा	कहलवा

/ -ला / का योग विकल्प रूप से कुछ ही धातुओ के पश्चात् होता है। इस योग मे / ऊ→उ /, / ऐ→इ /, / ए→इ / तथा / ई→इ / विकार होते है। यथा —

(१)	अक० क्रि०		पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	चू	(~चु)	-ला		चुला
	बैठ	(~बिठ)	ला		बिठला
(२)	सक० क्रि०		पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	दे	(~दि)	-ला		दिला
	सी	(~सि)	-ला		सिला
	कह		-ला		कहला

सूचना (३६) उक्त प्रेरणार्थक धातुओ के दूसरे रूप / चुलवा /, / बिठवा / / दिलवा /, / सिलवा /, / कहलवा / अधिक प्रयुक्त होते है, इसीलिए / -ला / का व्यवहार वैकल्पिक है। कुछ ऐसी भी अकर्मक एव सकर्मक धातुएँ है जिनमे कोई प्रत्यय नही लगता और उनका व्यवहार प्रेरणार्थक धातुओ के रूप मे होता है। इस प्रकार आधार भूत धातुओ से द्वितीय प्रेरणार्थक धातुएँ / -० / परप्रत्यय द्वारा सिद्ध होती है। यथा.—

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	घबरा	-०		घबरा
	पछता	-०		पछता
	कजला	-०		कजला
	घिना	-०		घिना
	लजा	-०		लजा
	कचा	-०		कचा
	गरमा	-०		गरमा
	धमधमा	-०		धमधमा
	थरथरा	-०		थरथरा
	मचमचा	-०		मचमचा
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	द्वितीय प्रे० धा०
	कुम्हला	-०		कुम्हला
	लुभा	-०		लुभा
	शरमा	-०		शरमा
	दुखा	-०		दुखा
	दुहरा	-०		दुहरा
	नरमा	-०		नरमा
	दफना	-०		दफना
	अपना	-०		अपना
	खटखटा	-०		खटखटा

सूचना (३७) / आ / स्वरान्त वाली धातुओ मे कुछ ऐसी भी धातुएँ है जिनके पश्चात् / -० / तथा / -वा / का प्रयोग होता है। ऐसी दशा मे ये प्रयोग वैकल्पिक हैं। उदाहरणार्थ / दफ़ना /, / अपना / इत्यादि के द्वितीय प्रेरणार्थक रूप / दफनवा /, / अपनवा / भी प्रयुक्त होते है।

१ २. १० ५. क्रियाविशेषण प्रातिपदिक

१ २ १०. ५. १. संज्ञा तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २ १०. ५. १ १. {-अन} / -अन∞-तन /

सं०	पप्र०	→	क्रि० वि०
कानून	-अन		कानूनन
तकरीब	-अन		तक़रीबन

अन्दाज	-अन	अन्दाजन
कुदरत	-अन	कुदरतन
औसत	-अन	औसतन
आदत	-अन	आदतन

इसके योग मे / मिसाल -> मसल / विकार होता है । यथा —

मिसाल	(~मसल) -अन	मसलन

/ -तन / सपरिवर्तक का योग रूपप्रतिबधित है तथा निम्न सज्ञा प्रातिपदिक के पश्चात् इसका योग होता है । यथा —

स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
इराद|आ|	~-तन		इरादतन

१ २ १०. ५. १. २. {-आक}

यह परप्रत्यय अनुकरण वाचक सज्ञा प्रातिपदिको मे लगता है । यथाः—

अनु० स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
तड	-आक		तडाक
फड	-आक		फडाक
सट	-आक		सटाक
पट	-आक		पटाक

सूचना (३८) / तडाक / , / फडाक / आदि रूप बहुधा / मे / परसर्ग सहित आते है ऐसी स्थिति मे ये सज्ञाएँ है। परन्तु परसर्ग रहित अवस्था मे भी इनका प्रयोग क्रियाविशेषण की भाँति होता है । जैसे , / उसने तडाक लकडी मारी / वाक्य मे / तडाक / क्रियाविशेषण है ।

१. २ १० ५ १ ३. {-ए}

सं०	पप्र०	→	क्रि० वि०
सामन|आ|	-ए		सामने
तडक|आ|	-ए		तडके
पीछ|अ|	-ए		पीछे
बदल|आ|	-ए		बदले
आग|आ|	-ए		आगे
सवेर|आ|	-ए		सवेरे
पल्ल|आ|	-ए		पल्ले 'पास मे'
बार	-ए		बारे

१.२ १० ५.१ ४. {-वार}

स०	पप्र०	→	क्रि० वि०
माह	-वार		माहवार
तारीख	-वार		तारीखवार
नबर	-वार		नबरवार
किस्त	-वार		किस्तवार
तरतीब	-वार		तरतीबवार

१ २ १० ५ २. सर्वनाम तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१ २ १० ५ २ १ {-अहाँ}

इस परप्रत्यय के योग से स्थानवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / यह → य /, / वह → व /, / जो → ज / तथा / कौन → क / विकार होते है। यथा —

सर्व०	पप्र०	→	स्थान वा० क्रि० वि०
यह (~य)	-अहाँ		यहाँ
वह (~व)	-अहाँ		वहाँ
जो (~ज)	-अहाँ		जहाँ
कौन (~क)	-अहाँ		कहाँ

१.२.१०.५.२ २. {-धर}

इसके योग से दिशावाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / यह → इ /, / वह → उ /, / जो → जि / तथा / कौन → कि / विकार होते है। यथा —

सर्व०	पप्र०	→	दिशा वा० क्रि० वि०
यह (~इ)	-धर		इधर
वह (~उ)	-धर		उधर
जो (~जि)	-धर		जिधर
कौन (~कि)	-धर		किधर

१ २.१० ५.२ ३ {-यों} /यों ~-ओं /

इस परप्रत्यय के योग मे रीतिवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / जो → ज / तथा / कौन → क / विकार होते है। यथा —

सर्व०	पप्र०	→	रीति वा० क्रि० वा०
जो (~ज)	-यों		ज्यों
कौन (~क)	-यों		क्यों

/ -ओं / संपरिवर्तक का योग केवल / यह / सर्वनाम प्रातिपदिक मे होता है तथा इस योग मे / यह → य / विकार होता है। यह संपरिवर्तक ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से प्रतिबधित है। यथा:—

सर्व०	पप्र०	→	रीति वा० क्रि० वि०
यह (∼य)	-ओं		यों

१. २ १०. ५. २. ४ {-ब}

इसके योग से कालवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है तथा इस योग मे / यह → अ /, / जो → ज / तथा / कौन → क / विकार होते है। यथा —

सर्व०	पप्र०	→	काल वा० क्रि वि०
यह (∼अ)	-ब		अब
जो (∼ज)	-ब		जब
कौन (∼क)	-ब		कब

सूचना (३६) / त्यों, तब, तहाँ / रूप / तौन / सर्वनाम से व्युत्पन्न कहे जा सकते हैं परन्तु हिन्दी मे / तौन / सर्वनाम का प्रयोग नही होता।

१ २. १०. ५. ३ विशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २. १०. ५. ३. १ **{-अन}**

वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
करीब	-अन		करीबन
मजबूर	-अन		मजबूरन
अनकरीब	-अन		अनकरीबन
जबर	-अन		जबरन

१. २ १० ५ ३ २ **{-ए}**

वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
पर	-ए		परे
वैस|आ|	-ए		वैसे
जैस|आ|	-ए		जैसे
ऐस|आ|	-ए		ऐसे
कैस|आ/	-ए		कैसे
अकेल|आ|	-ए		अकेले
पहल|आ|	-ए		पहले

दूसर|आ|	-ए		दूसरे
नीच|आ|	-ए		नीचे
ऊँच|आ|	-ए		ऊँचे
दाहिन|आ|	-ए		दाहिने
थोड|आ|	-ए		थोड़े
उल्ट|आ|	-ए		उल्टे
सीध|आ|	-ए		सीधे
टेढ|आ|	-ए		टेढ़े
दायँ|आ|	-ए		दाएँ
बायँ|आ|	-ए		बाएँ

१ २. १०. ५ ३. ३. {-कर}

वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
खास	-कर		खासकर
विशेश	-कर		विशेशकर

१. २ १०. ५. ३. ४. {तया}

वि०	पप्र०	→	क्रि० वि०
पूर्ण॰	-तया		पूर्णतया
विशेश	-तया		विशेशतया
साधारण	-तया		साधारणतया
इकसर|ई|	-तया		इकसरतया

१ २ १० ५ ४ धातु तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न

१. २ १० ५. ४. १ {-ए}

(१)	अक० धा०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	मर	-ए		मरे
	चल	-ए		चले
	बीत	-ए		बीते
(२)	सक० धा०	पप्र०	→	क्रि० वि०
	चाह	-ए		चाहे
	मार	ए		मारे
	ले (~लि)	-ए		लिए
	कस	-ए		कसे

१ २.१०.५.४ २ {-ओ}

इस परप्रत्यय का प्रयोग सकर्मक क्रिया / मान / के पश्चात् होता है। यथा·—

सक० धा०	पप्र०	→	क्रि० वि०
मान	-ओ		मानो

१.२.१०.५ ५ **क्रियाविशेषण तथा परप्रत्यय के योग से व्युत्पन्न**

१.२.१०.५.५.१. {-आना}

इस परप्रत्यय का प्रयोग / रोज / कालवाचक क्रियाविशेषण के पश्चात् होता है तथा इसके योग से पौनपुन्यवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होता है। यथा :—

काल वा० क्रि० वि०	पप्र०	→	पौनपुन्य वा० क्रि० वि०
रोज	-आना		रोजाना

१.२ १०.५.५.२. {-कर}

इसके योग से रीतिवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होता है। तथा / क्यों / के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। / क्यों / भी रीतिवाचक क्रियाविशेषण है इस प्रकार / क्यों / तथा / क्योंकर / समानार्थक है। इसे स्वार्थिक प्रत्यय कहा जा सकता है। मथा —

रीति वा० क्रि० वि०	पप्र०	→	रीति वा० क्रि० वि०
क्यों	-कर		क्योंकर

१ २.१०.५.५ ३ {-चे}

इसके योग से निश्चय वाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होता है तथा / अगर / के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। यथा —

अनिश्चय वा० क्रि० वि०	पप्र०	→	निश्चय वा० क्रि० वि०
अगर	-चे		अगरचे

१ २ १० ५.५ ४. {-तर}

इसका प्रयोग रीतिवाचक क्रियाविशेषण / पेश / के पूर्व होता है तथा इसके योग से कालवाचक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होता है। यथा ·—

रीति वा० क्रि० वि०	पप्र०	→	काल वा० क्रि० वि०
पेश	-तर		पेशतर

विभक्ति-विचार

२.

विभक्ति-विचार

२ ० सामान्य विवेचन

जो आबद्ध रूप प्रातिपदिको अथवा धातुओ के पश्चात् लगकर पदो की रचना करते है उन्हे विभक्तियाँ कहते है (§ ०.६ २, § ०.६.२.१)। विभक्तियो द्वारा निर्मित पदो को प्रधानतः तीन वर्गो मे रखा जाता है—नामपद, क्रियापद तथा क्रियाविशेषण-पद। नामपद वे है जिनकी रचना मे प्रातिपदिको के पश्चात् लिंग, वचन और कारक की विभक्तियाँ परिलक्षित होती है। ये नामपद तीन प्रकार के होते है—सज्ञापद, सर्वनामपद तथा विशेषणपद। जो कृदन्त सज्ञावत् अथवा विशेषणवत् प्रयुक्त होते है वे भी नामपदो के अन्तर्गत आते है। धातुओ के पश्चात् वाच्य, रीति, काल, पुरुष, लिग तथा वचन की जो विभक्तियाँ परिलक्षित होती है उन्हे क्रियापद कहते है। क्रियाविशेषण पदो की रचना मे सामान्यतः कोई विभक्ति परिलक्षित नही होती। इस स्थिति मे क्रियाविशेषण प्रातिपदिक ही पद होता है। उदाहरणार्थ / वह धीरे चलता है / वाक्य मे / धीरे / प्रातिपदिक भी है और पद भी। इसी प्रकार / मैं वहाँ गया / वाक्य मे / वहाँ / प्रातिपदिक भी है और पद भी। परन्तु कुछ विशेषण जब क्रियाविशेषण का कार्य सपादित करते है तो उनमे विभक्तियेँ का योग परिलक्षित होता है। उदाहरणार्थ / वह तिरछा चलता है /, / वह तिरछी चलती है /, / वे तिरछे चलते है / वाक्यो मे / तिरछा, तिरछी, तिरछे / पद क्रियाविशेषण हैं न कि विशेषण, क्योकि यहाँ विधान 'चलने' का है, न कि विशेष्य की विशेषता बताने का। यद्यपि / तिरछ- / प्रातिपदिक मूलत विशेषण प्रातिपदिक है, परन्तु इस प्रसग मे इसे क्रियाविशेषण प्रातिपदिक कहना होगा तथा उद्देश्य के लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार / -आ, -ई, -ए / विभक्तियो का योग हुआ है। ये विभक्तियाँ भी विशेषण विभक्तियाँ ही है परन्तु चूँकि इनसे क्रियाविशेषण पद भी निर्मित होते है इसलिए ये क्रियाविशेषण पदो के अन्तर्गत आती है। इस प्रकार रूपान्तरशील क्रियाविशेषण भी

हिन्दी मे उपलब्ध हैं परन्तु ये रूपान्तर विशिष्ट परिस्थितियो मे होते है, इनमे ऐसी व्यापकता नही जैसी कि अन्य पदो के सबध मे देखी जाती है । क्रियाविशेषरा पद-रचना मे इन परिस्थितियो पर यथेष्ट प्रकाश डाला जायगा ।

जब किसी प्रातिपदिक या धातु मे कोई विभक्ति लगती है तो उसके द्वारा एक साथ कई व्याकरणिक कोटियो का बोध होता है । उदाहरणार्थ / लडकों को चाहिए कि वे अपने मा-बाप की सेवा करें /वाक्य मे / लडकों /पद द्रष्टव्य है । इसमे/ लडक-/ प्रातिपदिक है तथा / -ओं / विभक्ति है । इस विभक्ति के द्वारा एक साथ पुल्लिग, बहुवचन तिर्यक कारक का बोध होता है । इसी प्रकार / लडकी जाती है / वाक्य मे / लडकी / पद द्रष्टव्य है । इसमे / लडक- / प्रातिपदिक है तथा / -ई / विभक्ति है । इस विभक्ति से एक साथ स्त्रीलिग, एकवचन प्रत्यक्ष कारक का बोध होता है । अत. विभक्ति द्वारा कई कोटियो की समन्वित अभिव्यक्ति होती है । क्रियापद तथा क्रिया-विशेषरा पद-रचना मे भी यह समन्वित अभिव्यक्ति देखी जा सकती है । उदाहरणार्थ / वह चला / वाक्य मे / चला / क्रियापद द्रष्टव्य है । इसमे / चल / धातु है तथा / -आ / विभक्ति से कर्तृवाच्य, निश्चयार्थ, भूतकाल, अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एकवचन का बोध होता है । इसी प्रकार / खबे टेढे गाडे गए / वाक्य मे / टेढ़े / क्रियाविशेषरा पद है । इसमे / टेढ- / प्रातिपदिक है और / -ए / विभक्ति के द्वारा एक साथ पुल्लिग बहुवचन का बोध होता है ।

हिन्दी की परम्परागत व्याकरणो मे इन कोटियो को अलग-अलग मानकर अलग-अलग विभक्ति अथवा प्रत्ययो के द्वारा प्रस्तुत किया गया है । परन्तु ऐसा होना असभव है क्योकि हिन्दी मे एक विभक्ति एक साथ कई कोटियाँ व्यक्त कर सकती है । उदाहरणार्थ /बालक जाते है/तथा/ बालकों को मत सताओ/ वाक्यो मे /बालक/ तथा / बालकों / बहुवचन है । इस दशा मे / बालक / को एकवचन कैसे कहा जाय ? वह तो बहुवचन है । वास्तव मे बात यह है कि जब / बालक / जैसे प्रातिपदिक पुल्लिग, बहुवचन, प्रत्यक्ष कारक मे आते है तो उनमे कोई विभक्ति नही लगती । परन्तु जब वे पुल्लिग बहुवचन तिर्यक कारक मे आते है तो उनमे / -ओं / विभक्ति लगती है । इसी प्रकार / लडकियाँ जाती हैं / , / लडकियों ने यह काम किया / वाक्यो मे /लडकियाँ/ भी बहुवचन है और / लडकियों / भी बहुवचन है । इस प्रकार बहुवचन मे इनका विवेचन कैसे सभव हो ? इन उदाहरणो मे परिस्थिति यह है कि जब / लडक- / प्राति-पदिक स्त्रीलिग, बहुवचन, प्रत्यक्ष कारक मे प्रयुक्त होता है तो उसके पश्चात् / -इयाँ / विभक्ति लगती है और जब उसका प्रयोग स्त्रीलिग, बहुवचन, तिर्यक कारक मे होता है तो / -इयों / विभक्ति लगती है । अत किसी एक कोटि तक विभक्तियों को सीमित कर देना उचित प्रतीत नही होता । जब भी विभक्ति को एक कोटि मे रखा जाता है

वही पर अन्य कोटि या कोटियाँ सामने उपस्थित होती है, उनके बिना विवेचन अधूरा ही रहता है। इस प्रकार विभक्तियाँ एक साथ कई कोटियो को व्यक्त करती है।

हिन्दी के कुछ विद्वान स्त्रीलिंग सूचक विभक्तियो को विभक्तियाँ नही मानते, वे उन्हे व्युत्पादक प्रत्यय मानकर प्रातिपदिक रचना के अन्तर्गत विचार करते है। परन्तु यह दृष्टिकोण तर्क की कसौटी पर ठीक नही उतरता। वास्तव मे बात यह है कि हिन्दी मे लिंग-भेद व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक स्तर पर विद्यमान है। उदाहरणार्थ / लडका जाता है /, / लडकी जाती है / वाक्यो मे कर्ता तथा क्रिया की अन्विति वाक्यात्मक स्तर पर है न कि अर्थ के स्तर पर। यदि / लडकी जाता है / ऐसा प्रयोग होता तो लिंग-भेद वाक्य स्तर पर नही होता, अर्थ स्तर पर होता तथा स्त्रीत्व सूचक चिह्नक व्युत्पादक रचना के विषय होते। इसलिए इस दशा मे स्त्रीलिग अथवा पुल्लिग सूचक चिह्नक विभक्तियो के अन्तगत आते है। प्रत्ययो का वर्गीकरण एव परिभाषाएँ स्पष्ट करते हुए विभक्तियो तथा व्युत्पादक प्रत्ययो के पार्थक्य को भली भाँति स्पष्ट किया गया है (§ ०. ६ २ १)। इस प्रसंग मे यह शका की जा सकती है कि व्युत्पादक है प्रत्ययो—/ आइन /, / इन /, / न|ई/ इत्यादि—को व्युत्पादक रचना मे रखा गया उन्हे पद रचना के अन्तर्गत क्यो नही रखा गया? क्योकि इनके द्वारा भी लिग-बोध होता है। हम अभी इ गित कर चुके है कि व्युत्पादक प्रत्ययो से व्युत्पन्न अर्थ-बोध होता है। उदाहरणार्थ / तमोलिन बैठी है। वाक्य मे / तमोलिन / का अर्थ 'तमोली' की स्त्री से है। इस प्रकार / तमोल- / प्रातिपदिक के पश्चात् / -इन / प्रत्यय स्त्री सबध को व्यक्त करता है। परन्तु / लडकी बैठी है / वाक्य मे 'लडके से / लडकी / का कोई ऐसा सबध नही जिसे व्युत्पादक रचना मे स्वीकार किया जा सके। अत स्त्री-प्रत्यय तथा स्त्रीलिग विभक्तियो की अलग-अलग प्रकृति है।

हिन्दी मे सज्ञा, विशेषण तथा कृदन्त पदो का निर्माण करने वाले कुछ चिह्नक ऐसे है जिन्हे एक ओर तो व्युत्पादक प्रत्यय कहा जा सकता है तथा दूसरी ओर उन्हें विभक्तियाँ। ये चिह्नक सधिस्थल पर दृष्टिगोचर होने है। उदाहरणार्थ / अँगूठी / पद द्रष्ट य है। इसमे / -ई / चिह्नक एक ओर तो स्त्रीलिग एक वचन प्रत्यक्ष कारक का द्योतन करता है तथा दूसरी ओर इससे आभूषणार्थक बोध भी होता है, जो व्युत्पत्ति का विषय है। इसी प्रकार / मैला कपडा जलना है / वाक्य मे / मैला / पद अवलोकनीय है। इसमे / -आ / अन्त एक ओर तो पुल्लिग, एकवचन, प्रत्यक्ष कारक का बोध कराता है तथा दूसरी ओर / मैल / सज्ञा के पश्चात् लगकर विशेषण प्रातिपदिक भी बनाता है, इस कारण यह भी व्युत्पत्ति का विषय है। कृदन्त पदो मे भी यही द्विविध स्थिति परिलक्षित होती है। उदाहरणार्थ / उडती चिड़िया देखो / वाक्य मे / उडती / कृदन्त पद है। इसमे / -त- / चिह्नक एक ओर तो अपूर्ण-काल

का द्योतन करता है जो विभक्ति सीमा के अन्तर्गत है तथा दूसरी ओर यह / उड / धातु के पश्चात् लगकर विशेषण प्रातिपदिक बनाता है। इस प्रकार इस स्थिति मे यह व्युत्पत्ति का विषय होता है। हमने ऐसे सधि-स्थलीय चिह्नको को व्युत्पादक विभक्तियो के रूप मे स्वीकार किया है नथा आगे इनका विवेचन यथास्थान किया जायगा।

२ १. नामपद

२. १ १. संज्ञापद

हिन्दी सज्ञा प्रातिपदिको से लिंग, वचन तथा कारक के अनुसार विभक्तियो का योग होता है तथा इनके योग से सज्ञापद बनते है। हिन्दी मे दो लिंग—पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग, दो वचन- एकवचन तथा बहुवचन, तथा तीन कारक[1]—प्रत्यक्ष, तिर्यक तथा सबोधन है। इस प्रकार सिद्धान्ततः एक सज्ञा प्रातिपदिक के तीनो कारको मे लिग एव वचन के अनुसार बारह रूप सिद्ध होते है। उदाहरणार्थ / लडक- / सज्ञा प्रातिपदिक के छै पुल्लिग रूप तथा छै स्त्रीलिग रूप। यह नियम पूर्णत उन प्रातिपदिको के लिए है जिनके स्त्रीलिग एव पुल्लिग रूप दोनो वचनो मे प्रयुक्त होते है। इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी प्रातिपदिक है जिनके केवल पुल्लिग रूप है तो स्त्रीलिंग रूप नही अथवा स्त्रीलिग रूप है तो पुल्लिग रूप नही। उदाहरणार्थ / भगवान / पुल्लिग है तो इसका स्त्रीलिग रूप नही , / कविता / स्त्रीलिग है तो इसका पुल्लिग रूप नही। इस प्रकार हिन्दी मे सज्ञा प्रातिपदिको के स्त्रीलिंग एव पुल्लिग अथवा केवल पुल्लिग या केवल स्त्रीलिंग रूप मिलते है।

जिन विभक्तियो के योग से सज्ञापद सिद्ध होते है उनकी प्रकृति त्रिधास्वरूप है। एक ही विभक्ति से लिंग, वचन तथा कारक का द्योतन होता है। उदाहरणार्थ

---

१ हिन्दी व्याकरणो मे कर्त्ता, कर्म, करण इत्यादि जो कारक कहे गए है वे वाक्य मे नामपदो की कार्यकरिता के आधार पर है। एक प्रकार से वे क्रिया के साथ सम्बन्ध रखते है। इस प्रकार कारको की ये कोटियाँ वाक्यात्मक दृष्टि से है। उक्त विवेचन मे प्रत्यक्ष, तिर्यक तथा सबोधन कोटियाँ पदरचना की दृष्टि से है। प्रत्यक्ष कारक (Direct case) वह है जिसके पश्चात् कोई पर सर्ग नही आता। तिर्यक कारक (oblique Case) वह है जिसके पश्चात् / ने / , / को / , / से / इत्यादि पर सर्ग आते है। तियक नाम वास्तव मे एक सामूहिक नाम है क्योकि स्वरूप की दृष्टि से एक ही रूप कर्त्ता, कर्म, करण आदि कारको मे विद्यमान रहता है। सबोधन इन सबसे भिन्न है जिसमे केवल सबोधन का भाव है तथा उसके रूप भिन्न है।

/ लडका / मज्ञा पद की / -आ / विभक्ति पुल्लिग, एकवचन तथा प्रत्यक्ष-कारक की द्योतक है। इस प्रकार प्रत्येक लिंग की रूपतालिका मे छै विभक्तिक कोटियाँ निर्मित होती हैं—प्रत्यक्ष कारक एकवचन, तिर्यक् कारक एकवचन, मबोधन कारक एकवचन, प्रत्यक्ष कारक बहुवचन तिर्यक कारक बहुवचन तथा मबोधन कारक बहुवचन। इन कोटियो मे तिर्यक एकवचन तथा सबोधन एकवचन की विभक्तियाँ प्रायः एक समान है। यह एकरूपता तिर्यक बहुवचन तथा सबोधन बहुवचन मे भी परिलक्षित होती है, अन्तर केवल अनुनासिकता का है। तिर्यक बहुवचन मे स्वर पर अनुनासिकता रहती है जबकि सबोधन बहुवचन मे नही, परन्तु जो सज्ञा प्रातिपदिक अनुनासिकता अन्त वाले है उनमे स्वर सहित अनुनासिकता अवश्य रहती है।

२. १ १ १. संज्ञा प्रातिपदिको के वर्ग तथा विभक्तियाँ

हिन्दी मे विभिन्न सज्ञा प्रातिपदिको के विभक्ति-रूप भिन्न-भिन्न है। इस दृष्टि से हिन्दी के समस्त सज्ञा प्रातिपदिको को प्रथमत दो वर्गो मे रखा जाता है—पुल्लिग तथा स्त्रीलिग। इनके अन्तर्गत विभिन्न स्वरूप वाले प्रातिपदिको को उपवर्गो मे विभाजित किया जाता है। सुविधा के लिए प्रत्येक उपवर्ग को पुल्लिग (१), पुल्लिग (१ १) पुल्लिग (२), पुल्लिग (२.१) इत्यादि, स्त्रीलिंग (१), स्त्रीलिग (१.१) स्त्रीलिग (२) स्त्रीलिग (२ १) इत्यादि नाम देंगे। ० मकेत शून्य विभक्ति का द्योतक है।

पुल्लिग (१)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-०	-ओं	-ओ

इस वर्ग के अन्तर्गत / बालक- /, / सुनार- /, / खडहर- /, / जवाहरात- /, / सौदागर- /, / रँगरेज- /, / कवि- /, / मुनि- /, / प्रभु- /, / चौबे /, / दुबे- /, / जौ- / इत्यादि-इत्यादि जैसे प्रातिपदिक आते है। इन सभी मे तिर्यक तथा सबोधन बहुवचन मे / -ओं / तथा / -ओ / विभक्ति लगती है। शेष कोटियो मे कोई विभक्ति नही लगती तथा तिर्यक बहुवचन तथा मबोधन बहुवचन की विभक्तियो के लगने के पूर्व / इ / अन्त वाले प्रातिपदिको के पश्चात् / य / का आगम होता है। यथाः- / कवियों / तथा / कवियो / इत्यादि। नीचे उक्त विभक्ति-तालिकानुसार कुछ उदाहरण दिए जाते है।

बालक-	बालक	बालक	बालक	बालकों	बालको
शिशु-	शिशु	शिशु	शिशु	शिशुओं	शिशुओ
कवि-	कवि	कवि	कवि	कवियों	कवियो
चौबे-	चौबे	चौबे	चौबे	चौबेओं	चौबेओ
जौ-	जौ	जौ	जौ	जौओं	जौओ

सूचना (१) इस वर्ग मे कुछ ऐसे भी प्रातिपदिक है जिनके सबोधन एकवचन मे दूसरे रूपो का भी प्रयोग होता है। ये रूप वस्तुतः संस्कृत के एकवचन सबोधन के रूप है। सस्कृत के अनुसरण के कारण इन रूपो को वैकल्पिक समझना चाहिए। कुछ उदाहरण इस प्रकार है .—

भगवान	भगवन
श्रीमान	श्रीमान
विद्वान	विद्वन
मुनि	मुने
प्रभु	प्रभो
बधु	बधो
गुरु	गुरो

पुल्लिग (१ १)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-०	(ओं)	(ओ)

यह वर्ग पुलिग (१) वर्ग का उपवर्ग है जिसमे केवल / ओ / स्वरान्त सज्ञा प्रातिपदिक आते है। तिर्यक बहुवचन तथा सबोधन बहुवचन मे प्रातिपदिक का / ओ / स्वर लुप्त हो जाता है तथा / -ओं / और / -ओ / विभक्तियाँ लगती है। या दूसरे ढंग से ऐसे भी कहा जा सकता है कि तिर्यक् बहुवचन मे अनुनासिकता का योग होता है तथा शेष कोटियो मे प्रातिपदिक तद्वत रहता है। उक्त रूपतालिका मे कोष्ठक इस परिस्थिति का द्योतन करता है। उक्त तालिका के अनुसार नीचे उदाहरण द्रष्टव्य है।

रासो-	रासो	रासो	रासो	रासों	रासो

पुल्लिग (१ १ १)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्य बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-०	(ओँ)	(ओँ)

यह वर्ग पुल्लिग (१ १) का ही दूसरा उपवर्ग है । इसके अन्तर्गत अनुनासिकान्त प्रातिपदिक आते हैं । इस वर्ग की भी वही स्थिति है जो पुल्लिग (१ १) की है । अन्तर केवल इतना है कि इसमे सबोधन बहुवचन मे अनुनासिकता रहती है जब कि उसमे नही । इसका निर्वचन भी उसी प्रकार है । उक्त तालिका के अनुसार नीचे एक उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है ।

कोदोँ कोदोँ कोदोँ कोदोँ कोदोँ कोदोँ

पुल्लिग (२)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-	-ए	-ए	-ओँ	-ओ

इस वर्ग के अन्तर्गत / लडक- / , / कोड- / , / दस्तान- / , / भतीज- / , / शाहजाद- / , / माइक- / , / मट्ठ- / , / भड्- / , / बगीच- / , / घस्यार- / , / गान- / , / चरवाह- / , / गुबरील- / , / रुपय- / , / टुकड- / , / बजार- / इत्यादि-इत्यादि सज्ञा प्रातिपदिक आते है । इन सभी प्रातिपदिको मे उक्त प्रदर्शित विभक्तियाँ लगती है तथा तिर्यक सबोधन एकवचन तथा प्रत्यक्ष बहुवचन मे / य / अन्त वाले प्रातिपदिक का / य / लुप्त हो जाता है । यथा —/ रुपय- / प्रातिपदिक के उक्त तीनो रूप / रुपए / होते है । उक्त तालिकानुसार आगे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है ।

लडक-	लडका	लडके	लडके	लडकों	लडको
भतीज-	भतीजा	-भतीजे	भतीजे	भतीजों	भतीजो
मछु-	मछुआ	मछुए	मछुए	मछुओं	मछुओ
बंजार-	बजारा	बजारे	बँजारे	बजारों	बंजारो
रुपय-	रुपया	रुपए	रुपए	रुपयों	रुपयो

सूचना (२) सबोधन कारक मे / बेटा / रूप बहुधा प्रयुक्त होता है ।

पुँल्लिग (२. १)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबो-धन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-आँ	-एँ	-एँ	-ओं	-ओं

यह वर्ग पुल्लिग (२) का उपवर्ग है । इस वर्ग की विभक्तियाँ प्राय वही है जो पुल्लिग (२) वर्ग की है । अन्तर केवल अनुनासिकता का है । इस वर्ग की विभक्तियाँ अनुनासिकता सहित रहती है । / रों- / सज्ञा प्रातिपदिक इस उपवर्ग का द्योतक है । नीचे उक्त तालिका के अनुसार इसका उदाहरण प्रस्तुत किया जाता है ।

रों-	रोआँ	रोएँ	रोएँ	रोओं	रोओं

सूचना (३) इस वर्ग के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी संज्ञा प्रातिपदिक है जिनके तिर्यक बहुवचन तथा सबोधन मे वैकल्पिक रूप / -आओं / तथा / -आओ / मिलते है । जैसे,

बेट-	बेटाओं	बेटाओ
पोत-	पोताओं	पोताओ

पुँल्लिग (३)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबो-धन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-आ	-आ	-आ	-आओं	-आओं

इस वर्ग के अन्तर्गत / दाद- /, / काक- /, / माम- /, / चाच- /, / मुखिय- /, / सुदाम- /, / देवत- /, / विधात- /, / भोक्त- / इत्यादि-इत्यादि जैसे प्रातिपदिक आते है। इन सभी,प्रातिपदिको मे उक्त प्रदर्शित विभक्तियाँ लगती है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है।

दाद-	दादा	दादा	दादा	दादाओं	दादाओ
काक-	काका	काका	काका	काकाओं	काकाओ
मुखिय-	मुखिया	मुखिया	मुखिया	मुखियाओं	मुखियाओ
सुदाम-	सुदामा	सुदामा	सुदामा	सुदामाओं	सुदामाओ
राज-	राजा	राजा	राजा	राजाओं	राजाओं

सूचना (४) इस वर्ग के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी प्रातिपदिक हैं जिनके सबोधन मे दूसरे रूपो का भी प्रयोग होता है। वे रूप वस्तुत सस्कृत के एकवचन संबोधन के रूप हैं। सस्कृत के अनुसरण पर वे रूप वैकल्पिक है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है.—

राज-	राजन
महात्म-	महात्मन
प्रिय-	प्रिये
सीत-	सीते
राध-	राधे

पुंल्लिग (३. १)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-ओ	-आँ	-आँ	आँओं	-आँओ

यह वर्ग पुंल्लिग (३) का उपवर्ग है, अन्तर केवल अनुनासिकता का है। इस उपवर्ग की विभक्तियाँ अनुनासिकता युक्त है। / कानूनदं- /, / फारसीदं- /, / अँगरेजीदं- /, / हुनरदं- /, / साइन्सदं- / इत्यादि जैसे सज्ञा प्रातिपदिकों मे ये विभक्तियाँ लगती है। ये निम्न उदाहरण द्वारा इस प्रकार द्रष्टव्य हैं।

फ़ारसीदं-	फारसीदाँ	फ़ारसीदाँ	फारसीदाँ	फ़ारसीदाँओं	फ़ारसीदाँओ

पुंल्लिग (४)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	संबोधन बहु व०
-ई	-ई	-ई	-इयों	-इयो

इस वर्ग के अन्तर्गत / घोब /, / माल- /, / सन्यास- /, / विद्यार्थ- /, / ज्वार- /, / तबलच- /, / पुजार- /, / भिखार- /, / तपस्व- /, / सन्क- /, / भगड / इत्यादि-इत्यादि सज्ञा प्रातिपदिक आते है तथा इनमे उक्त विभक्तियो का योग होता है। उक्त तालिका के अनुसार कुछ उदाहरण इस प्रकार है।

धोब-	धोबी	धोबी	धोबी	धोबियों	धोबियो
विद्यार्थ-	विद्यार्थी	विद्यार्थी	विद्यार्थी	विद्यार्थियों	विद्यार्थियो
तपस्व-	तपस्वी	तपस्वी	तपस्वी	तपस्वियों	तपस्वियो
सन्क-	सन्की	सन्की	सन्की	सन्कियों	सन्कियो
भिखार-	भिखारी	भिखारी	भिखारी	भिखारियों	भिखारियो
भगड-	भगडी	भगडी	भगडी	भगडियों	भगडियो

पुंल्लिग (५)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-ऊ	-ऊ	-ऊ	-उओं	-उओ

इस वर्ग के अन्तर्गत / खाल- /, / डाक- /, /ता- /, / बाब- /, /साध- /, / बाँगड- /, / पखेर- /, / झाड- /, / बाप- /, / साढ- /, / भाल- /, / घुँघर- /, / गोखुर- /, / गेह- / इत्यादि-इत्यादि सज्ञा प्रातिपदिक आते हैं तथा इसमे उक्त विभक्तियो का योग होता है। उक्त तालिका के अनुसार कुछ उदाहरण अग्र प्रकार है।

खाल-	खालू	खालू	खालू	खालुओं	खालुओ
ता-	ताऊ	ताऊ	ताऊ	ताउओं	ताउओ
डाक-	डाकू	डाकू	डाकू	डाकुओं	डाकुओ
साध-	साधू	साधू	साधू	साधुओं	साधुओ
साढ-	साढ़ू	साढ़ू	साढ़ू	साढ़ुओं	साढ़ुओ
भाल-	भालू	भालू	भालू	भालुओं	भालुओ
गेहुं-	गेहूँ	गेहूँ	गेहूँ	गेहूँओं	गेहूँओ

स्त्रीलिंग (१)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-एँ	-ओं	-ओ

इस वर्ग के अन्तर्गत / किताब- /, / बेगम- /, / कीचड /, / पायल- /, / पोशाक- /, / लुहारिन- /, / सुनारिन- /, / बहिन- /, / ससुराल- /, / हाहाकार- /, / भावज- /, / सलहज- /, / पैदावार- /, / खिलाफत- /, / अटक- /, / उतरन- /, / फूटन- /, / धेनु- /, / बहू- /, / वस्तु- /, / मृत्यु- /, / धातु- /, / बारू- /, / दारू- /, / लू- /, / गाय- /, / सलाह- /, / तसवीर- /, / मुलाकात- /, / तलाश- /, / मालिश- /, / पैदावार- /, / कहावत- /, / लताड- /, / दुत्कार- /, / आहट- / इत्यादि-इत्यादि सज्ञा प्रातिपदिक आते है। इन सज्ञा प्रातिपदिको मे प्रत्यक्ष बहुवचन मे / -एँ /, / तिर्यक बहुवचन मे / -ओं / तथा सबोधन बहुवचन मे / -ओ / विभक्तियाँ लगती है। शेष कोटियो मे विभक्तियाँ नही लगती। उक्त तालिका के अनुसार कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है।

किताब-	किताब	किताब	किताबें	किताबों	किताबो
बेगम-	बेगम	बेगम	बेगमें	बेगमों	बेगमो
लुहारिन-	लुहारिन	लुहारिन	लुहारिनें	लुहारिनों	लुहारिनो
बहिन-	बहिन	बहिन	बहिनें	बहिनों	बहिनो
धेनु-	धेनु	धेनु	धेनुएँ	धेनुओं	धेनुओ
बहू-	बहू	बहू	बहुएँ	बहुओं	बहुओ

स्त्रीलिंग (१ १)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-०	(ओं) (औं)	(ओं) (ओं)

यह स्त्रीलिंग (१) का उपवर्ग है जिसमे केवल / ओं / तथा / औं / अन्त वाले सज्ञा प्रातिपदिक आते है। इस वर्ग की वही स्थिति है जो पुल्लिग (१ १. १) वर्ग के प्रातिपदिको की। उक्त तालिकानुसार नीचे उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है।

सरसों-	सरसों	सरसों	सरसों	सरसों	सरसों
दौं-	दौं	दौं	दौं	दौं	दौं

स्त्रीलिंग (१ २)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा संबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-०	-०	-आँ	-ओं	-ओ

यह स्त्रीलिंग (१) का उपवर्ग है जिसके अन्तर्गत / इ / अन्त वाले सज्ञा प्रातिपादिक आते है। यथा — / शक्ति- /, / युक्ति- /, / निधि- /, / विधि- /, / उपाधि- /, / समाधि- /, / तिथि- /, / रीति- /, / राशि- /, / जाति- /, / हानि- /, / ग्लानि- /, / योनि- /, / बुद्धि- /, / अग्नि /, / छवि- /, / रुचि- / इत्यादि। इन प्रातिपदिको मे जब प्रत्यक्ष, तिर्यक तथा सबोधन बहुवचन की विभक्तिया लगती हैं तो / य / का आगम होता है। यथा — / छवियाँ / छवियाँ, छवियो /। आगे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है।

शक्ति-	शक्ति	शक्ति	शक्तियाँ	शक्तियों	शक्तियो
विधि-	विधि	विधि	विधियाँ	विधियों	विधियो
जाति-	जाति	जाति	जातियाँ	जातिओं	जातियो
योनि-	योनि	योनि	योनियाँ	योनियों	योनियो
छवि-	छवि	छवि	छवियाँ	छवियों	छवियो

स्त्रीलिंग (२)

प्रत्यक्ष एक० व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-आ	-आ	-आएँ	-आओं	-आओ

इस वर्ग के अन्तर्गत / खाल- / , / शाल- / , / मात- / , / सख्य- / , / क्रिय- / , / दिश- / , / खडखडिय- / , / अप्सर- / , / मलिक- / , / सम- / , / मर्याद- / , / शिक्ष- / , / दय- / , / माय- / , / कृप- / , / लज्ज- / , / क्षम- / , / शोभ- / , / प्रार्थन- / , / वेदन- / , / रचन- / , / घटन- / इत्यादि-इत्यादि सज्ञाएँ इस वर्ग मे आती है। उक्त तालिकानुसार कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

खाल-	खाला	खाला	खालाएँ	खालाओं	खालाओ
मात-	माता	माता	माताएँ	माताओं	माताओ
दिश-	दिशा	दिशा	दिशाएँ	दिशाओं	दिशाओ
अप्सर-	अप्सरा	अप्सरा	अप्सराएँ	अप्सराओं	अप्सराओ
रचन-	रचना	रचना	रचनाएँ	रचनाओं	रचनाओ

सूचना (५) इस वर्ग के अन्तर्गत कुछ ऐसे भी प्रातिपदिक है जिनके सबोधन एकवचन मे दूसरे रूपो का भी प्रयोग होता है। ये रूप वस्तुत: सस्कृत एकवचन के सबोधन रूप हैं। सस्कृत के अनुसरण पर ये रूप वैकल्पिक हैं। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं।

कवित-	कविते
सीत-	सीते
प्रिय-	प्रिये
राध-	राधे

बाल-	वाले
दुहित-	दुहिते

स्त्रीलिंग (२.१)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा संबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	सबोधन बहु व०
-आ	-आ	-आँ	-ओं	-ओ

यह वर्ग स्त्रीलिंग (२) का ही उपवर्ग है। इसके अन्तर्गत /बुढिय-/, /चिडिय-/, /गुडिय-/, /डिबिय-/, /तलइय-/, /तरइय-/, /लठिय-/, इत्यादि प्राय. /य/ अन्त वाले, सज्ञा प्रातिपदिक आते हैं। यथा.—

बुढिय-	बुढिया	बुढिया	बुढियाँ	बुढियों	बुढियो
गुडिय-	गुडिया	गुडिया	गुडियाँ	गुडियों	गुडियो
डिबिय-	डिबिया	डिबिया	डिबियाँ	डिबियों	डिबियो
तलइय-	तलइया	तलइया	तलइयाँ	तलइयों	तलइयो
लठिय-	लठिया	लठिया	लठियाँ	लठियों	लठियो

स्त्रीलिंग (३)

प्रत्यक्ष एक व०	तिर्यक तथा सबोधन एक व०	प्रत्यक्ष बहु व०	तिर्यक बहु व०	संबोधन बहु व०
-ई	-ई	-इयाँ	-इयों	-इयो

इस वर्ग के अन्तर्गत /लडक-/, /देव-/, /नन्द-/, /खाड-/, /धोत-/, /कठिना-/, /छिपकल-/, /बटलो-/, /ता-/, /मदंग-/, /मछल-/, /इक-/, /खेलन-/, /रोट-/, /टोप-/, /गरम-/, /बीमार-/, /चालाक-/ इत्यादि-इत्यादि सज्ञा प्रातिपदिक आते हैं। कुछ उदाहरण आगे द्रष्टव्य है।

लडक-	लडकी	लडकी	लडकियाँ	लडकियों	लडकियो
देव-	देवी	देवी	देवियाँ	देवियों	देवियो
कठिना-	कठिनाई	कठिनाई	कठिनाइयाँ	कठिनाइयों	कठिनाइयो
मछल-	मछली	मछली	मछलियाँ	मछलियों	मछलियो
चालाक-	चालाकी	चालाकी	चालाकियाँ	चालाकियों	चालाकियो

सूचना (६) जब वर्ग या समुदाय के रूप मे बहुवचन का बोध कराना होता है तो प्रत्यक्ष बहुवचन सज्ञापद के पश्चात् / लोग / , / गण / , / वर्ग / , / जाति / , / जन / का प्रयोग होता है तथा इनमे तद्वर्गीय बहुवचन की विभक्तियाँ लगती लगती है और तत्पश्चात् परसर्गो का व्यवहार होता है। यथा —/ राजा लोगो के / , / बालक गणों ने / , / पाठक वर्गों से / , / गुरु जनों से / इत्यादि। इसके अतिरिक्त आदरसूचक व्यक्तिवाचक तथा उपनाम वाचक सज्ञाओ के पश्चात् / साहब / , / महाशय / , महाराज/, / महोदय / , / देवी / , / जी / इत्यादि का व्यवहार होता है। यथा — / देवदत्त महाराज / , / रानी साहिबा / , / यज्ञदत्त महाशय / , / सचालक महोदय / , / गायत्री देवी / , / प्रसाद जी / इत्यादि। इस प्रकार के पदो का विभक्तियो मे कोई सम्बन्ध नही है क्योकि ये स्वतत्र पद है तथा इनमे अन्य सज्ञाओ की भाँति विभक्तियो का योग होता है। इस प्रकार ये विभक्तियाँ नही कही जा सकती।

३ १ १· २· अपूर्ण संज्ञापद

हिन्दी मे ऐसे भी सज्ञा प्रातिपदिक है जिनमे पूर्व चर्चित सभी विभक्तियो का योग नही होता तथा उनका प्रयोग सभी विभक्ति-कोटियो मे नही होता। ऐसे पदो को अपूर्ण सज्ञापद कहा गया है। नीचे इन पर विचार किया जाता है।

(१) सामान्यतः व्यक्तिवाचक तथा भाववाचक प्रातिपदिको के बहुवचन रूप व्यवहृत नही होते। यथा — / देवदत्त / , / रमेश / , / पडिताई / , / भडास / , / मिठास / इत्यादि। परन्तु जब इनका प्रयोग जातिवाचक सज्ञा के समान होता है तो ये बहुवचन मे व्यवहृत होते है। जैसे , / कितने रमेश यहाँ मौजूद हैं ? / , / मेरे भीतर अनेक भावनाएँ उठती है / वाक्यो मे / रमेश / तथा / भावनाएँ / जाति-वाचक सज्ञाएँ है। दूसरी बात इस सम्बन्ध मे यह है जो भाववाचक सज्ञा प्रातिपदिक / -पन / प्रत्यय से व्युत्पन्न होते है और इस प्रत्यय के पूर्व यदि मूल प्रादिपदिक /आ/

स्वरान्त हो तो तिर्यक तथा सबोधन एक वचन मे प्रातिपदिक का यह / श्रा / , / ए / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा:—

प्रातिपदिक	प्रत्यक्ष एक व० →	तिर्यक तथा संबोधन एक व०
गुंडापन	गुडापन	गुडेपन
बहिरापन-	बहिरापन	बहिरेपन
कडापन-	कडापन	कडेपन
कालापन-	कालापन	कालेपन
टेढापन-	टेढापन	टेढेपन
बाँकापन-	बाँकापन	बाँकेपन

(२) सामान्यत द्रव्यवाचक सज्ञाश्रो की बहुवचन विभक्तियाँ नही होती परन्तु जब द्रव्य या पदार्थ के विभिन्न प्रकार बताने की श्रावश्यकता होती है तो प्रातिपदिक मे बहुवचन की विभक्तियाँ लगती है। / श्राजकल कई प्रकार के घी चल पडे हैं / , / मैंने कई शर्बतो में यही बात देखी / , / बाज़ार में कई प्रकार के सोनों की भरमार है / इत्यादि वाक्यो मे / घी / , / शर्बत / , / सोनों / का प्रयोग ऐसा ही है।

(३) समुदाय वाचक सज्ञाएं भी सामान्यत एक वचन मे प्रयुक्त होती है। जैसे, / सेना / , / भीड / , / सभा / , / कुटुम्ब / इत्यादि। परन्तु विभिन्न प्रकारो को प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग बहुवचन मे होता है। इसके श्रतिरिक्त पदार्थों की बडी संख्या या परिणाम सूचित करने के लिए जातिवाचक सज्ञाश्रो का प्रयोग बहु-वचन मे होता है। / वहाँ भीड में बडा श्रादमी था / , / उसे बहुत पैसा मिला / वाक्यो मे / श्रादमी / तथा / पैसा / सख्या एवं परिमाण के द्योतक हैं, जिनका प्रयोग केवल एक वचन मे है।

(४) कई सज्ञा प्रातिपदिक बहुत्व सूचक हैं। ये प्रायः बहुवचन मे ही श्राते हैं। यथा :—/ प्राण / , / समाचार / , /दाम/ , / लोग / , / होश / , /हिज्जे/ , / भाग्य / , / दर्शन / इत्यादि। जैसे, / मेरे प्राण निकलते हैं / , / उनके क्या समाचार हैं / , / श्रापके दर्शन तो दुर्लभ हैं / वाक्यो मे / प्राण / , / समाचार / , / दर्शन / द्रष्टव्य है।

(५) तिथिवाचक सज्ञा प्रातिपदिक / पडव- / , / दूज / , / तीज / , /चौथ/, / पाँचें / , / छठ / , / सातें / इत्यादि सामान्यत एकवचन मे प्रयुक्त होते हैं। यथा. / श्राज पाचें है / , / पडवा के दिन उसने प्राण छोडे / वाक्यो से यह स्पष्ट है।

(६) अनुकरण वाचक सज्ञा प्रातिपदिक प्राय एकवचन मे ही प्रयुक्त होते है। यथा —/ वह पट से जमीन पर गिर पडा / वह धड से गिर पडा वाक्यो मे पट / तथा / धड / अनुकरण वाचक सज्ञा पद द्रष्टव्य है। इसी प्रकार , मर्र /, / खर्र / इत्यादि प्रातिपदिक है।

२ १ १ ३· विभक्तियों की व्युत्पादन क्षमता

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हिन्दी मे / -आ / , / -ई / तथा / -ऊ / मे से प्रत्येक विभक्ति लिंग, वचन एव कारक की द्योतक है। इस दृष्टि से ये विभक्तियाँ है तथा इनके योग से सज्ञापद सिद्ध होते है। विभक्तियो की इस कार्यकारिता के अतिरिक्त उक्त विभक्तियो का दूसरा कार्य यह है कि इनके योग से अन्य प्रकार के सज्ञापद भी व्युत्पन्न होते है। उदाहरणार्थ / चिट्ठ- / सज्ञा प्रातिपदिक मे / -ई , विभक्ति लगकर / चिट्ठी / सज्ञापद बनता है जिसका व्यवहार स्त्रीलिंग मे होता है। परन्तु इसी प्राति-पदिक मे / -आ / पु विभक्ति के योग से / चिट्ठा / पुल्लिग सज्ञापद बनता है। इस परिस्थिति मे / -आ / पु विभक्ति का ही सूचक नही अपितु वृहत अर्थ का भी द्योतन करता है। इस प्रकार इसमे दूसरे अर्थवान् पदो के व्युत्पन्न करने की क्षमता है। इसी प्रकार / अँगूठ- / सज्ञा प्रातिपदिक मे / -आ / विभक्ति के योग से पुल्लिग / अँगूठा / तथा / -ई / विभक्ति के योग से स्त्रीलिग / अँगूठी / सज्ञापद बनते है। परन्तु /अँगूठी/ मे / -ई / विभक्ति केवल स्त्रीलिग का ही द्योतन नही करती अपितु उँगली मे पहिनने के एक आभूषण का भी द्योतन करती है। इस प्रकार / -ई / स्त्रीलिग के साथ साथ आभूषणार्थक भी है। दूसरी बात यह है कि उक्त आबद्ध-रूप सज्ञा प्रातिपदिको मे सयुक्त होने के अतिरिक्त सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषण प्रातिपदिको मे लगकर सज्ञापद निर्मित करते है। उदाहरणार्थ सर्वनाम प्रातिपदिक / आप- / से / आपा / , विशेषण प्रतिपदिक / एक- / से / एका / , / झगड- / धातु से , झगडा/ / टकटक- / क्रियाविशेषण प्रातिपदिक से / टकटकी / सज्ञापद बनते है। इस प्रकार ये विभक्तियाँ एक ओर तो विभक्तिक कोटियो को निर्मित करती है तथा दूसरी ओर व्युत्पादक कोटियो को। चूँकि ये अन्त एक साथ दोनो सीमाओ को स्पर्श करते है इसीलिए इनका विचार इस विभक्ति प्रसग मे ससीचीन है। इन्हे व्युत्पादक विभक्तियाँ समझना चहिए। एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि व्युत्पत्ति-विचार के अन्तर्गत जो प्रत्यय प्रस्तुत किए गए है उनसे धातु अथवा प्रातिपदिक ही व्युत्पन्न होते है परन्तु इन व्युत्पादक विभक्तियो के योग से पद भी व्युत्पन्न होते है और अपनी वर्गीय विभक्तिक कोटियो को निर्दिष्ट करते है। आगे प्रत्येक व्युत्पादक विभक्ति पर विचार किया जाता है।

२. १ १. ३. १ {-आ}

इस व्युत्पादक विभक्ति का व्यवहार सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण अकर्मक तथा सकर्मक के पश्चात् होता है तथा इसके योग से अनेक प्रकार के पुल्लिग सज्ञापद व्युत्पन्न होते है। नीचे प्रत्येक की रूपतालिका प्रस्तुत की जाती है।

(१)

स०	व्यु० विभ० →	अनभीष्ट वृहत अर्थक सं०
चिट्ठ|ई|	-आ	चिट्ठा
गठर|ई|	-आ	गठरा
बेंद|ई|	-आ	बेंदा
झोंपड|ई|	-आ	झोंपडा
लोमड|ई|	-आ	लोमडा
कढाह|ई|	-आ	कढाहा
छींट	-आ	छींटा
अगार	-आ	अगारा
भेड	-आ	भेडा

इस प्रक्रिया मे / बूँद- / का आद्य अनुनासिक / ऊँ / , / उनं / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा :—

बूँद (~बुंद)	-आ	बुंदा

स०	व्यु० विभ० →	उपकरण वा० स०
फुहार	-आ	फुहारा
खाँच	-आ	खाँचा
चश्म	-आ	चश्मा
दस्त	-आ	दस्ता 'हाथ मे पकडने का मूँठ'
झोल	-आ	झोला 'थैला'

स०	व्यु० विभ० →	उद्देश्य वा० सं०
अन्दाज	-आ	अन्दाजा
निशान	-आ	निशाना

सं०	व्यु० विभ० →	अनादर या दुलार वा० स०
शकर	-आ	शकरा
बलदेव	-आ	बलदेवा

इस प्रक्रिया मे प्रातिपदिक का आद्य / आ /, / अ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा —

ठाकुर (~ठकुर)	-आ	ठकुरा
रामस्वरूप(~रम्सुर)	-आ	रमसुरा
स०	व्यु० विभ० →	लघु अर्थक सं०
पुर	-आ	पुरा 'छोटा गाँव'
स०	व्यु० विभ० →	समुदाय वा० स०
चूर	-आ	चूरा
मेल	-आ	मेला
सं०	व्यु० विभ० →	भाववाचक सं०
रेल	-आ	रेला 'प्रवाह'
सर्राफ़	-आ	सर्राफ़ा
स०	व्यु० विभ० →	अन्य भाव वा०स०
गुजर	-आ	गुजरा
झोक	-आ	झोका
बोझ	-आ	बोझा

इस प्रक्रिया में / हाल / का / आ /, / अ / मे परिवर्तित हो जाता है तत्पश्चात् / वा / का आगम होता है। यथा —

हाल (~हवाल)	-आ	हवाला
स०	व्यु० विभ० →	अन्य व्यक्ति वा०स०
बगाल (~बँगल)	-आ	बँगला 'भाषा के अर्थ मे'

इस प्रक्रिया मे / बगाल / का अनुस्वार अनुनासिकता मे परिवर्तित होता है और / आ /, / अ / मे बदल जाता है।

(२)	सर्वनाम	व्यु० विभ० →	भाव वा० सं०
	आप	-आ	आपा
(३)	विशेषण	व्यु० विभ० →	सस्कार वा० सं०
	चालीस	-आ	चालीसा 'चालीस दिन के पश्चात् मुसलमानो मे होने वाला एक संस्कार'

	वि०	व्यु० विभ०	→	भाव वा० स०
	एक	-आ		एका
	वि०	व्यु० विभ०	→	उपकरण वा० स०
	सफेद	-आ		सफेदा
(४)	अक० धा०	व्यु० विभ०	→	भाव वा० स०
	खटक	-आ		खटका
	झगड	-आ		झगडा
	सूख	-आ		सूखा
	मसक	-आ		मसका

इस प्रक्रिया मे आद्य / ऊ /, / ओ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा —

	टूट (~टोट)	-आ		टोटा 'घाटा'
	अक० धा०	व्यु० विभ०	→	उपकरण वा० स०
	चिमट	-आ		चिमटा
	झूल	-आ		झूला

इस प्रक्रिया मे आद्य / आ /, / अ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा —

	बन (~बान)	-आ		बाना
(५)	सक० धा०	व्यु० विभ०	→	भाव वा० सं०
	झटक	-आ		झटका
	रगड	-आ		रगडा
	मरोड	-आ		मरोडा
	घेर	-आ		घेरा
	फेर	-आ		फेरा
	झार	-आ		झारा
	सक० धा०	व्यु० विभ०	→	उपकरण वा० स०
	फाँस	-आ		फाँसा
	पोत	-आ		पोता 'जिससे पोता जाय'
	ठेल	-आ		ठेला
	छाप	-आ		छापा
	सक० धा०	व्यु० विभ०		समुदाय वा० स०
	जोड	-आ		जोडा
	सक० धा०	व्यु० विभ०		कर्तृ वा० स०
	जीत (~जेत)	-आ		जेता

इस प्रक्रिया मे आद्य / ई /, / ए / मे परिवर्तित होती है।

(६)	वि०	व्यु० विभ०	→	विशेषरण या सज्ञा
	छत्तीस	-आ		छत्तीसा
	बक	-आ		बका

इस प्रक्रिया मे / ए /, / औ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा—

डेढ(~ड्यौढ)	-आ	ड्यौढा

सूचना (७) / ड्यौढा / पहाडे के अर्थ मे सज्ञा है।

२. १ १ ३. २. {-ई}

इस व्युत्पादक विभक्ति का व्यवहार सज्ञा, विशेषरण, अकर्मक तथा सकर्मक धातु तथा क्रियाविशेषरण के पश्चात् होता है तथा इसके योग से अनेक प्रकार के स्त्रीलिग तथा पुल्लिक सज्ञापद व्युत्पन्न होते है। नीचे प्रत्येक की रूपतालिका प्रस्तुत की जाती है।

(१)	स०	व्यु० विभ०	→	भाव वा० सं०
	खेत	-ई		खेती
	दोस्त	-ई		दोस्ती
	दुश्मन	-ई		दुश्मनी
	नौकर	-ई		नौकरी
	जीवन	-ई		जीवनी
	मिनिस्टर	-ई		मिनिस्टरी
	गायक	-ई		गायकी
	अमीन	-ई		अमीनी
	तीरदाज	-ई		तीरदाजी
	मीनाकार	-ई		मीनाकारी
	जानकार	-ई		जानकारी
	घूसखोर	-ई		घूसखोरी
	स०	व्यु० विभ०	→	आभूषणार्थक
	अँगूठ/आ/	-ई		अँगूठी
	पहुँच/आ/	-ई		पहुँची
	कठ	-ई		कठी
	स०	व्यु० विभ०	→	लघ्वर्थक स०
	लहर	-ई		लहरी

ढोलक	-ई	ढोलकी
बैठक	-ई	बैठकी

इस प्रक्रिया मे आद्य / आ /, / अ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा·—

पापड (∼पपड)	-ई	पपडी
काजल(∼कजल)	-ई	कजली

/ पत्थर / प्रातिपदिक का / त / लुप्त हो जाता है। यथा —

पत्थर (∼पथर)	-ई		पथरी
सं०	व्यु० विभ०	→	वस्तु वा० स०
निशान	-ई		निशानी
बूँद	-ई		बूँदी 'बूँद वाली मिठाई'
जीभ	-ई		जीभी 'जीभ साफ़ करने की वस्तु'
बरसात	-ई		बरसाती
सं०	व्यु० विभ०	→	अपत्य वा० सं०
पित्त	-ई		पित्ती
ताड	-ई		ताडी
सं०	व्यु० विभ०	→	संबंध वा० स०
अक्षर	-ई		अक्षरी
अर्ज़	-ई		अर्ज़ी
प्रभात	-ई		प्रभाती
बरात	-ई		बराती
चपरास	-ई		चपरासी 'चपरास वाला'
स०	व्यु० विभ०	→	आदरार्थक सं०
मा	-ई		माई
सं०	व्यु० विभ०	→	व्यवसाय वा० स०
तेल	-ई		तेली
तमोल	-ई		तमोली
दफ्तर	-ई		दफ़्तरी
भंडार	-ई		भडारी

बिसात	-ई		बिसाती
शिल्प	-ई		शिल्पी
सं०	व्यु० विभ०	→	गुण वा० स०
विश्वास	-ई		विश्वासी
राग	-ई		रागी
विलास	-ई		विलासी
विवेक	-ई		विवेकी
विनय	-ई		विनयी
अपराध	-ई		अपराधी
सन्यास	-ई		सन्यासी
सयम	-ई		सयमी
फरेब	-ई		फरेबी

(३)

वि०	व्यु० विभ०	→	भाव० वा० स०
गर्म	-ई		गर्मी
खुश	-ई		खुशी
गरीब	-ई		गरीबी
बीमार	-ई		बीमारी
उदास	-ई		उदासी
खूबसूरत	-ई		खूबसूरती
सख्त	-ई		सख्ती
मिलनसार	-ई		मिलनसारी
दिलेर	-ई		दिलेरी
नामवर	-ई		नामवरी
गिरफ्तार	-ई		गिरफ्तारी
वि०	व्यु० विभ०	→	गुण वा० स०
सुन्दर	-ई		सुन्दरी
गौर	-ई		गौरी

इस प्रक्रिया मे समास के प्रथम रूप का / ओ /, / उ / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा.—

दोमुँह (~दुमुँह)	-ई		दुमुँही
वि०	व्यु० विभ०	→	वस्तु वा० स०
सब्ज	-ई		सब्जी
स्याह	-ई		स्याही

वि०	व्यु० विभ० →	समुदाय वा० सं०
बीस	-ई	बीसी
बत्तीस	-ई	बत्तीसी 'दातो की पक्ति'
पच्चीस	-ई	पच्चीसी

वि०	व्यु० विभ० →	माप वा० स०
पाँचसेर (~पसेर)	-ई	पसेरी
दोसेर (~दुसेर)	-ई	दुसेरी
तीनसेर (~तिसेर)	-ई	तिसेरी

उक्त विशेषण प्रातिपदिक समस्त प्रातिपदिक है जिनके आद्य रूपो मे उक्त प्रकार से परिवर्तन होते है।

(२)

अक० धा०	व्यु० विभ० →	भाव वा० स०
निकस	-ई	निकासी
हँस	-ई	हँसी
बोल	-ई	बोली
भभक	-ई	भभकी
सिसक	-ई	सिसकी
हिचक	-ई	हिचकी
धमक	-ई	धमकी

इस प्रक्रिया मे आद्य / इ /, / ए / मे परिवर्तित हो जाता है। यथा —

अक० धा०	व्यु० विभ० →	भाव वा० स०
फिर (~फेर)	-ई	फेरी

सक० धा०	व्यु० विभ० →	करण वा० स०
रेत	-ई	रेती
टाँक	-ई	टाँकी

सक० धा०	व्यु० विभ० →	भाव वा० स०
मुकर	-ई	मुकरी
फाँस	-ई	फाँसी
गाँस	-ई	गाँसी

सक० धा०	व्यु० विभ० →	कर्तृ० वा० सं०
अलाप	-ई	अलापी
भोग	-ई	भोगी

इस प्रक्रिया मे आद्य स्वर / अ / , / आ / मे परिवर्तित हो जाता है।
यथा.—

	परख (∼पारख)	-ई		पारखी
(४)	क्रि० वि०	व्यु० विभ०	→	भाव वा० स०
	टकटक	-ई		टकटकी
	सनसन	-ई		सनसनी
	गुदगुद	-ई		गुदगुदी
	रोज़	-ई		रोज़ी
	दूर	-ई		दूरी
	क्रि० वि०	व्यु० विभ०	→	वस्तु वा० स०
	गुडगुड	-ई		गुडगुडी 'फरशी'
	धुकधुक	-ई		धुकधुकी 'हृदय का स्पन्दन शील अग'
(५)	सं०	व्यु० विभ०	→	गुण वा० वि० अथवा स०
	रोग	-ई		रोगी
	लीग	-ई		लीगी
	लोभ	-ई		लोभी
	साहिब	-ई		साहिबी
	पडौस	-ई		पडोसी
	घमड	-ई		घमडी
	पाखड	-ई		पाखडी
	स०	व्यु० विभ०	→	स्थान वा० वि० अथवा स०
	ईरान	-ई		ईरानी
	देहाती	-ई		देहाती
	पाकिस्तान	-ई		पाकिस्तानी
	फारस	-ई		फारसी
	मारवाड	-ई		मारवाडी
	बगाल	-ई		बंगाली
	पहाड	-ई		पहाडी

२. १. १. ३. ३. {-ऊ}

इसका व्यवहार सामान्यतः दुलार वाचक संज्ञाओ के व्युत्पादन मे होता है तथा

यह बहुधा सज्ञाओ मे लगती है। कुछ क्रियाओ के साथ लगकर गुणवाचक तथा करण-वाचक सज्ञापद भी व्युत्पन्न करती है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है।

(१)	स०	व्यु० विभ०	→	दुलार वा० सं०
	बच्च|आ|	-ऊ		बच्चू
	लल्ल|आ|	-ऊ		लल्लू
	कल्ल|आ|	-ऊ		कल्लू
	शेर बहादुर(~शेर)	-ऊ		शेरू
	स०	व्यु० विभ०	→	आदरार्थक स०
	बाप	-ऊ		बापू
(२)	सक० क्रि०	व्यु० विभ०	→	करण वा० स०
	झाड	-ऊ		झाडू
(३)	अक० क्रि०	व्यु० विभ०	→	कर्तृ वा०स० अथवा वि०
	अकड	-ऊ		अकडू

इस प्रक्रिया मे यदि / ग / के पूर्व / अ / हो और प्रातिपदिक एकाक्षरिक हो, तो मध्य मे / ग / का द्वित्व हो जाता है। यथा:—

	लग (~लग्ग)	-ऊ		लग्गू
	भग (~भग्ग)	-ऊ		भग्गू
(४)	सक० धा०	व्यु० विभ	→	कर्तृ वा०स० अथवा वि०
	खा	-ऊ		खाऊ
	कमा	-ऊ		कमाऊ
	उडा	-ऊ		उडाऊ

२.१.२ सर्वनाम-पद

हिन्दी सर्वनामो मे सज्ञाओ की भाँति रूपान्तर होता है, परन्तु कुछ सज्ञा रूपो मे लिंग जिस प्रकार प्रत्यक्ष परिलक्षित होता है वैसा सर्वनामो मे नही। लिंग की प्रतीति या तो प्रकरण द्वारा या वाक्य मे प्रयुक्त क्रिया अथवा विशेषण द्वारा होती है। इस प्रकार हिन्दी मे सभी सर्वनाम स्त्रीलिंग अथवा पुल्लिग हो सकते है।

२. १. २. १. सर्वनाम प्रातिपदिकों के वर्ग

हिन्दी मे कुल मिलाकर तेरह सर्वनाम है :— / **मैं**, **तू**, **आप** (आदरसूचक), **आप** (निजवाचक), **आपस** (परस्परताबोधक), **यह**, **वह**, **सो**, **जो**, **कोई**, **कुछ**, **कौन**, **क्या** / । ये सभी सर्वनाम पुरुषवाचक[१] हैं । इस दृष्टि से इन्हे इन वर्गो मे रखा जाता है :— (१) **उत्तम पुरुष** / मैं / , (२) **मध्यम पुरुष** / तू / , (३) **अन्य पुरुष** / यह, वह, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ / , (४) **मध्यम तथा अन्य पुरुष** / आप / (आदरसूचक) । (५) **सर्व पुरुष वाचक** (उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष वाचक) / आप / (निजवाचक), **आपस** (परस्परता बोधक) / । / मैं , तू / सर्वनामो को छोड़कर शेष सर्वनामो मे दूसरा भाव भी विद्यमान है जो इनके प्रयोगो से परिलक्षित होता है । इस दृष्टि से इन्हे इन उपवर्गो मे रखा जाता है :— (३. १) **निश्चय वाचक** / यह, वह / , (३ २) **संबंध वाचक** / जो / , (३. ३) **नित्य संबंधी** / सो / , (३. ४) **प्रश्न वाचक** / कौन , क्या / , (३. ५) **अनिश्चय वाचक** / कोई , कुछ / , (४ १) **आदरसूचक** / आप / , (५. १) **निजवाचक** / आप, आपस / । इनमे भी निश्चय-वाचक, प्रश्नवाचक, अनिश्यवाचक तथा निचवाचक सर्वनामो के और प्रभेद है — (३. १ १) **निकटवर्ती निश्चयवाचक** / यह / , (३. १. २) **दूरवर्ती निश्चय-वाचक** / वह / , (३ ४. १) **प्राणियो तथा विशेषकर मनुष्यो के लिए प्रश्नवाचक** / कौन / , (३ ४ २) **क्षुद्र प्राणी, पदार्थ या धर्म के लिए प्रश्नवाचक** / क्या / , (३. ५. १) **प्राणियों• यथा मनुष्यो के लिए अनिश्चय वाचक** / कोई / , (३. ५ २) **क्षुद्र प्राणी , पदार्थ या धर्म के लिए अनिश्चयवाचक** / कुछ /, (५. १. १) **स्वयं वाचक** / आप /, (५. १. २) **परस्परता बोधक** / आपस / । आगे सर्वनामो की रूपतालिका इसी क्रम से प्रस्तुत की जायगी ।

२. १. २. २. सर्वनामों के अन्य प्रयोग

अधिकाश सर्वनामो का प्रयोग अन्य व्याकरणिक कोटियो मे भी होता है । सामान्यत. / मै, तू, आप (आदरसूचक) / सर्वनामो को छोडकर शेष सभी सर्वनामो

---

१. सर्वनाम पुरुषवाचक होते है क्योकि ये किसी न किसी रूप मे सृष्टि के मूर्त या अमूर्त अथवा जड या चेतन रूपो का द्योतन करते हैं । व्याकरण मे ये रूप पुरुष कहलाते हैं । वक्ता या लेखक की दृष्टि से इन सभी पुरुषो को तीन पक्षो मे रखा जाता है .—प्रथम वक्ता या लेखक, द्वितीय श्रोता या पाठक, तृतीय वस्तु-विषय । इन तीन पक्षो को वैयाकरण क्रमशः उत्तम, मध्यम तथा अन्य पुरुष नाम से अभिहित करता है ।

का प्रयोग विशेषणो के समान होता है । / कुछ / तथा निजवाचक / आप / का प्रयोग अधिकाशत विशेषण के रूप मे होता है, परन्तु ये सर्वनाम भी है, जमे , / मुझे उसमे कुछ नजर आता है / , / लडके को घर भेज दिया और आप बाजार गया / वाक्यो मे / कुछ / तथा / आप / सर्वनाम है । / कोई, कुछ, क्या, आप (निजवाचक) / का प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है, जैसे , / यहाँ होंगे कोई पचास घर / , / गर्मी कुछ बढी है /,/ मैं यह क्या बैठा हूँ / , / मैं आप गया था (अपनी इच्छा से)/ वाक्यो मे क्रमश / कोई, कुछ, क्या, आप / क्रियाविशेषण है । इन प्रयोगो के अतिरिक्त / जो, सो, क्या, कुछ / का प्रयोग समुच्चय बोधक अव्ययो के समान होता है, जैसे, / वह लडका भाग गया जो कल यहाँ था / , / उसने तो कभी नाम तक नहीं लिया तो क्या तुम भी उसे भूल गए / , / क्या मनुष्य क्या जीव सभी ईश्वर के हैं / , / कुछ बीमारी थी कुछ लापरवाही से यह मौत हुई / वाक्यो मे / जो, सो, क्या, कुछ / क्रमश- समुच्चय बोधक है । इस प्रकार सर्वनामो का व्यवहार अन्य कोटियो मे सभव है, परन्तु कहाँ पर सर्वनाम है और कहाँ विशेषण आदि, इसका निर्णय प्रकरण या वाक्य मे इनकी स्थिति पर अवलम्बित है । जब ये सज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो, तो इन्हे सर्वनाम समझना चाहिए । कभी-कभी / कौन / तथा / क्या / का प्रयोग सबध वाचक सर्वनामो के समान भी होता है, जैसे, / मैं कौन हूँ, यही तो नहीं जानता / , / पता लगाओ कि कल क्या हुआ / वाक्यो मे ये सबध वाचक सर्वनाम है, परन्तु इन प्रयोगो मे प्रश्न की प्रधानता है, अत इन्हे प्रश्नवाचक सर्वनामो मे रखा गया है । इस प्रकार तथोक्त सर्वनाम इन परिपाश्वों से संवलित है ।

जिस प्रकार सज्ञाओ के पश्चात् परसर्ग आते है उसी प्रकार इनके पश्चात् भी । सज्ञाएँ प्रत्यक्ष, तिर्यक सबोधन कारको मे व्यवहृत होती है, परन्तु सर्वनामो का सबोधन कारक नही होता । कभी-कभी नाम याद आने पर अथवा भावावेश मे / अरे तुम ! /, / अरे यह ! / , / ओ वह ! / आदि प्रयोग होते है । ये रूप वास्तव मे प्रत्यक्ष कारक के है । भावाभिव्यजक ये रूप विभक्तियाँ नही, अव्यय है ।

२ १ २ ३. सर्वनाम प्रातिपदिकों की विभक्ति और उनके परिवर्तन

सर्वनामो के सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण बात यह है कि इनके रूप सज्ञाओ की भाँति नियमित नही है, इस कारण प्रत्येक सर्वनाम को अलग-अलग रूपो मे प्रस्तुत करने की आवश्यकता है । ऊपर गिनाए गए वर्गो एव उपवर्गो के क्रम से प्रत्येक सर्वनाम की रूपतालिका प्रस्तुत की जाती है । सुविधा के लिए सार्वनामिक पदरचनाओ मे / -० / विभक्ति मानी जाती है जिसे इस प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है —

सर्वनाम प्रातिपदिक स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यक्ष	तिर्यक	प्रत्यक्ष	तिर्यक
		-०		

इस विभक्ति के पूर्व सर्वनाम प्रातिपदिको मे जो अनियमित परिवर्तन होते है उन्हे वर्गो के क्रम से निम्न प्रकार रखा जाता है:—

सर्वनाम प्रातिपदिक	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यक्ष	तिर्यक	प्रत्यक्ष	तिर्यक
(१) उत्तम पुरुष	मैं	∞मैं ∞मुझ ∞मुझ- ∞मे-	हम	∞हम ∞हम- ∞हमा-
(२) मध्यम पुरुष	तू	∞तू ∞तुझ ∞तुझ- ∞ते-	तुम	∞तुम ∞तुम्ह- ∞तुम्हा-
(३) अन्य पुरुष (३) निश्चय वाचक (३ १ १) निकटवर्ती	यह	∞इन ∞इस-	ये	∞इन ∞इन्ह- ∞इन्हों-
(३ १ २.) दूरवर्ती	वह	∞उस ∞उस-	वे	∞उन ∞उन्ह- ∞उन्हों-
(३.२) सबध वाचक	जो	∞जिस ∞जिस-	जो	∞जिन ∞जिन्ह- ∞जिन्हों-

सर्वनाम प्रातिपदिक	एकवचन		बहुवचन	
	प्रत्यक्ष	तिर्यक	प्रत्यक्ष	तिर्यक
(३.३) नित्य सबधी	सो	—	सो	—
(३.४) प्रश्नवाचक				
(३.४ १) प्राणियों तथा विशेषकर मनुष्यो के लिए	कौन	∞ किस ∞ किस-	कौन	∞ किन ∞ किन्ह- ∞ किन्हीं-
(३.४.२) क्षुद्र प्राणी पदार्थ या धर्म के लिए	क्य	क्या	—	—
(३.५) अनिश्चयवाचक				
(३ ५.१) प्राणियो तथा मनुष्यो के लिए	कोई	किसी	कोई	किन्ही
(३.५.२) क्षुद्र प्राणी पदार्थ या धर्म के लिए	कुछ	कुछ	कुछ	कुछ
(४) मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष				
(४.१) आदर सूचक	—	—	आप	आप
(५) सर्वपुरुष वाचक				
(५.१) निजवाचक				
(५.१.१) स्वय वाचक	आप	आप ∞अपने ∞अप-	आप	आप ∞अपने ∞अप-
(५.१.२) परस्परता बोधक	—	आपस	—	—

सूचना (१) / सो / सर्वनाम के / तिस / तिर्यक एक वचन तथा / तिन, तिन्ह-, तिन्हों / तिर्यक बहुवचन रूप पुरानी हिन्दी मे प्रयुक्त होते थे। आधुनिक परिनिष्ठित हिन्दी मे ये रूप उपलब्ध नही है। प्रत्यक्ष एक वचन तथा बहु वचन का / सो / रूप भी सामान्यत प्रयुक्त नही होता। यह रूप मुहावरो एव कहावतो मे उपलब्ध है। इसके स्थान पर प्राय / वह / सर्वनाम के रूप चलते हैं।

(२) पुरानी हिन्दी मे / क्या / का तिर्यक रूप / काहे / प्रयुक्त होता था परन्तु हिन्दी मे यह रूप अप्रचलित है।

दूसरी बात यह है कि / क्या / रूप का प्रयोग केवल प्रत्यक्ष कारक तथा तिर्यक कर्म कारक एक वचन मे ही होता है, बहु वचन प्रत्यक्ष तथा तिर्यक कारको मे / कौन / सर्वनाम के रूप प्रयुक्त होते हैं। इन रूपो को / कौन / के गृहीत रूप समझना चाहिए।

(३) निजवाचक / आप / का प्रयोग ही हिन्दी मे प्रामाणिक है, /अपन/ के रूपो को बोलीगत रूप कहा जा सकता है। मध्य प्रदेश मे इसके रूप चलते हैं।

(४) परस्परता बोधक / आपस / सर्वनाम का प्रयोग केवल एक वचन सबध और अधिकरण कारक मे होता है। जैसे, / आपस में ही इसे तय कीजिए / , / आपस की फूट बुरी होती है / ।

(५) निश्चयवाचक / यह, वह / सर्वनामो के वैकल्पिक रूप / ये, वो / (एक वचन) भी सुनने मे आते है परन्तु ये रूप अभी शिष्ट सम्मति से गृहीत नही हो पाए है।

२ १ २ ३ १. तिर्यक सपरिवर्तक

उक्त रूपतालिका से विदित होता है कि हिन्दी सर्वनामो के प्रत्यक्ष कारक मे अन्य सपरिवर्तक प्रयुक्त नही होते, प्रत्येक सर्वनाम का केवल एक ही रूप प्रयुक्त होता है। परन्तु तिर्यक एक वचन तथा बहुवचन मे / सो, क्या, कुछ, आप (आदर सूचक), आपस (परस्परता बोधक) / सर्वनामो को छोडकर शेष सभी सर्वनामो के सपरिवर्तक द्रष्टव्य है। ये सपरिवर्तक व्याकरणिक दृष्टि से अपने परवर्ती परसर्गो द्वारा प्रतिबन्धित है। परसर्गो मे भी कुछ परसर्ग ऐसे है जिनके अन्य सपरिवर्तक है तथा उनका प्रयोग

तिर्यक सर्वनामो के पश्चात् होता है। ये परसर्ग सपरिवर्तक दो प्रकार के हैं —(१) सश्लिष्ट तथा (२) विश्लिष्ट। उदाहरणार्थ / मुझ को पुस्तक चाहिए /, / मुझे पुस्तक चाहिए / वाक्यो मे / को / विश्लिष्ट तथा / -ए / सश्लिष्ट सपरिवर्तक परसर्ग है। / को / इसलिए विश्लिष्ट है कि इसके तथा इसके पूर्ववर्ती तिर्यक रूप के बीच मुक्त सक्रमण होता है, / -ए / के सबध मे यह बात नही, वहाँ युक्त सक्रमण होता है (§ ०.८)। जिस प्रकार सर्वनाम-तिर्यक सपरिवर्तक अपने परवर्ती परसर्गो द्वारा प्रतिबन्धित है, उसी प्रकार परसर्ग सपरिवर्तक अपने पूर्ववर्ती तिर्यक-सर्वनाम द्वारा प्रतिबन्धित है। पहले तिर्यक-सर्वनाम-सपरिवर्तको को प्रस्तुत किया जाता है।

सवनाम	तिर्यक सर्वनाम संपरिवर्तक	परवर्ती परसर्ग	सिद्ध रूप
{मैं}	मैं ∞मे- ∞मुझ- ∞ मुझ	{ने} ∞र-,∞रे ∞ए शेष परसर्ग	मैंने मेर-, मेरे मुझे मुझ को मुझ से मुझ में मुझ पर मुझ तक
{हम}	∞ हम- ∞ हमा- ∞ हम	∞ एँ ∞र-, ∞रे शेष परसर्ग	हमे हमार-, हमारे हम ने, हम को, हम से, हम में, हम पर, हम तक

{तू}	∞तू ∞ते- ∞तुझ- ∞तुझ	{ने} ∞र-, ∞रे ∞ए शेष परसर्ग	तूने तेर-, तेरे तुझे तुझ को, तुझ से, तुझ में, तुझ पर, तुझ तक
{तुम}	∞तुम्ह- ∞तुम्हा- ∞तुम	∞एँ ∞र-, ∞रे शेष परसर्ग	तुम्हें तुम्हार-, तुम्हारे तुम ने, तुम को, तुम से, तुम में, तुम पर, तुम तक
{यह}	∞इस- ∞इस	∞ए शेष परसर्ग	इसे इस ने, इस को, इस से, इस क- इस के, इस में, इस पर, इस तक
{ये}	∞इन्हों ∞इन्ह- ∞	{ने} ∞एँ शेष परसर्ग	इन्होंने इन्हें इन को, इन से, इन में, इन पर, इन तक, इन क-, इन के
{वह}	∞ उस- ∞ उस	∞ए शेष परसर्ग	उसे उस ने, उस को, उस से, उस क- उस में, उस पर, उस के, उस तक

{वे}	∞उन्हों ∞इन्ह- ∞उन	{ने} ∞एँ शेष परसर्ग	उन्हों ने उन्हें उनको, उन से, उन में, उन पर, उन क-, उन के उन तक
{जो}	∞जिस- ∞ जिस	∞ए शेष परसर्ग	जिसे जिस ने, जिस को, जिस से, जिस क-, जिस के, जिस में, जिस पर, जिस तक
{जिन}	∞जिन्हों ∞जिन्ह- ∞जिन	{ने} ∞एँ शेष परसर्ग	जिन्हों ने जिन्हें जिन को जिन से, जिन में, जिन पर, जिन तक, जिन क-, जिन के
{कौन}	∞किस- ∞किस	∞ ए शेष परसर्ग	किसे किस ने, किस को, किस से, किस क-, किस के, किस में, किस पर, किस तक
{किन}	∞किन्हों ∞किन्ह- ∞किन	{ने} ∞ एँ शेष परसर्ग	किन्हों ने किन्हें किन को, किन से, किन में, किन पर, किन तक, किन क-, किन के

स्वय- वाचक {आप}	∞अप- ∞आप ∞अपने	∞न-, ∞ने शेष परसर्ग ({ने} को छोडकर)	अपन-, अपने आप को, आप से आप में, आप पर, आप तक अपने को, अपने मे, अपने में, अपने पर, अपने तक

सूचना (६) स्वयवाचक / आप / सर्वनाम के तिर्यक रूपो के पश्चात् / ने / परसर्ग का व्यवहार नहीं होता। अन्य सर्वनाम तिर्यको के पश्चात् लगने वाला / ने / तथा / अप- / के पश्चात् लगने वाला सपरिवर्तक परसर्ग / -ने / दोनो अलग-अलग है। प्रथम / ने / कर्तृ-सूचक है तथा दूसरा / -ने / सम्बन्ध सूचक। इसके अतिरिक्त दोनो मे संक्रमण का अन्तर है। प्रथम विश्लिष्ट है और दूसरा सश्लिष्ट।

इस सर्वनाम का एक तिर्यक् रूप / अपने / भी है, जिसका व्यवहार / ने / परसर्ग को छोडकर शेष परसर्गो के पूर्व होता है। यहाँ पर भी यह ध्यान देने योग्य है कि तिर्यक् रूप / अपने / के / ने / को परसर्ग नही कहा जा सकता, वह तो तिर्यक् रूप मे सपृक्त अश है, उसकी कोई परसर्ग जैसी कार्यकारिता नही।

२.१.२ ३.२. परसर्ग संपरिवर्तक

पहले कहा जा चुका है कि कुछ परसर्गो के सपरिवर्तक तिर्यक् सर्वनाम रूपो द्वारा प्रतिबन्धित है। यहाँ इनका अपेक्षित विवरण प्रस्तुत किया जाता है क्योकि परसर्गो का विचार आगे के प्रकरण का विषय है (§ ३. १)। सर्वनाम तिर्यक् रूपो के पश्चात् आने वाले परसर्ग सपरिवर्तको के तीन प्रधान प्रतिरूपक है जिनके अन्तर्गत उक्त विवेचन मे आए हुए सभी परसर्ग सपरिवर्तको को इस प्रकार रखा जाता है।

{क}	{के}	{को}
∞क-	∞के	∞-ए

∞-र-　　∞-रे　　∞-एँ
∞-न-　　∞-ने　　∞को

सामान्यत, इनमे / ∞-र-, ∞ न- /, / ∞-रे, ∞-ने/तथा/ ∞-ए, ∞ एँ/ सश्लिष्ट परसर्ग है तथा शेष विश्लिष्ट। ये सपरिवर्तक अपने पूर्ववर्ती तिर्यक्-सर्वनाम रूपो द्वारा इस प्रकार प्रतिबधित है।

परसर्ग	परसर्ग सपरिवर्तक	पूर्ववर्ती सर्वनाम तिर्यक्	सिद्ध रूप
{क-}	∞क-	निश्चयवाचक सर्वनाम {यह}, { वह }, सम्बन्धवाचक { जो } तथा प्रश्नवाचक { कौन } के क्रमश एक वचन तिर्यक् रूप / इस /, / उस /, / जिस /, / किस / तथा बहुवचन तिर्यक् रूप / इन /, / उन /, / जिन / तथा / किन के पश्चात।	इस क-, उस क-, जिस क-, किस क-, इन क-, उन क-, जिन क-, किनक-,
		अनिश्चय वाचक सर्वनाम {कोई}, {कुछ} के एकवचन तिर्यक् रूप / किसी /, / कुछ/ तथा बहुवचन तिर्यक् रूप / किन्हीं /, / कुछ / के पश्चात्। आदरसूचक {आप} के तिर्यक्, बहुवचन / आप / तथा परस्परता बोधक एक वचन / आपस / के पश्चात्।	किसी क-, कुछ क-, किन्हीं क-, आप.क-, आपस क-
	∞-र-	उत्तम पुरुष { मैं } के एक वचन तिर्यक् / मे- / तथा बहुवचन तिर्यक / हमा- / के पश्चात्।	मेर-, हमार-
		मध्यम पुरुष {तू} के एक वचन तिर्यक् / ते- / तथा बहुवचन तिर्यक् / तुम्हा- / के पश्चात्।	तेर-, तुम्हार-

	-न-	स्वय वाचक {आप} के तिर्यक एक वचन तथा बहुवचन / अप- / के पश्चात् ।	अपन-
{के}	∞के	परस्परता बोधक {आपस} को छोडकर उन सभी तिर्यक् रूपो के पश्चात् इसका प्रयोग होता है जो / क- / के पूर्व आते है । (दे० / क- /)	इस के, उस के, जिस के, किस के, इन के, उन के, उन के, जिन के, किन के, किसी के, किन्हीं के, कुछ के, आप के
	∞-रे	उस सभी तिर्यक् रूपो के पश्चात् जिनका प्रयोग / र- / के पूर्व होता है । (दे० / र- /)	मेरे, हमारे, तेरे, तुम्हारे
	∞-ने	उस तिर्यक् रूप के पश्चात् जिसका प्रयोग / न- / के पूर्व होता है ।	अपने

सूचना (७) इस प्रसंग मे {क-} तथा {के} परसर्गो के सबध मे यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हिन्दी मे ये दोनो परसर्ग अपने सहजातीय संपरिवर्तको सहित अलग-अलग अस्तित्व रखते हैं तथा दोनो स्वतन्त्र परसर्ग हैं ।[1] {क-} के द्वारा भेद्य-भेदक सबध प्रकट होता है जबकि {के} के द्वारा अस्तित्व अथवा उत्पत्तिपरक सबध प्रकट होता है । जब भेद्य-भेदक की विवक्षा होती है तो {क-} का प्रयोग होता है, जैसे; / उसका लडका सोता है, / मेरा लडका सोता है / , / अपना लडका सोता है / , / उसकी

---

१. इस विषय पर प० किशोरीदास वाजपेयी जी ने सबध-प्रत्यय तथा सबध विभक्तियो, के रूप मे सुन्दर विवेचन किया है । 'हिन्दी शब्दानुशासन,' द्वितीय अध्याय, पृष्ठ १२७-१३३, १५९-१६४, १६६ ।

लडकी सोती है / , / मेरी लडकी सोती है / , / अपनी लडकी सोती है / , / उसके लडके सोते हैं / , / मेरे लडके सोते हैं / / अपने लडके सोते हैं / वाक्यो मे / उस /,/ मे- / , / अप- /, भेदक और / लडका / , लडकी / , / लडके / भेद्य। भेदक-भेद्य सम्बन्ध / क-∞ -र- ∞ -न- / द्वारा प्रकट होता है। परन्तु / उस के लडका हुआ / , / मेरे लडका हुआ / , / अपने लडका हुआ / , / उस के लडकी हुई / , / मेरे लडकी हुई / , / अपने लडकी हुई / , / उस के चार लडके हैं / , / मेरे चार लडके हैं / , / अपने चार लडके हैं / , / उसके लडका है / , / मेरे लडका है / , / अपने लडका है / , / उस के चार लडकियाँ हैं / , / मेरे चार लडकियाँ हैं, / अपने चार लडकियाँ हैं / वाक्यो मे अस्नित्व-अस्तित्वक भाव विवक्षित है। इनमे / उस / / मे- / , / अप- / अस्तित्वक है क्योकि ये विशेषत अपना स्वत्व द्योतिक करते हैं तथा / लडका / , / लडकी / , /लडके/, / लडकियाँ / अस्तित्व हैं। यह सम्बन्ध/के ∞-रे ∞-ने / द्वारा व्यक्त होता है।

एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि {क-} परसर्ग मे विशेषरण की भाँति लिंग एव वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती है (§ २ १ ३ (१), (२)) जबकि {के} परसर्ग के सबध मे यह बात नही, वह सदैव एक रूप रहता है। उक्त उदाहरणो द्वारा यह स्पष्ट परिलक्षित होता है।

परसर्ग	परसर्ग सपरिवर्तक	पूर्ववर्ती सर्वनाम तिर्यक्	सिद्ध रूप
{को}	∞ -ए	उत्तम पुरुष {मैं}, मध्यम पुरुष {तू}, अन्य पुरुष निकटवर्ती {यह}, दूरवर्ती {वह}, सबध वाचक {जो} तथा प्रश्न वाचक {कौन} के एक वचन तिर्यक रूप / मुझ- / / तुझ / , / इस- / , / उस- / , / जिस- / तथा / किस- / के पश्चात्।	मुझे, तुझे, इसे, उसे, जिसे, किसे

∞-एँ	उक्त सर्वनामो (/ ए / से सबध रखने वाले) के क्रमश· बहुवचन तिर्यक् रूपो / हम- /, / तुम्ह- /, / इन्ह- /, / उन्ह- /, / जिन्ह- /, / किन्ह- / के पश्चात् ।	हमें, तुम्हें, इन्हे, उन्हें जिन्हें, किन्हें
∞ को	उत्तम पुरुष { मैं }, मध्यम पुरुष { तू }, निकटवर्ती { यह }, दूरवर्ती { वह }, सबंध वाचक { जो }, प्रश्न-वाचक { कौन }, अनिश्चय-वाचक { कोई }, { कुछ }	मुझ को, हम को, तुझ को, तुम को,
	आदरसूचक { आप }, निज-वाचक { आप } के क्रकश एक-वचन तथा बहुवचन तिर्यक् रूप / हम /, / तुझ /, / तुम /, / इस /, / इन /, / उस /, / उन /, / जिस /, / जिन /, / किस /, / किन /, / किसी /, / किन्हीं /, / कुछ /, / आप /, / आप / के पश्चात्	इस को, इन को, उस को, उन को, जिस को, जिन को, किस को, किन को, किसी को, किन्हीं को, कुछ को, आपको (आदर सूचक) आपको (निजवाचक) ।

सूचना (८) {को} परसर्ग के संपरिवर्तको का { कुछ }, { कोई }, { आप } आदरसूचक, { आप } निजवाचक सर्वनामो को छोडकर शेष सभी सर्वनामो के तिर्यक रूपो के पश्चात् वैकल्पिक प्रयोग है। जैसे, / मुझ को मुझे /, / हम को हमें /, / किस को · किसे /। हिन्दी मे इस प्रकार के दोनो रूप चलते हैं। एक विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि / - एँ / का व्यवहार बहु-वचन तिर्यक / हम - /, / तुम्ह -, / इन्ह - /, / उन्ह - /, / जिन्ह - /, / किन्ह - / के पश्चात् होता है परन्तु जब / - ए /

के स्थान पर / को / का प्रयोग होगा तो उक्त रूपो का / ह / नही होता, / ह / रहित अवस्था मे इनके पश्चात् इसका प्रयोग होगा। जैसे , / हम को / , तुम को / , / इन को / , उन को / , / जिन को / , / किन को / । इस प्रकार विश्लिष्ट परसर्ग / को / का वैकल्पिक प्रयोग होगा ।

(९) आदरसूचक / आप / का प्रयोग सदैव आदर के अर्थ मे होता है। इसके अतिरिक्त निजवाचक / आप / , तथा / क्या / , / कुछ / सर्वनामो को जोडकर शेष सर्वनामो के बहुवचन रूप आदर के अर्थ मे भी आते है। जैसे; / तुम मुझे वहाँ जाने को कहते हो, हम वहाँ न जाएँगे / , / सीता ! तुम घर क्यों नहीं जाती / , / पाणिनि ! वे तो महान वैयाकरण थे / , / ये ही शकर हैं जिन्हों ने अद्वैतवाद चलाया / , / यह रचना प्रसाद जी की है, जो प्रेम और श्रेय के अमर कवि हैं / , / वे कौन हैं, कहीं गौतम तो नहीं / , / मेरे यहाँ कोई आए है, शायद सक्सेनाजी हैं / वाक्यो मे / हम, तुम, वे, ये, जो, कौन, कोई / आदरसूचक रूप है। यद्यपि वे रूप एक व्यक्ति के द्योतक हैं, फिर भी इनके साथ क्रिया की अन्विति बहुवचन रूपो के साथ न होकर 'आदर' भाव पर अवलम्बित भावान्विति[1] समझना चाहिए।

(१०) जब सख्या का बहुत्व विवक्षित होता है तो बहुवचन सर्वनामो के पश्चात् / लोग / लगाते है तथा इसमे संज्ञा की / - ओं / तिर्यक बहुवचन विभक्ति लगती है तत्पश्चात् परसर्गो का प्रयोग होता है। जैसे, / आप लोगों ने ऐसा किया / ।

(११) आदरसूचक / आप / का प्रयोग, मध्यम तथा अन्य, दोनो पुरुषो मे होता है। अन्य पुरुष का निर्णय या तो प्रकरण द्वारा या वक्ता की मुद्रा अथवा हस्त-सचालन द्वारा होता है। जैसे,

---

1. Synesis—A syntactical construction in which grammatical concord follows the sense of a word rather than its grammatical form Mario A Pei & Gaynor, A Dictionary of Linguistics, Newyork, 1954,

जब किसी व्यक्ति को परिचित कराया जा रहा है तो इसका प्रयोग अन्य पुरुष मे होता है— आप बडे ही उदार हैं'।
इसी को हस्त-संकेत द्वारा कहा जा सकता है।

(१२) निजवाचक { आप } सर्वनाम मे मिश्र संश्लिष्ट परसर्ग सपरिवर्तक / - न - / सहित / अपन - / रूप मे / - ओं ' बहुवचन की विभक्ति लगती है तब यह रूप 'अपने व्यक्तियों' के अर्थ मे संज्ञावत् प्रयुक्त होता है। जैसे, / वह अपनों को ही चाहता है /।

२ १. ३ विशेषण-पद

विशेषण प्रतिपदिको के पश्चात् संज्ञाओ की भाँति लिंग, वचन और कारक के अनुसार विभाक्तियाँ परिलक्षित होती है। कभी-कभी विशेषण प्रातिपादिको का व्यवहार संज्ञाओ के समान भी होता है। इस परिस्थिति मे इनमे संज्ञा विभक्तियो का योग होता है, परन्तु जब ये संज्ञा की विशेषता प्रकट करते है तो वे विशेषण कहलाते है। इस दृष्टि से विशेषण विभक्तियो का योग होता है।

२ १ ३ १ विशेषण प्रातिपदिको के वर्ग तथा विभक्तियाँ

विशेषण प्रातिपदिको को केवल तीन वर्गो मे रखा जाता है -(१) पुल्लिग, (२) स्त्रीलिंग, (३) पुल्लिग तथा स्त्रीलिग। स्त्रीलिंग अथवा पुल्लिग का बोध संज्ञा अथवा क्रिया द्वारा होता है। जिन विशेषण प्रातिपदिको मे विभक्तियाँ लगती है वे स्त्रीलिंग तथा पुल्लिग वर्ग मे आती है। जिन प्रातिपदिको मे कोई विभक्ति नहीं लगती वे पुल्लिग तथा स्त्रीलिग मे आती है। इस वर्ग मे प्रातिपदिक ही पद होता है। सामान्यत जिन विशेषण प्रातिपदिको के पुल्लिग तथा स्त्रीलिग रूप समानान्तर मिलते है वे पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग वर्ग मे आते है, परन्तु जिनके समानान्तर रूप नही वे प्राय एक ही रूप मे स्त्रीलिग तथा पुल्लिग वर्ग मे आते है।

पुल्लिग वर्ग के अन्तर्गत आने वाले प्रातिपदिको मे लगने वाली विभक्तियाँ / - आ / तथा / - ए / है। स्त्रीवर्ग के अन्तर्गत आने वाली विभक्ति / - ई / है। / - आ / विभक्ति पुल्लिग एकवचन के प्रत्यक्ष, तिर्यक् तथा संबोधन कारक मे प्रयुक्त होती है। इस प्रकार प्रत्यक्ष, तिर्यक् तथा संबोधन कारको के रूप एक समान है। / - ए / का योग बहुवचन पुल्लिग के प्रत्यक्ष, तिर्यक् तथा संबोधन कारको मे होता है। यहाँ पर भी तीनो कारको के रूप एक समान है। / - ई / का योग स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन के प्रत्यक्ष, तिर्यक तथा संबोधन कारक मे होता है। ये कारक रूप भी एक समान है। आगे प्रत्येक वर्ग की रूपतालिका उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है।

(१) पुल्लिग

एकवचन			बहुवचन		
प्रत्यक्ष	तिर्यक	संबोधन	प्रत्यक्ष	तिर्यक	सबोधन
-आ			-ए		

इस वर्ग के अन्तर्गत / काल - /, / आध - /, / बड - /, / सजील - /, / चुनींद - /, / दून - /, / पराय - /, / कलूट - /, / घनेर - /, / पहलौठ - /, / इकट्ठ - /, / चौथ - /, / पहल - /, / पाँचव - /, / आठवँ- /, / तीसर- /, / इकहर - /, / इनन - /, / उतन - /, / जितन - /, / कितन - /, / ऐस-/, / वैस- /, / जैस - /, / कैस - /, / गेरुअ - /, / मर्दान - /, / पथरील- /, / ममेर - /, / पोशीद - /, / भडकील - /, / मटैल - /, / घिनौन - /, बिजौर- / बचकान - /, / घुँधल - /, / सुनहर - /, /दोस्तान - /, / लजील - / इत्यादि जैसे विशेष प्रातिपदिक आते है। इन सभी प्रापिपदिको मे उक्त विशेषरण-विभक्तियाँ लगती है।

/ - एक / विभक्ति लगने के पूर्व के / य / अन्त वाले प्रातिपदिको का यह / य / लुप्त हो जाता है। उक्त तालिकानुसार कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है :—

काल-	काला	काले
आध-	आधा	आधे
बड-	बडा	बडे
चुनींद-	चुनींदा	चुनींदे
पाँचव-	पाँचवाँ	पाँचवें
आठवँ-	आठवाँ	आठवें
पराय-	पराया (~परा)	पराए

(२) स्त्रीलिंग

एकवचन			बहुवचन		
प्रत्यक्ष	तिर्यक	सबोधन	प्रत्यक्ष	तिर्यक	सबोधन
		-ई			

इस वर्ग के अन्तर्गत पुल्लिग वर्ग वाले प्रातिपदिक आते है (§ २. १. ३. १. (१) पुल्लिग) । इन सभी मे उक्त विभक्ति लगती है।

/ - ई / विभक्ति लगने के पूर्व के / य / अन्त वाले प्रानिपादको का यह / य / लुप्त हो जाता है । उक्त तालिकानुसार कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं —

काल - काली
आध - आधी
पाँचवँ- पाँचवीँ
पराय - (~परा) पराई

(३) पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग

एकवचन			बहुवचन		
प्रत्यक्ष	तिर्यक	सबोधन	प्रत्यक्ष	तिर्यक	सबोधन
		-०			

इस वर्ग के अन्तर्गत / शर्मिन्दा / , / पनिया / , / सवा / , / बढिया / , / घटिया / , / उम्दा / , / दुखिया / , / / उठुउआ / , / चुनवाँ / , / ढलवाँ / , / तयशुदा / , / गुमशुदा / , / केसरिया / , / दूधिया / , / लहरिया / , / सौतिया / , / 'पश्मीना / , / पाकीज़ा / , / पछुवा / , / शादीशुदा / , / तिहाई / , / चौथाई / , एकाकी / , / ऊपरी / , / बाहरी / , / निजी / , / कमती / , / पुरवाई / बर्फानी , / आगामी / , / बातूनी / , / ऊनी / , / सूती / , / देशी / , / अगूरी / , / पुश्तैनी / , / उपजाऊ / , / लडाकू / , / गिरासू / , / चालू / , घरेलू / ,

, सफेद / , / एकत्रित / , / मढियल / , / मँगेतर / , / दबैल / , / जागरूक / , / एकम (पहाडे मे) / , / दूने (पहाडे मे। / , / कमीन / , / दोनो / , / सैकडो / , / बीसियो / , / बदकार /, / गूढतम / , / अधिकतर / , / फूहड / , / घायल / , / गँवार / , / दम्तावर / , / इस्लामिक / , / रगीन / , दर्दनाक / , / नमकीन / , /तौंदिल / , ढेगो / , / मनो / , / जरखेज / , / रुईदार / , / मिलनसार / , / सूदखोर / इत्यादि जैसे प्रातिपदिक आते है। इनमे कोई विभक्ति नही लगती। प्रातिपदिक रूप तथा पद-रूप तद्वत है।

सूचना (१३) विशेषण उद्देश्य रूप मे अथवा विधेय रूप मे सज्ञा के लिंग और वचन के अनुसार अन्वित रहता है। उदाहरणार्थ / काला घोडा दौडता है / , / काले घोडे दोडते हैं / , / काली घोडियाँ दौडती हैं / , / वह घोडा काला है / , वह घोडी काली है / , / वे घोडे काले हैं / वाक्यो मे / काला, काली / काले / विशेषण द्रष्टव्य है।

(१४) जब विशेषणो का प्रयोग सज्ञा की भाँति होता है तब वे सज्ञा की भाँति रूपान्तिरित होते है। यथाः- / बडो की बात समझो / वाक्यो मे / बडो / सज्ञा है।

(१५) / मेर - / , तेर - / , / हमारा - / , तुम्हार - / , / अपन - / , / उसक- / आदि प्रातिपदिको को विशेषण कहा जाता है क्योकि ये किसी न किसी रूप मे सज्ञा की विशेषता घोषित करते है। इस दृष्टि से इनमे पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग वर्गों के अनुसार विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे, / मेरा, मेरे / , / मेरी / , / तेरा, तेरे / , / तेरी / , / तुम्हारा, तुम्हारे / , / तुम्हारी /, / अपना, अपने / , / अपनी / , / उसका , उसके / , / उसकी / इत्यादि। परन्तु उक्त प्रातिपदिको मे / क- ∞ -र- ∞ - न- / को परसर्ग कहा गया है तथा उनके पूर्व रूपो को सार्वनामिक तिर्यक। इस परसर्ग के द्वारा भेद्य-भेदक सम्बन्ध है (§ २. १. २ ३ २ सूचना (७))। इस प्रकार इनको सर्वनाम प्रकरण मे रखा है।

२. १. ३. २. विशेषण विभक्ति की व्युत्पादन-क्षमता

सज्ञा विभक्तियो का विवेचन करते समय उनकी व्युत्पादन क्षमता का दिग्दर्शन किया गया था (§ २. १. १. ३)। इसी प्रकार / - आ / विशेषण-विभक्ति के द्वारा व्युत्पादन क्षमता परिलक्षित होती है। इस प्रकार यह व्युत्पादक परप्रत्यय

भी है। उदाहरणार्थ / भूख / सज्ञा प्रातिपदिक मे / - आ / लगकर / भूखा / विशेषणपद सिद्ध होता है। नीचे इस व्युत्पादक विभक्ति की व्युत्पादन क्षमता प्रस्तुत की जाती है।

२ १ ३ २·१ { -वा }

इस व्युत्पादन विभक्ति का व्यवहार सज्ञा तथा क्रियाविशेषणो के पश्चात् होता है तथा इसके योग से विशेषण पद व्युत्पन्न होते हे। यथा —

(१)

स०	व्यु० विभ →	विशेषणपद
मैल	आ	मैला
भूख	-आ	भूखा
प्यार	-आ	प्यारा
प्यास	-आ	प्यासा
रुआस	-आ	रुआसा

समस्त प्रातिपदिको मे भी इसकी व्युत्पादकता द्रष्टव्य है। यथा .—

दुमजिल-	-आ	दुमजिला
दुरग-	-आ	दुरगा
तिमजिल-	-आ	तिमजिला
चौमुहँ-	-आ	चौमुहाँ
दुमुहँ-	-आ	दुमुहाँ

(२)

क्रि० वि०	व्यु० विभ० →	विशेषणपद
पुलपुल	-आ	पुलपुला
गुदगुद	-आ	गुदगुदा
पिलपिल	-आ	पिलपिला
अटपट	-आ	अटपटा
खसखस	-आ	खसखसा
भुरभुर	-आ	भुरभुरा
चटपट	-आ	चटपटा
गुलगुल	-आ	गुलगुला

२ २ क्रियापद

जिस पद के द्वारा किसी वस्तु के विषय मे विधान किया जाता है उसे क्रियापद कहते है। उदाहरणार्थ / लडका आया / वाक्य मे / आया / क्रियापद द्वारा लडके के विषय मे विधान किया गया है। क्रिया की इस वैधानिक कार्यकारिता से वाच्य,

रीति, काल, पुरुष, लिंग तथा वचन का बोध होता है। उक्त वाक्य मे /आया/ क्रियापद से कर्तृवाच्य (लडके से अन्विति), निश्चयार्थ (आने का निश्चय), भूतकाल, अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एकवचन का बोध होता है। व्याकरण मे ऐसी क्रियाओ को **समापक क्रियापद** कहा जाता है। इन क्रियापदो के अन्तर्गत तथा इनके अतिरिक्त कुछ ऐसे भी क्रियापद है जिनका उपयोग दूसरे पद-भेदो के समान होता है। जैसे, / तुम वहाँ चलना / वाक्य मे / चलना / समापक क्रियापद है, परन्तु / आपका चलना मुझे अखरता है / वाक्य मे / चलना / सज्ञापद है। इसी प्रकार / वह चलती है / वाक्य मे / चलती / समापक क्रियापद है, परन्तु / चलती गाडी में मत चढो / वाक्य मे चलती विशेषणपद है। ऐसे रूपो को **असमापक** अथवा **कृदन्त-पद** कहा जाता है। असमापक क्रियापदो अथवा कृदन्त-पदो के भेद को दूसरे ढग से यो कहा जा सकता है कि समापक क्रियापद कर्त्ता, कर्म अथवा भाव से अन्वित होते हैं परन्तु कृदन्त-पद इस प्रकार अन्वित नही होते, वे तो सज्ञा, विशेषण अथवा क्रियाविशेषण के रूप मे आकर अपनी तज्जनित विशेषता या लाक्षणिकता अभिव्यक्त करते है। पहले समापक क्रियापदो पर विचार किया जाता है। कृदन्त-पदो का विवेचन आगामी प्रकरण का विषय है।

२. २. १. समापक क्रियापद, कालों के वर्ग तथा काल-रचना

धातुओं मे वाच्य, रीति, काल, पुरुष, लिंग तथा वचन के अनुसार विभाक्तियाँ लगने से समापक क्रियापद बनते है। हिन्दी मे तीन वाच्य हैं[1]. (१) कर्तृवाच्य, (२) कर्मवाच्य तथा (३) भाववाच्य। इन सभी वाच्यो मे क्रियाओ द्वारा व्यक्त प्रधानतः

---

१. क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्त्ता है, तब उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। जिस रूप से यह बोध होता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म है, तब उसे कर्मवाच्य कहते है। क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्त्ता अथवा कर्म नही है, अपितु क्रिया स्वतत्र पद्धति ग्रहण करती है, तब उसे भाववाच्य कहते हैं। कर्तृवाच्य मे क्रियाएँ सकर्मक तथा अकर्मक दोनो हो सकती हे परन्तु कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मे क्रिया क्रमश. सकर्मक तथा अकर्मक होती है। उदाहरणार्थ / लडका पढता है /, / कपडा खरीदा गया / , / मुझ से चला नहीं जाता / वाक्यो मे प्रयुक्त क्रियाएँ क्रमश· कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य है। इसके अतिरिक्त / ने / परसर्ग युक्त कर्त्ता के वाक्यो की क्रियाओ को छोडकर शेष स्थितियो मे क्रियाएँ कर्त्ता, कर्म तथा भाव के अनुसार अन्वित होती है। / ने / परसर्ग युक्त कर्त्ता के प्रयोगो मे यद्यपि क्रिया कर्म के अनुसार अन्वित होती है, जैसे , /लडके ने पुस्तके खरीदीं/

पाँच रीतियाँ[1] है—(१) निश्चय, (२) सभावना, (३) सदेह, (४) विधि तथा (५) सकेत । कालो की दृष्टि से हिन्दी क्रियाओ के द्वारा तीन काल व्यक्त होते है —(१) वर्तमान, (२) भूत तथा (३) भविष्यत् । क्रिया सी सामान्यता, अपूर्णता तथा पूर्णता की दृष्टि से भविष्यत् काल को छोडकर शेष दोनो कालो के तीन-तीन भेद हो जाते है:—(१. १) सामान्य वर्तमान, (१. २) अपूर्ण वर्तमान, (१. ३) पूर्ण वर्तमान, (२. १) सामान्य भूत, (२. २) अपूर्ण भूत तथा (२. ३) पूर्ण भूत। क्रिया की सामान्य अवस्था से केवल काल-बोध होता है उससे व्यापार की पूर्णता अथवा अपूर्णता का बोध नही होता । क्रियाओ से पुरुष, लिंग और वचन का भी बोध होता है । नामपदो की भाँति हिन्दी क्रियाओ मे तीन पुरुष — (१) उत्तम (२) मध्यम तथा (३) अन्य । दो लिंग —(१) पुल्लिग तथा (२) स्त्रीलिंग तथा दो वचन —(१) एक वचन तथा (२) बहुवचन, होते है ।

हिन्दी क्रियाओ की गिनाई गई उक्त कोटियाँ एक दूसरी से स्वतत्र नही हैं, प्रत्येक का शेष कोटियो से समवाय सबध व्यक्त होता है । क्रिया के रूप से वाच्य, रीति, काल, पुरुप, लिंग तथा वचन का सबध प्रकट होता है । उदाहरण के लिए, / लडका पढता है / वाक्य मे / पढता हे / क्रियापद कर्तृवाच्य, निश्चयार्थ रीति, अपूर्ण

वाक्य मे / खरीदीं / क्रिया कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार है । इस परिस्थिति मे ऐसे प्रयोगो को कर्मवाच्य कहा जा सकता है, परन्तु यहाँ कर्म की प्रधानता नही है, कर्त्ता की है, वाक्य का /उद्देश्य/लडका है । अत रूप के अनुसार कर्मवाच्य होने पर भी अर्थ के अनुसार कर्तृवाच्य है । इसी प्रकार / लडके ने माँ को बुलाया / वाक्य मे / बुलाया / क्रिया रूप के अनुसार भाववाच्य है परन्तु अर्थ के अनुसार कर्तृवाच्य है । यहाँ भी वाक्य का उद्देश्य / लडका / है । इस प्रकार कर्तृवाचक मे कर्ता, कर्म तथा भाव के अनुसार क्रिया की अन्विति को कर्त्तरि, कर्मणि तथा भावे प्रयोग कहते है । कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य अलग हैं, इनमे वाक्य के उद्देश्य की प्रधानता होती है । यद्यपि सस्कृत मे 'वाच्य' तथा 'प्रयोग' नाम पर्यायवाची है क्योकि वहाँ इस प्रकार की भेदकता नही । हिन्दी मे उद्देश्य तथा अन्विति की भेदकता होने से 'वाच्य से अभिप्राय क्रिया के उद्देश्य से है तथा 'प्रयोग' से अभिप्राय: कर्त्ता ,कर्म तथा भाव से क्रिया की अन्विति से है । कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मे क्रियाएँ क्रमश: कर्मणि तथा भावे प्रयोग मे आती है (कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, §३४९-५१) ।

१ कामता प्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, § २६० ।

वर्तमान काल, अन्य पुरुष, पुल्लिग तथा एक वचन कोटियो को एक साथ व्यक्त करता है। इन समस्त कोटियो के सग्रहीत रूप को हिन्दी क्रियाओ की काल-रचना समझना चाहिए, काल के भीतर समस्त कोटियाँ समाहित हो जाती है।

रचना तथा प्रधानता की दृष्टि से हिन्दी के समस्त कालो को दो वर्गों मे रखा जाता है —(१) **मूलकाल तथा** (२) **सयुक्तकाल**।[१] वे काल मूलकाल कहलाते है जिनमे सहायक क्रिया नही आती। इनके भी दो उपवर्ग है।—(१. १) वे मूलकाल जो धातुओ मे विभक्ति लगने पर सिद्ध होते है तथा (१. २) वे मूलकाल जो धातुओ मे कृन्दतीय विभक्ति लगने पर बनते है। सयुक्त काल वे कहलाते है। जिनमे कृदन्त क्रिया के साथ एक सहायक क्रिया आती है। इनके तीन उपवर्ग है —(२ १.) वे सयुक्त काल जिनमे वर्तमानकालिक कृदन्त क्रिया के साथ सहायक क्रिया आती है, (२. २, वे सयुक्त काल जिनमे भूतकालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया आती है तथा (२. ३) वे संयुक्त काल जिनमे भविष्यत् कालिक कृदन्त के साथ सहायक क्रिया आती है। हिन्दी मे कालो की कुल सख्या २४ है। इन्हे तथोक्त वर्गों मे इस प्रकार रखा जाता है।

(१) मूलकाल

(१. १) धातुमूलक

		उदाहरण
१.	भविष्यत् सभावनार्थ	शायद वे लिखें
२.	,, सामान्य	मैं लिखूँगा
३.	,, प्रत्यक्ष विध्यर्थ	तुम लिखो
४.	वर्तमान सामान्य	वह वहाँ है
५.	भूत सामान्य	वह वहाँ था

---

१. सयुक्त कालो मे कृदन्त क्रिया के साथ जो सहायक क्रिया आती है उससे विशेष अर्थ व्यक्त नही होता जैसा कि सयुक्त क्रियाओ के प्रयोगो मे अवधारण, शक्ति, आरम्भ, अवकाश इत्यादि अर्थ व्यक्त होते है। सयुक्त काल मे सहायक क्रिया की उपयोगिता केवल काल सम्बन्धी है जबकि सयुक्त क्रियाओ मे जो सहायक क्रिया होती है उससे काल का बोध नही होता अपितु नया अर्थ उत्पन्न होता है। अत सयुक्त काल सयुक्त क्रियाओ से भिन्न समझने चाहिए। (कामताप्रसाद गुरु, हिन्दी व्याकरण, §३८५ (ख))।

(१. १) कृदन्त मूलक

६.	भविष्यत् परोक्ष विध्यर्थ[1]	तुम लिखना
७.	सकेतार्थ अपूर्ण	यदि वह लिखता
८.	भूत पूर्ण	मैंने पत्र लिखा

(२) सयुक्त काल

(२ १) वर्तमानकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया

९.	वर्तमान अपूर्ण	तू लिखता है
१०.	भूत ,,	तू लिखती थी
११.	सभावनार्थ अपूर्ण	कदाचित मैं वहाँ लिखता होऊँ
१२.	सदेहार्थ ,,	वह लिखता होगा
१३.	सकेतार्थ ,,	यदि वह लिखता होता

(२. २) भूतकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया

१४.	वर्तमान पूर्ण	उसने पत्र लिखा है
१५.	भूत पूर्ण	उसने पत्र लिखा था
१६.	सभावनार्थ पूर्ण	शायद उसने पत्र लिखा हो
१७.	सदेहार्थ पूर्ण	उसने पत्र लिखा होगा
१८.	सकेतार्थ पूर्ण	यदि तुमने पुस्तक लिखी होती

(२ ३) भविष्यत् कालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया

१९.	भविष्यत् संभावनार्थ	शायद तुम्हें कुछ लिखना हो
२०	भविष्यत् सामान्य	मुझे यह काम करना होगा
२१.	वर्तमान सामान्य	उसे किताब लिखनी है
२२	भूत सामान्य	मुझे कल पत्र पाना था
२३	अपूर्ण सकेतार्थ	यदि मुझे छुट्टी मिलती होती
२४.	पूर्ण सकेतार्थ	यदि मुझे जाना हुआ

---

१. प्रत्यक्ष विधि मे कार्य के प्रत्यक्ष अथवा शीघ्र पालन का भाव होता है परन्तु परोक्ष विधि मे अप्रत्यक्ष पालन का। उदाहरणार्थ / काम करो /, / तुम घर जाना और यह पुस्तक दे अना / वाक्यो मे यह बात स्पष्ट है। प्रथम वाक्य मे शीघ्र पालन का भाव है परन्तु दूसरे वाक्य मे वह भाव नही वहाँ बिलम्ब भी हो तो कोई बात नही। इस प्रकार दोनो विधियो मे अन्तर है।

पुरुष की प्रतीति भूत सामान्य, सकेतार्थ अपूर्ण, भूतपूर्ण, भूत अपूर्ण, संकेतार्थ पूर्ण तथा भविष्यत् कालिक कृदन्त से बने सभी सयुक्त कालो मे नही होती। इन कालो की विभक्तियाँ प्रत्येक पुरुष मे एक समान होती है। इन कालो के अतिरिक्त कर्तृवाच्य के कमणि प्रयोग के वर्तमान अपूर्ण, सभावनार्थ पूर्ण, तथा सदेहार्थ पूर्ण कालो मे भी पुरुष-भेद नही होता, इन कालो मे कर्त्तरि-प्रयोग मे पुरुष-भेद विभक्तियो द्वारा अवश्य सूचित होता है। शेष सब कालो मे पुरुष-भेद बराबर मिलता है। मूल काल के भविष्यत् सभावनार्थ, भूत सामान्य, भविष्यत्, प्रत्यक्ष विध्यर्थ, भविष्यत् परोक्ष विध्यर्थ तथा वर्तमान सामान्य कालो मे पुरुष-भेद धातु-मूलक क्रियाओ से विदित होता है। शेष सब कालो मे पुरुष-भेद सहायक क्रियाओ द्वारा परिलक्षित होता है। भाववाच्य के समस्त कालो मे पुरुष-भेद नही होता, वहाँ अन्य पुरुष ही परिलक्षित होता है। लिग-भेद मूल काल के भविष्यत् सभावनार्थ, भविष्यत् प्रत्यक्ष विध्यर्थ, वर्तमान सामान्य, भविष्यत् परोक्ष विध्यर्थ कालो को छोडकर शेष समस्त कालो मे परिलक्षित होता है। शेष कालो म लिग-भेद भविष्यत् सामान्य तथा अन्य कालो की कृदन्त क्रियाओ से तथा सहायक क्रियाओ से विदित होता है। भाववाच्य के समस्त कालो मे क्रिया सर्वत्र पुल्लिग मे आती है। वचन-भेद समस्त कालो मे परिलक्षित होता है। सयुक्त कालो मे वचन की प्रतीति कृदन्त क्रियाओ से भी होती है तथा सहायक क्रियाओ से भी, परन्तु स्त्रीलिग क्रिया रूपो मे वचन की प्रतीति केवल सहायक क्रियाओ से ही विदित होती है। भाववाच्य के समस्त कालो म क्रिया सर्वत्र एकवचन मे रहती है।

सयुक्त काल-रचना मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह∞थ- / **सत्तार्थक** तथा / हो / **विकार दर्शक** धातुओ[1] के रूप सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। / ह / सपरिवर्तक के रूप वर्तमान काल मे आते है तथा / थ / के रूप भूतकाल मे। / ह∞ थ / के प्रयोग वर्तमान अपूर्ण, भूत अपूर्ण, वर्तमान पूर्ण, भूत पूर्ण, वर्तमान सामान्य तथा भूत सामान्य कालो मे होते है। शेष कालो मे / हो / विकार दर्शक धातु के रूपो का व्यवहार होता है। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मे भूतकालिक कृदन्त क्रियाओ के साथ / जा∞ग / धातु की कृदन्त क्रियाएँ तथा / ह∞थ /और / हो / धातुओ के

---

१ / ह∞थ / तथा / हो / धातुएँ दो स्वतत्र धातुएँ है। एक स्थिति सूचक है दूसरी दशा या विकार सूचक। इन दोनो के रूपान्तर अलग-अलग होते है। इस स्थिति मे इन्हे / हो / धातु के रूप नही कहा जा सकता। यह भेद ऐतिहासिक विकासक्रम की दृष्टि से भी सिद्ध होता है। /ह∞थ/ का विकास सस्कृत /अस्/ से है तथा / हो / का सस्कृत / भू / से (धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, § ३०५-३०७)।

रूप सहकारी क्रियाओ के रूप मे आती है। इन वाच्यो मे / जा००ग / धातु के कृदन्त रूप कर्तृवाच्य के कृदन्त रूपो के समान होते है। / जा / सपरिवर्तक के रूप वर्तमान कालिक कृदन्त क्रियाओ के रूप मे होते हे जबकि / ग / सपरिवर्तक के रूप भूतकालिक कृदन्त क्रियाओ के रूप मे। / ह००थ / तथा / हो / धातुओ के रूप कर्तृवाच्य के कालो के समान होते ही है। इस प्रकार कर्मवाच्य तथा भाववाच्य की सयुक्त काल-रचना कर्तृवाच्य की काल-रचना से अलग नही है। जो भी अन्तर है वह प्रयोग की दृष्टि से है। भविष्यत कालिक कृदन्तो के सयुक्त काल केवल कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मे होते है। इन कालो मे / जा००ग / सहकारी रूप नही आते, केवल / ह००थ / तथा / हो / धातुओ के रूप ही प्रयुक्त होते है।

कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य तथा भाववाच्य के अन्तर्गत सभी कालो के रूप उपलब्ध नही है। कर्तृवाच्य मे अन्तर्गत भविष्यत् कालिक कृदन्त से बने कालो को छोड़कर शेष सभी काल आते हे। कर्मवाच्य के अन्तर्गत मूलकाल के वर्तमान, भूत सामान्य तथा भविष्यत् परोक्ष विध्यर्थ कालो को छोडकर शेष सभी काल आते है। भाववाच्य के अन्तर्गत मूल काल के भविष्यत् प्रत्यक्ष तथा परोक्ष विध्यर्थ, वर्तमान सामान्य, भूत सामान्य तथा सयुक्त काल के सकेतार्थ अपूर्ण एवं पूर्ण कालो को छोडकर शेष सभी काल आते है।

२ २. १. १ विभिन्न कालों में लगने वाली विभक्तियाँ

विभिन्न कालो मे धातु तथा कृदन्तो मे लगने वाली विभक्तियो की रूपतालिकाएँ उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है। उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए हमने अकर्मक / आ / तथा सकर्मक / पा / धातुओ को चुना है। इनसे सभी रूपान्तरो का बोध होगा। संयुक्त कालो में / ह००थ /, / हो / धातुओ के रूपान्तर सहायक रूप मे आते है। उनके उदाहरण समानान्तर रूप से अपेक्षित है, यथास्थान इनके उदाहरण दिए जाएँगे। कर्मवाच्य तथा भाववाच्य कालो मे भूतकालिक कृदन्त क्रियाओ के पश्चात् / जा००ग / धातु के रूप चलते है। इस धातु के रूप कर्तृवाच्य धातुमूलक तथा कृदन्तमूलक रूपो के समान है। इसके रूप भी यथास्थान दिए जाएँगे।

(१) मूलकाल

(१ १) धातुमूलक

२. २. १. १. १ भविष्यत् संभावनार्थ

इस काल की रचना मे धातुओ के पश्चात् निम्न विभक्तियाँ लगती है। इन विभक्तियो मे पुरुष तथा वचन का भेद परिलक्षित होता है। भाववाच्य मे अन्यपुरुष एकवचन की विभक्ति का ही योग होता है। पुरुष-भेद तथा वचन-भेद इसमे नही होता है।

	एक व०	बहु व०		
उ० पु०	-ऊँ	-एँ / -यँ	आऊँ, पाऊँ, जाऊँ	आएँ, पाएँ, जाएँ / जायँ
म० पु०	ए / -य	-ओ	आए, पाए, जाए / जाय	आओ, पाओ, जाओ
अ० पु०	-ए / -य	-एँ / -यँ	आए, पाए, जाए / जाय	आएँ, पाएँ, जाएँ / जायँ

आकारान्त धातुओ के पश्चात् एक वचन तथा बहुवचन मे क्रमश· / ए / तथा / एँ / के स्थान पर विकल्प से / य / तथा / यँ / विभक्तियाँ हो जाती है।

उदाहरण —

कर्तृवाच्य .—	शायद मै आऊँ	शायद हम आएँ
	शायद तू आए	शायद तुम आओ
	शायद वह आए	शायद वे आएँ
	शायद मैं उसे पाऊँ	शायद हम उसे पाएँ
	शायद तू उसे पाए	शायद तुम उसे पाओ
	शायद वह उसे पाए	शायद वे उसे पाएँ
कर्मवाच्य .—	शायद मैं देखा जाऊँ	शायद हम देखे जाएँ / जायँ
	शायद तू देखा जाए / जाय	शायद तुम देखे जाओ
	शायद वह देखा जाए / जाय	शायद वे देखे जाएँ / जायँ
भाववाच्य :—	शायद मुझसे चला जाए/जाय	शायद हम से चला जाए / जाय
	शायद तुझ से चला जाए	शायद तुम से चला जाए / जाय
	शायद उस से चला जाए/जाय	शायद उनसे चला जाए / जाय

/ ह∞थ / तथा / हो / धातुओ को छोडकर सभी धातुओ मे उक्त विभक्तियाँ लगती है। परन्तु कुछ धातुओ मे इन विभक्तियो के लगने से विकार होता है। ईकारान्त तथा ऊकारान्त धातुओ मे विकल्प से क्रमशः / ई→इ / , / ऊ→उ/विकार होते है। यथा —

पीऊँ / पिऊँ	पीएँ / पिएँ
पीए / पिए	पीओ / पिओ
पीए / पिए	पीएँ / पिएँ
छूऊँ / छुऊँ	छूएँ / छुएँ
छूए / छुए	छूओ / छुओ
छूए / छुए	छूएँ / छुएँ

केवल / ले / तथा / दे / धातुएँ ऐसी है जिनका / ए / विभक्तियो के पूर्व लुप्त हो जाता है। यथा —

ले	(~ल)	-ऊँ,	-एँ	→	लूँ,	लें
दे	(~द)	-ऊँ,	-एँ	→	दूँ,	दें
ले	(~ल)	-ए,	-ओ	→	ले,	लो
दे	(~द)	-ए,	-ओ	→	दे,	दो
ले	(~ल)	-ए,	-एँ	→	ले,	लें
दे	(~द)	-ए	-एँ	→	दे,	दें

२ २ १ १ १. १. / हो / धातु

इस काल मे / हो / धातु के रूप नियम विरुद्ध है। / ह∞थ / के रूप इस काल मे नही आते। इसके पश्चात् लगने वाली विभक्तियाँ इस प्रकार है :—

	एक व०	बहु व०		
उ० पु०	-ऊँ	-ँ	होऊँ	हों
म० पु०	-०	-०/-ँ	हो	हो / हों हों
अ० पु०	-०	-ँ	हो	हों

आदरार्थ / तुम / के साथ जब / हो / का व्यवहार होता है तो कोई विभक्ति नही लगती परन्तु जब बहुत्व या साकल्य विवक्षित होता है तो उसमे / -ँ / विभक्ति का योग होता है।

उदाहरण —

कर्तृवाच्य :—शायद मैं वहाँ होऊँ	शायद हम वहाँ हों
शायद तू वहाँ हो	शायद तुम वहाँ हो / शायद तुम लोग वहाँ हों
शायद वह वहाँ हो	शायद वे वहाँ हों

२ २ १ १. २. भविष्यत् सामान्य

इस काल-रचना मे धातुओ के पश्चात् एक साथ तीन विभक्तियो का योग होता है। पहली विभक्तियाँ पुरुष तथा वचन की द्योतक है तथा ये भविष्यत् सभावनार्थ काल की विभक्तियो से भिन्न नही है। दूसरी विभक्ति / -ग- / भविष्यत् काल की द्योतक है। तीसरी लिग तथा वचन का बोध कराती है। भाववाच्य मे अन्य

पुरुष पुल्लिग एकवचन की ही विभक्ति का व्यवहार होता है। तीनो सयुक्त विभक्तियाँ इस प्रकार है —

	पुल्लिग		स्त्रीलिंग	
	एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
उ० पु०	-ऊँ-ग-आ	-एँ-ग-ए/-यँ ग-ए	-ऊँ-ग-ई	-एँ-ग ई/-यँ-ग-ई
म० पु०	ए-ग आ/-य-ग आ	-ओ-ग ए	ए-ग-ई/-य-ग-ई	-ओ-ग-ई
अ० पु०	-ए-ग आ/-य-ग-ई-एँ	-ग ए/-यँ-ग-ए	-ए-ग-ई/-य-ग-ई	-एँ-ग-ई/-यँ ग-ई

आऊँगा, पाऊँगा, जाऊँगा	आऊँगी, पाऊँगी, जाऊँगी
आएगा, पाएगा, जायगा / जायगा	आएगी, पाएगी, जाएगी / जायगी
आएगा, पाएगा, जाएया / जायगा	आएगी, पाएगी, जाएगी / जायगी
आएँगे, पाएँगे, जाएँगे / जायँगे	आएँगी, पाएँगी, जाएँगी / आयँगी
आओगे, पाओगे, जाओगे	आओगी, पाओगी, जाओगी
आएँगे, पाएँगे, जाएँगे / जायँगे	आएँगी, पाएँगी, जाएँगी / जायँगी

उदाहरण —

कर्तृवाच्य —आज मैं तुम्हारे यहाँ आऊँगा
कल मैं इनाम पाऊँगा
वह जरूर आएगी / आयगी
तुम वहाँ आओगी तो ठीक रहेगा

कर्मवाच्य .—आज मैं देखा जाऊँगा
आज मैं देखी जाऊँगी
आज वे देखे जायँगे

भाववाच्य :—मुझ से नहीं चला जाएगा / जायगा
तुम से नहीं चला जाएगा / जायगा
हम से नहीं चला जाएगा / जायगा

इस काल की उक्त विभक्तियाँ / ह००थ / तथा / हो / धातुओ को छोडकर शेष सभी धातुओ मे लगती है। इस प्रक्रिया मे जिन धातुओ मे विकार एव विकल्प होते हैं वे भविष्यत् सभावनार्थ काल के विकार एवं विकल्पो के समान है।

२ २. १ १. २. १. / हो / धातु

इस काल मे / ह०थ / धातु के रूप नही होते । / हो / धातु के पश्चात् लगने वाली विभक्तियाँ इस प्रकार है —

	पुल्लिग		स्त्रीलिग	
	एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
उ० पु०	-ऊँ-ग-आ	-ँ-ग-ए	-ऊँ-ग-ई	-ँ-ग-ई
म० पु०	-०-ग-आ	-० ग-ए/-ँ-ग-ए	-०-ग-ई	-०-ग-ई/-ँ-ग-ई
अ० पु०	-०-ग-आ	-ँ-ग-ए	-०-ग-ई	-ँ-ग-ई

हूँगा	होँगे	हूँगी	होँगी
होगा	होगे/होँगे	होगी	होगी/होँगी
होगा	होँगे	होगी	होँगी

उदाहरण :—

कर्तृवाच्य .—मैं वहाँ हूँगा	हम वहाँ होँगे
तू वहा होगा	तुम वहाँ होगे / तुम लोग वहाँ होँगे
वह वहाँ होगा	वे वहाँ होँगे
मैं वहाँ हूँगी	हम वहाँ होँगी
तू वहाँ होगी	तुम वहाँ होगी / तुम लोग वहाँ होँगी
वह वहा होगी	वे वहाँ होँगी

इस धातु का / ओ / उत्तम पुरुष एकवचन मे विभक्ति लगने के पूर्व लुप्त हो जाता है। यथा . —

हो (~ह) -ऊँगा, -ऊँगी → हूँगा, हूँगी

२ २. १. १. ३. भविष्यत् प्रत्यक्ष विध्यर्थ

प्रत्यक्ष विधिकाल की विभक्तियाँ प्राय भविष्यत् सभावनार्थ काल की विभक्तियो के समान हे । दोनो मे केवल मध्यम पुरुष एकवचन की विभक्तियो का अन्तर है । विधिकाल मे मध्यम पुरुष एकवचन की कोई विभक्ति नही लगती । इस काल का प्रयोग भाववाच्य मे नही होता । इस काल मे पुरुष-भेद तथा वचन भेद सूचित करने वाली विभक्तियाँ इस प्रकार है .—

	एक व०	बहु व०		
उ० पु०	-ऊँ	-एँ/-यँ	आऊँ, पाऊँ जाऊँ	आएँ, पाएँ जाएँ/जायँ
म० पु०	०	-ओ	आ, पा, जा	आओ, पाओ, जाओ
अ० पु०	-ए/-य	-एँ/-यँ	आए, पाए, जाए/जाय	जाएँ, पाएँ, जाएँ/जायँ

उदाहरण :—

कर्तृवाच्य	—क्या मैं आऊँ	क्या हम आएँ
	क्या मैं उसे पाऊँ	क्या हम उसे पाएँ
	तू यहाँ आ	तुम यहाँ आओ
	तू उसे पा	तुम उसे पाओ
	वह यहाँ आए	वे यहाँ आएँ
	वह उसे पाए	वे उसे पाएँ
कर्मवाच्य	—क्या मैं देखा जाऊँ	क्या हम देखे जाएँ / जायँ
	तू देखा जा	तुम देखे जाओ
	वह देखा जाए / जाय	वे देखे जाएँ / जायँ

इस काल की उक्त विभक्तियाँ / ह∞थ / तथा / हो / धातुओ को छोडकर शेष सभी धातुओ मे लगती है। इस प्रक्रिया मे जिन धातुओ मे विकार एव विकल्प होते है वे भविष्यत् सभावनार्थ के विकार एव विकल्पो के समान है।

२. २. १. १. ३ १ / हो / धातु

इस काल मे / ह∞थ / धातु के रूप नहीं होते। / हो / धातु के पश्चात् लगने वाली विभक्तियो तथा भविष्यत् सभावनार्थ काल की विभक्तियो मे कोई अन्तर नही है। यथा .—

होऊँ	हों
हो	हो/हों
हो	हों

उदाहरण :—

कर्तृवाच्य .—क्या मैं वहाँ होऊँ

यदि तू यहाँ हो तो तभी काम बनेगा

यदि वह यहाँ हो तो तभी काम बनेगा

क्या हम भी वहाँ हों
यदि तुम वहाँ हो तो मैं आऊँगा
यदि तुम लोग वहाँ हों तो मैं आऊँगा
यदि वे वहाँ हों तो मैं आऊँगा

२ २ १ १· ३· २ आदरार्थ भविष्यत् प्रत्यक्ष विध्यर्थ

इस काल मे आदर सूचक / आप / सर्वनाम के साथ मध्यम पुरुष मे धातु के पश्चात् / -इए / अथवा / -इए-गा / विभक्तियाँ लगती है। इनका व्यवहार वैकल्पिक है। ये विभक्तियाँ केवल कर्तृवाच्य के काल मे ही होती है। यथा —

	एक व०	बहु व०
म० पु०		-इए / -इए-गा

आइए / आइएगा
पाइए / पाइएगा
जाइए / जाइएगा
होइए / होइएगा

उदाहरण :—

आप यहाँ आइए / आइएगा
आप उसे जरूर पाइए / पाइएगा
आप वहाँ जरूर जाइए / जाइएगा
आप वहाँ जरूर उपस्थित होइए / होइएगा

/ ले, दे, पी, कर / धातुओ मे / - इए, -इएगा / विभक्ति लगने के पूर्व / ज / का आगम होते है तथा / ले, दे, कर / धातुओ मे / ए→ ई / , / अ→ ई / विकार होते हे। यथा .—

ले	(~ लीज)	-इए / -इएगा	लीजिए / लीजिएगा
दे	(~ दीज)	-इए / -इएगा	दीजिए / दीजिएगा
कर	(~ कीज)	-इए / -इएगा	कीजिए / कीजिएगा
पी	(~ पीज)	-इए / -इएगा	पीजिए / पीजिएगा

सूचना (१) / कर / तथा / हो / धातुओ के वैकल्पिक रूप / करिए / , / करिएगा / तथा / हूजिए / , / हूजिएगा / भी प्रयुक्त होते है परन्तु / हूजिए, हूजिएगा / प्रयोग प्राय कम होते है। / करिए / की अपेक्षा / कीजिए / का व्यवहार अधिक होता है।

२. २. १. १. ४. वर्तमान सामान्य

इस काल की रचना मे / ह ∞ थ / धातु के / ह / सपरिवर्तक के पश्चात् पुरुष तथा वचन की विभक्तियो का योग होता है। इस धातु के अतिरिक्त और किसी धातु के रूपान्तर नही होते। सयुक्त कालो में इस के रूप सहायक क्रियाओ के रूप मे आते है। मूल काल-रचना मे ये क्रियारूप केवल कर्तृवाच्य मे आते है। इस काल के रूपो मे लिग-भेद नही होता।

	एक व०	बहु व०		
उ० पु०	-ऊँ	-ऐं	है	हैं
म०पु०	-ऐ	-ओ	है	हो
अ०पु०	-ऐ	-ऐं	है	हैं

उदाहरण :—

मैं यहाँ हूँ	हम यहाँ हैं
तू वहाँ है	तुम वहाँ हो
वह वहाँ है	वे वहाँ हैं

२. २. १. १. ५. भूत सामान्य

इस काल-रचना मे / ह ∞ थ / धातु के / थ / सपरिवर्तक के पश्चात् लिग तथा वचन विभक्तियो का योग होता है। इस धातु के अतिरिक्त और किसी धातु के रूपान्तर नही होते। सयुक्त कालो मे इस के रूप सहायक क्रियाओ के रूप मे आते है। मूलकाल रचना मे ये क्रियारूप केवल कर्तृवाच्य मे आते है। इस काल के रूपो मे पुरुष- भेद नही होता।

	एक व०	बहु व०		
पुल्लिग	-आ	-ए	था	थे
स्त्रीलिंग	-ई	-ईं	थी	थीं

उदाहरण :—

मैं यहाँ था	हम यहाँ थे
तू वहाँ था	तुम वहाँ थे

	एक व०	बहु व०
पुंल्लिंग	-त-आ	-त-ए
स्त्रीलिंग	-त-ई	-त-ईं

आता, पाता, जाता, होता
आते, पाते, जा होते,
आती, पाती, जाती, होती
आतीं पातीं, जातीं, होतीं

उदाहरण :—

कर्तृवाच्य :— यदि मैं जाता तो ठीक था
यदि तू आता तो ठीक था
यदि वह आता तो ठीक था
यदि हम आते तो ठीक थे
यदि तुम आते तो ठीक थे
यदि वे आते तो ठीक थे
यदि मे आती तो ठीक था
यदि तू आती तो ठीक था
यदि वह आतीं तो ठीक था
यदि हम आतीं तो ठीक था
यदि तुम आतीं तो ठीक था
यदि वे आतीं तो ठीक था

इसी प्रकार / पा / सकर्मक तथा / हो / अकर्मक धातुओ के रूप वाक्यों मे देखे जा सकते है ।

कर्मवाच्य :— यदि मैं देखा जाता तो ठीक था
यदि तू देखा जाता तो ठीक था
यदि वह देखा जाता तो ठीक था
यदि हम देखे जाते तो ठीक था
यदि तुम देखे जाते तो ठीक था
यदि वे देखे जाते तो ठीक था

भाववाच्य :— यदि मुझ से चला जाता तो फिर क्या बात थी
यदि तुझ से चला जाता तो फिर क्या बात थी
यदि उस से चला जाता तो फिर क्या बात थी
यदि हम से चला जाता तो फिर क्या बात थी

यदि तुम से चला जाता तो फिर क्या बात थी
यदि उन से चला जाता तो फिर क्या बात थी

२ २ १ १ · ८ भूत पूर्ण

इस काल-रचना मे धातुओं के पश्चात् लिग तथा वचन के अनुसार विभक्तियो का योग होता है। पुरुष-भेद इस काल के रूपो मे नही होता। भाव वाच्य मे धातुओ के पश्चात् पुल्लिग एकवचन की विभक्ति का योग होता है। स्त्रीलिंग और बहुवचन के प्रयोग इस वाच्य मे नही होते। / ह∞थ / धातु से इस काल के रूप नही बनते। इस काल मे / जा∞ग / धातु के / ग / सपरिवर्तक के पश्चात् लिग तथा वचन की विभक्तियो का योग होता है।

	एक व०	बहु व०	
पुल्लिग	-आ	-ए	आया, पाया, गया, हुआ आए, पाए, गए, हुए
स्त्रीलिग	-ई	-ईं	आई, पाई, गई, हुई आईं, पाईं, गईं, हुईं

उदाहरण :—

कर्तृवाच्य :—मैं अभी आया	हम यहाँ बेकार आए
कर्त्तरिप्रयोग) तू यहाँ बेकार आया	तुम यहाँ क्यों आए
वह यहाँ क्यों आया	वे क्यों नहीं आए
मैं अभी आई	हम यहाँ बेकार आईं
तू यहाँ बेकार आई	तुम यहाँ बेकार आईं
वह यहाँ क्यों आई	वे क्यों नहीं आईं

(कर्मणिप्रयोग)

मैंने वहाँ से नक्शा पाया	हम ने वहाँ से नक्शे पाए
क्या तू ने नक्शा पाया	क्या तुमने नक्शे पाए
क्या उस ने नक्शा पाया	क्या उन्हों ने नक्शे पाए
मैं ने वहाँ से पुस्तक पाई	हमने वहाँ से पुस्तकें पाईं
क्या तू ने वहाँ से पुस्तक पाई	क्या तुम ने पुस्तकें पाईं
क्या उसने वहाँ से पुस्तक पाई	क्या उन्हों ने पुस्तकें पाईं

सूचना (३) कर्मणिप्रयोग मे क्रिया सदैव कर्म के अनुसार आती है न कि कर्ता के अनुसार। कर्मणिप्रयोग मे कर्म सदैव अन्य पुरुष मे होता है।

इस प्रकार कर्म के एक वचन एवं बहुवचन पुल्लिग एव स्त्रीलिग के अनुसार क्रिया-रूप आते है।

कर्मवाच्य :—मैं देखा गया	हम देखे गए
तू देखा गया	तुम देखे गए
वह देखा गया	वे देखे गए
मैं देखी गई	हम देखी गईं
तू देखी गई	तुम देखी गईं
वह देखी गई	वे देखी गईं

भाववाच्य :—मुझ से चला गया
तुझ से चला गया
उस से चला गया
हम से चला गया
तुम से चला गया
उन से चला गया

/ कर / धातु तथा / ग / धातु-सपरिवर्तक को छोडकर शेष व्यजनान्त एव / हो / के पश्चात् जब इस काल की पुल्लिग एकवचन की / -आ / विभक्ति लगती है तो उनमे कोई विकार नही होता। यथा :—

चल	-आ	चला
मर	-आ	मरा
डर	-आ	डरा
रह	-आ	रहा
पड	-आ	पडा
देख	-आ	देखा
हो (∼हु)	-आ	हुआ

परन्तु ऊकारान्त तथा / हो / धातुओ को छोडकर शेष सभी स्वरान्त एवं / कर /, / ग / धातुओ के पश्चात् / -आ / विभक्ति के पूर्व / य / का आगम होता है। यथा :—

आ	(∼आय)	-आ	आया
पा	(∼पाय)	-आ	पाया
ग	(∼गय)	-आ	गया
पी	(∼पीय)	-आ	पीया

सीँ	(~सीँय)	-आ	सीँया
से	(~सेय)	आ	सेया
ले	(~लिय)	-आ	लिया
दे	(~दिय)	-आ	दिया
बो	(~बोय)	-आ	बोया
खो	(~खोय)	-आ	खोया

/ कर / धातु का / अर / अश तथा / ले /, / दे / धातुओ का / ए / स्वर पुल्लिग एकवचन तथा बहुवचन की विभक्ति लगने के पूर्व / इ / मे परिवर्तित हो जाते है तथा स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन की विभक्ति लगने के पूर्व लुप्त हो जाते है । यथा :—

कर	(~किय)	-आ	किया
कर	(~कि)	-ए	किए
कर	(~क)	-ई	की
कर	(~क)	-ईँ	कीँ
ले	(~लिय)	-आ	लिया
ले	(~लि)	-ए	लिए
ले	(~ल)	-ई	ली
ले	(~ल)	-ईँ	लीँ
दे	(~दिय)	-आ	दिया
दे	(~दि)	-ए	दिए
दे	(~द)	-ई	दी
दे	(~द)	-ईँ	दीँ

/ हो / धातु मे जब पुल्लिग तथा स्त्रीलिग एकवचन तथा बहुवचन की विभक्तियाँ लगती हे तो विभक्तियो के पूर्व / हो / धातु का / ओ /, / उ / मे परिवर्तित हो जाता है । यथा .—

हो	(~हु)	-आ	हुआ
हो	(~हु)	-ए	हुए
हो	(~हु)	-ई	हुई
हो	(~हु)	-ईँ	हुईँ

ईकारान्त तथा ऊकारान्त धातुओ मे जब इस काल की पुल्लिग विभक्तियाँ लगती है तो विकल्प से उनमे क्रमशः / ई→इ /, / ऊ→उ / विकार हो जाते हैं । यथा :—

पीया / पिया	पीए / पिए
छूआ / छुआ	छूए / छुए

(२) संयुक्त काल

(२. १) वर्तमान कालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया

२. २. १. १. ९-१३. वर्तमानकालिक कृदन्त क्रियाओ के साथ सहकारी क्रियाओ से निर्मित सभी कालो—वर्तमान अपूर्ण, भूत अपूर्ण सभावनार्थ अपूर्ण, सदेहार्थ अपूर्ण, तथा सकेतार्थ अपूर्ण—मे कृदन्त क्रियाओ की विभक्तियॉ एक समान है। इस कालो मे लिग और वचन के अनुसार लगने वाली विभक्तियॉ निम्न तालिका मे प्रस्तुत की जाती है। ये विभक्तियाँ मूलकाल के अपूर्ण सकेतार्थ काल के समान है, अन्तर केवल इतना है कि मूलकाल के अपूर्ण सकेतार्थ काल के स्त्रीलिग बहुवचन मे अनुनासिकता रहती है, परन्तु इन सयुक्त कालो की कृदन्त क्रियाओ मे यह बात नही। भाववाच्य मे कृदन्त क्रियाएँ पुल्लिग एक वचन मे रहती है। इसके अतिरिक्त भाववाच्य मे सकेतार्थ अपूर्ण काल के रूप उपलब्ध नही है, उसमे यह काल नही होता। कृदन्त-क्रिया-रूपो मे एक साथ दो विभक्तियो का मेल है। प्रथम / -त / विभक्ति अपूर्ण काल की द्योतक है तथा दूसरी लिंग और वचन की। पुरुष-भेद इन क्रियाओ मे नही होता। / ह्∞थ / धातु से कृदन्त क्रियाएँ नही बनती।

	एक व०	बहु व०	
पुल्लिग	-त-आ	-त-ए	आता, पाता, जाता, होता आते, पाते, जाते, होते
स्त्रीलिग	-त-ई	-त-ई	आती, पाती, जाती, होती आती, पाती, जाती, होती

९. वर्तमान अपूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह्∞थ / सत्तार्थक धातु धातु के / ह / सपरिवर्तक के वर्तमान सामान्य काल के रूप (§ २. २. १. १. ४) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा :—

कर्तृवाच्य —	मैं आता हूँ	हम आते हैं
	तू आता है	तुम आते हो
	वह आता है	वे आते हैं
	मैं आती हूँ	हम आती हैं
	तू आती है	तुम आती हो
	वह आती है	वे आती हैं
	मैं उसे पाता हूँ	हम उसे पाते हैं

तू उसे पाता है	तुम उसे पाते हो
वह उसे पाता है	वे उसे पाते हैं
म उसे पाती हूँ	हम उसे पाती हैं
तू उसे पाती है	तुम उसे पाती हो
वह उसे पाती है	वे उसे पाती हैं
मैं कौन होता हूँ	हम कौन होते है
तू कौन होता है	तुम कौन होते हो
वह कौन होता है	वे कौन होते हैं
मैं कौन होती हूँ	हम कौन होती हैं
तू कौन होती है	तुम कौन होती हो
वह कौन होती है	वे कौन होती हैं

कर्मवाच्य .—	मैं देखा जाता हूँ	हम देखे जाते है
	तू देखा जाता है	तुम देखे जाते हो
	वह देखा जाता है	वे देखे जाते हैं
	मैं देखी जाती हूँ	हम देखी जाती हैं
	तू देखी जाती है	तुम देखी जाती हो
	वह देखी जाती है	वे देखी जाती हैं ।

भाववाच्य :—मुझ से, हम से } चला जाता है

तुझ से, तुम से } चला जाता है

उस से, उन से } चला जाता है

सूचना (४) इस काल मे निषेध वाचक / नहीं / अव्यय आने से सहकारी क्रिया का प्राय लोप हो जाता है। यथा·—/ वह अब नहीं आता / , / मुझ से देखा नहीं जाता / इत्यादि।

१०. भूत अपूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह००थ / सत्तार्थक धातु के / थ / सपरिवर्तक के भूत सामान्य काल के रूप (§२. २. १. १. ५) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा:—

कर्तृवाच्य ·— मैं, तू, वह } आता था — हम, तुम, वे } आते थे

मैं, तू, वह	आती थी	हम, तुम, वे	आती थीं
मैं, तू, वह	उसे पाता था	हम, तुम, वे	उसे पाते थे
मैं, तू, वह	उसे पाती थी	हम, तुम, वे	उसे पाती थीं
मैं, तू, वह	कौन होता था	हम, तुम, वे	कौन होते थे
मैं, तू, वह	कौन होती थी	हम, तुम, व	कौन होती थीं
कर्मवाच्य — मैं, तू, वह	देखा जाता था	हम, तुम, वे	देखे जाते थे
मैं, तू, वह	देखी जाती थी	हम, तुम, वे	देखी जाती थीं

भाववाच्य .—मुझ से, तुझ से, उस से, हम से, तुम से, उन से } चला जाता था

सूचना (५) जब इस काल मे अभ्यास का बोध होता है तो सहकारी क्रिया प्रायः लुप्त हो जाती है। यथा.—/ यदि मैं स्वय पर विश्वास करता तो मुझे असफलता न मिलती / इत्यादि।

वर्तमान

११. सभावनार्थ अपूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओं के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के भविष्यत् सभावनार्थ काल के रूप (§२. २ १. १. १ १.) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा —

कर्तृवाच्य —	शायद मैं आता होऊँ	शायद हम आते हों
	शायद तू आता हो	शायद तुम आते हो / हों
	शायद वह आता हो	शायद वे आते हों
	शायद मैं आती होऊँ	शायद हम आती हों
	शायद तू आती हो	शायद तुम आते हो / हों
	शायद वह आती हो	शायद वे आती हों
	शायद मैं उसे पाता होऊँ	शायद हम उसे पाते हों
	शायद तू उसे पाता हो	शायद तुम उसे पाते हो / हों
	शायव वह उसे पाता हो	शायद वे उसे पाते हों
	शायद मैं उसे पाती होऊँ	शायद हम उसे पाती हों
	शायद तू उसे पाती हो	शायद तुम उसे पाती हो / हों
	शायद वह उसे पाती हो	शायद वे उसे पाती हों
	शायद मैं ऐसा होता होऊँ	शायद हम होते हों
	शायद तू होता हो	शायद तुम होते हो / हों
	शायद वह होना हो	शायद वे होते हों
	शायद मैं ऐसी होती होऊँ	शायद हम होती हों
	शायद तू होती हो	शायद तुम होनी हो / हों
	शोयद वह होती हो	शायद वे होती हों
कर्मवाच्य :—	शायद मैं देखा जाता होऊँ	शायद हम देखे जाते हों
	शायद तू देखा जाता हो	शायद तुम देखे जाते हो / हों
	शायद वह देखा जाता हो	शायद वे देखे जाते हों
	शायद मैं देखी जाती होऊँ	शायद हम देखी जाती हों
	शायद तू देखी जाती हो	शायद तुम देखी जाती हो / हों
	शायद वह देखी जाती हो	शायद वे देखी जाती हों

भाववाच्य:— शायद मुझ से / तुझ से / उस से / हम से / तुम से / उन से } चला जाता हो

और १८२

१२. संदेहार्थ अपूर्ण काल में कृदन्त क्रियाओं के साथ / हो / विकारदर्शक धातु के भविष्यत् सामान्य काल के रूप (§ २. १. १. १. २.) सहकारी क्रिया के रूप में आते है। यथाः—

कर्तृवाच्य :—	मैं आता हूँगा	हम आते होंगे
	तू आता होगा	तुम आते होगे / होंगे
	वह आता होगा	वे आते होंगे
	मैं आती हूँगी	हम आती होंगी
	तू आती होगी	तुम आती होगी / होंगी
	वह आती होगी	वे आती होंगी
	मैं पाता हूँगा	हम पाते होंगे
	तू पाता होगा	तुम पाते होगे / होंगे
	वह पाता होगा	वे पाते होंगे
	मैं पाती हूँगी	हम पाती होंगी
	तू पाती होगी	तुम पाती होगी / होंगी
	वह पाती होगी	वे पाती होंगी
	मैं ऐसा होता हूँगा	हम ऐसे होते होंगे
	तू होता होगा	तुम होते होगे / होंगे
	वह होता होगा	वे होते होंगे
	मैं ऐसी होती हूँगी	हम होती होंगी
	तू होती होगी	तुम होती होगी / होंगी
	वह होती होगी	वे होती होंगी
कर्मवाच्य —	मैं देखा जाता हूँगा	हम देखे जाते होंगे
	तू देखा जाना होगा	तुम देखे जाते होगे / होंगे
	वह देखा जाता होगा	वे देखे जाते होंगे
	मैं देखी जाती हूँगी	हम देखी जाती होंगी
	तू देखी जाती होगी	तुम देखी जाती होगी / होंगी
	वह देखा जाती होगी	वे देखी जाती होंगी

भाववाच्य:— मुझ से / तुझ से / उस से / हम से / तुम से / उन से } चला जाता होगा

१३. सकेतार्थ अपूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के अपूर्ण सकेतार्थ काल के रूप (§ २. २ १. १. ७) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। भाववाच्य मे इस काल के रूप उपलब्ध नही है।

कर्तृवाच्यः—यदि मैं, तू, वह	आता होता	यदि हम, तुम, वे	आते होते
यदि मैं, तू, वह	आती होती	यदि हम, तुम, वे	आती होतीं
यदि मैं, तू, वह	उमे पाता होता	यदि हम, तुम, वे	उमे पाते होते
यदि मै, तू, वह	उसे पाती होती	यदि हम, तुम, वे	उसे पाती होती
कर्मवाच्य—यदि मैं, तू, वह	देखा जाता होता	यदि हम, तुम, वे	देखे जाते होते
यदि मैं, तू, वह	देखी जाती होती	यदि हम, तुम, वे	देखी जाती होतीं

सूचना (६) √ हो / धातु से सिद्ध कृदन्त-क्रिया के साथ / हो / सहायक क्रिया के रूप नही आते । / यदि मैं होता होता / ऐसे योग नही होते ।

(२. २) भूतकालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया

२ २. १. १. १४-१८ भूतकालिक कृदन्त-क्रियाओ के साथ सहकारी क्रियाओ से निर्मित सभी कालो—वर्तमान पूर्ण, भूतपूर्ण सभावनार्थ पूर्ण, सदेहार्थ पूर्ण तथा सकेतार्थ पूर्ण—मे कृदन्त-कालो की विभक्तियाॅ एक समान है। इन कालो मे लिंग और वचन के अनुसार लगने वाली विभक्तियाॅ निम्न तालिका द्वारा प्रस्तुत की जाती है। ये विभक्तियाॅ मूलकाल के पूर्ण भूतकाल के समान है, अन्तर केवल इतना है कि मूलकाल के पूर्ण भूत के स्त्रीलिग बहुवचन मे अनुनासिकता रहती है, परन्तु सयुक्त कालो की कृदन्त-क्रियाओ मे यह बात नही। भाववाच्य मे कृदन्त क्रियाएॅ पुल्लिग एकवचन मे रहती है। इसके अतिरिक्त भाववाच्य मे सकेतार्थ पूर्ण काल के रूप उपलब्ध नही है, उसमे यह काल नही होता। / ह∞थ / धातु से कृदन्त क्रियाएॅ नही बनती। धातुओ मे विभक्तियाॅ लगने से जो विकार होते वे उसी प्रकार होने है जिस प्रकार पूर्ण भूत मे (§ २ २ १ १. ८)। / जा∞ग / धातु के / ग / सपरिवर्तक मे कृदन्त-विभक्तियाँ लगती है।

	एक व०	बहु व०	
पुंल्लिग	-आ	-ए	आया, पाया, गया, हुआ / आए, पाए, गए, हुए
स्त्रीलिंग	-ई	-ई	आई, पाई, गई, हुई / आई, पाई, गई, हुई

१४. वर्तमान पूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह ∞ थ / धातु के / ह / संपरिवर्तक के वर्तमान सामान्य काल के रूप (§ २. २. १. १. ४.) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। कर्तृवाच्य के कर्मणिप्रयोग मे सहायक रूप अन्यपुरुष एक-वचन तथा बहुवचन के होते है। ये रूप पुरुष के अनुसार नही होते अपितु अन्य पुरुष के अनुसार होते है।

कर्तृवाच्य —

कर्तरिप्रयोग :—	मैं आया हूँ	हम आए हैं
	तू आया है	तुम आए हो
	वह आया है	वे आए हैं
	मैं आई हूँ	हम आई हैं
	तू आई है	तुम आई हो
	वह आई है	वे आई हैं
	मैं हुआ हूँ	हम हुए हैं
	तू हुआ है	तुम हुए हो
	वह हुआ है	वे हुए है
	मैं हुई हूँ	हम हुई हैं
	तू हुई है	तुम हुई हो
	वह हुई है	वे हुई हैं
कर्मणिप्रयोग :—	मैं ने नक्शा पाया है	हम ने नक्शे पाए हैं
	तू ने नक्शा पाया है	तुम ने नक्शे पाए हैं
	उस ने नक्शा पाया है	उस ने नक्शे पाए हैं
	मैं ने पुस्तक पाई है	हम ने पुस्तकें पाई हैं
	तू ने पुस्तक पाई है	तुम ने पुस्तकें पाई हैं
	उस ने पुस्तक पाई है	उन्हों ने पुस्तकें पाई हैं
कर्मवाच्य :—	मैं देखा गया हूँ	हम देखे गए हैं
	तू देखा गया है	तुम देखे गए हो

वह देखा गया है — वे देखे गए हैं
मैं देखी गई हूँ — हम देखी गई हैं
तू देखी गई है — तुम देखी गई हो
वह देखी गई है — वे देखी गई हैं

भाववाच्य —मुझ से, तुझ से, उस से, हम से, तुम से, उन से — चला गया है

१५. भूत पूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओं के साथ / ह ∞ थ / धातु के / थ / संपरिवर्तक के भूत सामान्य काल के रूप (§ २ २. १. १ ५) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है । यथा —

कर्तृवाच्य — मैं, तू, वह — आया था; हम, तुम, वे — आए थे

कर्तरिप्रयोग :—मैं, तू, वह — आई थी; हम, तुम, वे — आई थीं

कर्मणिप्रयोग —मैंने, तू ने, उस ने — नक्शा पाया था; हम ने, तुम ने, उन्हों ने — नक्शे पाए थे

मैं ने, तू ने, उसने — पुस्तक पाई थी; हम ने, तुम ने, उन्हों ने — पुस्तकें पाई थी

कर्मवाच्य :— मैं, तू, वह — देखा गया था; हम, तुम, वे — देखे गए थे

मैं, तू, वह — देखी गई थी; हम, तुम, वे — देखी गई थीं

भाववाच्य — मुझ से, तुझ से, उस से, हम से, तुम से, उन से — चला गया था

१९. सभावनार्थ पूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के भविष्यत् सभावनार्थ काल के रूप (§ २ २. १. १ १. १) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है परन्तु कर्तृवाच्य के कर्मणि प्रयोग मे सहायक रूप अन्यपुरुष एक-वचन तथा बहुवचन के होते है, ये रूप कर्म के अनुसार होते है। यथा .—

कर्तृवाच्य.—	मैं आया होऊँ	हम आए हों
कर्तरिप्रयोग —	तू आया हो	तुम आए हो / हों
	वह आया हो	वे आए हों
	मैं आई होऊँ	हम आई हों
	तू आई हो	तुम आई हो / हों
	वह आई हो	वे आई हों
	मैं हुआ होऊँ	हम हुए हों
	तू हुआ हो	तुम हुए हो / हों
	वह हुआ हो	वे हुए हों
	मैं हुई होऊँ	हम हुई हों
	तू हुई हो	तुम हुई हो / हों
	वह हुई हो	वे हुई हों

कर्मणिप्रयोगः—

मैं ने / तू ने / उस ने	नक्शा पाया हो	हम ने / तुम ने / उन्हों ने	नक्शे पाए हों
मैं ने / तू ने / उस ने	पुस्तक पाई हो	हम ने / तुम ने / उन्हों ने	पुस्तकें पाई हों

कर्मवाच्य :—	मैं देखा गया होऊँ	हम देखे गए हों
	तू देखा गया हो	तुम देखे गए हो / हों
	वह देखा गया हो	वे देखे गए हों
	मैं देखी गई होऊँ	हम देखी गई हों
	तू देखी गई हो	तुम देखी गई हो / हों
	वह देखी गई हो	वे देखी गई हों

भाववाच्य — मुझ से
तुझ से
उस से
हम से
तुम से
उन से } चला गया हो

१७ संदेहार्थ पूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के भविष्यत् सामान्य काल के रूप (§ २. २. १. १. २. १.) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है, परन्तु कर्तृवाच्य के कर्मणिप्रयोग मे सहायक रूप अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन के ही होते है, ये रूप कर्म के अनुसार होते है ।

कर्तृवाच्य :—मैं आया हूँगा	हम आए होंगे
तू आया होगा	तुम आए होगे / होंगे
वह आया होगा	वे आए होंगे
मैं आई हूँगी	हम आई होंगी
तू आई होगी	तुम आई होगी / होंगी
वह आई होगी	वे आई होंगी
मैं हुआ हूँगा	हम हुए होंगे
तू हुआ होगा	तुम हुए होगे / होंगे
वह हुआ होगा	वे हुए होंगे
मैं हुई हूँगी	हम हुई होंगी
तू हुई होगी	तुम हुई होगी / होंगी
वह हुई होगी	वे हुई होंगी

कर्मणिप्रयोग —

मैं ने, तू ने, उस ने	नक्शा पाया होगा	हम ने, तुम ने, उन्हों ने	नक्शे पाए होंगे
मैं ने, तू ने, उस ने	पुस्तक पाई होगी	हम ने, तुम ने, उन्हों ने	पुस्तकें पाई होंगी

कर्मवाच्य —मैं देखा गया हूँगा	हम देखे गए होंगे
तू देखा गया होगा	तुम देखे गए होगे / होंगे
वह देखा गया होगा	वे देखे गए होंगे
मैं देखी गई हूँगी	हम देखी गई होंगी

तू देखी गई होगी — तुम देखी गई होगी / होँगी

वह देखी गई होगी — वे देखी गई होँगी

भाववाच्य —मुझ से / तुझ से / उस से / हम से / तुम से / उन से } चला गया होगा

१८ सकेतार्थ पूर्ण काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के अपूर्ण सकेतार्थ काल के रूप (§ २. २ १. १ ७) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। भाववाच्य मे इस काल के रूप उपलब्ध नही है।

कर्तृवाच्य :—

कर्तरिप्रयोग—

यदि मैँ / तू / वह } आया होता	यदि हम / तुम / वे } आए होते
यदि मैँ / तू / वह } आई होती	यदि हम / तुम / वे } आईँ होतीँ
यदि मैँ / तू / वह } हुआ होता	यदि हम / तुम / वे } हुए होते
यदि मैँ / तू / वह } हुई होती	यदि हम / तुम / वे } हुई होतीँ

कर्मणिप्रयोग—

यदि मैँ ने / तू ने / उस ने } नक्शा पाया होता	यदि हम ने / तुम ने / उन्होँने } नक्शे पाये होते
यदि मैँ ने / तू ने / उस ने } पुस्तक पाई होती	यदि हम ने / तुम ने / उस ने } पुस्तकेँ पाई होतीँ

कर्मवाच्या—

यदि मैँ / तू / वह } देखा गया होता	यदि हम / तुम / वे } देखे गए होते
यदि मैँ / तू / वह } देखी गई होती	यदि हम / तुम / वे } देखी गई होतीँ

(२ ३) भविष्यत् कालिक कृदन्त तथा सहायक क्रिया[1]

२. २. १ १ १६-२४ भविष्यत् कालिक कृदन्त क्रियाओ के साथ सहकारी क्रियाओ से निर्मित सभी कालो—भविष्यत् सभावनार्थ, भविष्यत् सामान्य, वर्तमान सामान्य, भूत सामान्य, अपूर्ण सकेतार्थ तथा पूर्ण सकेतार्थ—मे कृदन्त क्रियाओ की विभक्तियाँ समान है। इन कालो मे लिंग और वचन के अनुसार लगने वाली विभक्तियाँ निम्न रूपतालिका मे प्रस्तुत की जाती है। भविष्यत् कालिक कृदन्त-क्रियाओ का व्यवहार केवल कर्मवाच्य तथा भाववाच्य मे होता है। कर्मवाच्य मे सहायक रूप अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन के होते है। भाववाच्य मे सहायक रूप तथा कृदन्त रूप केवल पुल्लिग एकवचन के होते है। कृदन्त क्रिया-रूपो मे एक साथ दो विभक्तियो का योग होता है। प्रथम / -न / विभक्ति भविष्यत् काल की द्योतक है तथा दूसरी विभक्ति लिग और वचन की। / हꝏथ / धातु से भविष्यत् कालिक कृदन्त नही बनते।

	एक व०	बहु व०	
पुल्लिग	-न-आ	-न-ए	आना, पाना, जाना, होना / आने, पाने, जाने, होने
स्त्रीलिंग	-न-ई	-न-ई	आनी, पानी, जानी, होनी / आनी, पानी, जानी, होनी

१६. भविष्यत् सभावनार्थ काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार-दर्शक धातु के भविष्यत् सभावनार्थ काल के रूप (§ २ २. १. १. १. १ अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा—

कर्मवाच्य —मुझे / तुझे / उसे } पत्र पाना हो हमें / तुम्हें / उन्हें } पत्र पाने हों

मुझे / तुझे / उसे } पुस्तक पानी हो हमें / तुम्हें / उन्हें } पुस्तकें पानी हो

---

१. सहायक क्रियाओ के मेल से बने इन सयुक्त कालो मे यद्यपि भविष्यत् कृदन्तो मे क्रिया की कर्तव्यता या अनिवार्यता प्रकट होती है जो सयुक्त क्रियाओ का विषय है, तो भी सयुक्त काल-रचना मे इन की अपेक्षा है।

भाववाच्य :—मुझे, तुझे, उसे, हमें, तुम्हें, उन्हें } आना, जाना, होना हो

२०. भविष्यत् सामान्य काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के भविष्यत् सामान्य काल के रूप (§ २ २ १. १ २ १. अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा :—

कर्मवाच्य :—मुझे, तुझे, उसे	पत्र पाना होगा	हमें, तुम्हें, उन्हें	पत्र पाने होंगे
मुझे, तुझे, उसे	पुस्तक पानी होगी	हमें, तुम्हें, उन्हें	पुस्तकें पानी होंगी

भाववाच्य :—मुझे, तुझे, उसे, हमें, तुम्हें, उन्हें } आना, जाना, होना हो

२१. वर्तमान सामान्य काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह ∞ थ / धातु के / ह / सपरिवर्तक के वर्तमान सामन्य काल के रूप (§ २ २. १. १. ४, अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा :—

कर्मवाच्य :—मुझे, तुझे, उसे	पत्र पाना है	हमें, तुम्हें, उन्हें	पत्र पाने हैं
मुझे, तुझे, उसे	पुस्तक पानी है	हमें, तुम्हें, उन्हें	पुस्तकें पानी हैं

भाववाच्य :—मुझे, तुझे, उसे, हमें, तुम्हें, उन्हें } आना, जाना, होना है

२२. भूत सामान्य काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / ह ∞ थ / धातु के / थ / सपरिवर्तक के भूत सामान्य काल के रूप (§ २ २. १ १. ५. अन्यपुरुष एकवचन तथा बहुवचन) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा —

कर्मवाच्य —मुझे, तुझे, उसे } पत्र पाना था — हमें, तुम्हें, उन्हें } पत्र पाने थे

मुझे, तुझे, उसे } पुस्तक पानी थी — हमें, तुम्हें, उन्हें } पुस्तकें पानी थीं

भाववाच्य :— मुझे, तुझे, उसे, हमें, तुम्हें, उन्हें } आना, जाना, होना था

२३ अपूर्ण सकेतार्थ काल मे कृदन्त क्रियाओ के साथ / हो / विकार दर्शक धातु के अपूर्ण सकेतार्थ काल के रूप (§ २. २. १. १ ७ अन्य पुरुष एकवचन तथा बहुवचन) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा —

कर्मवाच्य —यदि मुझे, तुझे, उसे } पत्र पाना होता — यदि हमें, तुम्हें, उन्हें } पत्र पाने होते

यदि मुझे, तुझे, उसे } पुस्तक पानी होती — यदि हमें, तुम्हें, उन्हें } पुस्तकें पानी होतीं

भाववाच्य —यदि मुझे, तुझे, उसे, हमें, तुम्हें, उन्हें } आना, जाना, होना होता

२४. पूर्ण सकेतार्थ काल मे / हो / विकार दर्शक धातु के पूर्ण भूतकाल के रूप (§ २ २. १ १. ८) सहकारी क्रिया के रूप मे आते है। यथा —

कर्मवाच्य.— यदि मुझे, तुझे, उसे } पत्र पाना हुआ — यदि हमें, तुम्हें, उन्हें } पत्र पाने हुए

यदि मुझे तुझे उसे	पुस्तक पानी हुई	यदि हमें तुम्हें उन्हें	पुस्तकें पानी हुई

भाववाच्य	—यदि मुझे तुझे उसे हमें तुम्हें उन्हें	आना, जाना, होना हुआ

२ २ २. कृदन्त पद तथा कृदन्त विभक्तियों की व्युत्पादन क्षमता

क्रिया के जिन रूपो का व्यवहार दूसरे पद भेदो के समान होता है उन्हे कृदन्त पद कहते है (§२ २) । रूप के अनुसार कृदन्त-पद दो प्रकार के है .— **रूपान्तरशील** तथा **रूपान्तर रहित** । रूपान्तरशील कृदन्तो का प्रयोग सामान्यत सज्ञा अथवा विशेषण की भाँति होता है। इनके तीन भेद है— **सज्ञार्थक कृदन्त, अपूर्ण विशेषणार्थक कृदन्त** तथा **पूर्ण विशेषणार्थक कृदन्त ।** सज्ञार्थक कृदन्त सज्ञावत् प्रयुक्त होते है तथा विशेषणार्थक कृदन्त विशेषणवत् । रूपान्तर रहित कृदन्तो का प्रयोग क्रियाविशेषणो की भाँति होता है । इन्हे **क्रियाविशेषणार्थक कृदन्त** कहा जाता है । इनके भी तीन भेद है—**पूर्वकालिक क्रिया-विशेषणार्थक, अपूर्ण क्रिया विशेषणार्थक** तथा **पूर्ण क्रिया विशेषणार्थक ।**

सज्ञार्थक तथा विशेषणार्थक कृदन्तो मे सज्ञा तथा विशेषण की विभक्तियो का योग रहता है । इन विभक्तियो के पूर्व तथा धातुओ के पश्चात् एक मध्यस्थ चिह्नक की अवस्थिति है । इस प्रकार के मध्यस्थ चिह्नको को एक प्रकार से व्युत्पादक पर-प्रत्यय भी कहा जा सकता है और विभक्ति भी । व्युत्पादक परप्रत्यय इसलिए कहा जा सकता है क्योकि इन चिह्नको द्वारा धातु से सज्ञा अथवा विशेषण प्रातिपदिक व्युत्पन्न होते है । उदाहरणार्थ / उडती चिडिया दिखाई दी / वाक्य मे / उड / धातु के पश्चात् / त / चिह्नक विशेषण प्रातिपदिक बनाता है । इसके पश्चात् अन्य विशेषण प्रातिपदिको की भाँति लिंग और वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती है । इसी प्रकार / मेरा जाना वहाँ ठीक नहीं / वाक्य मे / जा / धातु के पश्चात् / -न / चिह्नक संज्ञा प्रातिपदिक बनाता है तत्पश्चात् अन्य सज्ञाओ की भाँति लिंग और वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती है । दूसरी परिस्थिति मे इन मध्यस्थ चिह्नको को विभक्ति भी कहा जा सकता है । कालो के विवेचन (§२ २. १ १ ७, §२. २ १. १. ६.) मे इन चिह्नको को काल-सूचक विभक्तियाँ कहा गया है । उदाहरणार्थ

/ चिडिया उडती है / वाक्य मे / -त / चिह्नक अपूर्ण काल का द्योतन करता है । इसी प्रकार / वहाँ मत जाना / वाक्य मे / -न / चिह्नक विधि भविष्यत् काल का सूचक है । इसके अतिरिक्त विशेषणार्थक एव सज्ञार्थक रूपो मे भी इन चिह्नको के द्वारा किसी न किसी रूप मे काल का द्योतन होता है । उदाहरणार्थ / उडती चिडिया / वाक्याश मे / उडती / कृदन्त का / -त / वर्तमान अपूर्ण काल का सूचक है । इसी प्रकार / मेरे जाने से काम न होगा / वाक्य मे / जाने / कृदन्त का / -न / भविष्यत् काल का सूचक है । इस दृष्टि से इन चिह्नको को विभक्तियो की कोटि मे रखा जा सकता है । ऐसी स्थिति मे हमने इन्हे सज्ञा तथा विशेषण प्रकरणो (§ २. १ १. ३ तथा §२ १. ३. १) मे अपनाई गई पद्धति के समान व्युत्पादक विभक्ति नाम दिया है ।

रूपान्तर रहित कृदन्तो का प्रयोग क्रियाविशेषणो की भाँति होता है । क्रिया-विशेषण प्रातिपदिको मे कोई विभक्ति नही लगती परन्तु धातुओ के जिन चिह्नको का योग होता है उन्हे भी व्युत्पादक प्रत्यय अथवा विभक्ति कहा का सकता है । जिस प्रकार अन्य प्रातिपदिको तथा धातुओ मे व्युत्पादक प्रत्यय लगकर क्रियाविशेषण प्राति-पदिक व्युत्पन्न होते है उसी प्रकार इन चिह्नको से भी, परन्तु इनके सम्बन्ध मे भी वही बात है जो रूपान्तरशील कृदन्तो की । इनसे भी एक प्रकार से काल का बोध होता है । इस प्रकार ये भी काल-सूचक विभक्तियाँ है । हमने इन्हे भी व्युत्पादक विभक्ति नाम दिया है ।

भूतकालिक कृदन्तो के सम्बन्ध मे ऐसी बात नही । वहाँ धातु का ही प्रत्यक्ष सम्बन्ध विभक्तियो से होता है । धातु और विभक्ति के बीच कोई ऐसा मध्यस्थ अश नही जिसे व्युत्पादक विभक्ति कहा जा सके । हाँ, कुछ धातुओ तथा विभक्ति के बीच कुछ विकार अवश्य होते है । उदाहरणार्थ / खोया लडका / वाक्याश मे / खो / धातु तथा / -आ / विभक्ति के पूर्व / य / का आगम सामान्यत स्वरान्त धातुओ के पश्चात् होता है । यह बात ध्वनि-प्रक्रिया से सम्बन्धित है (§२ २ १ १. ८ के अन्तर्गत ध्वनि-विकार) ।

आगामी विवेचन मे धातु के पश्चात् लगने वाली व्युत्पादक विभक्तियो पर विचार किया जाता है तथा उनसे सिद्ध कृदन्तो के रूपान्तरो का निर्देश किया जाता है । / ह ∞ थ / सत्तार्थक धातु से कृदन्त नही बनते । इसके अतिरिक्त शेष सब धातुओ से कृदन्त बनते है ।

२ २.२.१ रूपान्तरशील कृदन्त

२.२ २.१ १. संज्ञार्थक कृदन्त (भविष्यत् कालिक)

२ २.२ १.१ १ {न|आ}

इस व्युत्पादक विभक्ति के योग से सज्ञार्थक कृदन्तरूप सिद्ध होते है। यथा —

धातु	व्यु० विभ०	→	सज्ञार्थक कृदन्त
आ	-न|आ		आन|आ
पा	-न|आ		पान|आ
जा	-न|आ		जान|आ
हो	-न|आ		होन|आ
ले	-न|आ		लेन|आ
करा	-न|आ		करान|आ
लिखवा	-न|आ		लिखवान|आ
चलवा	-न|आ		चलवान|आ

इन कृदन्तो के रूपान्तर पुल्लिग (२) वर्ग के सज्ञा प्रातिपदिको (§ २. १ १.१. पुल्लिग (२)) के समान होते है। इनके रूपान्तर केवल पुल्लिग एकवचन के सबोधन कारक को छोडकर सभी कारको मे होते है। उदाहरणार्थ / वहाँ जाना ठीक नही /, / मेरे जाने से कोई काम न होगा / वाक्यो / जाना / प्रत्यक्ष कारक एकवचन तथा / जाने / तिर्यक् कारक एकवचन है।

२ २ २ १.२. अपूर्ण विशेषणार्थक कृदन्त (वर्तमान कालिक)

२.२.२.१.२.१. {त|आ}

इस व्युत्पादक विभक्ति से अपूर्ण विशेषणार्थक कृदन्त रूप सिद्ध होते है। यथा :—

धातु	व्यु० विभ०	→	विशेषणार्थ कृदन्त
चल	-त|आ		चलत|आ
खा	-त|आ		खात|आ
रो	-त|आ		रोत|आ
करवा	-त|आ		करवात|आ
खिला	-त|आ		खिलात|आ

इन कृदन्तो के रूपान्तर विशेषणो के सामान होते है (§ २. १. ३ १ (१) पुल्लिग तथा (२) स्त्रीलिंग)। उदाहरणार्थ / बहता पानी /, / बहते तिनके /, / बहती लकडियाँ / वाक्याशो मे / बहता, बहते, बहती / रूप विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार होते है। कभी-कभी इन कृदन्तो का प्रयोग सज्ञा के सामान होता है,

तब इनके रूपान्तर सज्ञाओ के समान होते है (§ २. १- १. १ पुल्लिग (२) तथा स्त्रीलिंग (३)) । स्त्रीलिग मे केवल एकवचन के रूप ही प्रयुक्त होते है। सबोधन कारक मे इनके रूपान्तर नही होते । उदाहरणार्थ / मरता क्या न करता /, / मरते क्या न करते / , / मरती क्या न करती / वाक्यो मे / मरता, मरते, मरती / रूप सज्ञावत् प्रयुक्त है । ये रूप मूलत विशेषण है परन्तु रचनात्मक दृष्टि से इनका प्रयोग अन्य सज्ञाओ के समान होता है और विशेष्य अध्यरित रहते है । इसी प्रकार / डूबतों को बचाइए / , / मारतों के आगे क्या कहना / वाक्यो मे / डूबतों /, / मारतों / का प्रयोग सज्ञाओं के समान है। हिन्दी मे ये प्रयोग सामान्य रूप से स्वीकार नही है, ये प्रयोग एक प्रकार से विशिष्ट कहे जा सकते है।

२ २. २ १. ३ पूर्ण विशेषणार्थक कृदन्त (भूतकालिक)

इन कृदन्तो की रचना मे धातु के पश्चात् कृदन्त सूचक कोई व्युत्पादक विभक्ति नही लगती। धातु रूप ही कृदन्त रूप है। इनके रूपान्तर भी सामान्यतः विशेषण प्रातिपदिको के समान होते है (§ २ १ ३ १. (१) पुल्लिग तथा (२) स्त्रीलिंग) । उदाहरणार्थ / गिरा घर /, / गिरे घर /, गिरी चीज /, / गिरी चीजें / वाक्याशो मे / गिरा, गिरे, गिरी / रूप विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार प्रयुक्त है।

अपूर्ण तथा पूर्ण कृदन्तो के साथ सामान्यत / हो / धातु के कृदन्त रूप सहायक रूप मे आते है । ये रूप भी भूतकालिक कृदन्तो के समान विशेषण होते है। उदाहरणार्थ / तैरता हुआ बालक / , तैरते हुए बालक / , / तैरती हुई लडकी /, / तैरती हुई लडकियाँ / , / तैरा हुआ आदमी / , / तैरे हुए / आदमी / , / तेरी हुई औरत / , / तैरी हुई औरतें / वाक्याशो मे / हुआ, हुए, हुई / सहकारी कृदन्त-रूपान्तर विशेषण समझने चाहिए।

जिस प्रकार अपूर्ण कृदन्तो का प्रयोग सज्ञावत् होता है उसी प्रकार पूर्ण कृदन्तो का भी । उदाहरणार्थ / मरे को क्या मारना / , / मरा क्या कर सकता है / , / तुम्हारे पिसे को कौन खा सकता है / वाक्यो मे / मरे, मरा, पिसे / रूपो का प्रयोग संज्ञावत् है ।

पूर्ण कृदन्तो के रूपान्तरो मे जो ध्वनि-विकार होते है वे पूर्ण भूत की काल-रचना (§ २ २ १ १ ८ पूर्ण भूत) के समान है।

२. २. २ २. रूपान्तर रहित कृदन्त

२ २ २. २. १ पूर्वकालिक क्रिया विशेषणार्थक

२. २. २. २. १. १. {-कर[1]} / कर∞के /

इसके योग से पूर्वकालिक क्रिया विशेषणार्थक कृदन्त बनते है तथा मुख्य क्रिया के पूर्व होने वाले व्यापार की समाप्ति का बोध होता है । उदाहरणार्थ / वह खाना खाकर आया / वाक्य मे मुख्य क्रिया / आया / के पूर्व / खा / धातु के पश्चात् लगने वाला / कर / अन्त 'खाने' के व्यापार की समाप्ति का सूचक है । नीचे इसके उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं .—

धातु	व्यु० विभ०	→	पू० क्रि० विशेषणार्थक
चल	-कर		चलकर
आ	-कर		आकर
जा	-कर		जाकर
दौड	-कर		दौडकर
लिखवा	-कर		लिखवाकर
गमा	-कर		गमाकर
ठहराकर	-कर		ठहराकर

प्रामाणिक हिन्दी मे / -के / सपरिवर्तक का प्रयोग केवल / कर / धातु के पश्चात् होता है । इस प्रकार यह पद-प्रतिबन्धित सपरिवर्तक है ।

कर	-के	करके

/ कर / के स्थान पर / -करके / का वैंकल्पिक प्रयोग होता है परन्तु इसकी अपेक्षा सामान्यत / -कर / का प्रयोग अधिकतर मान्य है ।

चलकरके / चलकर
खाकरके / खाकरके
जाकरके / जाकरके
सोकर / सोकरके

---

१. यद्यपि / कर / स्वतन्त्र पद है । उदाहरणार्थ / यह काम मत कर / वाक्य मे / कर / करने की क्रिया के अर्थ मे स्वतत्र पद है, परन्तु पूर्वकालिक क्रिया विशेषणार्थ कृदन्तो मे / -कर / का अर्थ समाप्ति सूचक होता है । यहाँ क्रिया के करने की प्रधानता नही अपितु समाप्ति की प्रधानता है । इस दृष्टि से / -कर / को आबद्ध रूप मे स्वीकार किया गया है ।

२ २ २. २ २. अपूर्ण क्रिया विशेषणार्थक

२ २. २ २ २ १ {-त-ए}

धातु के पश्चात् / -त / अपूर्णकालिक तथा / -ए / क्रियाविशेषण सूचक व्युत्पादक विभक्तियो के लगने से अपूर्ण क्रिया विशेषणार्थक पद सिद्ध होते है । इस से मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की अपूर्णता व्यक्त होती है । जैसे, / मुझे घर जाते देर हो जायगी / वाक्य मे / जाते / क्रियाविशेषण का / -त / चिह्नक अपूर्णता का सूचक है और / -ए / क्रियाविशेषण का । नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है —

धातु	व्यु० वि०	→	अपूर्ण क्रि० विशेषणार्थक
चल	-त-ए		चलते
कर	-त-ए		करते
लिखवा	-त-ए		लिखवाते
चला	-त-ए		चलाते
कमा	-त-ए		कमाते

२ २ २. २. ३ पूर्ण क्रियाविशेषणार्थक

२. २ २ २ ३. १. {-ए}

धातु के पश्चात् / ए / व्युत्पादक विभक्ति लगने से पूर्ण क्रियाविशेषणार्थक कृदन्त पद बनते है । इस विभक्ति के द्वारा मुख्य क्रिया के साथ होने वाले व्यापार की पूर्णता का बोध होता है । जैसे, / इतनी रात गए आप कहाँ थे / वाक्य मे / जा∞ग / धातु के पश्चात् / -ए / पूर्णता का द्योतन करता है । कुछ उदाहरण इस प्रकार है —

धातु	व्यु० वि०	→	पूर्ण क्रि० विशेषणार्थक
आ	-ए		आए
मार	-ए		मारे
ले (∼लि)	-ए		लिए
दे (∼दि)	-ए		दिए
कर (∼कि)	-ए		किए
हो (∼हु)	-ए		हुए
छू (∼छु)	-ए		छुए
पी (∼पि)	-ए		पिए
करा	-ए		कराए

सुना	-ए	सुनाए
चलवा	-ए	चलवाए

/ ए / के योग से धातुओ मे जो विकार होते है वे पूर्णभूत काल के रूपो के समान है (§ २. २. १ १. ८) ।

२ ३. क्रियाविशेषणपद

जो रूप क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हे क्रियाविशेषण कहते है । रूपात्मक दृष्टि से इन्हे दो प्रकार के कहा जा सकता है — १ रूपान्तर रहित तथा २. रूपान्तरशील । रूपान्तर रहित क्रियाविशेषणो मे कोई रूपान्तर नही होता । रूपान्तरशील क्रियाविशेषणो मे लिंग, वचन और कारक के अनुसार रूपान्तर होता है । यद्यपि सा ान्यत हिन्दी के क्रियाविशेषणो मे रूपान्तर नही होता परन्तु कुछ परिमाण, प्रकार तथा गुणवाचक विशेषण जब क्रियाविशेषण का कार्य करते है तो इन के रूपान्तर होते हैं । ये रूपान्तर विशेषणो के समान होते है:— विशेषण प्रातिपदिको मे जो लिग और वचन की विभक्तियाँ लगती है, वे ही विभक्तियाँ क्रियाविशेषण प्रातिपदिको मे भी लगती है । परन्तु जिस प्रकार विशेषण प्रातिपदिको के पश्चात् विभक्तियो के लगने की व्यापकता है उस प्रकार की व्यापकता इन क्रियाविशेषणो मे नही—विशेष-विशेष परिस्थिति मे ही ये विभक्तियाँ लगती है । पहले रूपान्तर रहित क्रियाविशेषणो पर विचार किया जाता है ।

२. ३. १ रूपान्तररहित क्रियाविशेषण

जो प्रातिपदिक अपने मूल रूप मे क्रियाविशेषण है, उन मे कोई विभक्ति नही लगती । मूल रूप से हमारा अभिप्राय उन क्रियाविशेषण प्रातिपदिको से है जो या तो प्रत्यय लगने से व्युत्पन्न होते है अथवा प्रत्यय रहित अवस्था मे क्रियाविशेषण है । उदाहरणार्थ / करीब / विशेषण प्रातिपदिक मे / -अन / प्रत्यय लगने से / करीबन / क्रियाविशेषण बनता है । / बहुधा / प्रत्यय रहित अवस्था मे क्रियाविशेषण है । इस प्रकार ये मूलत क्रियाविशेषण है । इनकी रूपतालिका उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है ।

	एक व०	बहु व०	
पुल्लिग	-०	-०	बहुधा, सदा, खूब, धीरे धीरे, हँसते· हँसते चुपचाप
स्त्रीलिंग	-०	-०	

उदाहरण :—

मैं यह काम **बहुधा** करता हूँ
वे यह काम **बहुधा** करते हैं
मैं यह काम **बहुधा** करती हूँ
वे ये काम **बहुधा** करती हैं

मैंने यह काम **सदा** किया है
उन्होंने ये काम **सदा** किए हैं
मैं यह काम **सदा** करती रही हूँ
वे ये काम **सदा** करती रही हैं

मैं उन्हें देखकर **खूब** रोया
वे उन्हें देखकर **खूब** रोए
मैं उन्हें देखकर **खूब** रोई
वे उन्हें देखकर **खूब** रोईं

मैंने यह काम **धीरे धीरे** कर डाला
उन्होंने सब काम **धीरे धीरे** कर डाले
मैं यह काम **धीरे धीरे** करती हूँ
वे ये काम **धीरे धीरे** करती हैं

उस ने यह काम **हँसते हँसते** किया
उन्होंने ये काम **हँसते हँसते** किए
मैं यह काम **हँसते हँसते** करती हूँ

मैं यह काम **चुपचाप** करता हूँ
वे ये काम **चुपचाप** करते हैं
मैं यह काम **चुपचाप** करती हूँ
वे ये काम **चुपचाप** करती हैं

२.३.२. रूपान्तरशील क्रियाविशेषण

रूपान्तरशील क्रियाविशेषणो के अन्तर्गत वे विशेषण प्रातिपदिक[1] आते हैं

---

१. हिन्दी व्याकरणो मे इन विशेषणो को बहुधा आकारान्त कहा जाता है परन्तु हम इन्हे आकारान्त नही कहते क्योकि विशेषण प्रातिपदिको मे / -आ / कोई ऐसा अश नही । / -आ / तो पुल्लिग एकवचन की विभक्ति है । हाँ, इन्हे रूपान्तरशील विशेषण प्रातिपदिक कहा जा सकता है ।

जिनमे लिंग और वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती हैं (§ २. १. ३ १. (१) पुल्लिग (२) स्त्रीलिंग) । जब इस वर्ग के विशेषण प्रातिपदिको का प्रयोग क्रिया की विशेषता बतलाने के लिए होता है तो ये क्रियाविशेषण प्रातिपदिक कहलाते है तथा इनमे कर्त्ता अथवा कर्म के लिग और वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती है । यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ये क्रियाविशेषण ऐसे सध्यस्थलो पर प्रयुक्त होते है कि इन्हे विशेषण कहे जाने की सभावना है । परन्तु वास्तव में ऐसी बात नही । उदाहरणार्थ / दर्जी कपडे अच्छे सीँता है / वाक्य मे / अच्छे / पद 'कपडे' की विशेषता बतलाता प्रतीत होता है । परन्तु यह स्पष्ट लक्षित होता है कि यहाँ 'कपडो' के 'अच्छेपन' की विशेषता नही वरन् 'सीँने' मे 'अच्छापन' है । इसी प्रकार / वे बाजे अच्छे बजाते हैँ / यहाँ 'बाजो' मे 'अच्छापन' नही है अपितु 'बजाना' क्रिया मे 'अच्छापन' है । इसलिए / अच्छे / यहाँ क्रियाविशेषण है । इस प्रसग मे यह आपत्ति उठाई जा सकती है कि सकती है कि इस प्रकार के प्रयोगो मे इन्हे विधेय-विशेषण क्यो नही माना जाय ? क्योकि विधेय-विशेषणो का भी प्रयोग अपने विशेष्य (विचाराधीन) के पश्चात् होता है, उसके लिंग और वचन के अनुसार रूपान्तर होता है तथा मूलत: ये विशेषण प्रातिपदिक होते ही है । परन्तु विचार की कसौटी पर विधेय-विशेषण और क्रियाविशेषण मे पर्याप्त अन्तर होता है । उदाहरणार्थ , मेरे कपडे अच्छे हैँ / वाक्य मे / अच्छे / का प्रयोग विधेय रूप मे अवश्य है परन्तु 'अच्छापन' कपडो मे ही है क्रिया मे 'अच्छापन' नही है । यदि यो कहा जाय / मेरे कपडे अच्छे धुले हैँ / तो यहाँ पर धुलने की क्रिया मे अच्छापन है । इस प्रकार स्पष्ट है कि जब विशेष्य मे कोई विशेषता विवक्षित होगी तो वह विशेषण होगा और यदि क्रिया मे कोई विशेषता विवक्षित होगी तो वह क्रियाविशेषण । हाँ, यह बात अवश्य है कि ये अपने पूर्ववर्ती नामपद के लिंग और वचन के अनुसार रूपान्तरित होते है । इसे एक प्रकार से **सपर्क जनित रूपान्तर** समझना चाहिए क्योकि सामीप्य से एक पद दूसरे पद से प्रभावित होता है । यह भी ठीक है कि ये मूलत. विशेषण है परन्तु यह आवश्यक नही कि ये ठीक विशेषणवत् प्रयुक्त हो, दूसरे पद-भेदो के रूप मे भी (इस प्रसग मे क्रियाविशेषण पदो के रूप मे) इनका प्रयोग सभव है । इस प्रसग मे यह भी शका खडी हो सकती है कि प्रधानत: क्रियाविशेषणो के रूपान्तर नही होते तब इन्हे रूपान्तरशील क्यो माना जाय ? परन्तु यह स्मरण रखना चाहिए कि किसी भी भाषा मे सामान्य नियमो के बावजूद भी कुछ न कुछ अपवाद मिलना सभव है । भाषा के अध्ययन के विभिन्न कक्षो की परिधियो मे पारस्परिक सचरण सभव है । ऐसा सभव नही कि एक कक्ष की परिधि दूसरे की परिधि से बिल्कुल तटस्थ हो या एक का प्रवेश दूसरे मे वर्जित हो । ठीक यही बात इस प्रसग मे समझनी चाहिए । अत., इन्हे क्रियाविशेषण मानने मे कोई आपत्ति प्रतीत नही होती ।

नीचे इन क्रियाविशेषणो के रूपान्तरो मे सन्निहित विभक्तियो की रूपतालिका उदाहरणो सहित प्रस्तुत की जाती है तत्पश्चात् उन विशेष परिस्थितियो का दिग्दर्शन किया जायगा जिनमे इन विभक्तियो का व्यवहार होता है।

	एक व०	बहु व०		
पुल्लिग	-आ	-ए	अच्छा	अच्छे
			टेढा	टेढ
			इतना	इतने
			कैसा	कैसे
स्त्रीलिंग	-ई	-ई	अच्छी	अच्छी
			टेढी	टेढी
			इतनी	इतनी
			कैसी	कैसी

उदाहरण —

वह बाजा **अच्छा** बजाता है
वह बाजे **अच्छे** बजाता है
वह ढोलक **अच्छी** बजाता है
वह ढोलकें **अच्छी** बजाता है

वह खभे को **टेढा** गाड रहा है
वह खभों को **टेढे** गाड रहा है
वह लकडी को **टेढी** गाड रहा है
वह लकडियों को **टेढ़ी** गाड रहा हे

वह **इतना** डरा कि भाग गया
वे **इतने** डरे कि भाग गए
वह **इतनी** डरी कि भाग गई
वे **इतनी** डरीं कि भाग गईं

फूल **कैसा** खिलता है
फूल **कैसे** खिलते हैं
कली **कैसी** खिलती है
कलियाँ **कैसी** खिलती हैं

२. ३. २. १. विशेष परिस्थितियाँ

पहले कहा जा चुका है कि जिस प्रकार विशेषण प्रातिपदिको के पश्चात्

विभक्तियो के लगने की व्यापकता है उस प्रकार की व्यापकता यहाँ नही। जिन परि-स्थितियो मे ये विभक्तियाँ लगती है वे इस प्रकार है :—

(१) अकर्मक क्रियाओ के कर्त्तरिप्रयोग मे ये क्रियाविशेषण कर्त्ता के लिग और वचन के अनुसार रूपान्तरित होते है। यथा —

{तिरछ-} वह **तिरछा** चलता है
वे **तिरछे** चलते हैं
वह **तिरछी** चलती है
वे **तिरछी** चलती हैं

{कैस-} यह कागज **कैसा** चमकता है
ये कागज **कैसे** चमकते हैं
पानी स धुलकर पेड की जड **कैसी** चमकती है
पानी से धुलकर पेडों की जडें **कैसी** चमकती हैं

सूचना (१) इस नियम के विरुद्ध यह कहा जा सकता है कि हिन्दी मे ऐसे प्रयोग भी होते है जहाँ सर्वत्र पुल्लिग एक वचन की विभक्ति का ही योग होता है। उदाहरणार्थ / वह तिरछा चलता है /, / वे तिरछा चलते हैं /, / वह तिरछा चलती है /, / वे तिरछा चलती हैं / इत्यादि। परन्तु इस प्रकार के प्रयोग वैकल्पिक है तथा ये प्रयोग सामान्यत गृहीत नही है।

(२) जब सकर्मक क्रिया मे कर्म की विवक्षा नही होती तो उसका प्रयोग अकर्मक क्रिया की भाँति होता है परन्तु क्रियाविशेषण का लिग और वचन कर्त्ता के लिंग और वचन के अनुसार नही होता, प्रत्येक स्थिति मे पुल्लिग एकवचन की विभक्ति का ही योग होता है। यथा —

{अच्छ-} लडका **अच्छा** गाता है
लडके **अच्छा** गाते हैं
लडकी **अच्छा** गाती है
लडकियाँ **अच्छा** गाती हैं

{कैस-} वह **कैसा** लिखता है
वे **कैसा** लिखते हैं
वह **कैसा** लिखती है
वे **कैसा** लिखती हैं

(३) सकर्मक क्रिया के कर्त्तरि एव कर्मणि प्रयोग मे ये क्रियाविशेषण कर्म के लिंग और वचन के अनुसार रूपान्तरित होते है। यथा :—

{सीध-} वह खबे को जमीन में **सीधा** गाडता है
वह खबों को जमीन में **सीधे** गाडता है
वह छड को जमीन मे **सीधी** गाडता है
वह छडों को ज़मीन में **सीधी** गाडता है

{टेढ-} उसने खबा **टेढ़ा** क्यों गाडा
उसने खबे **टेढ़े** क्यों गाडे
उसने छड **टेढ़ी** क्यों गाडी
उसने छडें **टेढ़ी** क्यों गाडीं

(४) अकर्मक तथा सकर्मक क्रियाओ के भावे प्रयोग मे ये क्रियाविशेषण सर्वत्र पुल्लिग एकवचन की विभक्ति सहित रहते है। यथा :—

{सीध-} लडके से **सीधा** नहीं चला जाता
लडकों से **सीधा** नहीं चला जाता
लडकी से **सीधा** नहीं चला जाता
लडकियों से **सीधा** नहीं चला जाता
लडके को **सीधा** घर भेजा जायगा
लडकों को **सीधा** घर भेजा जायगा
लड़की को **सीधा** घर भेजा जायगा
लडकियों को **सीधा** घर भेजा जायगा

सूचना (२) इस नियम के विरुद्ध यह कहा जा सकता है कि सकमर्क क्रियाओं के भावे-प्रयोग मे ये क्रियाविशेषण सर्वत्र एक समान नही रहते। जैसे, / लडके को सीधा घर भेजा जायगा / , / लड़कों को सीधे घर भेजा जायगा / इत्यादि। परन्तु इस प्रकार के प्रयोग वैकल्पिक है तथा सामान्य रूप से ग्राह्य नही है।

पश्चाश्रयी-विचार

३

पश्चाश्रयी-विचार

जो आबद्ध अश वाक्य मे किसी पद या पद-समुच्च के पश्चात् आते है उन्हे पश्चाश्रयी कहा जाता है (§ ०. ६. २)। जिस पद या पद-समुच्च से ये आबद्ध होकर जिस रचना का निर्माण करते है, उसे **पश्चाश्रयी-रचना** समझना चाहिए। उदाहरणार्थ / लडके ने फल खाया /, / मैं ही जाऊँगा / वाक्यो मे / लडके ने / मैं ही / रचनाएं पश्चाश्रयी रचनाएं है जिनमे / ने / तथा / ही / पश्चाश्रयी है।

हिन्दी पश्चाश्रितो के दो प्रधान भेद है:—परसर्ग तथा निपात। परसर्ग वे आबद्ध अश है जो किसी पद या पद-समुच्चय के पश्चात् प्रयुक्त होकर वाक्य के किसी दूसरे पद या पदसमुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक सबध व्यक्त करते है (§ ० ६. २.)। उदाहरणार्थ / उस लडके ने यह काम किया / वाक्य मे / ने / परसर्ग सज्ञापद / लडके / तथा क्रियापद / किया / के बीच कर्तृपरक सबध सूचित करता है। निपात वे आबद्ध अश है जो उस पद या पद-समुच्चय के पश्चात् वाक्य मे निक्षिप्त होते है जिसके सबध मे किसी व्याकरणिक या वाक्यात्मक रीति या पद्धति अभिप्रेत होती है (§ ० ६. २)। उदाहरणार्थ / लडके ने ही यह काम किया है / वाक्य मे / ही / निपात / लडके / के सबध मे निश्चय अथवा अवधारण सूचित करता है, 'लडका' ही क्रिया का करने वाला है, न कि और कोई।

हिन्दी मे / **क- ∞ -र- ∞ -न-** / , / **के- ∞ -रे∞ -ने** /, / **को** /, / **तक** /, / **ने** /, / **पर** /, / **भर** /, / **में** /, / **वाल-** /, / **स-** / तथा / **से ∞ -ओं** / परसर्ग उपलब्ध है। इनके द्वारा किसी न किसी प्रकार का व्याकरणिक सबध होता है। रूप की दृष्टि से इन परसर्गो को दो वर्गो मे रखा जाता है:—१. रूपान्तर रहित तथा २. रूपान्तर शील। रूपान्तर रहित परसर्ग प्रत्येक स्थिति मे एक समान रहते है, लिग तथा वचन के अनुसार इनके रूपान्तर नही होते। / के ∞ -रे ∞ -ने /, / तक /, / पर /, / भर /, / में /, / को ∞ -ए ∞ -एं / तथा / से / परसर्ग प्रत्येक स्थिति मे तद्वत

रहते है। इनके अतिरिक्त रूपान्तर शील परसर्ग वे है जिनमे लिंग और वचन के अनुसार रूपान्तर होते है। / क ∞ -र- ∞ -न- /, / वाल- /, / स- / परसर्गों में लिंग तथा वचन के अनुसार / -आ, -ई, -ए / विभक्तियाँ लगती है। आगे इसी क्रम से विचार किया जायगा।

हिन्दी की परम्परागत व्याकरणो मे / ने /, / को /, / से /, / में/इत्यादि परसर्गों को विभक्तियाँ कहा गया है परन्तु ये विभक्तियाँ नही है। विभक्तियाँ से तो पद बनते है, परन्तु ये पद नही बनाते अपितु पश्चाश्रयी-रचना बनाते है। उदाहरणार्थ / राम को /, / तुम को /, / मैं ने /, / घर मैं / इत्यादि प्रकार की रचनाएँ पश्चाश्रयी रचनाएँ है। विभक्तियो से हमारा अभिप्राय उन आबद्ध अशो से है जो प्रातिपदिको मे लिग, वचन और कारक के अनुसार तथा धातुओ मे वाच्य, रीति, काल, पुरुष, लिग और वचन के अनुसार लगते है। दूसरे ढग से यो समझना चाहिए कि जिन आबद्ध अशो के जुडने से पर बनते है उन्हे विभक्तियाँ कहा जाता है। पदो के पश्चात् जो आबद्ध अश व्याकरणिक सबध द्योतित करते हुए वाक्याशीय रचना बनाते है उन्हे परसर्ग कहा जाता है। इस प्रकार दोनो की स्वतत्र कार्यकारिता है। इसके अतिरिक्त दोनो की यौगिक प्रक्रिया मे ध्वनि-प्रक्रियात्मक अन्तर है। विभक्तियो तथा प्रातिपदिको अथवा धातुओ के बीच सामान्यत युक्त सक्रमण होता है परन्तु परसर्गों तथा पदो के बीच कुछ सर्वनाम पदो को छोडकर सामान्यत मुक्त सक्रमण होता है (§ ० ६ २. १.) दूसरे ढग से यो कहा जा सकता है कि विभक्तियाँ सश्लिष्ट अवस्था मे रहती है जबकि परसर्ग विश्लिष्ट अवस्था मे। इस प्रकार इन परिपाश्वों मे विभक्ति तथा परसर्ग अलग-अलग कोटियाँ है।

हिन्दी की पुस्तको मे प्राय देखा जाता है कि परसर्गों की कार्यकारिता एव गिनती कारकीय सबधो तक ही सीमित मानी जानी है, परन्तु ऐसी बात नही। इनके द्वारा तथा इनके अतिरिक्त अन्य परसर्गों से अन्य सबध भी व्यक्त होते हैं। उदाहरणार्थ / मैं देर तक सोता रहा / वाक्य मे / तक / परसर्ग क्रियाविशेषण / देर / तथा क्रिया / सोता रहा / के बीच मर्यादा या अभिविधि सबध व्यक्त करता है। इस प्रकार परसर्ग केवल कारकीय सबधो तक ही सीमित नही है।

जिस प्रकार परसर्गो द्वारा अनेक प्रकार के सबध व्यक्त होते है उस प्रकार निपातो के द्वारा सबध व्यक्त नही होते, उनके द्वारा तो किसी व्याकरणिक रूढि अथवा वाक्यात्मक विधि का प्रकाशन होता है। इस प्रकार इनकी प्रकृति परसर्गों से भिन्न है।

हिन्दी मे / **तक** /, / **तो** /, / **न** /, / **भर** /, / **भी** /, / **मात्र** /,

/ ही ∞ -ई ∞-हीँ ∞-ईँ / निपातो का प्रयोग होना है। इन मे मे / तक / तथा / भर / का प्रयोग परसर्गो की भाँति भी होता है। परसर्गो के विवेचन मे इन्हे शामिल किया गया है। हिन्दी मे इन सभी निपातो के द्वारा प्रधानत अवधारणार्थं अथवा विशिष्टता व्यक्त होती है तथा जिन पदो के पश्चात् इनका व्यवहार होता है उनके विषय मे अवधारण अथवा वैशिष्ट्य व्यक्त होता है। उदाहरणार्थ / मैँ ही जाऊँगा / वाक्य मे सर्वनाम / मैँ / के पश्चात् / ही / निपात का प्रयोग यह व्यक्त करता है कि जाने वाला / मैँ / है, न कि और कोई।

जिस पद या पद-समुच्य से पश्चाश्रित आबद्ध होकर जिस रचना का निर्माण करते हैं उसे पश्चाश्रयी रचना कहते है। परसर्गो तथा निपातो की दृष्टि से इसके दो भेद हो जाते हैं:— **१. परसर्गीय रचना २. निपातीय रचना**। परसर्गीय रचना मे पद के पश्चात् परसर्गो का व्यवहार होता है तथा निपातीय रचना मे निपातो का। परसर्गीय रचना के दो उपभेद, १ १ **रूपान्तर रहित परसर्गीय रचना** तथा १. २ **रूपान्तरशील परसर्गीय रचना** और हो जाते है। रूपान्तर रहित रचना मे रूपान्तर रहित परसर्गों का व्यवहार होता है जबकि रूपान्तरशील रचना मे रूपान्तरशील परसर्गो का। हिन्दी मे एक साथ परसर्गो तथा निपातो के प्रयोग भी होते है। इस स्थिति मे चरम पश्चाश्रित ही परसर्गीय अथवा निपातीय रचना को द्योतित करता है। उदाहरणार्थ / लडके ने कहा / वाक्य मे / लडके ने / परसर्गीय रचना है। / लडके ने भी कहा / इस वाक्य मे / लडके ने भी / निपातीय रचना है तथा / लडके ने / परसर्गीय रचना है। इसी प्रकार / लडका छत पर से गया / वाक्य मे / छत पर से / परसर्गीय रचना है तथा / छत पर / भी परसर्गीय रचना है। इस प्रकार जहाँ पश्चाश्रितो के दुहरे-तिहरे प्रयोगो मे प्रत्येक के अनुसार पश्चाश्रित रचना समझनी चाहिए।

३. १. परसर्गो का विवरण

३. १. १. रूपान्तररहित परसर्ग

रूपान्तर रहित परसर्गीय रचना मे जिन परसर्गो का व्यवहार होता है उनका विवरण इस प्रकार है।

३. १. १. १ {के} / के ∞ -रे ∞ -ने /

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा तथा सर्वनाम पदो के पश्चात् होता है। / -रे / तथा / -ने / सश्लिष्ट सपरिवर्तक है। / -रे / का प्रयोग / मे- /, / हमा- /, / ते- / तथा / तुम्हा- / सर्वनाम तिर्यक रूपो के पश्चात् होता है। / -ने / का प्रयोग स्वयंवाचक सर्वनाम के तिर्यक् रूप / अप- / के पश्चात् होता है। शेष स्थिति मे सज्ञा तथा सर्वनाम तिर्यक रूपो के पश्चात् / के / सपरिवर्तक का व्यवहार होता है।

इस प्रसग मे यह स्मरणीय है कि हिन्दी मे / क- ∞ -र- ∞ -न- / परसर्ग रूपान्तरशील परसर्ग है जबकि / के ∞ -रे ∞ -ने / रूपान्तरशील परसर्ग नही।

इस परसर्ग से क्रिया के साथ अस्तित्व, उत्पत्ति, कर्म परक तथा निमित्त परक संबध व्यक्त होते है। इसकी यौगिक रचना तथा सबध उदाहरणो सहित इस प्रकार है —

यौगिक रचना —

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	आदमी	के		आदमी के
	आदमियों	के		आदमियों के
	औरत	के		औरत के
	औरतों	के		औरतों के
(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	इस	के		इस के
	उस	के		उस के
	किस	के		किस के
	किन	के		किन के
	मे-	-रे		मेरे
	हमा-	-रे		हमारे
	ते-	-रे		तेरे
	तुम्हा-	-रे		तुम्हारे
	अप-	-ने		अपने

उदाहरण—

(१) अस्तित्व परक सबध — इस आदमी के एक लडकी है
इन आदमियों के कई लडके हैं
इस के एक लडका है
उस के चार लडके तथा चार लडकियाँ हैं
किस के चार लडके हैं
किन के चार लडकियाँ हैं
तेरे एक मकान है
तुम्हारे चार मकान हैं

अपने तो कोई नहीं है
अपने एक लड़का था

(२) उत्पत्तिपरक संबंध :— इस **औरत** के एक लडकी हुई
इन **औरतों** के तीन लडके हुए
मेरे एक लडका हुआ
हमारे चार लडके हुए
अपने तीन नाती हुए

(३) कर्मपरक सबंध :— मा **लडकी** के चपत लगाती है
मोहन **सोहन** के चॉटा मारता है

(४) प्रयोजन परक सबध :— वे **शोभा** के लिए तोते पालते हैं
यह **उस** के लिए किया गया है
हमारे लिए यहाँ कुछ नहीं
अपने लिए क्या था

(५) नियमित परक सबध — **महीने के महीने** लोग वहाँ जाते हैं
सोमवार के सोमवार पूजा होती है

सूचना (१) प्रयोजन परक सबध मे { के } के पश्चात् / लिए / का व्यवहार होता है ।

३. १. १. २. {को}

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम, तथा क्रियाविशेषण पदो के पश्चात् होता है । विशेषण जब सज्ञावत् प्रयुक्त होते है तो उनके पश्चात् इस परसर्ग का व्यवहार होता है । जैसे / मूखे को मत मताओं / वाक्य मे / भूखे / पद सज्ञावत् प्रयुक्त है, ऐसी दशा मे / को / का व्यवहार है । सर्वनाम तिर्यक रूपो के पश्चात् विकल्प से / -ए / तथा / -एँ / रूपो का भी व्यवहार होता है, परन्तु सश्लिष्ट रूप मे । / -ए / का वैकल्पिक प्रयोग एक वचन सर्वनाम तिर्यक रूपो के पश्चात् होता है तथा / एँ / का बहुवचन सर्वनाम तिर्यक रूपो के पश्चात् ।

इप परसर्ग से अनेक प्रकार के सबध व्यक्त होते हैं । इसकी यौगिक रचना तथा सबंध उदाहरणो सहित इस प्रकार है —

यौगिक रचना —

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	राम	को		राम को
	लडके	को		लडके को

लडकों	को	लडकों को
लडकी	को	लडकी को
लडकियों	को	लडकियों को
बालक	को	बालक को
बालकों	को	बालकों को
अनाथों	को	अनाथों को
दीन	को	दीन को

(२)

सर्व० पद	परसर्ग →	परसर्गीय रचना
मुझ	को	मुझ को
हम	को	हम को
तुझ	को	तुझ को
तुम	को	तुम को
इस	को	इस को
इन	को	इन को
उस	को	उस को
उन	को	उन को
जिस	को	जिस को
जिन	को	जिन को
किस	को	किस को
किन	को	किन को
किसी	को	किसी को
किन्हीं	को	किन्हीं को
कुछ	को	कुछ को
आप	को	आप को
मुझ-	-ए	मुझे
तुझ-	-ए	तुझे
इस-	-ए	इसे
उस-	-ए	उसे
जिस-	-ए	जिसे
किस-	-ए	किसे
हम-	-एं	हमें
तुम्ह-	-एं	तुम्हें

इन्ह-	-एँ	इन्हें
जिन्ह-	-एँ	जिन्हें
किन्ह-	-एँ	किन्हें

(३) क्रि० वि० पद परसर्ग → परसर्गीय रचना

आगे	को	आगे को
पीछे	को	पीछे को
इधर	को	इधर को
उधर	को	उधर को
ऊपर	को	ऊपर को
नीचे	को	नीचे को
अन्त	को	अन्त को

उदाहरण:—

(१) कर्तृपरक सबंध — राम को अभी पाठ पढना है
लड़के को घर ज़रूर जाना है
बालकों को कल स्टेशन पहुँचना होगा
मुझ को स्कूल अवश्य छोडना है
इन को इधर से न जाना होगा
मुझे अवश्य ही सोचना पडेगा
हमें अवश्य दुख झेलना पडेगा
हमें यह कार्य करना ही है

(२) मुख्य कर्म परक सबधः—वह राम को घूर घूर कर देख रहा है
मैंने लड़के को खूब समझाया
तुम बालकों को उनके माँ-बाप से मिला देना
आप मुझ को क्यों सताते हैं
तुम इन को समझाओ
वे मुझे अवश्य मारेंगे
तुम हमें मत मारो
जीवन का रहस्य हमें मिल गया
फिर उन्हें चादर पर लिटाया
अब हम इन्हें जान दें
वे तुम्हें क्यों रोकते हैं

(३) गौण कर्मपरक सबध:— मोहन राम को पुस्तक देता है
मैंने लड़के को काम दिया
तुम लड़कों को पाठ पढाते हो
आप मुझको खाना क्यों देते हैं
तुम इन को वेद पढाओ
वे मुझे पुस्तक जरूर देंगे
वह हमें दूध पिलाता है
आप उन्हें बादाम क्यों नहीं देते
अब हम इन्हें काम करने दें
हम तुम्हें पुस्तकें देंगे

(४) प्रयोजन परक सबध:— ईश्वर ने सुनने को दो कान दिए हैं
काम कैसे करूं रहने को तो जगह नहीं
गाडी आने को है
अर्थी अब जाने को है
यहाँ से जाने को तो सभी हैं
लडके सैर को गए हैं
हम दर्शन को जाते हैं
आगे को ऐसा होगा
इधर को मत देखिए
ऊपर को मत थूको
उधर को आप जाँय तो देखना

सूचना (२) प्रयोजन परक सबध मे बहुधा क्रियार्थक सज्ञा के पश्चात् / को / परसर्ग का व्यवहार होता है। प्रयोजन के सबध मे सर्वनाम पद नही आते।

(५) अधिकरण परक सबध.—मंगलवार को बारात विदा होगी
कल रात को पानी पडा
अब तो इतवार को बैठक होगी
दोपहर को घर ही तो थे

सूचना (३) अधिकरण परक सबध मे केवल संज्ञा पद ही आते हैं।

३. १. १. ३. {तक}

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाविशेषणों के पश्चात् होता है तथा इसके योग से क्रियाविशेषण-वाक्याश बनते है। इसका प्रयोग निपातीय रचना

मे भी होता है। जब इसका प्रयोग परसर्ग के रूप मे होता है तो यह अपने पूर्ववर्ती पद का क्रिया से मर्यादा अथवा अभिविधि संबध स्थापित करता है। यथाः—

यौगिक रचना —

(१)	सं० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	घर	तक		घर तक
	लखनऊ	तक		लखनऊ तक
	गाँव	तक		गाँव तक
	रुपए	तक		रुपए तक
(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	उस	तक		उस तक
	उन	तक		उन तक
	तुम	तक		तुम तक
	आप	तक		आप तक
	हमीं	तक		हमीं तक
(३)	क्रि०वि०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	अब	तक		अब तक
	जब	तक		जब तक
	कब	तक		कब तक
	तब	तक		तब तक
	कहाँ	तक		कहाँ तक
	जहाँ	तक		जहाँ तक
	वहाँ	तक		वहाँ तक
	यहाँ	तक		यहाँ तक
	आज	तक		आज तक
	कल	तक		कल तक

उदाहरणः—

मर्यादा अथवा अभिविधि संबधः—तुम्हें मेरे घर तक चलना होगा
लखनऊ तक की खबरें मैंने दीं
नौकर गाँव तक गया
इस काम के दस रुपए तक मिल सकते हैं
उस तक यह खबर कर देना
आप तक ही यह बात रहे

तुम तक मेरी पहुँच है
अब तक यह काम समाप्त होना चाहिए
कब तक आप ठहरेंगे
जहाँ तक हो सच्चाई से काम करो
वहाँ तक मैं कैसे जा सकता हूँ

३ १. १. ४ {ने}

इस परसर्ग का प्रयोग केवल तिर्यक् सज्ञा तथा सर्वनाम पदो के पश्चात् होता है। वाक्य मे जब सकर्मक भूतकालिक कृदन्त क्रियाओ का व्यवहार होता है तो सामान्यत सज्ञा तथा सर्वनाम पदो के पश्चात् इसका व्यवहार होता है। यह निजवाचक आप के तिर्यक् रूप / अप- / मे लगने वाले सपरिवर्तक / -ने / से भिन्न है (§३. १. १. १.)। यह परसर्ग अपने पूर्ववर्ती पद का क्रिया से कर्तृपरक सम्बन्ध स्थापित करता है।

यौगिक रचना —

(१)

स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
लडके	ने		लडकों ने
लडकों	ने		लडकों ने
लडकी	ने		लडकी ने
लडकियों	ने		लड़कियों ने
राम	ने		राम ने
बालक	ने		बालक ने
बालकों	ने		बालकों ने

(२)

सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
मैं	ने		मैं ने
हम	ने		हम ने
तू	ने		तू ने
तुम	ने		तुम ने
इस	ने		इस ने
इन्हों	ने		इन्हों ने
उस	ने		उसने
उन्हों	ने		उन्हों ने

उदाहरण :—

कर्तृपरक सबंध —	**लडके ने** उसे मारा
	लडकों ने छींका
	मैं ने अपनी आँखों से यह देखा
	उन्होंने मुझ से यही कहा
	उस ने यह काम किया है

सूचना (४) / बोल / , / भूल / , / ला / , / बक / इत्यादि सकर्मक क्रियाओ के साथ कर्त्ता के प्रयोग मे / ने / परसर्ग नही आता। जैसे, / मैं उस से बोला / इत्यादि। कुछ अकर्मक भूतकालिक क्रियाओ के साथ कर्त्ता / ने / परसर्ग सहित आता है। जैसे, / छींक / , / खाँस / आदि अकर्मक क्रियाएँ । / मैं ने छींका / , / उस ने खाँसा / ।

३.१.१५ {पर}

इस परसर्ग का व्यवहार सज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाविशेषण पदो के पश्चात् होता है। यह क्रिया अथवा किसी अन्य पद से अनेक प्रकार के सबंध व्यक्त करता है। यथा :—

यौगिक रचना :—

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	सडक	पर		सडक पर
	मेज़	पर		मेज़ पर
	पेडों	पर		पेडों पर
	ऊँचाई	पर		ऊँचाई पर
	छत	पर		छत पर
	घोडे	पर		घोडे पर
(२)	सर्व० पद०	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	मुझ	पर		मुझ पर
	हम	पर		हम पर
	उस	पर		उस पर
	उन	पर		उन पर
	तुम	पर		तुम पर
	इन	पर		इन पर

(३)

क्रि० वि० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
जाने	पर		जाने पर
करने	पर		करने पर
खाने	पर		खाने पर
यहाँ	पर		यहाँ पर
वहाँ	पर		वहाँ पर
जहाँ	पर		जहाँ पर
ऊँचे	पर		ऊँचे पर
नीचे	पर		नीचे पर
इतने	पर		इतने पर

उदाहरण :—

(१) अधिकरण सबध :— गाडी **सड़क पर** है
पुस्तक **मेज़ पर** है
चिड़ियाँ **पेड़ों पर** चहचहाती हैं
मेरा घर **ऊँचाई पर** है
घोड़े पर मत चढो
आजकल **मुझ पर** कडी मुसीबत है
हम पर इतनी बात बीती
इन पर बडी मुश्किल है
यहाँ पर इतने बालक हैं
कहाँ पर क्या होगा इसे कोई नहीं जानता

(२) अनंतरता परक सबध —आगे **चलने पर** यह बात मालूम होगी
मेरे **बोलने पर** वह अप्रसन्न हुआ
चोट पर चोट होने लगी
पहर पर पहर बीतने लगे पर वह न आया
बात पर बात होने लगीं
घात पर घात होने लगी
तकाज़े पर तकाज़े हो रहे हैं पर परवाह नहीं

(३) कारण परक सबध :— **लेन देन पर** कहा-सुनी हो गई
उसके **बोलने पर** वह उठ गया
अच्छे **काम पर** रुपए मिलेंगे
वह कौडी **कौडी पर** जान देता है

(४) काल परक सबंध :— हर **घड़ी पर** दवा देनी है
चार बजकर दस **मिनट पर** गाडी आती है
इतने पर वह वहाँ आ पहुँचा

(५) अवज्ञापरक सबध :— दो **रुपए पर** ईमान खो दिया
एक **टके पर** मर मिटे

(६) विषय परक संबध .— **बच्चों पर** दया करो
आप पर पूरा भरोसा है
उस ने देश की चरित्र **हीनता पर** व्याख्यान दिया
युवकों के **चरित्रों पर** दुख होता है

(७) सकेत परक संबध :— मेरे **जाने पर** यहाँ की देख-भाल तुम्हें करनी है
मेरे **मरने पर** सब काम तुम्हें ही करने होंगे

सूचना (५) सकेतपरक सम्बन्ध मे सज्ञार्थक क्रिया के पश्चात् इस परसर्ग का प्रयोग होता है ।

३. १. १. ६. {भर}

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञापदो के पश्चात् होता है तथा इसके योग से विशेषण तथा क्रियाविशेषण वाक्याश बनते है । इसके द्वारा निपातीय रचना का भी निर्माण होता है । जब यह परसर्ग के रूप मे आता है तो यह अपने पूर्ववर्ती सज्ञापद का परवर्ती सज्ञापद से मात्रा अथवा परिमाण परक सबध स्थापित करता है । जब यह क्रिया से सबधित होता है तो उसके साथ साकल्य परक सबध व्यक्त करता है ।

यौगिक रचना .—

स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
गज	भर		गज भर
तोले	भर		तोले भर
हाथ	भर		हाथ भर
टके	भर		टके भर
सेर	भर		सेर भर
मुट्ठी	भर		मुटठी भर
महीने	भर		महीने भर
रात	भर		रात भर
दिन	भर		दिन भर

उदाहरण :—

(१) मात्रा अथवा परिमाण
परक सबंध :— मुझे गज भर कपडा चाहिए
तोले भर सोने की अँगूठी अच्छी है
केवल हाथ भर जमीन चाहिए
टके भर वज़न की चीज़ है
सेर भर घी चाहिए
मुट्ठी भर अनाज को तरसना पड रहा है

(२) साकल्य परक संबध.—मैं महीने भर जागता रहा
रात भर सोया नहीं
दिन भर रोता रहा
वर्ष भर यही देखा
जीवन भर कठोरता भुगता रहा

३. १. १. ७. {में}

इस परसर्ग का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रियाविशेषण पदो के पश्चात् होता है । यह क्रिया तथा अन्य पदो के साथ अनेक प्रकार के सबध व्यक्त करता है । यथा:—

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	वन	में		वन में
	घर	में		घर में
	गर्मियों	में		गर्मियों में
	कलेजे	में		कलेजे में
	शहर	में		शहर में
	चाय	में		चाय में
(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	मुझ	में		मुझ में
	तुझ	में		तुझ में
	उस	में		उस में
	हम	में		हम में
	उन	में		उन में
	जिस	में		जिस में
	आपस	में		आपस में

(३)	क्रि० वि० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	अत	में		अत में
	इतने	में		इतने में
	उतने	में		उतने में
	ऐसे	में		ऐसे में
	जल्दी	में		जल्दी में
	आखिर	में		आखिर में
	आजकल	में		आज कलमें

उदाहरण.—

(१) अधिकरणपरक सबंध.—बन में एक शेर रहता था
घर में सभी लोग हैं
गर्मियों में बाहर जाऊँगा
कलेजे में बडी पीडा है
मुझ में यही एक कमी है
आपस में लडना ठीक नहीं
उन में मैंने ऐसी कोई बात नहीं पाई

(२) काल परक सबध — आज-कल में यह बात होने वाली है
अन्त में यही हुआ
प्राचीन काल में ऐसी बातें न थीं
संवत १९५६ में यह घटना हुई
इतने में वह चल बसा
एक सप्ताह में वे दो बार आते थे

(३) तुलना परक सबध:— जवान और बूढ़े में अधिक अन्तर है
वह सब लडकों में अच्छा है
लिखने और कहने में अन्तर है
विद्वान सब में सहनशील होता है
एक रुपए में सौ नए पैसे होते हैं

(४) अवस्था परक सबध.— मैं आजकल चिंता में हूँ
मैं होश में हूँ
लड़के सब आराम में हैं

(५) मूल्यवाचक सबंध— मैंने चार आने में पुस्तक ली
राम ने बीस रुपए में एक पुस्तक खरीदी
यह कपडा दस रुपए में लिया

(६) कारण परक संबंध— मुझे उससे अलग रहने में दुख होता है
वह ऐसा करने में अति प्रसन्न है

३. १. १. ८. {से} / से∞-ओं /

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषणों के पश्चात् होता है। इसके द्वारा क्रिया तथा अन्य पदो से अनेक प्रकार के सबध व्यक्त होते हैं। यथा.—

यौगिक रचना:—

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	राम	से		राम से
	लडके	से		लडके से
	चाकू	से		चाकू से
	लडकियाँ	से		लडकियों से
	मक्खन	से		मक्खन से
	मरने	से		मरने से
	डरने	से		डरने से
	ध्यान	से		ध्यान से
	प्रेम	से		प्रेम से
	क्रम	से		क्रम से
	मन	से		मन से
	लोगों	से		लोगों से

(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	मुझ	से		मुझ से
	हम	से		हम से
	तुझ	से		तुझ से
	तुम	से		तुम से
	इस	से		इस से
	आप	से		आप से
	अपने	से		अपने से
	किस	से		किस से

किन	से		किन से
क्या	से		क्या से

(३)

विशे०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
छोटे	से		छोटे से
बडे	से		बडे से
औरों	से		औरों से
सब से	से		सब से
अच्छे	से		अच्छे से
तेज़	से		तेज़ से
एक	से		एक से
काले	से		काले से

(४)

क्रि०वि०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
अब	से		अब से
जब	से		जब से
कब	से		कब से
इधर	से		इधर से
उधर	से		उधर से
किधर	से		किधर से
झट	से		झट से
धक	से		धक से
यहाँ	से		यहाँ से
वहाँ	से		वहाँ से
कहाँ	से		कहाँ से
जहाँ	से		जहाँ से
आज	से		आज से
कल	से		कल से

उदाहरण:—

(१) कर्तृपरक संबंध — राम से चला नहीं जाता
लडके से अब काम नहीं होता
लोगों से अब सहा नहीं जाता
हम से अब काम नहीं होगा

मुझ से यह सब न कहा जायगा
आप से यह कला न सीखी जायगी
औरों से यह काम नहीं होने का
मूर्ख से इतना भी नही होता

(२) गौण कर्म परक सम्बन्ध :—मैं राम से कहता हूँ
उस ने लडके से कुछ कहा था
मा ने लड़कियों से पूछा
लडकी ने इस से यही पूछा
मैं ने तुम से क्या सवाल किया
उसने औरों से तो कुछ न कहा पर मुझे खूब डाँटा
आप उन मूर्खों से यह बात कहिए

(३) करण या हेतु परक सबंध:—राम चाकू से कागज काटता है
वह नाक से पानी पीता है
मन से सब काम होते हैं
केवल पढ़ने से काम न चलेगा
मजदूरों ने हम से चिट्ठी लिखवाई
डरने से तो मरना अच्छा है
ज्ञान से मुक्ति मिलती है
आप से मेरा बहुत काम निकला
औरों से क्या आशा है
वह हम से डरता है

(४) अपादान परक संबध :—मकान से साँप निकला
कूड़े से बदबू आती है
नदी से पानी आया
हम से क्या बदबू आती है
उससे कपडा निकला
सब से यही बात निकलेगी
अब से ऐसा न होगा
आज से मैं यह काम न करूँगा
वह अभी अभी इधर से गई है
यह यहाँ से कैसे गई

(५) रीति परक सबध :— उसे **मन से** सुनो
यह काम **ध्यान से** देखो
बडी **कठिनाई से** वहाँ जा पाया
लडके **क्रम से** पढते हैं
धीरज से काम लो

(६) सहकार परक संबंध :— मैं **मक्खन से** रोटी खाता हूँ
सर्व **सम्मति से** पास हुआ
हम **धर्म से** कहते हैं, यह सच है

(७) विकार परक संबध :— हम **क्या से** क्या हो गए
वह **ब्राह्मण से** ईसाई हुआ
अब यह दशा है कि हम **बालक से** युवा हो गए
हम **मूर्ख से** विद्वान बनते हैं

(८) स्थित परक सबंध :— वह **शरीर से** स्वस्थ, स्वभाव से विनम्र तथा **मन से** पवित्र है
लडका **मन से** बडा काला है
वह **तन से** तो भला लगता है
वह एक **आँख से** काना है
मैं तो **धक से** रह गया

(९) भाव तथा विनिमय सबध :—आप सूद किस **दर से** लेते हैं
अनाज किस **भाव से** है
हम **कलम से** कलम बदलते हैं
तुम **रुपए से** दाल बदलते हो

(१०) तुलना परक सबध :— मैं **राम से** छोटा हूँ
हम ने **छोटे से** छोटा और बडे से बडा व्यक्ति देखा है
वह **मुझ से** बडा है
यह सेव **उस से** मीठा है
वह **सब से** छोटा है
सब से बडी हानि यह है

मेरी स्याही **उस से** अलग है
वह **सब से** सुन्दर है
बाग में **एक से** एक सुन्दर पेड है

(११) काल, दिशा या स्थान परक सबध :—

अब से भी विचारिए
इधर से चलिएगा
वहाँ से जाने में कोई लाभ नहीं
सुबह से शाम तक यही होता है
नख से लेकर शिखा तक रमणीयता है
झट से आप ने कह दिया, पीछे भी सोचा

(१२) निर्धारण सबध :—

आप में से कई लडके विदेश गए
इन **कपडों में से** कौन सा अच्छा है
आप कितने **लोगों में से** इसे देख रहे हैं

/ -ओं / सपरिवर्तक का व्यवहार / -भूख, जाडा, हाथ, आँख कान / इत्यादि संज्ञा प्रातिपदिको के तिर्यक् रूपो के पश्चात् कुछ विशिष्ट प्रयोगो मे होता है। इस दशा मे तिर्यक रूप के पश्चात् / -ओं /, सश्लिष्ट रूप मे, / से / का कार्य सम्पादित करता है। इस प्रकार / -ओं /, / से / का व्याकरणिक दृष्टि से रूप प्रतिबधित सपरिवर्तक है। नीचे उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है :—

वह **भूखों** मर गया।
जाडों क्यों मरते हो
मेरे **हाथों** यह काम हुआ
आखों देखी बात भी कभी कभी झूठी होती है
कानों सुनी बात भी झूठी होती है

३. १. २. रूपान्तरशील परसर्ग

रूपान्तर शील परसर्गों मे लिंग वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती हैं। इनमे ये विभक्तियाँ उसी प्रकार लगती है जिस प्रकार अन्य विशेषण प्रातिपदिको मे लगती हैं (§ २. १. ३. १ (१) पुल्लिग, (२) स्त्रीलिंग)। जैसे, / का, के, की /, / सा, से, सी /, / वाला, वाले, वाली /। हिन्दी के रूपान्तरशील परसर्गों से सामान्यत विशेषण वाक्याश निर्मित होते है तथा जिस प्रकार विशेषण विशेष्य की विशेषता प्रकट करता है उसी प्रकार ये वाक्याश भी। इन परसर्गों के विषय मे यह कहना आवश्यक है कि ये पदो के पश्चात् ही प्रयुक्त होते है, प्रातिपदिको के पश्चात् नही। उदाहरणार्थ

/ बालक का / , / लडके की / , / छोटा सा / , / ताँगे वाला / वाक्याशो मे / बालक / , / लडके / तथा / छोटा / पद है । दूसरे इन परसर्गो के पूर्व कोई पश्चाश्रयी आ सकता है । जैसे, / बालक ही का / , / छोटा ही सा / , / ताँगे ही वाला / इस दशा मे ऐसे आबद्ध रूपो को परसर्गो के अन्तर्गत रखा गया है । नीचे प्रत्येक पर अलग अलग विचार किया जाता है :—

३. १ २ १. {क|आ} / क-∞-र-∞-न- /

रूपान्तर रहित / के∞-रे∞-ने / परसर्ग के विवेचन मे (§ ३. १ १. १.) कहा गया है कि / क-∞-र-∞-न- / परसर्ग / के∞-रे∞-ने / परसर्ग से भिन्न है । जब उत्पत्ति अथवा अस्तित्व की विवक्षा होती है तो / के∞-रे-∞-ने / परसर्ग का व्यवहार होता है और जब विशेष्य के विषय मे विधान करना होता है तब / क-∞-र-∞ -न / परसर्ग का प्रयोग होता है । दूसरे इन दो परसर्गों मे यह भी भेद है कि / के∞ -रे∞-ने / परसर्ग का सबंध क्रिया से रहता है जबकि / क-∞-र-∞-न- / का सबध विशेष्य से, यानी इसके द्वारा भेद्य-भेदक सबध व्यक्त होता है । जैसे; / राम का लडका / , / राम की लडकी / , / राम के लडके / , / मेरा लडका / , / मेरी लडकियाँ / , / अपना लडका / , / अपने लडके / , / अपनी लड़की / , / अपनी लडकियाँ / ।

/ -र- / तथा / -न- / सश्लिष्ट सपरिवर्तक हैं । / -र- / का व्यवहार सर्वनाम तिर्यक् रूप / मे- / , / हमा- / , / ते- / तथा / तुम्हा- / के पश्चात् होता है । / -न- / का व्यवहार स्वयं वाचक सर्वनाम के तिर्यक रूप / अप- / के पश्चात् होता है । शेष स्थितियो मे सज्ञा, सर्वनाम, विशेषरा तिर्यक् रूपो के पश्चात् तथा क्रियाविशेषरा के पश्चात् / क- / का प्रयोग होता है ।

इस परसर्ग के द्वारा प्रधानत. भेद्य-भेदक सबध प्रकट होता है । इस सबध के अन्तर्गत अनेक प्रकार के सबध है जिनका वर्गीकरण करना कठिन है । नीचे इसकी यौगिक रचना तथा सबध इस प्रकार है :—

यौगिक रचना:—

	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
(१)	लडके	क|आ		लडके क|आ
	राम	क|आ		राम क|आ
	सोने	क|आ		सोने क|आ
	पत्थर	क|आ		पत्थर क|आ

करने	क|आ		करने क|आ
जाने	क|आ		जाने क|आ

(२)

सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
इस	क|आ		इस क|आ
उस	क|आ		उस क|आ
किस	क|आ		किस क|आ
किन	क|आ		किन क|आ
जिस	क|आ		जिस क|आ
कुछ	क|आ		कुछ क|आ
क्या	क|आ		क्या क|आ
मे-	-र|आ		मेर|आ
हमा-	-र|आ		हमार|आ
ते-	-र|आ		तेर|आ
तुम्हा-	-र|आ		तुम्हार|आ
अप-	-न|आ		अपन|आ

(३)

वि०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
जैसा	क|आ		जैसा क|आ
मूर्ख	क|आ		मूर्ख क|आ
सारे	क|आ		सारे क|आ
वैसा	क|आ		वैसा क|आ
खडा	क|आ		खडा क|आ

(४)

क्रि०वि०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
कब	क|आ		कब क|आ
जब	क|आ		जब क|आ
तब	क|आ		तब क|आ
यहाँ	क|आ		यहाँ क|आ
वहाँ	क|आ		वहाँ क|आ
इधर	क|आ		इधर क|आ
उधर	क|आ		उधर क|आ
ज्यों	क|आ		ज्यों क|आ

उदाहरण :—

(१) स्व[1]-स्वामिभाव सबंध:— लड़के का घर
देश की संपत्ति
मालिक की मिलें
राम के पलग
मेरा मकान
अपने बगीचे
हमारी भूमि

(२) अगागी संबंध :— लड़के का पैर
लड़की के हाथ
सिर की हड्डी
हमारे केश
अपना सिर
तीन खंड का काव्य
दस पन्नों की पुस्तक
रामायण के चार काड

(३) जन्य-जनक संबध :— राजा का वेटा
लड़के का बाप
ईश्वर की माया
राम के लड़के
मेरी माता
मेरे लड़के
हमारे पिता
जैसे का तैसा

(४) कार्य-कारण संबध :— सोने की अँगूठी
लोहे के पलंग
पत्थर का बुत
मिट्टी के खिलौने
चाँदी का सिक्का
लकड़ी के औज़ार

---

१. 'स्व' से अभिप्राय 'स्वत्व'।

(५) कर्तृ-कर्म संबध :—	प्रसाद की कामायनी
	महादेव के चित्र
	पुस्तक का लेखक
	कलाकार की मूर्ति
(६) आधार-आधेय सबध :—	नगर की जनता
	पानी का गिलास
	लोगों के पडाव
	चाय का प्याला
	बाग के फूल
	भारत का बालक
(७) सेव्य-सेवक भाव :—	मंदिर का पुरानी
	ईश्वर के भक्त
	राजा की दासी
	गाँव का सिद्ध
(८) गुण-गुणी भाव :—	मनुष्य का शील
	आम की खटाई
	राजा की प्रभुता
	मेरा अह्
	हमारा पतन
(९) वाह्य-वाहक सबध :—	बैलों की गाडी
	कोल्हू का बैल
	मोटर का पहिया
	ऊँट के बाहन
(१०) जाति या वश संबंध :—	लड़के का फूफा
	लडकी की सास
	राम की औलाद
	मेरे भाई
	हमारे नाना
	अपने भतीजे
(११) प्रयोजन परक संबंध :—	बैठने का कमरा
	पीने की वस्तु

खाने के वर्तन·
खेती का बैल
तेल का वर्तन
पैर रखने की जगह

(१२) मोल-माल सबध ·— चार पैसे की चीनी
रुपए के चावल
सात सेर का भाव
एक रुपए की लकडी

(१३) परिमाण-संबध :— दो गज का कपडा
तीन फ़ीट की लकडी
तीन इंच के टुकडे
कम लम्बाई की दीवाल

(१४) काल और वयस सबध — एक समय की बात
उस काल का इतिहास
दस साल के लडके
चार दिन की चाँदनी
कब का मामला
जब के सिक्के
तब की इमारतें
बीस साल का लडका

(१५) अभेद सबध .— सावन का महीना
खजूर का फल
हैजे का रोग
माया की झलक
कर्म के शूद्र
हर्ष की ध्वनि

(१६) साकल्य सबध — गॉव का गाँव
शहर के शहर
चिंता की चिंता
मुहल्ले का मुहल्ला
सारे के सारे

(१७) अविकार्य सबध :— मूर्ख का मूर्ख
दूध का दूध
जैसे के तैसे
कोरी की कोरी
ज्यों की त्यों
जहाँ के तहाँ

(१८) विकार्य सबध :— कुछ का कुछ
क्या की क्या
राई का पर्वत
पर्वत की राई
क्या के क्या

(१९) वैषयिक सबध — कान का कच्चा
आँख की अंधी
बात के पूरे खरे
माया की कामना

(२०) योग्यता परक संबधः— योग्यता अथवा निश्चय के अर्थ मे बहुधा क्रियार्थक सज्ञा के पश्चात् इस परसर्ग का व्यवहार होता है । यथा:—

यह नहीं होने का
मेरा विचार जाने का नहीं था
ये लोग नहीं मरने के
मैं अब पुस्तक नहीं लिखने की

(२१) कर्तृ-सबध :— राम के लिखे हुए पत्र
मेरी लिखी हुई किताब
उस की भेजी हुई चिट्ठी
लड़के का बनाया हुआ चित्र

(२२) कर्म सबध :— गाय का भागना
घर की चोरी
मेरे गाने के भजन

(२३) करण सबंध :— कलम का लिखना
मशीन का बना

दूध की जली
पानी के बने

(२४) अपादान सबंध :— पेड का गिरा
घर का चला
डाल की टूटी
रस्सी के बने

(२५) अधिकरण सबध :— गाड़ी का बैठना
पहाड का चढना
फसल का उपजा

३. १. २. २. {वाल|आ}

इस परसर्ग का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषण पदो के पश्चात् होता है। इसके योग से विशेषण तथा सज्ञा-वाक्याश निर्मित होते है। जब यह विशेषण-वाक्याश बनाता है तो इसमे विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती है। जैसे, / छोटा वाला बक्स /, / छोटी वाली पेटी /, / छोटे वाले पेड /। जब यह सज्ञा-वाक्याश बनाता है तो सज्ञा-प्रातिपदिको की भाँति (§ २. १. १ सज्ञा पद-रचना) लिग, वचन और कारक के अनुसार विभक्तियाँ लगती है। जैसे, / पुलिस वाला /, / पुलिस वालो /, / पुलिस वाली /, / फेरी वालियाँ /। इसे परप्रत्यय नही कहा जा सकता क्योंकि इसका प्रयोग पदो के पश्चात् होता है। उक्त उदाहरणो से यह स्पष्ट है। दूसरे, पद तथा इसके बीच पश्चाश्रयी का प्रयोग होता है। जैसे, / जाने ही वाला /, / करने ही वाला /, / ताँगे ही वाला / इत्यादि।

विशेषण वाक्याश बनाते समय यह विशेष्य से तथा सज्ञा वाक्याश बनाते समय अपनी पूर्ववर्ती सज्ञा से अनेक प्रकार के सबध व्यक्त करता है। नीचे इसकी यौगिक रचना तथा प्रधान सबंध उदाहरणो सहित प्रस्तुत किए जाते है —

यौगिक रचना :—

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	गाडी	वाल|आ		गाडी वाल|आ
	टोपी	वाल|आ		टोपी वाल|आ
	दाँत	वाल|आ		दाँत वाल|आ
	घोडे	वाल|आ		घोडे वाल|आ
	ताँगे	वाल|आ		ताँगे वाल|आ

	मील	वाल|आ		मील वाल|आ
	खटखटाने	वाल|आ		खटखटाने वाल|आ
	करने	वाल|आ		करने वाल|आ
	पैरों	वाल|आ		पैरों वाल|आ
	भागने	वाल|आ		भागने वाल|आ
(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	मुझ	वाल|आ		मुझ वाल|आ
	उस	वाल|आ		उस वाल|आ
	हम	वाल|आ		हम वाल|आ
	किस	वाल|आ		किस वाल|आ
(३)	वि० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	छोटा	वाल|आ		छोटा वाल|आ
	बडा	वाल|आ		बडा वाल|आ
	तेज़	वाल|आ		तेज़ वाल|आ
	नीला	वाल|आ		नीला वाल|आ
	लाल	वाल|आ		लाल वाल|आ
	सफ़ेद	वाल|आ		सफ़ेद वाल|आ
(४)	क्रि०वि०पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	यहाँ	वाल|आ		यहाँ वाल|आ
	वहाँ	वाल|आ		वहाँ वाल|आ
	इधर	वाल|आ		इधर वाल|आ
	उधर	वाल|आ		उधर वाल|आ
	किधर	वाल|आ		किधर वाल|आ
	नीचे	वाल|आ		नीचे वाल|आ
	आज	वाल|आ		आज वाल|आ
	कल	वाल|आ		कल वाल|आ

उदाहरण :—

(१) स्व-स्वामिभाव-सबध :— **गाडी वाला** यहाँ कहाँ है
होटल वाली ने नौकर को पीटा
मोटर वाले की मोटर खराब है
ताँगे वाला घोडे को तेजी से चलाता है

इक्के वाला भाग गया
घोड़े वाला मर गया
मिल वाला मिल बंद कर गया

(२) व्यवसाय सबध :— दाँत वाला डाक्टर
पुलिस वाली टुकड़ी
कपड़े वाले व्यापारी
फेरी वाली औरत

(३) निश्चयात्मक संबंध :— टोपी वाला लड़का
हैट वाला साहब
छोटा वाला बक्स
बैलों वाली पेटी
बड़े वाले दरख्त
तेज़ वाला चाकू
नीले वाले कपडे
लाल वाला मकान
मील वाला तेल
मंत्रियों वाला बँगला
सूतों वाली कोठियाँ
हाथियों वाले जंगल
पुस्तकों वाला भवन
पहियों वाले खिलौने
हम वाला मकान

(४) आवासिक सबंध :— गाँव वाला जा रहा है
कलकत्ते वाले से कहो
शहर वाली यहीं है
पटना वाले ने कहा
बम्बई वाली मर गई
जगल वाले राजा हैं

(५) स्थिति सूचक सबध :— यहाँ वाले लोग
इधर वाली गाय
उधर वाले घर
नीचे वाला छज्जा

(६) काल परक सबध — कल वाली घटना
परसों वाला मामला
आज वाले मुकद्दमे

(७) कर्तृ-सबध — खटखटाने वाला कौन है
तड़तड़ाने वाली कैसी है
गाडी जाने वाली है
खाने वाले लोग मौजूद है
चलने वाला घोडा है
पढ़ने वाला लडका है
मरने वाली पगली थी
वह डरने वाला है
वह भागने वाला है
फुहार छूटने वाली है
मैं सोने वाला ठहरा

सूचना (६) इस सबध मे परसर्ग के पूर्व प्राय: क्रियार्थक सज्ञाएँ आती हैं।

३. १. २. ३. {स|आ}

इस परसर्ग का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रियाविशेषण पदो के पश्चात् होता है तथा इसके योग से प्राय· विशेषण वाक्याश निर्मित होते है। विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार इसमे विभक्तियाँ लगती है। जैसे; / हाथी का सा डीलडौल / , / मक्खन सी चिकनाई / , / बज्र के से कठोर बाण /। इसे परप्रत्यय नही कहा जा सकता क्योकि इसका व्यवहार पदो के पश्चात् होता है तथा पद और इस आबद्ध पदिम के बीच पश्चाश्रयी का व्यवहार होता है। जैसे, उक्त उदाहरणो मे / हाथी / तथा / सा / के बीच / का / परसर्ग, / बज्र / तथा / से / के बीच / के /। इसी प्रकार / राम की सी सूरत / , / हिरन की सी चचलता / इत्यादि।

विशेषण प्रातिपदिक रचना मे (§ १.२ १० ३.२.३) {-स|आ} को व्युत्पादक परप्रत्यय कहा गया है जो सर्वनाम प्रातिपदिको के पश्चात् लगता है। इस प्रसग मे जिसे हम परसर्ग कह रहे है, वह व्युत्पादक परप्रत्यय से भिन्न है। व्युत्पादक पर-प्रत्यय के पूर्व कोई परसर्ग नही लगता। यदि ऐसी बात होती तो कोई प्रश्न खडा नही होता। परन्तु यहाँ पर भिन्न स्थिति है जैसा कि ऊपर चर्चित किया जा चुका है। दूसरे ऐतिहासिक विकास-क्रम की दृष्टि से दोनो की व्युत्पत्ति भी जुदी-जुदी प्रतीत

होती है[१] । कुछ लोग[२] इन दोनो को स्वतत्र पद स्वीकार करते है परन्तु ऐसी बात नही क्योकि इसकी सार्थकता तभी होती है जब यह किसी पद से आबद्ध होता है, स्वतत्र रूप मे इसकी कोई सत्ता प्रतीत नही होती । ऐतिहासिक दृष्टि से यह भले ही स्वतत्र रूप हो परन्तु हिन्दी मे आते-आते इसकी यह सत्ता लुप्त हो गई है :—

यह परसर्ग विशेष्य के साथ अनेक प्रकार के सबध व्यक्त करता है । नीचे इसकी यौगिक रचना तथा मुख्य सबंध उदाहरणो सहित प्रस्तुत किए जाते है ।

यौगिक रचना :—

(१)	स० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	फूल	स|आ		फूल|आ
	मक्खन	स|आ		मक्खन स|आ
	पत्थर	स|आ		पत्थर स|आ
	हाथी	स|आ		हाथी स|आ
	खून	स|आ		खून स|आ
	घूँघट	स|आ		घूँघट स|आ
	जाडा	स|आ		जाडा स|आ
(२)	सर्व० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	अपना	स|आ		अपना स|आ
	मुझ	स|आ		मुझ स|आ
	हम	स|आ		हम स|आ
	तुम	स|आ		तुम स|आ
	उस	स|आ		उस स|आ
	इन	स|आ		इन स|आ
	आप	स|आ		आप स|आ
(३)	वि० पद	परसर्ग	→	परसर्गीय रचना
	एक	स|आ		एक स|आ
	बहुत	स|आ		बहुत स|आ
	थोडा	स|आ		थोडा स|आ
	ज्यादा	स|आ		ज्यादा स|आ

---

१. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा का इतिहास, § २३२, § ३०१ ।

२. किशोरीदास वाजपेयी, हिन्दी शब्दानुशासन, पृष्ठ २९४-९५ ।

लाल	स|ग्रा	लाल स|ग्रा
अच्छा	स|ग्रा	अच्छा स|ग्रा
उडता	स|ग्रा	उडता स|ग्रा
ऊँचा	स|ग्रा	ऊँचा स|ग्रा
भारी	स|ग्रा	भारी स|ग्रा
बड़ा	स|ग्रा	बडा स|ग्रा
चलता	स|ग्रा	चलता स|ग्रा
दुबला	स|ग्रा	दुबला स|ग्रा
सकरा	स|ग्रा	सकरा स|ग्रा

(४) क्रि० वि० पद — परसर्ग → परसर्गीय रचना

यहाँ का	स|ग्रा	यहाँ का स|ग्रा
वहाँ का	स|ग्रा	वहाँ का स|ग्रा
इधर का	स|ग्रा	इधर का स|ग्रा
उधर का	स|ग्रा	उधर का स|ग्रा
किधर का	स|ग्रा	किधर का स|ग्रा
अब का	स|ग्रा	अब का स|ग्रा
जब का	स|ग्रा	जब का स|ग्रा
ऊपर का	सा|ग्रा	ऊपर का स|ग्रा
आज का	स|ग्रा	आज का स|ग्रा

सूचना—(७) क्रियाविशेषण पदो के पश्जात् तथा इस परसर्ग के पूर्व / क- / परसर्ग का व्यवहार होता है। सज्ञा पदो के पश्चात् भी / क- / परसर्ग जाता है।

उदाहरण:—

(१) समता सूचक सबध :— फूल सा कोमल
मक्खन की सी चिकनाई
पत्थर के से कठोर हृदय
हाथी का सा डील डौल
घूंघट सी ढकी हुई
जाड़े का सा मारा
अपना सा मुँह
मुझ सा विनम्र
हम सा विचारक

तुम सा सज्जन
आप सा दयालु
यहाँ का सा वातावरण
इधर की सी बौछार
जब के से दिन
आज की सी दावत

(२) परिमाण या मात्रा सूचक सबध :—

ज़रा सी चीनी
ज़रा सी बात
बहुत सा धन
थोड़ा सा काम
अधिक सी आबादी
कम सा तेल
ज्यादा से घर

(३) समस्तरीय सबध :—

एक सी भूमि
एक से घर
एक सा मैदान
एक सी सूरत

(४) अनुमेय सबध :—

कोई लाल सा कपडा लाओ
कुछ राम की सी सूरत थी
अच्छा सा घर चाहिए
बडी ऊँची सी दीवार वहाँ है
बहुत से लोग वहाँ थे
मुझे कुछ बडा सा लगता था
होगा कुछ काला सा
कुछ खून सा नजर आया
जाड़े की सी मारी थी
हाँ, कुछ भारी सी नाक थी
वह दुबली सी थी
आपकी की सी सूरत न थी

(५) उपेक्षा परक सबध :—

कैसे **मरे से** पडे हो
वह **भागता सा** दिखाई दिया
था एक **काला सा** लडका
ऐसा ही था कुछ **नीला सा**
जरा **सी** बात पर अकडते हो
वह एक **भारी सी** लडकी थी
वह **बुरी सी** तो न थी

३. २. निपातों का विवरण

निपातीय रचना मे जिन निपातो का प्रयोग होता है उनका विवरण इस प्रकार है :—

३. २. १. {तक}

इस निपात का प्रयोग अवधारण अथवा निश्चय के अर्थ मे सज्ञा, सर्वनाम, क्रिया तथा क्रियाविशेषण के पश्चात् होता है । यथा —

(१)	स० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	चिट्ठी	तक		चिट्ठी तक
	अग्रेजी	तक		अँग्रेजी
	बच्चे	तक		बच्चे तक
	पुलिस	तक		पुलिस तक
(२)	सर्व० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	उस	तक		उस तक
	इस	तक		इस तक
	मुझ	तक		मुझ तक
	तुझ	तक		तुझ तक
(३)	क्रि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	देखा	तक		देखा तक
	जाता	तक		जाता तक
	सोता	तक		सोता तक
	देखता	तक		देखता तक
(४)	क्रि० वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	यहाँ	तक		यहाँ तक
	वहाँ	तक		वहाँ तक

इधर	तक	इधर तक
आज	तक	आज तक

उदाहरण —

अवधारणार्थ :— उसने मुझे **चिट्ठी तक** नहीं लिखी
इस का रूपान्तर **अंग्रेज़ी तक** में मिलता है
बच्चे तक इस बात को समझते हैं
पुलिस तक उसके मारे थर्राती है
उस तक में यह बात पाई जाती है
लडके ने उसे **देखा तक** नहीं
मैं वहाँ **जाता तक** नहीं
वह उस ओर **देखता तक** नहीं
परीक्षा के दिनों में वह **सोता तक** नही
वह **इधर तक** कैसे आए
यहाँ तक नौबत आगई कि उसे जाना पडा
आज तक ऐसा नहीं हुआ

सूचना (८) उक्त प्रयोगो मे परसर्गीय सबध भी परिलक्षित होते है। परन्तु गौण रूप मे।

३ २.२ {तो}

इस निपात के द्वारा निश्चय तथा आग्रह व्यक्त होता है। दो वाक्यो के मिलाने मे भी / तो / का व्यवहार होता है, वहाँ इसका निपातीय अर्थ नही होना। जैसे, / यदि मैं गया तो अवश्य तुम्हारी सुसराल जाऊँगा /। इस प्रकार निपातीय / तो / उस / तो / से अलग है। इसका प्रयोग प्राय सभी पद-भेदो के पश्चात् होता है। यथा —

(१)	स० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	दाग	तो		दाग तो
	किताब	तो		किताब तो
	लडका	तो		लडका तो
	रुपए	तो		रुपए तो
(२)	सर्व० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	मैं	तो		मैं तो
	वह	तो		वह तो

	तुम	तो		तुम तो
	यह	तो		यह तो
	कुछ	तो		कुछ तो
	कोई	तो		कोई तो
(३)	वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	सफेद	तो		सफेद तो
	अच्छे	तो		अच्छे तो
	बुरे	तो		बुरे तो
	काली	तो		काली तो
(४)	क्रि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	आया	तो		आया तो
	गया	तो		गया तो
	आने	तो		आने तो
	चलने	तो		चलने तो

उदाहरण :—

निश्चय तथा आग्रह :—

दाग़ तो दाग पर गड्ढे क्यों हुए
किताब तो लौटा दी पर कागज़ नहीं
उसका लडका तो मर गया
ये रुपए तो देने पड़ेंगे
मैं तो इतना ही कर सकता हूँ
वह तो बोलता नहीं
कुछ तो कहो
कोई तो जानता होगा
वे सफ़ेद तो होंगे
अच्छे तो अच्छे पर सुन्दर भी
वे ऐसे बुरे तो नहीं हैं
वह अभी आया तो था
मैं वहाँ गया तो नहीं पर जानता अवश्य हूँ
मुझे जाने तो दो
वे हमें आने तो नहीं देंगे पर चलो

३.२३. {न}

/ न / यद्यपि निपेध के अर्थ मे स्वतन्त्र पद है परन्तु कुछ प्रयोगो मे जैसे; / तुम इसे कर दो न / वाक्य मे / न / अनुनय सूचक है। ऐमे प्रयोगो मे / न / को निपात स्वीकार किया गया है। इसके द्वारा अनेक अर्थ प्रकाशित होते है तथा सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया तथा क्रियाविशेषणो के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। यथा ·—

यौगिक रचना .—

(१)	सं० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	मोहन	न		मोहन न
	लडका	न		लडका न
	पुस्तक	न		पुस्तक न
(२)	सर्व० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	कोई	न		कोई न
	कुछ	न		कुछ न
	वह	न		वह न
	हम	न		हम न
	वे	न		वे न
(३)	वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	हरे	न		हरे न
	काले	न		काले न
	अच्छा	न		अच्छा न
	एक	न		एक न
(४)	क्रि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	जाओगे	न		जाओगे न
	देखो	न		देखो न
	कर दो	न		कर दो न
	करेगा	न		करेगा न

उदाहरण:—

(१) अवधारण:— **कोई न** कोई तो जायगा
कुछ न कुछ कहना होगा
एक न एक दिन यह अवश्य होगा

(२) पुष्टि :—	मोहन न
	पुस्तक न
	वह न
	तुम जाओगे न
	वह इसे करेगा न
(३) अनुनय :—	तुम इस काम को कर दो न
	उस से मेरे बारे मे कह दो न
	अब उसे जाने दो न
(४) अभीष्ट दृढता :—	यह करके देखो न
	देखें तुम जाते हो न
	कभी तो जाना होगा न, तभी देखूँगा

३. २. ४. {भर}

इस का प्रयोग प्राय सज्ञा तथा विशेषणो के पश्चात् होता है । इस का व्यवहार परसर्ग के रूप में भी होता है (§ ३ १. १. ६)। जब इसका प्रयोग निपात के रूप मे होता है तो इसके द्वारा अवधारण तथा केवलता का अर्थ व्यक्त होता है । यथा.—

यौगिक रचना :—

(१)	स० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	अमलदारी	भर		अमलदारी भर
	कपडा	भर		कपडा भर
	साथ	भर		साथ भर
(२)	वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	इतना	भर		इतना भर
	उतना	भर		उतना भर

उदाहरण.—

(१) अवधारण —	वह कपड़े भर को मुहताज है
	उसकी अमलदारी भर मे कोई भूखा न था
(२) केवलता:—	मेरे पास कपड़ा भर है
	मैं उसके साथ इतना भर कर सका
	मैं तो उसके साथ भर रहा हूँ

सूचना (१) उक्त प्रयोगो मे परसर्गीय सबध भी लक्षित होते है परन्तु इनमें निपातीय अर्थ की प्रधानता है ।

३.२ ५. {भी}

इस निपात का प्रयोग सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रियाविशेषण तथा क्रिया पदो के पश्चात् होता है तथा इसके द्वारा प्रधानत अवधारण अर्थ व्यक्त होता है। यथा —

यौगिक रचना :—

(१)	सं० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	काम	भी		काम भी
	बच्चा	भी		बच्चा भी
	मॉस	भी		मॉस भी
	पत्थर	भी		पत्थर भी
(२)	सर्व० पद	निप त	→	निपातीय रचना
	वह	भी		वह भी
	मैं	भी		मैं भी
	तुम	भी		तुम भी
	हम	भी		हम भी
	कोई	मी		कोई भी
(३)	वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	कैसा	भी		कैसा भी
	कितना	भी		कितना भी
	बुरा	भी		बुरा भी
	लाल	भी		लाल भी
(४)	क्रि० वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	अब	भी		अव भी
	वहाँ	भी		वहाँ भी
	इधर	भी		इधर भी
	आज	भी		आज भी
	ऊपर	भी		ऊपर भी
(५)	क्रि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	बुलाया	भी		बुलाया भी
	गए	भी		गए भी
	जाओगे	भी		जाओगे भी

चलोगे	भी	चलोगे भी
खा	भी	खा भी

उदाहरण :—

(१) अवधारण :— काम भी करो और पढो भी
बच्चा भी इसे जानता है
हिन्दू माँस भी खाते हैं
पत्थर भी पिघलता है
वह भी चला गया
मैं भी अब चला जाऊँगा
हम भी ऐसा सोचें तो फिर क्या हो
कोई भी यह कह सकता है
लडका कैसा भी बुरा है पर माँ की देख-भाल करता है
कितनी भी सपत्ति क्यों न हो विद्या के बिना कुछ नहीं
लाल भी और काले भी देखिए
अब भी कुछ नहीं बिगडा है
वहाँ भी ऐसा होता है
उसे इधर भी बुलाना
वे वहाँ गए भी थे
खाओ भी और मेहनत भी करो
नहीं, तुम वहाँ जाओगे भी

(२) आश्चर्य अथवा सदेह :— तुम वहाँ गए भी थे
पत्थर भी कहीं पसीजता है

(३) आग्रह :— चलो, अब उठो भी
नहीं, तुम वहाँ जाओगे भी
अब तुम चुप रहो भी

३. २. ६. {मात्र}

इस निपात का व्यवहार सज्ञा तथा विशेषण के पश्चात् होता है तथा इसका प्रयोग प्राय सस्कृत तत्सम पदो के पश्चात् होता है । इसके द्वारा अवधारण, केवलता तथा साकल्य अर्थ व्यक्त होते है । यथा .—

यौगिक रचना :—

(१)	स० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	साधन	मात्र		साधन मात्र
	मानव	मात्र		मानव मात्र
	रुपए	मात्र		रुपए मात्र
	शरीर	मात्र		शरीर मात्र
	लज्जा	मात्र		लज्जा मात्र
(२)	वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	किंचित	मात्र		किंचित मात्र
	अल्प	मात्र		अल्प मात्र
	लघु	मात्र		लघु मात्र
	निमित्त	मात्र		निमित्त मात्र
	एक	मात्र		एस मात्र

उदाहरण :—

(१) अवधारण :—

अब **शरीर मात्र** है
उसे **खाने मात्र** से काम है
अब तो **लज्जा मात्र** रह गई है
किंचित मात्र अश उसमें नहीं
हमारा नाम **लघु मात्र** समझिए
वे **निमित्त मात्र** यह काम करते हैं

(२) केवलता —

मैं तो **साधन मात्र** हूँ
भोजन मात्र चाहिए और कुछ नहीं
विद्या मात्र पर्याप्त नहीं, व्यवहार भी है
सौ रुपए मात्र

(३) साकल्य —

विश्व मात्र की सेवा करो
प्राणी मात्र का यही धर्म है
मानव मात्र का यह लक्षण नहीं
जड मात्र का यही लक्षण है

३ २.७. {ही} / ही∞-ई∞-हीँ∞-ईँ /

इस निपात का व्यवहार सज्ञा, सर्वनाम, विशेषण क्रिया तथा क्रियाविशेषणों के पश्चात् होता है तथा इसके द्वारा प्रधानत अवधारणार्थ व्यक्त होता है।

/ ही / प्रधान के अन्तर्गत आने वाले उक्त सपरिवर्तक पद प्रतिबन्धित है। इनमे से / ही / को छोडकर शेष सभी सपरिवर्तको का योग सश्लिष्ट रूप से होता है। आगे के उदाहरणो मे यह बात द्रष्टव्य है।

/ ई / सपरिवर्तक का योग / यह, इस, उस, जिस, किस / सर्वनामो तथा / यहाँ वहाँ, जहाँ, कहाँ / स्थान वाचक क्रियाविशेषणो के पश्चात् होता है। आगे के उदाहरणो से यह स्पष्ट है। इस प्रसग मे यह उल्लेख कर देना आवश्यक है कि जब इस सपरिवर्तक का योग / यहाँ, वहाँ / आदि क्रियाविशेषणो के पश्चात् होता है तो इनका अन्तिम / -आ / यौगिक रचना मे लुप्त हो जाता है। जैसे; / यहाँ (~यह-ँ) -ई→यहीँ /।

/ -ई / सपरिवर्तक का योग / हम / सर्वनाम के पश्चात् होता है। जैसे; / हम-ईँ→हमीँ / ।

/ -हीँ / संपरिवर्तक का व्यवहार / तुम, इन, उन, जिन, किन / सर्वनामो के पश्चात् तथा / न / क्रियाविशेषण के पश्चात् होता है। आगे के उदाहरण द्रष्टव्य है।

इन उक्त परिस्थितियो के अतिरिक्त शेष दशाओ मे / ही / सपरिवर्तक का योग होता है। जब / ही / का योग काल-वाचक क्रियाविशेषण / अब, कब, जब, तब / के पश्चात् होता है तो सधि-नियम अथवा ध्वगि-प्रक्रियानुसार / अभी, कभी, जभी, तभी / रूप हो जाते है। इस योग मे / ब / तथा / ह / का / भ / हो जाना स्वाभाविक है क्योकि / भ / स्वनिम मे घोष एव महाप्राणता विद्यमान है। इस प्रकार / ब / तथा / ह / मे एकीभाव होता है। इस दशा मे / ही / सपरिवर्तक का योग सश्लिष्ट समझना चाहिए।

नीचे इस की यौगिक रचना तथा अर्थ उदाहरणो सहित प्रस्तुत किए जाते है।

	स० पद	निपात	→	निपातीय रचना
(१)	किताब	ही		किताब ही
	लडका	ही		लडका ही
	नौकर	ही		नौकर ही
	राम	ही		राम ही
	माता	ही		माता ही
	भाई	ही		भाई ही
	रोटी	ही		रोटी ही
(२)	सर्व० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	मैँ	ही		मैँ ही

तू	ही	तू ही
ये	ही	ये ही
वे	ही	वे ही
यह	-ई	यही
वह	-ई	वही
उस	-ई	उसी
जिस	-ई	जिसी
किस	-ई	किसी
हम	-ईं	हमीं
तुम	-हीं	तुम्हीं
इन	-हीं	इन्हीं
उन	-हीं	उन्हीं
जिन	-हीं	जिन्हीं
किन	-हीं	किन्हीं

(३)

वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
कैसा	ही		कैसा ही
इतना	ही		इतना ही
कितना	ही		कितना ही
वैसा	ही		वैसा ही
बुरा	ही		बुरा ही
एक	ही		एक ही
लँगडा	ही		लँगडा
अंधा	ही		अधा ही
बहुत	ही		बहुत ही

(४)

क्रि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
आते	ही		आते ही
जाते	ही		जाते ही
गिरते	ही		गिरते ही
गया	ही		गया ही
रोया	ही		रोया ही
सोया	ही		सोया ही
चलता	ही		चलता ही

	कर	ही		कर ही
	जा	ही		जा ही
	जाना	ही		जाना ही
(५)	क्रि० वि० पद	निपात	→	निपातीय रचना
	ज्यों	ही		ज्यों ही
	यों	ही		यों ही
	त्यों	ही		त्यों ही
	पास	ही		पास ही
	निकट	ही		निकट ही
	न	-हीं		नहीं
	आते	ही		आते ही
	जाते	ही		जाते ही
	खाते	ही		खाते ही
	अब	ही		अब ही
	कब	ही		कब ही
	तब	ही		तब ही
	जब	ही		जब ही
	यहाँ (~यह-ँ)	-ईं		यहीं
	वहाँ (~वह-ँ)	-ईं		वहीं
	कहाँ (~कह-ँ)	-ईं		कहीं

उदाहरण :—

(१) निश्चय अथवा अवधारण:—अभी लड़का **ही** है
किताब **ही** सही, ले तो आओ
मेरा एक भाई **ही** था, वह भी न रहा
और कुछ नहीं तो रोटी **ही** मिले
मैं **ही** जाता हूँ
वे **ही** होंगे
यही कहना था
किसी पर विश्वास मत करो
तुम्हीं बताओ मैं क्या करूँ
यह **उन्हीं** का प्रताप है कि मैं आज यहाँ हूँ
वह कैसा **ही** सज्जन हो पर मौके पर नहीं चूकता

जितना ही ग्राप कोशिश करेंगे उतनी ही परेशानी बढेगी

चलो वह **बुरा ही** सही, पर है तो इसान

वे **ग्राते ही** थे

वह **गिरता ही** था

मैं **सोया ही** था कि ग्रावाज ग्राई

राम **चलता ही** रहा

उसे **जाना ही** था

ज्यों ही पैर रखा कि साँप दिखाई दिया

मेरा घर **पास ही** है

वहाँ मुझे **नहीं** जाना है

ग्रभी की तो बात हैं

जभी वे यहाँ नहीं ग्राते

यहीं ग्राप रहें तो ठीक रहे

कहीं चल मत जाना

मैं **वहीं** था

(२) तात्कालिकता :— वह **बोलते ही** बोलते मर गया

वह **ग्राते ही** बोला

वे **सोते ही** कहने लगे

जाने ही वाला

करने ही वाला

मरने ही वाला

खाने ही वाला

सूचना (१०) जब कृदन्तो के पश्चात् इस निपात का प्रयोग होता है तभी तात्कालिक अर्थ ग्रभिव्यक्त होता है ।

(३) सर्वोत्तमता — उसकी शक्ल **बड़ी ही** डरावनी है

वह तो इस नगर की **एक ही** चीज है

पडित जी विद्या मे **एक ही** हैं

वे **बहुत ही** सज्जन हैं

(४) ग्रकारणार्थ — मैं **यों ही** चला गया

ऐसे ही यह काम कर दिया

वैसे ही कह रहा था

३. ३ पश्चाश्रितों के संयुक्त प्रयोग

हिन्दी की पश्चाश्रयी-रचना मे पश्चाश्रितो के सयुक्त प्रयोग भी मिलते है। उदाहरणार्थ / कुछ पुस्तकें इन में से देखिए /, वाक्य मे / में से / परसर्गो का दुहरा प्रयोग द्रष्टव्य है। इसी प्रकार / राम का सा घर मुझे भी बनवाना है / वाक्य मे / का सा / परसर्गो का दुहरा प्रयोग है। हिन्दी पश्चाश्रितो के तीन प्रकार के सयुक्त रूप हिन्दी मे देखे जाते है। प्रथम प्रकार के वे सयुक्त प्रयोग है जिनमे एक परसर्ग के पश्चात् दूसरा परसर्ग प्रयुक्त होता है। जैसे, उक्त उदाहरणो मे। दूसरे प्रकार के वे सयुक्त प्रयोग है जिनमे एक निपात के पश्चात् दूसरे निपात का व्यवहार होता है। जैसे, / मेरे रहने मात्र ही से आपको आपत्ति है /, / यह कभी भी नहीं हो सकता / वाक्यो मे / मात्र ही / तथा / भी भी / निपात द्रष्टव्य है। तीसरे प्रकार के वे सयुक्त प्रयोग है जिनमे या तो परसर्ग के पश्चात निपात आता है या निपात के पश्चात् कोई परसर्ग आता है। यह प्रकार परसर्ग और निपात का सयुक्त प्रयोग समझना चाहिए। उदाहरणार्थ / मै यह काम करने ही वाला था /, / मैं ने ही यह काम किया है / वाक्यो मे / ही वाला / तथा / ने ही / ऐसे ही प्रयोग है। इस प्रकार सयुक्त प्रयोगो को, १ **परसर्गीय संयुक्त प्रयोग**, २. **निपातीय सयुक्त तथा** ३ **उभय संयुक्त प्रयोग**, ये तीन नाम दिए जाते है। उभय सयुक्त प्रयोगो को तीन उपवर्गों मे रखा जाता है—३ १ **परसर्ग निपातीय प्रयोग**, जिसमे पहले परसर्ग आता है तत्पश्चात् निपात। **निपात परसर्गीय प्रयोग**, जिसमे नपात का प्रयोग पहले होता है तत्पश्चात परसर्ग का। ३. ३ **त्रिपश्चाश्रयी-प्रयोग**, जिसमे तीन या अधिक पश्चाश्रितो का व्यवहार होना है। इस वर्ग मे परसर्ग तथा निपातो का मिला-जुला प्रयोग होता है। नीचे प्रत्येक सयुक्तीय वर्ग मे आने वाले सयोगो को उदाहरणो सहित प्रस्तुत किया जाता है। हम प्रत्येक परसर्ग तथा निपात के कार्य को अलग-अलग रूप मे प्रस्तुत कर चुके है, यहाँ, सयुक्त प्रयोगो मे इनके कार्य को मिले-जुले रूप मे पा सकते है।

३ ३. १. परसर्गीय संयुक्त प्रयोग

३. ४. १. १. {के, को}

लडका **अपने को** सुधार रहा है।
हपले **अपने को** देखो।

सूचना (११) यहाँ स्मरणीय रखना है कि स्वय वाचक / आप / के तिर्यक रूप / अप- / के पश्चात् लगने वाला / -ने / प्रधान {के} का ही सपरिवर्तक है।

३ ३ १. २. {के, तक}

इसे **अपने तक** सीमित रखना

वह **अपने तक** सोचता है

३. ३. १. ३ {के, में}

वह **अपने में** मस्त है

मैं **अपने में** क्या सुधार करूँ

३. ३ १. ४. {के, से}

अपने से यह होना मुश्किल है

अपने से पूछो

३. ३. १. ५ {पर, से}

लडका छत **पर से** गया है

वह घोडे **पर से** फलाँग गया

३. ३. १ ६ {भर, तक}

मैं रात **भर तक** यही सोचता रहा

कल दिन **भर तक** यही होगा

३. ३. १. ७. {भर, में}

पल **भर में** सारी समस्या दूर हो गई

इतना काम दिन **भर में** हुआ

३ ३. १. ८. {भर, क|आ}

मैं दिन **भर का** थका माँदा हूँ

महीने **भर की** यही कमाई है

देश **भर के** लोग यही कहते हैं

३. ३. १. ९. {में, से}

इन **में से** कौन सी वस्तु तुम्हे प्रिय है

तुम इस **में से** देख लो

३. ३. १. १०. {में क|आ}

यह किताब इन **में की** है

ये उन **में के** हैं जिन्हें ईमानदार कहा जाता है

३ ३. १. ११. {क|आ, में}

वह इन **की** (**पुस्तकों**) में नहीं

यह पुस्तक उन **की** (**आलमारी**) **में** है

ये ग्रंथ उन **के में** हैं

३ ३ १ १२ {क|आ, से}

मेरी लिखावट **उनकी** (खिलावट) **से** मिलती है
मेरी पुस्तक उन **की** (पुस्तक) से मिलती हे

सूचना (१२) {क|ई, में} तथा {क|ई, से} परसर्गों के सयुक्त प्रय
{क-} के पश्चात् मेद्य अध्यारित रहता है।

३ ३ १ १३. {क|आ, स|आ}

राम **का सा** परिश्रम करो
उन **के से** काम कैसे करें
राम **की सी** सूरत बनाइए

३. ३ १ १४ {वाल|आ, के}

मिठाई **वाले** के एक दुकान है
ताँगे **वाले** के यहाँ शादी है

३ ३. १. १५ {वाल|आ, तक}

लडकी **वाले** को बुलाओ
होटल **वाली** को बुलाओ

३. ३. १. १६. {वाल|आ, तक}

यह खबर लडके **वाले तक** कर दो
घटना की सूचना चौकी **वाले तक** कर दी

३ ३. १. १७. {वाल|आ, ने}

भट्टे **वाले ने** ईंटें पहुचा दी
मारने **वाले ने** यह सोचा भी नही

३. ३ १. १८ {वाल|आ, पर}

मील **वाले पर** मुसीबत आ पडी
टोपी **वाले पर** क्या बीती होगी

३ ३ १. १९. {वाल|आ, में}

दाँत **वाले में** यही खूबी है
ताँगे **वाले में** सच्चाई जरूर है

३. ३ १. २० {वाल|आ, से}

घोडे **वाले से** घोडा नही चलता
करने **वाले से** यही बन पडा

३. ३ १ २१. {वाल|आ, क| आ}

यह लडका तो ताँगे **वाले का** है

भागने **वाले की** क्या पहचान

३. ३ १. २२. {वाला|आ, स|आ}

मुझे तो वह नाचने **वाली सी** लगती है

क्या गाँव **वाले का सा** रहन सहन है

३ ३. २. निपातीय संयुक्त प्रयोग

३. ३ २. १. {तक, तो}

वह खाने **तक तो** मुहताज़ है

पुलिस **तक तो** परेशान है

कपडे **तक तो** जल गए

३ ३. २. २ {तक, न}

तब **तक न**

उस **तक न**

यहाँ **तक न**

३. ३. २. ३. {तक, भी}

यहाँ **तक भी** नौबत आ पहुँची है

अँग्रेजी **तक भी** अनुवाद हैं

३. ३ २ ४ {तक, ही}

कहीं **तक ही** सही

अँग्रेजी **तक ही** यह बात नहीं

३. ३ २. ५. {तो, न}

सुनो **तो न**

कहीं **तो न**

३ ३. २. ६. {तो, भी}

तो भी यह विचारणीय है

उठो **तो भी**

तो भी लोक व्यवहार देखना है

सूचना (१३) {तो, भी} संयुक्त रूप मे संयोजक क्रिया विशेषण है परन्तु यहाँ अवधारणार्थ है।

३. ३. २. ७ {भर, तक}

वह दाने दाने भर तक के लिए परेशान है
आज देश की दशा रोने भर तक हो रही है

३ ३. २. ८. {भर, तो}

मेरी अमलदारी भर तो बच न सकी
इतना भर तो सोचने दो

३. ३ २. ९. {भर, न}

साथ भर न

कपडा भर न

३ ३. २. १०. {भर, भी}

वे उतना भर भी न कर सके
वह साथ भर भी न रहा

३. ३. २ ११. {भर, ही}

हमेशा न रहो तो पल भर ही सही
मेरे पास तो पहनने को कपडे भर ही हैं

३ ३. २. १२. {ही, तक}

आप अभी तक शोक में हैं
यहीं तक तो नौबत आई है

३. ३. २ १३ {भी, तो}

यह भी तो करना है
बालक भी तो जायगा

३. ३. २ १४. {भी, न}

वह भी न
तुम भी न

३. ३ २. १५. {मात्र, तक}

आज मानव मात्र तक में विस्फोट है
आज हिंसा मात्र तक मानव की गति है

३. ३. २. १६ {मात्र, तो}

प्राणी मात्र तो आज व्याकुल है, प्रतिभा कहाँ से आए
जड मात्र तो अनुभव करते हैं

३. ३. २. १७. {मात्र, न}

जड मात्र न

प्राणी मात्र न

३. ३. २ १८ {मात्र, भर}

आपके कहने मात्र भर की देर है

सुनने मात्र भर से कोई निर्णय नहीं होता

३. ३. २. १९. {मात्र, भी}

बच्चे मात्र भी यही सोचते हैं

क्षण मात्र भी नहीं दे सकते

३. ३. २ २०. {मात्र, ही}

भोजन मात्र ही सही

बात करने के लिए पल मात्र ही सही

३. ३. २. २१. {ही, तक}

उसी तक इस बात को सीमित समझो

हमीं तक सीमित है ।

३. ३. २. २२. {ही, तो}

वहाँ वही तो था

तुमने ही तो कहा था

३ ३ २. २३ {ही, न}

वही न

बालक ही न

३. ३. २. २४. {ही, भी}

तुमने कहीं भी ऐसा सुना है

अभी भी यह बात घटने को है

ऐसा कभी भी हो सकता है

आप इसे अभी भी कर सकते हो

३. ३. ३. उभय संयुक्त प्रयोग

३. ३. ३. १. परसर्ग निपातीय प्रयोग

३. ३. ३. १. १. {के, तो}

उस के तो एक लडका है

राम के तो एक लडकी हुई

३.३.३.१.२ {के, न}

उस के न
राम के न

३.३ ३.१ ३. {के, भी}

मोहन के भी बालक हुआ
लडकी के भी चेचक निकली

३ ३.३.१.४ {के, ही}

मेरे ही घर मौत हुई
अपने ही यहाँ बालक पैदा हुआ

३.३ ३.१ ५ {को, तक}

यह घटना उसे तक तो नहीं मालूम
यह बात मुझे तक नहीं मालूम

३ ३.३.१.६. {को, तो}

उसे तो कहना था
मुझे तो मानना था ही
राम को तो कहना पडता

३.३ ३.१ ७ {को, न}

उस को न ? हाँ, उसे
मुझे न ? हाँ, मुझे
तुम्हें न ? हाँ, तुम्हें

३.३ ३.१ ८ {को, भी}

उस को भी खबर कर दो
राम को भी जाना है

३ ३ ३ १ ९. {को, ही}

मुझ को ही सही, मिलना तो किसी को है ही
उसे ही जाना है, न कि किसी और को
तुम्हें ही यह करना है

३ ३.३ १.१० {तक, तो}

बच्चे तक तो परेशान हैं
दवा तक तो मिलती नहीं

३. ३ ३. १ ११ **{तक, न}**

कपडा **तक न** ! हाँ, कपडा तक नहीं मिलता

रोटी **तक न** ! हाँ, रोटी तक नहीं मिलती

३. ३. ३ १. १२ **{तक, भी}**

वे सोते **तक भी** नहीं

दवा **तक भी** नहीं पीते

३ ३ ३. १. १३ **{तक, ही}**

थोडी देर **तक ही** बैठिए

एक घटे **तक ही** सोचिए, मालूम हो जायगा

३. ३. ३. १ १४ **{ने, तो}**

मैं **ने तो** सोच लिया है, इसान की कोई वकत नहीं

बालक **ने तो** यह काम कर दिया

३. ३ ३. १ १५ **{ने, न}**

लडके **ने न** ? हाँ, लडके ने यह किया

मैं **ने न** ? हाँ, तुमने

३. ३ ३. १. १६. **{ने, भी}**

मैं **ने भी** सोच लिया है

मोहन **ने भी** यही कहा था

३ ३. ३. १ १७ **{ने, ही}**

उस **ने ही** कहा था

लडकी **ने ही** गाना गाया

३. ३ ३. १ १८ **{पर, तक}**

छत **पर तक** कूडा पडा है

अब तो मकान **पर तक** दाँत है

३. ३ ३ १ १९ **{पर, तो}**

मुझ **पर तो** दया की होती

ईश्वर **पर तो** विश्वास है, पर मनुष्य पर नहीं

३ ३. ३. १ २०. **{पर, न}**

ईश्वर **पर न**

मुझ **पर न**

३. ३. ३ १. २१ {पर, भी}

ईश्वर **पर भी** विश्वास नहीं

मनुष्य **पर भी** क्या गुजरती है

३. ३ ३. १ २२ {पर, ही}

ईश्वर **पर ही** भरोसा करो

नहीं मानव **पर ही** भरोसा है

३. ३ ३. १ २३ {भर, तो}

दिन **भर तो** खेलते गुजार दिया

पल **भर तो** रुको

३ ३. ३. १. २४. {भर, भी}

पल **भर भी** नहीं ठहर सके

रात **भर भी** यही होता रहा

३. ३. ३. १. २५. {भर, ही}

कपडा **भर ही** दो

पल **भर ही** की देर है

३. ३. ३. १. २६. {में, तो}

उस **में तो** ऐसी बात नहीं

लडके **में तो** ऐसे अवगुण नहीं

३. ३. ३ १ २७ {में न}

इस **में न**

उस **में न**

३. ३. ३. १. २८ {में, भी}

लडके **में भी** यही लत है

हमारे देश **में भी** भुखमरी अधिक है

३. ३. ३. १ २९. {में, ही}

लडके **में ही** तो ये अवगुण है, मा-बाप में तो नहीं

उस **में ही** यह बात देखी जाती है

३. ३. ३. १ ३० {से, तो}

मुझ **से तो** यह होता नहीं

कम से कम उस **से तो** यह आशा न थी

३. ३. ३ १. ३१ {से, न}

उस से न

मुझ से न

३ ३. ३ १ ३२ {से, भी}

लडके से भी यही कहा गया

मुझ से भी यही हुआ

३ ३ ३ १. ३३. {से, ही}

उस से ही कहो

उसके बाप से ही कहो

३ ३ ३ १. ३४. {क|आ, तो}

उस का तो घर भी नहीं है

दुकानदार का तो दिवाला निकल गया

३ ३ ३. १. ३५. {क|आ, न}

उस का न

दुकनदार का न

३. ३. ३ १. ३६ {क|आ, भी}

प्रचडिया जी की भी शोध पूरी हो गई

बालक का भी फोडा ठीक हो गया

३ ३ ३. १. ३७ {क|आ, ही}

उस का ही काम है

अपना ही काम है

उस के ही लडके हैं

३. ३. ३. १ ३८. {वाल|आ, तो}

ताँगे वाला तो चला गया

बेटी वाला तो मर गया

३. ३ ३ १. ३९. {वाल|आ, न}

गाडी वाले न

बकरी वाला न

३. ३ ३ १ ४० {वाल|आ, भी}

गाडी वाले भी यही कहते हैं

ससुराल वाले भी कहते हैं

३. ३. ३ १. ४१. {वाल|आ, ही}

मेरी घर वाली ही सही

वहाँ उसके घर वाले ही थे

३ ३ ३. १. ४२ {स|आ, तो}

मरा सा तो था

बुद्धू सा तो लगता है

३. ३ ३. १. ४३. {स|आ, न}

मूर्ख सा न

बुद्धू सी न

३. ३ ३ १ ४४ {स|आ, भर}

अब तो थोडी सी भर उम्र है

जरा सी भर तो बरदाश्त नहीं

३ ३ ३. १ ४५. {स|आ, भी}

जरा सा भी अवकाश मिला ले जाऊँगा

बहुत सी भी दौलत व्यर्थ है

३. ३. ३ १. ४६. {स|आ, ही}

अभी बच्चा सा ही है

मुझे उस का सा ही चाहिए

३ ३. ३. २. निपात-परसर्गीय प्रयोग

३. ३ ३. २ १. {तक, क|आ}

तुम यहाँ तक की क्यों नहीं सोचते

इधर तक की खबर आपको दी

३ ३ ३. २. २. {तक, में}

अँग्रेजी तक में यह नहीं

देश तक में यह भावना व्याप्त है

३. ३. ३. २. ३. {मात्र, के}

मानव मात्र के ऐसी उदारता है

प्राणी मात्र के इतना प्यार है

३ ३. ३ २. ४. {मात्र, को}

मानव मात्र को यही चाहिए

प्राणी मात्र को यही चाहिए

३ ३. ३ २. ५. {मात्र, तक}

प्राणी **मात्र तक** यह जानते हैं

मानव **मात्र तक** की पहुँच वहाँ नहीं

३. ३. ३. २ ६ {मात्र, ने}

जड **मात्र ने** कभी ऐसी गतिशीलता नहीं दिखाई

चेतन **मात्र ने** ही यह गतिशीलता पाई है

३. ३. ३ २ ७. {मात्र, पर}

प्राणी **मात्र पर** भरोसा करो

मानव **मात्र पर** विश्वास करो

३. ३. ३ २. ८. {मात्र, भर}

पल **मात्र भर** न ठहर सके

क्षण **मात्र भर** न रुके

३. ३. ३ २ ९. {मात्र, में}

पल **मात्र में** यह हुआ

क्षण **मात्र में** यह हुआ

३. ३. ३ २. १०. {मात्र, से}

विद्या **मात्र से** काम न चलेगा

प्राणी **मात्र से** होना कठिन है

३. ३ ३ २. ११ {मात्र, क|आ}

प्राणी **मात्र का** यही धर्म है

मानव **मात्र की** सेवा करो

३. ३ ३ २ १२. {ही, को}

लडके **ही को** चाहिए और किसी को नहीं

बालक **ही को** चाहिए

३. ३ ३ २ १३ {ही, तक}

मुझे अपने **ही तक** रहने दो

बालक **ही तक** आपका क्रोध रहे

३ ३ ३. २. १४. {ही, ने}

राम **ही ने** यह किया है

बालक **ही ने** यहै सोचा है

३. ३. ३. २ १५. {ही, पर}

मुझी पर तो बालक है
लडके ही पर असर हुआ हे

३. ३. ३. २ १६. {ही, में}

उसी में यह बात है
किसी में क्या ताकत है

३. ३. ३. २. १७. {ही, से}

उसी से कहलो
राम ही से कराओ

३ ३ ३ २. १८. {ही, क|आ}

राम ही की लडकी है
मा ही का यह प्रताप है

३ ३ ३ २ १९ {ही, वाल|आ}

मैं उसे करने ही वाला था
वह जाने ही वाला था

३. ३. ३. ३. त्रिपश्चाश्रयी-प्रयोग

दो पश्चाश्रितो के सयोगो के अतिरिक्त तीन पश्चाश्रितो के भी संयोग उपलब्ध है। प्रथम वर्ग के परसर्गीय सयुक्त परसर्गों के पश्चात् / तो, न, भी, ही / निपातो के प्रयोग से त्रिपश्चाश्रियो के सयोग होते है। इन निपातो मे से प्रत्येक को उनके पश्चात् प्रयुक्त करके प्रथम वर्ग के उदाहरणो मे देखा जा सकता है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है :—

३ ३. ३. ३. १. {के, तक, तो}

इसे अपने तक तो सीमित रखते
कम से कम वह अपने तक तो सोचता

३. ३. ३ ३ २. {के, तक, ही}

अपने तक ही क्यों सोचते हो
तुम अपने तक ही क्यों न रहे

३ ३ ३. ३. ३ {पर, से, तो}

लडका छत पर से तो गया है
वह घोडे पर से तो गया

३ ३. ३. ३. ४ {भर, में, ही}

क्या सारी समस्या पल **भर में ही** समाप्त है
इतना काम क्या दिन **भर में ही** हुआ

३. ३ ३. ३ ५ {भर, क|आ, भी}

क्या मैं दिन **भर का भी** वेतन न लूँ
देश **भर के भी** लोग यही कहते होंगे

३ ३. ३. ३ ६ {में, से, भी}

कुछ इन **में से भी** छाँटिए
भट्टी **में से भी** होकर कीडा निकला

३. ३ ३. ३. ७ {में, क|आ, तो}

यह किताब इन **में की तो** नहीं
वह इन **में की तो** नहीं

३ ३ ३. ३ ८ {क|आ, से, ही}

मेरी लिखावट उन **की से ही** मिलती है
यह उन **की से ही** मिलती है

३ ३ ३. ३. ९. {वाल|आ, तक, भी}

यह खबर लडकी **वाले तक भी** कर दो
घटना की सूचना चौकी **वाले को भी** करो

३ ३ ३. ३. १०. {वाल|आ, स|आ, तो}

वह मुझे नाचने **वाली सी तो** लगती है
इत्यादि ।

द्वितीय वर्ग (§३ ३ २) के कुछ सयोगो के पश्चात् कुछ परसर्गों तथा निपातो के प्रयोग होते है। नीचे कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए जाते है ।

३ ३ ३ ३ ११ {भर, ही, को}

पल **भर ही को** सही

३. ३ ३ ३. १२ {मात्र, भर, को}

मानव **मात्र भर को** क्यों गाली देते हो

३. ३ ३. ३ १३ {भर, ही, में}

चलो, पल **भर ही में** देख लो

३. ३. ३. ३. १४. {मात्र, तक, में}

आज मानव **मात्र तक में** खलबली है

३. ३. ३. ३. १५. {मात्र, तक, क|आ}

बस हो गया काम पल **मात्र तक की** कठिनाई और है

३. ३. ३. ३. १६ {मात्र, भर, क|आ}

कहने **मात्र भर की** देर है

३. ३. ३. ३. १७. {तक, ही, तो}

वह खाने **तक ही तो** मुहताज है कि और कुछ

इत्यादि ।

तृतीय वर्ग के प्रथम तथा द्वितीय उपवर्गों (§३ ३. ३ १, §३ ३. ३. २) के पश्चात् प्राय· परसर्गो का व्यवहार नही होता, निपातो के व्यवहार अवश्य होते है। यथा :—

३ ३. ३. ३. १८. {ने, ही, तो}

यह उस **ने ही** तो कहा था

३. ३. ३. ३. १९. {ने, भी, तो}

उस **ने भी तो** सोच लिया होगा

इत्यादि ।

अनुक्रमणिका

तथा

ग्रंथ-चयन

अनुक्रमणिका

हिन्दी-प्रत्यय

सूचना :—हिन्दी कोशो के वर्णक्रम मे अनुस्वार तथा अनुनासिकता पहले है। यहाँ इनका क्रम प्रत्येक स्वर के बाद मे है, तत्पश्चात् व्यजन।

' {-ओँ} का सपरिवर्तक § १ २. १०. ३ ३. १४.

§ १ २ १०. ३ १. २३.

§ १ २. १० १ १. ४१ , § १. २ १० १. ३ १६ ,

§ १. २. १०. १. ४. २२ , § १ २. १०. १. ५ २.

§ १ २ १०. ३. १. २४

{-आल} का सपरिवर्तक § १. २. १०. १ १. २८

§ १ २. १०. १. १ ४२. , § १. २. १० १. ५. ४.

§ १ २ १० १. १. ४३.

§ १. २ १०. ३. १. २५.

§ १. २ १०. ३ १. २६ , § १ २ १० ३ २ १. , § १. २. १०. ३. ३. ५.

§ १ २. १० ३ ५ ३ , § २ १ १ १ पुल्लिग (४), स्त्रीलिंग (३),

§ २ १. ३ १. (१) स्त्रीलिंग, § २. २. २. १ २ १. ,

§ २ २. २. १. ३. , § २. २. १. १ २ , § २ २ १. १. २. १. ,

§ २ २. १. १. ५. , §§ २. २. १. १'७-२४ , § २ ३ २ ,

§ २ १. १. ३. २. ,

{ही} का सपरिवर्तक § ३. २ ७.

{-च|आ} का सपरिवर्तक § १. २. १० १. १. ७६.

§ १. २. १०. ३. ३. ६.

§ १. २. १०. ३. १. २७.

§ १. २ १०. ३ १. २८. , § १ २. १०. ३. ३. ७.

§ १ २. १० १. १. ४४.

§ १ २ १०. ३. १ २६.

§ १ २. १०. ३ १ ३०

§ १. २. १०. ३. १. ३१. , § १. २. १०. ३. ४. १४.

§ २ २ १. १. ५ , § २. २. १. १ ७. , § २. २. १. १. ८.

{ही} का सपरिवर्तक § ३. २. ७.

§ १. २. १०. ३ ४. १५

§ १. १. ५ ४.

§ १. १. ५. ५

§ १. २. १०. १. १. ४५

§ २ १ १ १. पुल्लिग (५)

§ २. १ १. १. पुल्लिग (५)

§ १ २. १०. १ १. ४६.

§ २. २. १ १. २ , § २. २ १ १ ३

/ -एँ / {-अस} का सपरिवर्तक § १. २ १०. १. ३. ४. , {को} का सपरिवर्तक § २. १ २. ३ २ , § ३ १. १ २.

{-ऐ} § २. २ १. १ ४.

{-ऐत} § १. २ १०. ३. १. ३६. , § १ २ १०. ३ ४. १६.

{-ऐती} § १ २. १०. ३. १ ४०.

{-ऐल} § १. २. १०. १. १. ५३. , § १. २. १०. १. ४. २६ , § १. २. १०. ३. १. ४१. , § १ २. १०. ३. ४. २०.

{-ऐल|आ} § १. २ १०. ३. १. ४३.

{-ऐँ} § २. २ १ १. ४.

{-ओ} § १. २. १०. ५. ४. २. , § २. १ १. १. पुल्लिग (१), (१ १), (२), स्त्रीलिंग (१), (१. २), (२. १), § २ २. १ १ १. , § २ २. १. १. २. , § २ २. १ १. ३ , § २ २. १. १ ४.

/ -ओ / {-आ} का सपरिबर्तक § १ २ १० ४. ३. १ १.

{-ओ|ई} § १ २. १० १ १ ५४.

{-ओट} § १. २ १०. १. १. ५५.

{-ओड|आ} § १. २. १० ३. १ ४३ , § १. २ १०. ३. ४ २१.

{-ओर} § १. २. १० १. ४ २७ , § १. २. १०. ३. ४ २२.

{-ओल|आ} § १ २. १०. १. १. ५६. , § २. १० ३. १. ४४.

{-ओह|ई} § १. २. १०. १. १. ५७.

{-ओहर} § २. १०. १. ४. २८.

{-ओँ} § १ २ १०. ३ १. ४५ , § १ २ १० ३ ३. १४ , § २ १. १. पुल्लिग (१), (१.१), (१ १.१), (२), (२ १), स्त्रीलिंग (१), (१ १), (१.२), (२ १)

/ -ओँ / {-योँ} का संपरिवर्तक § १ २. १०. ५. २ ३ , { से } का संपरिवर्तक § ३ १. १. ८.

{औ-} § १. १. ५. ७.

{-औट|आ} § १ २. १०. १. १ ५८.

{-औट|ई} § १. २. १० १. १. ५६. , § १ २ १०. १. ३. २३ , § १. २. १०. १. ४ २६.

{-औठ|आ} § १ २ १०. ३. ३. १५.

{-औड|आ} § १. २. १०. १. १. ६०.

{-औड|ई} § १. २. १०. १. ४. ३०.

{औत} § १. २. १०. १ १ ६१.
{औन|आ} § १. २ १०. १. १. ६२.
{-औत|ई} § १ २. १०. १ १ ६३., § १. २. १०. १ ३. २४.,
§ १. २ १०. १. ४. ३१
{-औन|आ} § १. २ १०. १ ४. ३२ , § १ २. १० ३. १ ४६.
{-औन|ई} § १, २. १०. १. ४ ३३.
{औग|आ} § १. २ १०. ३ १ ४७.
{और|ई} § १. २ १०. १. १ ६४., § १ २ १०. १. ४. ३४
{-औल|आ} § १ २ १० १ १. ६५.
{-औस} § १ २ १०. १ ४. ३५
{औँ} § २ १ १ १ स्त्रीलिंग (१.१)
{-औँह|आ} § १, २ १० ३ १ ४८., § १ २ १०. ३ ४. ४३.
{-अइय|आ} § १. २ १० १ १ ३६.

{-अउग्गल} § १ २ १० ३. ४. २४.

{-अउआ} § १ २ १० ३. ४. २५

/क-/ {कु} का सपरिवर्तक § १. १. ५ ८.
/-क/ {-अक} का सपरिवर्तक § १ २ १० १. १ १
{-क|आ} § १ २ १०. १ १. ६७., § १. २ १०. १. ३ २५.
§ १. २. १०. १. ४ ३६
{क|आ} § २ १ २. ३. २ , § ३. १ २ १ , § ३. ३ १. ८.,
§ ३. ३ १. १०., § ३. ३ १. ११ , § ३ ३ १. १२.,
§ ३ ३ १. १३., § ३. ३. १ २ १., §§ ३ ३ ३. १. ३४-३७.,
§ ३ ३ ३ २ १ , § ३. ३ ३. २ ११ , § ३ ३. ३. २ १८ ,
§ ३ ३ ३ ३ ५ , § ३. ३ ३. ३. ७., § ३. ३. ३. ३. ८.,
§ ३. ३ ३ ३. १५ , § ३ ३ ३. ३ १६
{-क|ई} § १ २ १० १. १ ६८ , § १ २ १० १ ४ ३७.
{-क्ड|आ} § १ २ १० १ ३ २६
{कम} § १ २ १०. ३. १ ४६.
{कर} § १ २ १० ३ ३ १६ , § १ २ १० ५ ३ ३ ,
§ १ २ १० ५ ५ ३ , § २ २ २ २ १ १

§ ३. ३ ३. १ १५ , § ३ ३. ३ १ २० , § ३ ३ ३ १ २७ ,
§ ३ ३. ३. ३१ , § ३. ३ ३. १ ३५ , § ३ ३. ३ १ ३६ ,
§ ३ ३. ३. १ ४३

{-न|आ} § १. २. १० १ १ ६० , १. २. १०. १ ४. ४२.

/ -न|आ / § {क|आ} का सपरिवर्तक § २. १. २. ३. २ , § ३. १. २ १

{-न|ई} § १. २. १०. १. १ ६१. , १ २ १०. १. ४ ४३.

/ -ना / {-आ} का संपरिवर्तक § १ २. १०. ४. १. १.

{नाक} § १. २. १०. ३. १ ६३.

{-नाम|आ} § १. २ ३. , § १. २. १० १. १. ६२.

{नि-} § १. १ ५. ११

{-नी} § १. २. १०. ३. ३ २२

{-नुम|आ} § १. २ १० १. १ ६३.

{-नुमा} § १ २ १०. ३ १. ६४.

{ने} § ३. १ १ ४. , §§ ३. ३. ३. १. १४-१७. § ३ ३. ३. २ ६. ,
§ ३ ३ ३. २. १४ , § ३ ३. ३. ३. १८ , § ३ ३. ३. ३. १९.

/ -ने / {के} का सपरिवर्तक § २. १ २ २. २. , § ३. १. १. १.

{-प|ऊ} § १. २ १०. १ १ ६४.

{पन} § १ २ ३. , § १. २ १०. १. १. ६५ , § १ २. १० १ ३. ३०. ,
§ १. २. १०. १ २ १

{पर} § १ १. ५ १२.

{पर} ३ १ १ ५, § ३, ३. १. ५. , §§ ३. ३. १. १८-२२ ,
३. ३. ३. १. १८ , § ३. ३. ३. २. ७ , § ३ ३ ३ २ १५. ,
§ ३. ३ ३. ३. ३

{फिल-} § १ १ ५. १३.

{ब-} § १. १. ५ १४.

{-ब} § १. २ १०. ५ २. ४.

{-ब|ई} § १ २. १० १. ४. ४४.

{बर-} § १ १ ५. १५

{बहर-} § १. १. ५ १६

{बा-} § १ १ ५ १७

{-बाज} § १ २. ३ , § १ २. १० ३. १. ६५ , § १. २. १०. ३. ५. ४.

/ -बान / {-वान} का सपरिवर्तक § १. २ १०. ३ १. ७५.

{-बीन} § १. २. १०. १ ५ ८ , § १ २. १० ३ १ ६६.

/ ग|ग्रा / {-क|ग्रा} का सपरिवर्तक § २ १ २ ३. २., § ३ १ २. १.
{-र|ई} § १. २ १० १. १ ९९
{-र|ऊ} § १ २ १० १. १ १००
{-रा} {-ग्रा} का सपरिवर्तक § १ २. १०. ४ १ १.
{-रूक} § १ २. १०. ३. ८ २८.
{-रे} {के} का सपरिवर्तक § २. १. २ ३ २., § ३. १. १. १.
{रेज} § १ २. १०. १. १. १०१, § १. २ १० ३ १ ६९,
§ १. २ १० १. ४. ८६.
{-ल|ग्रा} § १ २ १० ३ १ ७०, § १. २ १०. ३ ३ २३
{-ल|ग्रा} {क|ग्रा} का सपरिवर्तक § १ २. १०. १ ३ २५,
{-व|ग्रा} का सपरिवर्तक § १ २ १० ३ ३. २५
{-ल|ई} § १ २ १० १. १ १०२, § १ २ १० १ ४ ४७.
/ -लवा / {-वा} का सपरिवर्तक § १ २ १० ४ ३ २१.
{ला-} § १. १ ५ २०
/ -ला / {-ग्रा} का सपरिवर्तक § १ २ १० ८. ३ १ १,
{-वा} का वैकल्पिक रूप § १ २. १० ८ ३ २ १.
/ -ला|ई / {-ग्रा|ई} का सपरिवर्तक § १. २ १० १ ४ ६
/ -लास / {-ग्रास} का सपरिवर्तक § १. २ १० १ ४ १९.
{-ली} § १. २. १० ३. १. ७१
{-लौत|ग्रा} § १. २ १०. ३. ३. ३४.
{व|ग्रा} § १ २. १० १ १. १०३.
/ -व|ग्रा / {-ग्राव|ग्रा} का सपरिवर्तक § १. २. १०. १ ४. १६.
{व|ग्रॉ} § १. २. १०. ३. ३. २५.
{-व|ईं} § १. २ १० १ ३ ३२.
{-वज} § १. २. १०. १. १. १०४.
/ -वट / {-ग्रावट} का सपरिवर्तक § १ २. १० १ ४. १७.
{-वती} § १ २ १० ३ ४. २९
{-वन|ग्रा} § १. २ १०. ३. ४. ३०
{-वन|ई} § १ २. १०. १ ४. ४८.
{-वर} § १. २. ३., § १. २ १० १ १. १०५, § १. २. १० ३. १. ७२.
{-वा} १ २. १०. ३ १. ७४, § १ २ १०. ४. ३. २ १.
/ -वाई / {-ग्रा|ई} का सपरिवर्तक § १. २. १०. १ ४. ६.
{-वाड} § १. २. १०. १. १. १०६.

{हट|ई} § १. २ १० १ १. ११२.

{हम-} § १. १. ५. २५.

{-हर} § १ २. १०. १. १ ११३

{-हर|आ} § १. २ १०. १. १. ११४., § १. २. १०. ३. १. ८०.,
§ १. २ १०. ३. ३. २७.

{-हर|ई} § १ २ १० १ १ ११५.

/ हल|आ/ {-हर|आ} का सपरिवर्तक § १ २ १० ३. १. ८०.

{-हार} § १ २ १० १ १. ११६., § १ २ १०. ३. १. ८१

{-हार|आ} § १ २ १० १ १. ११७

{ही} § ३. २ ७., § ३ ३ २ ४ , § ३. ३. २ ११., § ३. ३ २ १२ ,
§§ ३ ३ ३ २. २०-२४ , § ३ ३. ३. १. ४., § ३. ३ ३. १. ६,
§ ३. ३ ३ १ १३., § ३ ३ ३. १. १७., § ३. ३ ३. १ २२.,
§ ३. ३ ३ १ २५., § ३. ३ ३. १. २६., § ३ ३. ३. १ ३३.,
§ ३ ३ ३ १ ३७., § ३. ३ ३ १. ४१ , § ३. ३. ३. १. ४५ ,
§§ ३. ३. ३ २ १२ १६., § ३ ३. ३ ३. २ , § ३. ३. ३. ३. ४.,
§ ३ ३. ३. ३. ८ , § ३ ३. ३. ३ ११., § ३. ३. ३. ३. १३.,
§ ३. ३ ३. ३. १७., § ३. ३. ३. ३. १८.

/ -हीँ / {ही} का सपरिवर्तक § ३. २ ७.

{-ँ} § २. २. १. १. १. १ , § २. २. १. १. २. १ , § २. २. १. १. ३. १.

A R Kelkar—The Phonology and Morphology of Marathi. A thesis presented to the faculty of the Graduate School of Cornell University for the degree of Doctor of Philosophy, 1958
" " The category of the case in Marathi, Indian Linguistics, Turner-Jubilee Volume II, Linguistic Society of India, 1959.

A S Hornby, E. V. Gatenby, H. Wakefield—The Advanced Learner's Dictionary of Current English, London, 1957

Bhatto ji Dikshita—The Siddhanta Kaumudi, Vol, I (Edited and translated into English by Sris Chandra Vasu and Vamana Das Vasu) Allahabad, 1906

Bernard Bloch and Geroge L Trager—Outline of Linguistic Analysis, Linguistic Society of America, 1942

Charles Carpenter Fries—American English Grammar, New York 1940

Charles F Hockett—A course in Modern Linguistics, New York, 1958.

Daniel Jones—An outline of English Phonetics, Cambridge, 1956.
" " —An English Pronouncing Dictionary, London, 1956
" " —The Phoneme, its nature and use, Cambridge 1950.

E. H Sturtevant—An Introduction to Linguistic Science, New Haven, 1956

Edward Sapir—Language, New York, 1939

Eugene A. Nida—Morphology, Michigan, 1957.

Ferdinand de Saussure—Course in General Linguistics (Translation) London, MCMLX

F. Max Mullar—Science of thought, London, 1887

Fredrick B Agard—Structural sketch of Rumanian, Language Monograph No 26 Language, Journal of Linguistic Society of America, Vol 34, July-Sept 1958

Government of India—A basic Grammar of Hindi Language, 1958

H A Gleason—An Introduction to Descriptive Linguistics, New York, 1956.

H C Scholberg—Concise Grammar of the Hindi Language, Oxford, 1955.

G L Trager—Some thoughts on juncture, Studies in Linguistics, Vol 16, No., 1962

Hans Marchand—The categories and types of present day English word-formation, Wiesbaden, 1960.

Ida C Ward—The Phonetics of English, Cambridge, 1956.

J. R Firth—Papers in Linguisties, London 1958

J Vendryes—Language, London, 1952.

J Marouzeau—Lexique de la Terminologie Linguistique Paris, 1957

John Beames—A comparative Grammar of the Modern Aryan Languages of India, Vol. II, London, 1875.

John B Carrol—The study of Langugge, Cambridge, 1955.

Kenneth L Pike—Phenemics, Michigan, 1956

Kshitish Chandra Chatterji- Technical terms and technique, of Sanskrit Grammar, Part I, Calcutta—4, 1948.

Leonard Bloomfield—Language, London, 1955

Louis Hjelmslev—Prolegomena to a theory of Language, Baltimore, 1953

Mario A Pei and Frank Gaynor—A Dictionary of Linguistics, New York, 1954

Moreshwar Ram Chandra Kale—A Higher Sanskrit Grammar, Bombay, 1931

Martin Joos (Ed)—Readings in Linguistics, New york 1958.

Otto Jespersen—Essentials of English Grammar, London, 1954

„ „ —The Philosophy of Grammar, London, 1951.

Ramesh Chandra Mehrotra—Hindi Syllabic Structure, Indian Linguistics, Turner Jabilee vol. II, Linguistic Society of India, 1959

Robert A. Hall, Jr.—Leave your Language alone ! 1950

S H Kellogg—A Grammar of Hindi Language, London, 1955.

Sastri and Apte Hindi Grammar, Madras, 1958

T. Grahame Bailey—Teach yourself Hindustani, London, 1950

W. Nelson Francis—The structure of American English, New York, 1956.

Zellig S. Harris—Methods in structural Linguistics, Chicago, 1951.

—Morpheme Alternants in Linguistic Analysis, Language, 18. 169-80, 1942

Roman Jakobson—Preliminaries to speech Analysis, Massachusetts, 1952